MY STRUGGLE

मेरा संघर्ष

Benjamin Rock

यह किताब एक मशीन ट्रांसलेशन है और इसमें गलतियाँ हो सकती हैं। इंग्लिश ट्रांसलेशन देखें।

यह किताब मेरी एक छोटी बायोग्राफी है और साथ ही मेरे नए जन्म और दुनिया को देखने के तरीके और यह कैसे डेवलप हुआ, इसके नतीजे भी बताती है। किताब में बताई गई सच्चाई आपको चौंका सकती है।
इस किताब का मकसद खज़ार यहूदियों के दुनिया जीतने के प्लान के बारे में चेतावनी देना और न्यू जेरूसलम, या प्रभु के दूसरे आगमन के चर्च (डैनियल 2:44) को बनाने की शुरुआत करना है। वचन पढ़ते समय, मुझे प्रभु से यह इंटरनेशनल न्यू चर्च बनाने का आदेश मिला है। इसीलिए यह होमपेज है। मैं चर्च के कामों के लिए समझदार लोगों को ढूंढ रहा हूँ।
चर्च ग्लोबल होगा, और प्रभु खुद इसे लीड करेंगे।

Benjamin Rock
Finland

आदर्श वाक्य:

और जो पहले ज़मीन पर था, अब शिखर पर है। इसी से उन्होंने सबसे सच्चा नियम निकाला, "निचले से भी ऊंचे को, निश्चय ही, मोड़ो, क्योंकि हम वहाँ की आग की कैद से बच निकले हैं, मुक्त हवा में अत्यधिक शक्ति के लिए: एक खुला रहस्य, फिर भी भली-भाँति छिपा हुआ, और हाल ही में सार्वजनिक रूप से प्रकट हुआ है।" (इफिसियों 6:12)। गोएथे: फॉस्ट।

क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध मांस और लहू से नहीं, परन्तु प्रधानों से, अधिकारियों से, इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और ऊँचे स्थानों पर स्थित आत्मिक दुष्टता से है।
(इफिसियों 6:12)

परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम शैतान की युक्तियों का साम्हना कर सको। (इफिसियों 6:11)

तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की अभिलाषाओं को पूरा करोगे। वह आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि उसमें सत्य है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता है, तो अपनी ही बात कहता है; क्योंकि वह झूठा है, और झूठ का पिता है। (यूहन्ना 8:44)

फिर शैतान उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और उसे जगत के सारे राज्य और उनका वैभव दिखाया; और उससे कहा, "यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं ये सब कुछ तुझे दे दूँगा।" (मत्ती 4:8-9)

"यह जानने के लिए कि कौन शासन करता है, यह पता लगाओ कि तुम्हें किसकी आलोचना करने की अनुमति नहीं है।" वोल्टेय

विषय-सूची

अध्याय 1: जीवनी, बचपन और युवावस्था 7
सत्य की खोज और प्राप्ति 11

अध्याय 2: जीवनी, काले बादल 20

अध्याय 3: मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा: खज़ारी यहूदी 24
खज़ारों के अंतर्राष्ट्रीय अपराध 35
यहूदियों का धार्मिक और राजनीतिक महत्व 43

अध्याय 4: मित्र राष्ट्रों की विजय और जर्मन लोगों का नरसंहार 48
राष्ट्रीय समाजवाद और हिटलर के बारे में सच्चाई 51

अध्याय 5: प्रलय पर अधिक जानकारी 54

अध्याय 6: महान ईसाई चर्चों की त्रुटियाँ 60

अध्याय 7: यहूदी वित्तीय शक्ति और उसका इतिहास 64

अध्याय 8: नए चर्च के सिद्धांत 87
दार्शनिक विधियाँ और मूल अवधारणाएँ 87
उद्देश्य, कारण और प्रभाव। सतत और असंतत अंश 88
पत्र-व्यवहार का विज्ञान 93
मानव मन एक दार्शनिक उपकरण के रूप में 98
ईश्वर का वचन एक दार्शनिक उपकरण के रूप में 108

कुछ दार्शनिक शब्द 110
आध्यात्मिक जगत 118

आत्माओं का जगत 119
स्वर्ग 123
शरीर की मृत्यु के बाद मनुष्य की स्थिति 128
नरक 133
प्रभु परमेश्वर 136
प्रभु, उद्धारक और उद्धारकर्ता 137
पवित्र आत्मा 141
दिव्य त्रिमूर्ति 142
बाइबल, या परमेश्वर का वचन 147
दस आज्ञाएँ 160
दिव्य विधान 175
यीशु वास्तव में कौन थे 190
प्रकाशितवाक्य और अंतिम न्याय की पुस्तक 197
विश्वास 203
अपने पड़ोसी के लिए प्रेम 207
विवाह की उत्पत्ति 213

अध्याय 9: पत्राचार विज्ञान के प्रकाश में आधुनिक युग 218
दर्शन और धर्म 223
हमारे समय के विज्ञान 230
हमारे समय की कलाएँ 242
पत्र-व्यवहार पर कुछ अन्य वैज्ञानिक अवलोकन 245
शैतान 251

अध्याय 10: पुनर्जन्म 254
पश्चाताप 257
सुधार और पुनरुद्धार 260
प्रलोभन और किण्वन 267
पुनर्जन्म की प्रक्रिया की प्रगति 271
पुनर्जन्म में बाधा डालने वाले कारक 277
प्रलोभनों पर विजय 280

परिशिष्ट:

अपेंडिक्स 1: यहूदी मुद्दों की समझ बढ़ाने वाली किताबें 290
अपेंडिक्स 2: सोवियत सरकार की शुरुआत में यहूदियों की भूमिका 297
अपेंडिक्स 3: पुनर्जन्म कैसे शुरू करें 304
अपेंडिक्स 4: मानसिक बीमारियों का इलाज 305
अपेंडिक्स 5: नरक और नया चर्च 307
अपेंडिक्स 6: नए चर्च का संगठन 308

इमैनुएल स्वीडनबोर्ग के धार्मिक काम ऑनलाइन 309

संपर्क जानकारी 310

अध्याय 1: जीवनी: बचपन और युवावस्था, सत्य की खोज और प्राप्ति

मेरा जन्म 3 अक्टूबर, 1946 को एक छोटे से सरकारी कर्मचारी परिवार में हुआ था। मेरे पिता एक आरा मशीन तकनीशियन थे और ओउलुजोकी रिवर लॉगिंग एसोसिएशन के जिला प्रबंधक के रूप में कार्यरत थे। एसोसिएशन ने हमें ओउलुजोकी नदी के किनारे एक घर किराए पर दिया था। मेरे परिवार में मेरे पिता, मेरी माँ, जो एक गृहिणी थीं, और मुझसे बड़ी तीन बहनें थीं। उस समय, सभी ग्रामीण इलाकों में बिजली नहीं थी, इसलिए हम शाम को तेल के दीयों की रोशनी में गुजारा करते थे।
जब मैं पाँच साल का था, तो मेरा परिवार ओउलु चला गया, जहाँ हम कोस्कीकेस्कस में एक अपार्टमेंट बिल्डिंग में रहते थे, जहाँ से नदी का सुंदर दृश्य दिखाई देता था। अगले वर्ष मैंने तुइरा प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाई शुरू की। मेरी बहनों ने ओउलु गर्ल्स हाई स्कूल में पढ़ाई शुरू की। मेरी माँ घर पर ही रहती थीं और काम नहीं करती थीं। हमारे परिवार में हेली नाम की एक फिनिश स्पिट्ज़ भी थी। जीवन बहुत शांतिपूर्ण और पारिवारिक था। कोई समस्या नहीं थी।
मेरे स्कूल के साल अच्छे बीते और मैं अपनी कक्षा में सबसे अच्छे छात्रों में से एक था। मैं पुस्तकालय का भी एक उत्साही उपयोगकर्ता बन गया। मैंने युवाओं के लिए बहुत सी साहसिक पुस्तकें उधार लीं। जब मैं नौ साल का था, तब मेरी पसंदीदा पुस्तकें एलेक्जेंडर डुमास की "द थ्री मस्किटियर्स" और "द काउंट ऑफ़ मोंटे क्रिस्टो" थीं। आठ साल की उम्र में, मैंने कंसर्टमास्टर जोर्मा निसुला के मार्गदर्शन में वायलिन बजाना सीखना शुरू किया। वायलिन बजाना मेरा प्रिय शौक और बाद में पेशा बन गया।
जब मैं 11 साल का था, मेरा परिवार हेलसिंकी चला गया। मेरे पिता को केमिजोकी ओय में तैरते उपकरणों के डिज़ाइनर की नौकरी मिल गई। मैंने हेलसिंकी के सेकेंड लिसेयुम में माध्यमिक विद्यालय शुरू किया और प्रोफेसर अंजा इग्नाटियस के अधीन सिबेलियस अकादमी में वायलिन सीखना शुरू किया। मैंने स्कूल में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। मेरे पिता ने हमें विश्व साहित्य पर पुस्तकों की एक श्रृंखला खरीद कर दी थी, और मैं उत्सुकता से उन्हें पढ़ने लगा। स्कूल, किताबें और वायलिन बजाने में मेरा पूरा समय बीत जाता था। मैंने पैरिश कैंटर के मार्गदर्शन में एक चौकड़ी (दो वायलिन, सेलो और पियानो) भी बजाई। उस समय मेरी पसंदीदा किताब थी

गोएथे का फॉस्ट। मेरे माता-पिता ज़्यादा धार्मिक नहीं थे, लेकिन हमारा पूरा परिवार लूथरन चर्च से जुड़ा था।
धर्म मेरे लिए ज़्यादा मायने नहीं रखता था। हालाँकि, मैं 15 साल की उम्र में कन्फ़र्मेशन कैंप में गया, हालाँकि मैं पहले ही नास्तिक बन चुका था: अब मुझे ईश्वर में विश्वास नहीं था। कन्फ़र्मेशन कैंप के अंत में, कुछ असामान्य हुआ। चर्च ने सभी प्रतिभागियों को एक बाइबल दी, जिसके पहले पन्ने पर पादरी ने बाइबल से एक आयत लिखी थी, जो "जीवन भर आपकी यात्रा के लिए एक यादगार वाक्यांश" थी। मैंने अपनी बाइबल में पादरी द्वारा लिखे गए उस अंश (2 तीमुथियुस 2:12-13) को ढूँढ़ना शुरू किया। मुझे वह नहीं मिला। पादरी को भी नहीं मिला, क्योंकि उस अंश वाला पन्ना मेरी बाइबल से प्रिंटिंग हाउस में छूट गया था। कोई और पन्ना गायब नहीं था। बाइबल में वह अंश इस प्रकार था, "यदि हम उसका इन्कार करें, तो वह भी हमारा इन्कार करेगा; यदि हम विश्वासघाती हों, तो भी वह विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह स्वयं का इन्कार नहीं कर सकता।" मुझे एक और बाइबल मिली। बाद में, 27 साल की उम्र में, मैंने उस घटना का विश्लेषण किया और निष्कर्ष निकाला कि यह मेरे नास्तिक होने के बारे में ईश्वर की ओर से एक चेतावनी थी।
मिडिल स्कूल खत्म हुआ और मैंने हाई स्कूल शुरू किया। हाई स्कूल शुरू में ही खत्म हो गया, क्योंकि मुझे स्कूल से निकाल दिया गया था। मुझ पर स्कूल को उड़ाने की कोशिश करने का आरोप लगाया गया था। रसायन विज्ञान की कक्षा में मेरी मेज़ पर रखा बन-सेन बर्नर जलता रह गया था, और पूरी कक्षा गैस से भर गई थी। अगर सफाईकर्मी मुँह में सिगरेट लेकर कक्षा में घुस जाता, तो पूरा स्कूल फट जाता। इसके अलावा, यौवन के कारण मेरा व्यवहार बदल गया था, क्योंकि मुझे किसी भी नियम की परवाह नहीं थी और मैं हर बात का विरोध करता था। मेरे पिता के साथ मेरी बहस भी होती थी।
हालाँकि, मैंने सिबेलियस अकादमी में वायलिन सीखना जारी रखा। फिर मैंने एक निजी छात्र के रूप में एक शाम के स्कूल में दाखिला लिया, चार महीने में हाई स्कूल पूरा किया और स्नातक की उपाधि प्राप्त की। मुझे मनोविज्ञान में रुचि थी और मैंने इसे पढ़ने का फैसला किया। मैंने हेलसिंकी विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की प्रवेश परीक्षा दी और 200 से ज़्यादा आवेदकों में से सबसे अच्छा परिणाम प्राप्त किया। मैंने हेलसिंकी विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की पढ़ाई शुरू की। मेरी मुलाक़ात विश्वविद्यालय में भाषा विज्ञान की पढ़ाई कर रही एक लड़की से हुई और हम डेटिंग करने लगे। फिर मैं

सेना में भर्ती हो गया। मैंने अपनी सैन्य सेवा शुरू की और गैर-कमीशन अधिकारी प्रशिक्षण के लिए चुना गया।
शुरू में तो सैन्य सेवा अच्छी रही, लेकिन फिर जब मुझे सूचना अधिकारी की नौकरी नहीं मिली तो मैं नाराज़ हो गया। मनोविज्ञान के छात्र के रूप में, मैंने सेना से बाहर निकलने का एक बहाना बनाया: मैंने कहा कि मेरी सगाई टूटने के बाद मैं अवसाद से पीड़ित हूँ और खुद को बीमार बताया, लेकिन यह सेना से बाहर निकलने का एक तरीका था; वास्तव में, कोई सगाई नहीं टूटी थी। मुझे हेलसिंकी के एक मनोरोग वार्ड में भेज दिया गया, जहाँ मैंने मानसिक रूप से बीमार होने का नाटक किया और मुझे मानसिक रूप से बीमार बताया गया। निदान में लिखा था: "बिना वरिष्ठों के पद पर नियुक्त किया जाना।" सेना में ऐसा केवल एक ही पद होता है: कमांडर-इन-चीफ! मुझे सेना से छुट्टी मिल गई और मैंने विश्वविद्यालय में अपनी मनोविज्ञान की पढ़ाई फिर से शुरू कर दी।
मैंने मनोविज्ञान की अनुमोदन परीक्षा पास कर ली, जिसके परिणामस्वरूप मेरे उत्तर मनोविज्ञान विभाग के गलियारे में मॉडल उत्तरों के रूप में प्रदर्शित किए गए। मेरी पढ़ाई अच्छी तरह आगे बढ़ी और मैंने मनोविज्ञान में कम लाउड (उत्कृष्ट ज्ञान के लिए अतिरिक्त विशिष्टता के साथ), सामाजिक मनोविज्ञान में कम लाउड (उत्कृष्ट ज्ञान के लिए अतिरिक्त विशिष्टता के साथ), और समाजशास्त्र में अप्रूबचर (अनुमोदक) की डिग्री हासिल की और मानविकी में स्नातक की डिग्री हासिल की।
मैंने मास्टर डिग्री के लिए अपनी पढ़ाई जारी रखी, लेकिन चीज़ें जटिल होने लगीं। मैंने एक पत्रिका में पढ़ा कि फिनलैंड में अत्यधिक बुद्धिमान लोगों के लिए एक संघ, मेन्सा, की स्थापना हुई है। मैं खुद को बहुत बुद्धिमान मानता था, इसलिए मैंने मेन्सा द्वारा आयोजित बुद्धि परीक्षण दिया। मैंने परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन किया और मेरा आईक्यू 145 था। मेन्सा के लिए सीमा 130 आईक्यू थी। मुझे मेन्सा के सदस्य के रूप में स्वीकार कर लिया गया। अगले वर्ष, मैं मेन्सा फिनलैंड का सचिव चुना गया।
मेन्सा का मेरे बौद्धिक विकास पर गहरा प्रभाव पड़ा। मेन्सा में मेरी मुलाकात कई दिलचस्प हस्तियों से हुई। मेन्सा में मैंने जो प्रस्तुतियाँ सुनीं, वे दिलचस्प थीं और अक्सर मुख्यधारा के विज्ञान से अलग होती थीं। मेन्सा के कई सदस्यों से मेरी दोस्ती हो गई। लेकिन तभी कुछ चौंकाने वाली घटना घटी।

मुझे राजनीति में रुचि हो गई थी, और छात्र समूहों में एक प्रबल राजनीतिक जागृति चल रही थी: उग्र सक्रियता। यह विशुद्ध रूप से मार्क्सवाद-लेनिनवाद पर आधारित एक आंदोलन था, जिसका नेतृत्व सांसद ताइस्तो सिनिसालो कर रहे थे। मैंने खुद को मार्क्सवादी साहित्य से परिचित कराया और महसूस किया कि आखिरकार मुझे दुनिया के लिए एक तार्किक व्याख्या मिल गई है। मैं पोर्वू में रहता था, और मेरी पत्नी पोर्वू सह-शिक्षा विद्यालय में व्याख्याता थीं। मैंने एक मार्क्सवादी युवा समूह की स्थापना की, जिसमें पोर्वू के दर्जनों युवा शामिल हुए। मैंने एक मार्क्सवादी-लेनिनवादी अध्ययन मंडल भी चलाया, जिसमें अन्य लोगों के अलावा बड़ी कंपनी नेस्टे ओय के कर्मचारी भी शामिल हुए। बाद में, मेरे अध्ययन मंडल के छात्रों ने नेस्टे में एक बड़ी हड़ताल का आयोजन किया, और मैं अपने शिक्षण के परिणामों से प्रसन्न था।
मैं फ़िनलैंड की कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गया और एसकेपी की पोर्वू क्षेत्रीय समिति का सचिव चुना गया। मैंने हेलसिंकी विश्वविद्यालय में मार्क्सवादी संचार पर एक व्याख्यान दिया। मुझे मॉस्को के पार्टी स्कूल में पढ़ने का मौका भी मिला, लेकिन फिर कुछ ऐसा हुआ जिसने पल भर में मेरे पूरे विश्वदृष्टिकोण को बदल दिया। मैं एक कट्टर नास्तिक और भौतिकवादी बन गया था और धर्मों को एक मानसिक विकार से ज़्यादा कुछ नहीं मानता था, लेकिन अब मैंने कुछ ऐसा अनुभव किया जिसने दुनिया के प्रति मेरे नज़रिए को पूरी तरह से बदल दिया।
21 जुलाई, 1973 को सुबह 4:56 बजे (फिनिश समय), मैं अपने बिस्तर पर उठा और तुरंत सचेत और पूर्णतः आश्वस्त हो गया कि 1. ईश्वर का अस्तित्व है, 2. बाइबिल में एक गुप्त कोड है, और 3. मैं "पृथ्वी और चंद्रमा का राजा" हूँ। मैंने अपनी दाहिनी आँख से देखा कि बाइबिल में एक आंतरिक अर्थ छिपा है जो रहस्यों को उजागर करता है। मैंने कैलेंडर देखा और पाया कि 21 जुलाई, 1969 को सुबह 4:56 बजे चाँद पर पहले इंसान के कदम रखने की सालगिरह थी। हालाँकि, मुझे एक बात का एहसास हुआ: अब से, मैं ईश्वर के मार्गदर्शन में था। मैंने समझा कि "पृथ्वी और चंद्रमा का राजा" किसी आध्यात्मिक गुण का प्रतीक है।
अब मुझे वह दिन याद आ रहा है, 21 जुलाई, 1969। मेरे पिता टेलीविजन पर चाँद पर उतरते हुए देख रहे थे और उन्होंने मुझे आवाज़ लगाई, "आओ और चाँद की सतह पर कदम रखने वाले पहले व्यक्ति को देखो।" मैं अपने कमरे में लेटा हुआ था, अपनी बाँहें या हाथ हिलाने में असमर्थ था।

मेरे कमरे में बिजली का कंपन सा हुआ। मैं कई मिनट तक वहीं पड़ा रहा, हिलने-डुलने में पूरी तरह असमर्थ। यह घटना मेरे लिए एक रहस्य बनी रही।
मैं एक नास्तिक से ईश्वर में विश्वास करने वाला बन गया था, पल भर में। मैंने साम्यवाद को पीछे छोड़ दिया और धर्मों और रहस्यवाद का अध्ययन करना शुरू कर दिया। यहीं से मेरे दशकों लंबे पुनर्जन्म की प्रक्रिया की शुरुआत हुई।

सत्य की खोज और प्राप्ति

अपने आध्यात्मिक अनुभव के बाद, मैंने इस घटना का स्पष्टीकरण खोजने के लिए धर्मों, रहस्यवाद और परामनोवैज्ञानिक साहित्य का अध्ययन शुरू किया। अगले दो वर्षों में, मैंने परामनोविज्ञान, अध्यात्मवाद, ब्रह्मविद्या, मानवविद्या, ध्यान, योग, ज्योतिष, ज़ेन, पूर्वी धर्मों और अन्य रहस्यमय विषयों पर बड़ी संख्या में पुस्तकें पढ़ीं। हालाँकि, मुझे अपने अनुभव का कोई स्पष्टीकरण नहीं मिला। परामनोवैज्ञानिक और अन्य रहस्यवादी साहित्य एक भ्रामक क्षेत्र साबित हुआ, जो विरोधाभासों और सरासर धोखाधड़ी से भरा था। सत्य के सच्चे खोजी के लिए, व्यावसायिक "परा-मनोवैज्ञानिक" साहित्य और पत्रिकाएँ मददगार से ज़्यादा हानिकारक हैं।
जुलाई 1975 में, मुझे इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग की पुस्तक "स्वर्ग, उसके चमत्कार और नर्क" मिली। जैसे ही मैंने पुस्तक खोली, मुझे दो साल पहले जैसी ही अनुभूति हुई: मेरी आंतरिक दृष्टि फिर से खुल गई। अब मुझे पता था कि मुझे वह मिल गया है जिसकी मुझे तलाश थी। अगले कुछ महीनों में, मैंने स्वीडनबॉर्ग की लगभग सभी रचनाएँ प्राप्त कर लीं और उन्हें पढ़ने का भरपूर आनंद लिया। अपनी विस्तृत रचनाओं में, इस 18वीं सदी के दार्शनिक ने उस घटना की पूरी तरह से व्याख्या की है जिसका मैंने बाइबल के गुप्त कोड के साथ अनुभव किया था, जिसे वे "शब्द का आंतरिक अर्थ" कहते हैं और जो उनके धर्मशास्त्र की आधारशिलाओं में से एक है। उनकी रचनाओं में, मुझे मानव बुद्धि की मौलिक प्रकृति की एक संतोषजनक व्याख्या भी मिली।
अकादमिक दर्शन के अंधकार से स्वीडनबॉर्ग की रचनाओं के प्रकाश में उभरना सचमुच स्वर्गीय था। मैं बस

मुझे आश्चर्य हुआ कि उच्च शिक्षा में स्वीडनबॉर्ग का दर्शन क्यों नहीं पढ़ाया जाता। दर्शन, मनोविज्ञान और धर्मशास्त्र में, स्वीडनबॉर्ग के विचारों के बारे में एक भी बात जाने बिना डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त करना संभव है। इसका कारण स्वीडनबॉर्ग के कार्यों से स्पष्ट हो गया। स्वीडनबॉर्ग भविष्यवाणी करते हैं कि बहुत कम लोग ही उनके कार्यों को समझ पाएँगे। इसका कारण यह है कि शैक्षणिक जगत में लोग सत्य की खोज केवल अपने लिए नहीं, बल्कि केवल अपने लाभ के लिए, सम्मान, प्रसिद्धि या किसी अन्य स्वार्थी लाभ के लिए करते हैं। स्वीडनबॉर्ग के अनुसार, आध्यात्मिक विकास के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक यह है कि लोग अपने स्वार्थी उद्देश्यों के आधार पर सत्य की खोज नहीं कर सकते। इसी कारण से, विश्वविद्यालय दार्शनिक अंधकार के केंद्र बन गए हैं।

स्वीडनबॉर्ग को जानने से मेरे पिछले विश्वदृष्टिकोण में आमूलचूल परिवर्तन आया। उनके व्यापक कार्यों में, मुझे उन सभी दार्शनिक प्रश्नों के उत्तर मिले जिन पर मैं विचार कर रहा था। इसके अलावा, मुझे एक प्रकार की सामान्य विधि भी मिली जिसका उपयोग सभी मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक और धार्मिक समस्याओं को हल करने के लिए किया जा सकता है। यह सामान्य विधि, वास्तव में, ईसाई धर्म के मूल सिद्धांतों में से एक है: "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले" (मत्ती 16:24)। हालाँकि, स्वीडनबॉर्ग इस सिद्धांत की व्याख्या आधुनिक ईसाई धर्म से बिल्कुल अलग तरीके से करते हैं। इस अंश में, स्वीडनबॉर्ग मानव पुनर्जन्म की प्रक्रिया का उल्लेख करते हैं, जिसमें व्यक्ति परीक्षणों या आध्यात्मिक प्रलोभनों (क्रूस प्रलोभन का प्रतीक है) और उसके बाद के पश्चाताप के माध्यम से अपने पिछले जीवन की बुराइयों और अन्यायों से शुद्ध हो जाता है और एक ऐसे आध्यात्मिक प्राणी के रूप में विकसित होता है जो पुनर्जन्म न पाए हुए व्यक्ति से कई गुना अधिक बुद्धिमान होता है। पुनर्जन्म न लेने वालों के विपरीत, पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति को अपने सभी प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं। पुनर्जन्म के बिना, दार्शनिक और धार्मिक समाधान स्पष्ट नहीं होते। केवल पश्चाताप द्वारा प्राप्त ज्ञानोदय ही धार्मिक और दार्शनिक सत्यों को उनके वास्तविक प्रकाश में प्रकट करता है।

बचपन में ही, लूथरन चर्च के प्रति मेरे मन में एक सहज संदेह था। जब मैंने विश्वविद्यालय में पढ़ाई शुरू की,

मैंने चर्च छोड़ दिया और कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गया, क्योंकि उस समय मेरा मानना था कि सामाजिक समस्याएँ मुख्यतः पूँजीवाद के कारण होती हैं। स्वीडनबॉर्ग की रचनाओं को पढ़ने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि मैं सच्चे ईसाई धर्म के प्रति नहीं, बल्कि लूथरनवाद जैसे अंधविश्वास पर आधारित ईसाई धर्म के प्रति संशयी था। लूथरन बिशप के पुत्र, स्वीडनबॉर्ग, लूथर की शिक्षाओं की त्रुटियों को उनकी जड़ों तक उजागर करते हैं।
स्वीडनबॉर्ग के अनुसार, लूथरन सिद्धांत कि केवल विश्वास ही मनुष्य को उचित ठहराता है, आध्यात्मिक-मूर्खता की ओर ले जाता है, क्योंकि अंधविश्वास के साथ, मनुष्य किसी भी चीज़ को सच या झूठ मान सकता है। एक बुद्धिमान व्यक्ति वह होता है जो किसी भी चीज़ को तब तक सच नहीं मानता जब तक कि वह किसी तरह यह सुनिश्चित न कर ले कि वह सच है। यह अंधविश्वास ही है जिसने कई तर्कहीन धर्मों और दार्शनिक विचार प्रणालियों को जन्म दिया है। अंधविश्वास केवल धर्मों की विशेषता नहीं है; आज के कई वैज्ञानिक सिद्धांत भी अंधविश्वासों पर आधारित हैं, जिनके इर्द-गिर्द एक तार्किक रूप से सही ढाँचा बनाया गया है, जिसे बाद में वैज्ञानिक संघों में सत्य के रूप में पुष्टि की गई है, बिल्कुल किसी चर्च परिषद की तरह। अपने धर्मशास्त्र में, स्वीडनबॉर्ग अंधविश्वास के स्थान पर प्रबुद्ध समझ—बुद्धि—को स्थापित करते हैं: मनुष्य सर्वज्ञ ईश्वर की छवि तभी बनते हैं जब वे अपनी समझ के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम होते हैं।
इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग अपने समय के सबसे सम्मानित वैज्ञानिकों में से एक थे। उन्होंने अपने युग के लगभग सभी वैज्ञानिक ज्ञान में महारत हासिल की, और उनके विशाल साहित्यिक कार्यों में लैटिन में लिखी गई लगभग चार मीटर लंबी पुस्तकें शामिल हैं। वे विज्ञान के सभी क्षेत्रों में अपने समय से आगे थे। स्वीडनबॉर्ग एक प्राकृतिक वैज्ञानिक से मानव शरीर के शोधकर्ता बने, फिर आत्मा और आध्यात्मिक जगत के शोधकर्ता के रूप में विकसित हुए, और अंततः धर्मशास्त्र में पहुँचे। उनके व्यापक धर्मशास्त्रीय कार्य दर्शन, मनोविज्ञान, परामनोविज्ञान और धर्मशास्त्र का खजाना हैं। स्वीडनबॉर्ग का धर्मशास्त्र शब्द के सर्वोच्च अर्थ में विज्ञान है। इसे समझने के लिए अंधविश्वास की ज़रूरत नहीं है, बल्कि यह उन लोगों के लिए खुला है जो सत्य के लिए सत्य से प्रेम करते हैं। बाइबल में, स्वीडनबॉर्ग के धर्मशास्त्रीय कार्य "सनातन सुसमाचार" हैं।

जो सदा बना रहेगा (प्रकाशितवाक्य 14:6)। ईश्वर स्वयं स्वीडनबॉर्ग के सामने प्रकट हुए और उन्हें अपनी धार्मिक-तार्किक रचनाएँ लिखने का निर्देश दिया। ईश्वर ने स्वीडनबॉर्ग का मन भी खोल दिया ताकि वह आत्माओं और स्वर्गदूतों से सीधे संवाद कर सकें। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिकों ने स्वीडनबॉर्ग का आईक्यू 205 होने का अनुमान लगाया। एक वैज्ञानिक के रूप में स्वीडनबॉर्ग की प्रतिभा उनकी विधियों में निहित है। आज का प्रचलित विज्ञान दर्शन, जो नास्तिकता और भौतिकवाद में निहित है, मनुष्यों के लिए महत्वपूर्ण कई घटनाओं को वैज्ञानिक अनुसंधान से बाहर कर देता है और इस विरोधाभास को जन्म देता है कि हमारे पास जितना अधिक ज्ञान होता है, हमारा विश्वदृष्टिकोण उतना ही विकृत होता जाता है। स्वीडनबॉर्ग के पास विज्ञान के दर्शन के बारे में आधुनिक लोगों से कहने के लिए महत्वपूर्ण बातें होंगी। मेरी राय में, उनकी कुछ कठिन विधियाँ—आकृति विज्ञान, श्रेणी और डिग्री, प्रभाव, और प्रतिनिधित्व और पत्राचार—विज्ञान के दर्शन के लिए एक क्रांतिकारी महत्व रखतीं। स्वीडनबॉर्ग ने स्वयं अपनी विधियों के महत्व की तुलना भौतिकी के विकास में अतिसूक्ष्म कलन के महत्व से की थी। दुर्भाग्य से, आज शायद ही कोई इन विधियों से परिचित हो।

हालाँकि, स्वीडनबॉर्ग शायद मृतकों से संवाद करने की अपनी क्षमता के लिए सबसे ज़्यादा जाने जाते हैं - यानी, जो आध्यात्मिक क्षेत्र में चले गए हैं। वे कई प्रसिद्ध दिवंगत व्यक्तियों के संपर्क में थे। वे अक्सर मार्टिन लूथर (मृत्यु 1546) सहित अन्य लोगों से संवाद करते थे। आधुनिक लूथरन के लिए यह जानना दिलचस्प होगा कि लूथर ने अपनी शारीरिक मृत्यु के बाद क्या सोचा। स्वीडनबॉर्ग के अनुसार, लूथर ने स्वयं अपनी शिक्षाओं का त्याग किया, उन्हें गलत माना, और आश्चर्य व्यक्त किया कि एक व्यक्ति की गलती इतने सारे लोगों को कैसे गुमराह कर सकती है। स्वीडनबॉर्ग की मृतकों से संवाद करने की क्षमता के कई विश्वसनीय समकालीन विवरण उपलब्ध हैं। ईश्वर ने स्वयं उनके लिए स्वर्ग और नर्क के द्वार खोल दिए थे।

धर्मशास्त्रीय विषय मानव मन के सर्वोच्च क्षेत्र से संबंधित हैं। यदि वहाँ अंधकार व्याप्त है, तो अन्य सभी क्षेत्र भी अंधकारमय होंगे, भले ही बाहरी रूप कुछ और ही संकेत देते हों। कार्य

धर्म का उद्देश्य इस सर्वोच्च क्षेत्र को प्रकाशित करना है, यही कारण है कि सच्चा धर्म मानवता का सबसे अनमोल रत्न है। दूसरी ओर, झूठा धर्म दुनिया की किसी भी चीज़ से ज़्यादा बुराई और अधर्म को जन्म देता है। धर्मों की मदद से ही आज सबसे बड़ा छल और क्रूरता का अभ्यास किया जाता है। मानवता के लिए धर्म के इसी केंद्रीय महत्व के कारण ही ईसा मसीह—जीवित ईश्वर के अवतार—ने अपनी शिक्षाओं में राजनीतिक या आर्थिक मुद्दों पर चर्चा नहीं की, बल्कि यहूदी चर्च के अन्याय की ओर इशारा किया और पृथ्वी पर एक नए चर्च—ईसाई चर्च—की स्थापना की।

स्वीडनबॉर्ग कई लोगों को एक बहुत ही कठोर न्यायाधीश लग सकते हैं, क्योंकि उनके अनुसार, जिस व्यक्ति का पुनर्जन्म नहीं हुआ है, वह अभी तक एक वास्तविक मानव नहीं है, बल्कि एक ऐसा प्राणी है जो बोलने और सोचने में सक्षम है। इस अर्थ में, हमारे ग्रह पर अधिकांश लोग संभावित रूप से मानव नहीं हैं: उनके पास मानव के रूप में विकसित होने का अवसर है। लेकिन स्वीडनबॉर्ग एक ऐसे तरीके का भी वर्णन करते हैं जिससे प्रत्येक व्यक्ति का पुनर्जन्म हो सकता है, अर्थात, एक सच्चे मानव के रूप में विकसित हो सकता है। यह पुनर्जन्म एक धीमी प्रक्रिया है, शारीरिक विकास के समान, जिसमें व्यक्ति अपने सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता की छवि में, दिन-प्रतिदिन आध्यात्मिक रूप से अधिकाधिक बुद्धिमान होता जाता है। पुनर्जन्म लेने वाले वंशजों की तथाकथित वंशानुगत बुराई प्रत्येक पीढ़ी के साथ कम होती जाती है, और वे एक नए प्रकार के मानव, होमो स्पिरिचुअलिस (आध्यात्मिक मनुष्य) का निर्माण करते हैं, जो अब दूसरों के साथ बुरा नहीं करता। यह क्रांतियों की एक सच्ची क्रांति है (यशायाह 65:17-25)।

इस लेख के लेखक का मानना है कि नए यरूशलेम के धर्मशास्त्र में एक नए प्रकार के मानव के निर्माण की संभावना शामिल है। हमारे समय की समस्याएँ इतनी विकराल हैं कि आधुनिक मनुष्य उनका समाधान करने में असमर्थ है; इसके बजाय, हमें एक नए, अधिक विकसित मानव की आवश्यकता है जिसने ईश्वरीय आज्ञाओं, दस आज्ञाओं को आत्मसात कर लिया हो। स्वीडनबॉर्ग किसी व्यक्ति की निंदा नहीं करते, बल्कि केवल कुछ विश्वास प्रणालियों की त्रुटियों की ओर इशारा करते हैं। आजकल, दूसरों के विश्वासों के प्रति सम्मान पर ज़ोर दिया जाता है। यह बात इस मायने में बिल्कुल सही है कि किसी का भी मूल्यांकन उसके विश्वास के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन यह सही नहीं है।

किसी बुद्धिमान व्यक्ति के लिए किसी ऐसी विश्वास प्रणाली का सम्मान करना पूरी तरह से व्यर्थ है जिसे वह जानता है कि वह झूठी है। इस संबंध में, धार्मिक सहिष्णुता—जो निश्चित रूप से व्यक्ति के संबंध में एक अच्छी बात है—को इतना बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया है कि यह धार्मिक सिद्धांतों पर भी लागू होता है। बेशक, किसी के धर्म का उपहास नहीं किया जाना चाहिए, लेकिन धार्मिक सिद्धांतों की जाँच और आलोचना की जा सकती है, बशर्ते ऐसी आलोचना केवल सत्य को उजागर करने के उद्देश्य से की जाए। आख़िरकार, अन्य विज्ञान झूठी जानकारी या धोखाधड़ी को स्वीकार नहीं करते, तो धर्मशास्त्र क्यों करे?

मैंने स्वीडनबॉर्ग से जो कुछ भी सीखा है, उसे "संवाद के विज्ञान" के दृष्टिकोण से लिखा है। इसी कारण से, मैंने आज के प्रचलित भौतिकवादी और नास्तिक विज्ञान दर्शन के दृष्टिकोण से किए गए किसी भी स्वीडनबॉर्ग अध्ययन को ध्यान में नहीं रखा है।

यदि कोई व्यक्ति उपलब्ध सभी "परामनोवैज्ञानिक" और "रहस्यवादी" साहित्य पढ़ भी ले, तो भी उसकी आध्यात्मिक बुद्धि में वृद्धि नहीं होगी। केवल उन प्रलोभनों के आगे झुककर जो उनकी अपनी बुराई को प्रकट करते हैं, वे पश्चाताप कर सकते हैं, ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, और असीम आध्यात्मिक विकास कर सकते हैं।

चूँकि हमारे ग्रह पर अधिकांश लोग गहरे भौतिकवाद और कामुकता में डूबे हुए हैं, इसलिए इस पुस्तक में प्रस्तुत कई सत्य आलोचनात्मक लग सकते हैं। हालाँकि, ये आलोचनात्मक सत्य एक अच्छे उद्देश्य की पूर्ति करते हैं: पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति को उन गलत मान्यताओं से शुद्ध करना जो उसके आध्यात्मिक विकास में बाधा डालती हैं। इस पुस्तक पर कई ओर से हमला किया जाएगा। यह बिल्कुल समझ में आता है, क्योंकि सत्य बुराई और असत्य को प्रकट करता है, और बुराई और असत्य स्वाभाविक रूप से ऐसा नहीं चाहते (यूहन्ना 3:20)। स्वीडन-बोर्ग के माध्यम से आया धर्मशास्त्र और दर्शन हमारे ग्रह पर अब तक आया सर्वोच्च आध्यात्मिक ज्ञान है (प्रकाशितवाक्य 14:6)। यह मनुष्य की स्वार्थी बुद्धि पर आधारित तर्क से मुक्त है और ईश्वर द्वारा प्रकाशित बुद्धि पर आधारित है। अन्य विज्ञानों को इसके सामने झुकना होगा। होमो सेपियन्स प्रजाति अपनी यात्रा के अंत तक पहुँच चुकी है और इस ग्रह को नहीं बचा सकती। एक पुनर्जन्म आध्यात्मिक मानव—होमो

स्पिरिचुअलिस—होमो सेपियन्स प्रजाति द्वारा किए गए विनाश और बुराई की मरम्मत के लिए आवश्यक है।

स्वीडनबॉर्ग के माध्यम से आया ईसाई धर्म, जिसे "सच्चा ईसाई धर्म" कहा जा सकता है, का हमारे समय के विभिन्न ईसाई संप्रदायों या संप्रदायों से लगभग कोई लेना-देना नहीं है। यह नया, शुद्ध ईसाई धर्म अंधविश्वास पर नहीं, बल्कि "प्रबुद्ध समझ" पर आधारित है।

स्वीडनबॉर्ग के माध्यम से आए धर्म की खोज बहुत कम लोगों ने की है, लेकिन यहाँ मैं उन लोगों की कुछ टिप्पणियाँ उद्धृत कर रहा हूँ जिन्होंने की हैं।

स्वीडनबॉर्ग की रचनाओं की खोज स्वीडिश लेखक ऑगस्ट स्ट्रिंडबर्ग ने अपने जीवन के अंतिम समय में की थी। वे लिखते हैं: "स्वीडनबॉर्ग की रचनाएँ असीम रूप से विशाल हैं, और उन्होंने मेरे सभी प्रश्नों के उत्तर प्रदान किए हैं, चाहे वे कितने भी कठिन क्यों न रहे हों" (लीजेंड्स)। ब्रिटिश कवि कोवेंट्री पैटमोर बिल्कुल सही कहते हैं, "हज़ार सालों से हमारे पास सिर्फ़ एक मनोवैज्ञानिक और मानव शरीरक्रिया विज्ञान का विशेषज्ञ रहा है—कम से कम एक जिसने अपने ज्ञान को प्रकाशित किया है—और वह हैं स्वीडनबॉर्ग" (जी. ट्रो-ब्रिज: स्वीडनबॉर्ग, जीवन और शिक्षण)।

होनोर डी बाल्ज़ाक के उपन्यास लुई लैम्बर्ट का मुख्य पात्र स्वीडनबॉर्ग के धर्मशास्त्र का वर्णन इस प्रकार करता है: "उनका धर्मशास्त्र उदात्त है, और उनका धर्म ही एकमात्र ऐसा धर्म है जिसे एक उच्च विकसित मन स्वीकार कर सकता है। केवल वही मनुष्य को ईश्वर के साथ एकाकार करने में सक्षम है, और वही ईश्वर के प्रति प्यास जगाता है। वह ईश्वरीय महिमा को उन बंधनों से मुक्त करता है जिनमें विभिन्न धर्मों ने उसे जकड़ रखा है।" राल्फ इमर्सन ने अपनी रचना ग्रेट मेन में स्वीडनबॉर्ग का सटीक वर्णन किया है: "वह साहित्य के महापुरुषों और महापुरुषों में से एक हैं, और सामान्य विद्वानों के वैज्ञानिक समुदाय भी उनकी महानता को मापने में असमर्थ हैं। उनकी विशाल उपस्थिति पूरे विश्वविद्यालय के संकायों को अभिभूत कर सकती है।" स्वीडनबॉर्ग स्वयं अपनी कृति स्वर्ग और नर्क (सं. 603) में लिखते हैं: "इस पुस्तक में स्वर्ग, आत्माओं की दुनिया और नर्क के बारे में जो बातें बताई गई हैं, वे उन लोगों के लिए धुंधली होंगी जो आध्यात्मिक सत्य जानने की इच्छा नहीं रखते, लेकिन उन लोगों के लिए उज्ज्वल होंगी जिनमें ऐसी इच्छा है। वे उन लोगों के लिए सबसे स्पष्ट होंगी जो सत्य के लिए सत्य को प्राथमिकता देते हैं, अर्थात, जो सत्य से प्रेम करते हैं क्योंकि यह सत्य है।

क्योंकि जिसे प्रेम किया जाता है, वह एक उज्ज्वल विचार के रूप में मन में आता है, विशेष रूप से जब सत्य को प्रेम किया जाता है, क्योंकि सभी सत्य प्रकाश हैं।"
अल्फ्रेड एक्टन (एम.ए., डी. थ.) ने स्वीडनबॉर्ग के महत्व को सबसे अच्छी तरह समझा। वे स्वीडनबॉर्ग के कार्यों के महत्व का वर्णन इस प्रकार करते हैं (विक्टोरिया हॉल, लंदन में व्याख्यान, 21 जून, 1949):
“आज के ईसाई जगत का धर्मशास्त्र विज्ञान के हमलों के सामने लगातार पीछे हट रहा है, और एक बार जब यह सुरक्षित दूरी पर पहुँच जाता है, तो इसे और पीछे हटना पड़ता है, क्योंकि यह विज्ञान के लगातार बढ़ते हमलों का सामना करने में असमर्थ है। लेकिन इस रहस्योद्घाटन में, हमारे पास एक ऐसा धर्मशास्त्र है जिसके सामने विज्ञान को झुकना होगा, एक ऐसा धर्मशास्त्र जिसके बारे में यह सही कहा जा सकता है कि 'अब समझ के माध्यम से विश्वास के रहस्यों को भेदना अनुमत है।'

स्वीडनबॉर्ग की धर्मशास्त्रीय रचनाएँ प्रभु के द्वितीय आगमन का प्रतीक हैं। यह तब हुआ जब वचन का आंतरिक अर्थ प्रकट हुआ, जिसका अर्थ स्वीडनबॉर्ग अपनी रचनाओं में प्रकट करते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि प्रभु का द्वितीय आगमन एक वैज्ञानिक के माध्यम से हुआ। प्रारंभिक ईसाई चर्च के अनुयायी मछुआरे थे। हालाँकि, आधुनिक युग "विज्ञान का युग" है जिसमें मानवता ने अभूतपूर्व वैज्ञानिक प्रगति हासिल की है, भले ही विज्ञान का उपयोग नास्तिकता का बचाव करने के लिए किया जाता है।
यह ध्यान देने योग्य है कि प्रभु का द्वितीय आगमन एक स्वीडिश वैज्ञानिक की कलम के माध्यम से हुआ, और स्वीडनबॉर्ग की रचनाएँ "सनातन सुसमाचार" (प्रकाशितवाक्य 14:6) हैं। यह हमारे ग्रह पर मनुष्य और ईश्वर के बीच शाश्वत वाचा है। कैथोलिक चर्च और सुधारवादी चर्चों ने स्वीडनबॉर्ग के कार्यों और इस प्रकार नए चर्च को अस्वीकार कर दिया, जो कि यीशु की हत्या के समान एक कृत्य है, अर्थात, विश्व इतिहास की सबसे बड़ी भूल। अब जन्म लेने वाले नए चर्च के सदस्यों को विरासत में मिली बुराई से शुद्ध किया जा रहा है, और वे धीरे-धीरे एक नए चर्च में बदल रहे हैं। एक आध्यात्मिक प्रकार जो इस ग्रह पर विजय प्राप्त करेगा।
मानव की यह नई प्रजाति - होमो स्पिरिचुअलिस - होमो सेपियंस से अधिक बुद्धिमान है, और इसका मिशन हमारे ग्रह को होमो सेपियंस द्वारा किए गए विनाश से बचाना है।

अपने कार्यों के माध्यम से, युद्धों और शोषण को समाप्त करने के लिए, और यह सुनिश्चित करने के लिए कि मनुष्य अब एक-दूसरे को नुकसान न पहुँचाएँ। यह नई मानव प्रजाति पृथ्वी को बचाएगी और कह सकेगी, "स्वर्ग अभी यहाँ है"। इस नई मानव प्रजाति के विकास में कई पीढ़ियाँ लगेंगी, लेकिन यह अब शुरू हो चुका है। स्वीडनबॉर्ग यह भी भविष्यवाणी करते हैं कि यह नई मानव प्रजाति वैवाहिक प्रेम को फिर से खोज लेगी, जो प्राचीन लोगों के लिए प्रेम का एक महत्वपूर्ण रूप था। आधुनिक समाज इस प्रकार के प्रेम के बारे में बहुत कम जानता है। सच्चे वैवाहिक प्रेम में रहने वाले लोगों से पैदा हुए बच्चों में, विरासत में मिली बुराई कम हो जाती है और जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, एक नए, आध्यात्मिक मानव का जन्म होता है। हालाँकि, यह नई मानव प्रजाति अपनी राष्ट्रीय और नस्लीय विशेषताओं को बनाए रखेगी, और सभी राज्य अपनी स्वतंत्रता और संस्कृति को बनाए रखेंगे, क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय वैश्विकता राष्ट्रों के लिए सबसे बड़ा खतरा है।
स्वीडनबॉर्ग के अनुसार, नया चर्च, या नया जेरुसलम, सभी चर्चों का मुकुट है और कभी नष्ट नहीं होगा बल्कि हमेशा के लिए बना रहेगा। हालाँकि, इसके लिए एक नए आध्यात्मिक मानव का उदय आवश्यक है, क्योंकि आधुनिक मनुष्यों की वंशानुगत बुराई इतनी बढ़ गई है कि केवल कुछ ही वयस्क बच पाएँगे, यानी स्वर्ग में प्रवेश कर पाएँगे। हालाँकि, जैसा कि ऊपर बताया गया है, नए यरूशलेम के सदस्यों में वंशानुगत बुराई पीढ़ी-दर-पीढ़ी कम होती जाती है, और इस प्रकार एक नए आध्यात्मिक मानव का जन्म होता है। मैं पाठकों से निवेदन करता हूँ: इस पुस्तक के संदेश को गंभीरता से लें और आध्यात्मिक रूप से विकसित हों ताकि आप भी एक आध्यात्मिक मानव बन सकें। इस विकास के साधन आपको इस पुस्तक में मिलेंगे।

अध्याय 2: जीवनी, काले बादल

मुझे एहसास हुआ कि 21 जुलाई, 1973 को अपने ज्ञानोदय के अनुभव के बाद से, मैं ईश्वरीय कृपा के मार्गदर्शन में था। मेरे पुनर्जन्म में मेरे सामने एक लंबा रास्ता था, क्योंकि मुझे अपने सभी पापों, पुराने और झूठे ज्ञान और अपने सभी दृष्टिकोणों से खुद को शुद्ध करना था। लगभग पूरी पश्चिमी संस्कृति झूठ पर आधारित थी। खासकर द्वितीय विश्व युद्ध से संबंधित झूठ पर।
मैंने अपने निजी जीवन में कठिनाइयों का अनुभव किया। मेरी पहली शादी तलाक में समाप्त हुई, जिससे मेरी पत्नी को केवल एक बेटा ही बचा। हालाँकि, घटनाओं में एक सुखद मोड़ तब आया जब मेरी मुलाकात एक आकर्षक नर्सिंग छात्रा से हुई, जिससे मेरी सगाई उसी दिन हो गई, और हम 10 बच्चे पैदा करने पर सहमत हुए, जो हमने किया। हम 1974 की गर्मियों में मिले और 1974 के नए साल की पूर्व संध्या पर हमारी शादी हो गई। अगली गर्मियों में, मुझे इमैनुएल स्वीडन-बोर्ग की कृतियाँ मिलीं। मेरी पत्नी ने एक स्वीडिश-डेनबोर्गियन के रूप में मेरी गतिविधियों को समझा और स्वीकार किया।
हमने 30 से ज़्यादा वर्षों तक सुखी जीवन जिया। मैंने वायलिन शिक्षक के रूप में काम किया। इस दौरान, मैंने स्वीडनबोर्ग की रचनाओं का अध्ययन किया और एक स्वीडनबोर्गियन संघ की स्थापना की, लेकिन हमने अभी तक न्यू जेरूसलम चर्च की स्थापना नहीं की थी। हमारे केवल लगभग बीस सदस्य थे। चर्च के लिए समय अभी उपयुक्त नहीं था।
फिर जीवन ने एक दुखद मोड़ लिया। मेरी पत्नी की एक आकस्मिक गोलीबारी में मृत्यु हो गई, जिसके लिए मुझे दोषी ठहराया गया, और मुझे मानसिक मूल्यांकन के लिए भेजा गया। मैंने जाँच कर रहे मनोचिकित्सक को अपने आत्मज्ञान के अनुभव और स्वीडनबोर्ग की शिक्षाओं के बारे में बताया, जिन्हें उस समय भ्रम विकार के लक्षण माना जाता था। मुझे एक मानसिक अस्पताल में भर्ती कराया गया। मैंने इस फैसले के खिलाफ अपील की, लेकिन इसे पलटा नहीं गया। यह ध्यान देने योग्य है कि वर्षों तक मानसिक अस्पताल में मेरा बंद रहना शायद इस तथ्य के कारण था कि "होलोकॉस्ट इनकार" और "यहूदी-विरोध" को भ्रम, यानी मानसिक बीमारी के लक्षण माना जाता था। मैं यहूदियों से नफ़रत नहीं करता; मुझे उनकी अंतरराष्ट्रीय राजनीति से नफ़रत है। मनोरोग विज्ञान कोई विज्ञान नहीं, बल्कि भौतिकवादी और नास्तिक सिद्धांतों का एक संग्रह है; इससे समाज को भारी नुकसान तो होता है, लेकिन लोगों का इलाज नहीं होता। मैं मानसिक रूप से पूरी तरह स्वस्थ था। मुझे इलाज की ज़रूरत नहीं थी।

मुझे 18 साल एक मानसिक अस्पताल में अंतरात्मा के कैदी की तरह बिताने पड़े। लेकिन मैंने उन वर्षों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया: मैंने पाँच भाषाओं, स्वीडनबॉर्ग की रचनाओं और बाद में राजनीति और इतिहास का अध्ययन किया। मैंने स्वीडनबॉर्ग की दो रचनाओं का फिनिश भाषा में अनुवाद किया। मुझे एहसास हुआ कि सब कुछ वैसा ही था जैसा गोएथे ने लिखा था: "और जो पहले ज़मीन पर था, अब शिखर है। इसी से उन्होंने सबसे सच्चा नियम निकाला, सबसे निचले को सबसे ऊँचे में बदलो, निश्चित रूप से, क्योंकि हम वहाँ की आग की जेल से बच निकले थे, खुली हवा में अत्यधिक शक्ति के लिए: एक खुला रहस्य, फिर भी अच्छी तरह से छिपा हुआ, और हाल ही में सार्वजनिक रूप से प्रकट हुआ। (इफिसियों 6:12)।"

यह भौतिकवाद और नास्तिकता का युग था। पृथ्वी पर एक नई शक्ति का उदय हुआ था, जो धन और मीडिया को नियंत्रित करती थी: खज़ेरियन यहूदी। 1960 और 1970 के दशक में वर्षों के शोध के दौरान यहूदी धर्म के साथ मेरा रिश्ता विकसित हुआ था। यह मेरे जीवन में संयोग से शुरू हुआ। मैं आपको इसके बारे में यहाँ बताऊँगा:

1963 में, एक अजीब संयोग हुआ। मैं हेलसिंकी में एक कार्यक्रम में प्रस्तुति दे रहा था (वायलिन बजा रहा था) और प्रस्तुति के बाद मैं दर्शकों के बीच बैठ गया। एक छोटा लड़का दर्शकों के बीच दौड़ रहा था और उसने गलती से मेरा वायलिन का धनुष तोड़ दिया, जिसे मैं ज़मीन पर टिकाए हुए था। यह मेरे लिए एक बड़ा झटका था। धनुष मेरा नहीं था, बल्कि मेरे शिक्षक, प्रो. इग्नाटियस से उधार लिया गया था। यह एक पुराना और कीमती धनुष था, और इसका टूटना मेरे लिए एक बड़ा झटका था। मेरे अपने धनुष को फिर से मुंडवाना था। मैं घर गया और रेडियो चालू किया। रेडियो पर खबर आई कि राष्ट्रपति जॉन कैनेडी को अभी-अभी गोली मारी गई है। बाद में जब मैंने जाँच की, तो पाया कि धनुष का टूटना और कैनेडी की हत्या एक ही समय पर हुई थी। मुझे वह कहावत याद आ गई, "एक राजदंड है, दूसरा वायलिन का धनुष" (मुझे याद नहीं कि यह किस राजा ने कहा था)।

इस संयोग ने मुझे कैनेडी की हत्या की जाँच शुरू करने के लिए प्रेरित किया। उस समय मैं 17 साल का था, लेकिन मेरा दिमाग बहुत तेज़ था। एक दोस्त के कहने पर, मैंने अमेरिका की स्पॉटलाइट पत्रिका की सदस्यता ली, जिसमें अमेरिकी राजनीति के पीछे की ताकतों का खुलासा किया गया था। स्पॉटलाइट पत्रिका ने इस हत्याकांड के पीछे अमेरिकी यहूदियों का हाथ होने का संदेह जताया था। बाद में, मैंने माइकल कॉलिन्स पाइपर की किताब "द" मँगवाई।

अमेरिका से प्रकाशित अंतिम निर्णय (यूएसए 1998), जिसमें दिखाया गया है कि इज़राइली खुफिया सेवा और अमेरिकी यहूदियों ने राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या की थी। यहूदी कैनेडी के हत्यारों की पहचान को प्रभावी ढंग से छिपाने में सफल रहे हैं क्योंकि अमेरिका में उनके पास असाधारण मीडिया शक्ति है। पाइपर का सुझाव है कि कैनेडी की हत्या का कारण यह था कि उन्होंने इज़राइल के परमाणु हथियारों का कड़ा विरोध किया था। अमेरिकी मीडिया ने पाइपर के शोध के बारे में एक शब्द भी नहीं बताया।

इस घटना ने मुझे यहूदी धर्म का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया, जो मैंने 25 वर्षों से अधिक समय तक किया। 1980 के दशक में, मैंने यहूदियों और विशेष रूप से "होलोकॉस्ट" के बारे में समाचार पत्रों में लेख लिखना भी शुरू किया, जिसका मैंने कई वर्षों तक अध्ययन किया था। मैं होलोकॉस्ट को इतिहास का सबसे बड़ा धोखा मानता था, जिसने यहूदियों को इज़राइल राज्य की स्थापना करने और अमेरिका और जर्मनी से अरबों डॉलर इकट्ठा करने में सक्षम बनाया।

मेरे अखबारों के लेखों और स्वीडनबॉर्ग पर मेरी किताब, जिसमें मैंने यहूदियों की अंतरराष्ट्रीय शक्ति पर भी चर्चा की थी, के कारण मुझे यहूदियों और इज़राइल के मित्रों द्वारा सताया गया। मुझे धमकी भरे पत्र और फ़ोन कॉल आए, और मेरी किताबों की शिकायत पुलिस में कर दी गई। मेरे साथ तरह-तरह की घिनौनी हरकतें की गईं, जैसे रात में मेरी कार में तोड़फोड़ करना। एक आपराधिक शिकायत अदालत में गई, और मुझ पर "एक जातीय समूह के खिलाफ नफरत भड़काने" के लिए एक छोटा सा जुर्माना लगाया गया, जबकि मैं केवल यहूदियों की अंतरराष्ट्रीय शक्ति के बारे में तथ्य प्रस्तुत कर रहा था। इज़राइल के मित्रों द्वारा प्रकाशित पत्रिका शालोम में, मुझे "फिनिश यहूदियों का नंबर एक दुश्मन" कहा गया।

मैं देखता हूँ कि मेरे जीवन में कई "संयोग" केवल ईश्वरीय कृपा का परिणाम हैं। ऐसे संयोगों में शामिल हैं, उदाहरण के लिए, "पुष्टिकरण शिविर में गलत बाइबिल", "मेरे वायलिन धनुष का टूटना और कैनेडी की हत्या", "प्रबुद्धता का अनुभव और क्षणिक पक्षाघात जब पहला आदमी चंद्रमा की सतह पर कदम रखा", और बाद में "होलोकॉस्ट स्मरण दिवस पर दो उंगलियों का पक्षाघात", साथ ही 1930 के दशक में विइपुरी में एक प्रसिद्ध दिव्यदर्शी द्वारा मेरी मां को की गई भविष्यवाणी, जिसने मेरी मां से कहा था कि "आपको

तीन बेटियाँ और एक बेटा, और तुम्हारा बेटा विशेष होगा और बहुत प्रसिद्ध होगा और शक्तिशाली पद पर पहुँचेगा"; भविष्यवाणी में कई विवरण थे, जो सभी सच हो गए हैं, सिवाय मेरे बारे में एक के।

स्वीडनबॉर्ग के अनुसार, मनुष्य ईश्वर के कार्यों को केवल पीछे मुड़कर देखकर ही देख सकता है। ईश्वर मानव जीवन के छोटे-छोटे विवरणों का भी मार्गदर्शन करता है। स्वीडनबॉर्ग ने लैटिन में "सैपिएंटिया एंजेलिका डे डिविना प्रोविडेंटिया" नामक एक पुस्तक लिखी, जिसका मैंने फिनिश में "जुमाललिनेन कैट्सेलमस" (ईश्वरीय प्रोविडेंस) के रूप में अनुवाद किया है, लेकिन यह अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है।

अठारह साल एक मानसिक अस्पताल में अध्ययन, और ईश्वर के मार्गदर्शन ने मुझे कई ऐसे विचारों से परिचित कराया है जो मुख्यधारा के विपरीत हैं। अब मैं निष्पाप हूँ और बड़ी से बड़ी चुनौतियों का सामना करने के लिए पूरी तरह तैयार हूँ। अगले पृष्ठों पर, मैं वर्णन करूँगा कि एक पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति के दृष्टिकोण से दुनिया कैसी दिखती है। ईश्वर ने न केवल धर्म में, बल्कि राजनीति और इतिहास में भी मेरा मार्गदर्शन किया है।

जो पाठक ईश्वर की शिक्षाओं में गहराई से नहीं जाना चाहते, न्यू चर्च पुस्तक के अंत में परिशिष्ट 3 में पुनर्जन्म और एक नए आध्यात्मिक प्राणी के रूप में विकास शुरू करने के बारे में सरल निर्देश पढ़ सकता है।

अध्याय 3: मानवता के लिए सबसे बड़ा ख़तरा, ख़ज़रियाई यहूदी

तुम अपने पिता शैतान के हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करोगे। वह शुरू से ही हत्यारा था, और सत्य पर टिका नहीं, क्योंकि उसमें सत्य है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता है, तो अपनी ही बात कहता है: क्योंकि वह झूठा है, और झूठ का पिता है। (यूहन्ना 8:44)

आज बहुत कम लोग यहूदियों, या ख़ज़रों के बारे में तथ्य जानते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि यहूदी दुनिया के सबसे संगठित लोग हैं, एक तरह का विशाल माफिया जो अपनी गतिविधियों को पूरी तरह से गुप्त रखता है और अपनी गतिविधियों और प्रकृति के बारे में जानने वालों को व्यवस्थित रूप से सताता है। आज, यहूदियों के पास अपार अंतर्राष्ट्रीय शक्ति है। यह शक्ति यहूदी अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग, मीडिया के स्वामित्व और सभी देशों में संचालित सुव्यवस्थित संगठनों पर आधारित है। यहूदी लगभग सभी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय बैंकों के मालिक हैं और सभी प्रमुख अमेरिकी बैंकों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, टीवी और रेडियो कंपनियों, फिल्म कंपनियों, पुस्तक प्रकाशकों और समाचार एजेंसियों को नियंत्रित करते हैं। अमेरिका के बाहर, यहूदी हर दिन अधिक से अधिक बैंकों और मीडिया संस्थानों को नियंत्रित कर रहे हैं। इसके अलावा, यहूदी अपनी निवेश कंपनियों (ब्लैकरॉक, वैनगार्ड) के माध्यम से दुनिया की लगभग सभी प्रमुख कंपनियों के मालिक हैं। वर्तमान में इन मामलों के बारे में लगभग पूरी तरह से अज्ञानता है, क्योंकि यहूदी माफिया अपनी मीडिया शक्ति से सभी देशों का ब्रेनवॉश करने में सफल रहा है। इसी कारण, मैं संक्षेप में यहूदियों, या खज़ारों, का इतिहास बताऊँगा।
20वीं सदी की शुरुआत में, पूर्वी यूरोप में लगभग 1.1 करोड़ यहूदी रहते थे। वे कहाँ से आए थे? द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत बाद, यहूदियों ने फ़िलिस्तीन में अपना राज्य, इज़राइल, स्थापित किया। यह संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1947 में फ़िलिस्तीन को यहूदियों और अरबों के बीच विभाजित करने के निर्णय से संभव हुआ। यहूदियों ने इज़राइल के निर्माण को "अपनी मातृभूमि में वापसी" के रूप में उचित ठहराया। बहुत से लोग, विशेषकर ईसाई, इस पर विश्वास करते थे, और दशकों तक यह एक प्रकार का सिद्धांत बन गया: एक जनसमूह

नाज़ियों द्वारा सताए गए यहूदी अंततः अपने वतन लौट पाए। सदियों से फ़िलिस्तीन में रहने वाले सेमिटिक लोग—फ़िलिस्तीनी—इन दूसरे लोगों के हित के लिए अपनी मातृभूमि छोड़ने को मजबूर हुए। संयुक्त राष्ट्र के इस फ़ैसले का सबसे ज़्यादा असर अमेरिका और यूरोप के ईसाइयों पर पड़ा, जो यहूदियों को प्राचीन यहूदियों का वंशज मानते थे और इसलिए, एक तरह से, फ़िलिस्तीन जाने के हक़दार थे। और यहूदियों ने भी अपने मीडिया में इस विचार का पुरज़ोर समर्थन किया। क्या फ़िलिस्तीन आधुनिक यहूदियों के पूर्वजों की मातृभूमि है? क्या पूर्वी यूरोप के यहूदी, रोमनों द्वारा फ़िलिस्तीन से निकाले गए यहूदियों के वंशज थे? वर्तमान ऐतिहासिक शोध इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर प्रदान करते हैं: पूर्वी यूरोप के यहूदी और दुनिया के अधिकांश यहूदी फ़िलिस्तीन के यहूदियों के वंशज नहीं हैं, बल्कि शक्तिशाली खज़ार लोगों के वंशज हैं, जिन्होंने लगभग 740 ईस्वी में यहूदी धर्म अपना लिया था। खज़ार लोगों के धर्मांतरण के बिना, आज शायद ही कोई बड़ी यहूदी आबादी होती। यहूदी इतिहास के इस तथ्य का उल्लेख इतिहास की पाठ्यपुस्तकों या विश्वकोशों में, यहूदी ग्रंथों और कुछ अपवादों को छोड़कर, शायद ही मिलता है। क्यों? यदि यह जानकारी 1947 के अंत में संयुक्त राष्ट्र महासभा के समक्ष सार्वजनिक कर दी गई होती, तो निश्चित रूप से फ़िलिस्तीन का विभाजन नहीं होता और इज़राइल राज्य का निर्माण नहीं होता। यह ध्यान देने योग्य है कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा तय किया गया फ़िलिस्तीन का यह विभाजन रिश्वतखोरी और दबाव के व्यापक अभियान के बिना संभव नहीं था। निर्णायक मतदान से एक सप्ताह पहले भी, फ़िलिस्तीन के विभाजन के पक्ष में पर्याप्त मत नहीं थे। लेकिन एक सप्ताह के भीतर, निम्नलिखित देश विभाजन के विरोधियों से समर्थकों में अपनी स्थिति बदलने पर सहमत हो गए: बेल्जियम, फ्रांस, नीदरलैंड, लक्ज़मबर्ग, न्यूज़ीलैंड, पैराग्वे, फिलीपींस और हैती। इसने विभाजन के पक्ष में संयुक्त राष्ट्र के प्रतिनिधियों का आवश्यक दो-तिहाई बहुमत हासिल कर लिया (न्यूयॉर्क टाइम्स, 26-30 नवंबर, 1947)। 1982 का ओटावा का महान विश्वकोश उन कुछ फिनिश भाषा के विश्वकोशों में से एक है, जो पूर्वी यूरोप के यहूदियों के पूर्वजों के रूप में खज़ारों की ओर संकेत करने का साहस करता है:

"खज़ार, तुर्क लोग, जिनके साम्राज्य में प्रारंभिक मध्य युग में पूर्वी और दक्षिणी मैदानों का एक बड़ा हिस्सा शामिल था। एक ऐसा समुदाय जिसका साम्राज्य प्रारंभिक मध्य युग में पूर्वी और उत्तरी रूस के एक बड़े हिस्से तक फैला हुआ था। खज़ारों की शक्ति 7वीं और 8वीं शताब्दी में अपने चरम पर थी; रूसियों ने इसे लगभग 1000 ई. में नष्ट कर दिया। शासक वर्ग और आबादी का एक बड़ा हिस्सा 7वीं शताब्दी के बाद से यहूदी धर्म को मानता था। कुछ मतों के अनुसार, तथाकथित पूर्वी यहूदियों का एक बड़ा हिस्सा खज़ारों का वंशज है।"
बेंजामिन फ्रीडमैन (जो स्वयं खज़ारों के वंशज हैं) ने अपनी पुस्तक "द ट्रुथ अबाउट द खज़ार्स" (न्यूयॉर्क, 1954) में इतिहास के पन्नों से खज़ारों के आश्चर्यजनक रूप से लुप्त होने का वर्णन इस प्रकार किया है:

1948 में, मैंने वाशिंगटन स्थित पेंटागन में उच्च पदस्थ अमेरिकी अधिकारियों के एक बड़े समूह को, जिनमें से अधिकांश जी-2 सैन्य खुफिया विभाग से संबंधित थे, पूर्वी यूरोप और मध्य पूर्व की विस्फोटक भू-राजनीतिक स्थिति पर एक व्याख्यान दिया था। तब भी, और आज भी, यह क्षेत्र पृथ्वी पर शांति और इस राष्ट्र (अमेरिकी, संपादक) की सुरक्षा के लिए एक संभावित खतरा था। मैंने उन्हें खज़ारों और खज़ार साम्राज्य की उत्पत्ति के बारे में विस्तार से बताया। मैं तब भी जानता था, और अब भी जानता हूँ, कि इस विषय पर स्पष्ट और व्यापक जानकारी के बिना, 1917, यानी रूस में बोल्शेविक क्रांति के बाद से दुनिया में जो कुछ हुआ है, उसे समझना या उसका सही आकलन करना असंभव है। यही इस समस्या की "कुंजी" है।

एक बहुत ही सतर्क लेफ्टिनेंट कर्नल ने मेरे भाषण के समापन पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि वह संयुक्त राज्य अमेरिका के सबसे बड़े और वैज्ञानिक रूप से सबसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में से एक में इतिहास विभाग के डीन हैं। वह 16 वर्षों से इतिहास पढ़ा रहे थे। उन्हें हाल ही में सैन्य कर्तव्यों के लिए वाशिंगटन बुलाया गया था। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उन्होंने कहा कि इतिहास शिक्षक के रूप में अपने पूरे करियर में, उन्होंने कभी 'खज़ार' शब्द नहीं सुना था और यह पहली बार सुन रहे थे। इससे कुछ अंदाज़ा मिलता है - प्रिय डॉ. गोल्डस्टीन (जिनके लिए यह पुस्तक

समर्पित, अनुवादक की टिप्पणी) - इस रहस्यमय गुप्त शक्ति ने खज़ारों और खज़ार साम्राज्य की उत्पत्ति और इतिहास को मिटाने में कितनी अच्छी तरह कामयाबी हासिल की, ताकि दुनिया से, खासकर ईसाइयों से, तथाकथित 'पूर्वी यूरोपीय यहूदियों' की असली उत्पत्ति और इतिहास को छुपाया जा सके।

अपनी पुस्तक में, बेंजामिन फ्रीडमैन अपने साथी आदिवासियों पर जानबूझकर अपने खज़ार मूल को छिपाने का आरोप लगाते हैं ताकि ईसाइयों को यह विश्वास दिलाया जा सके कि उनकी मूल मातृभूमि फ़िलिस्तीन है, जबकि वास्तव में यह पूर्वी एशिया में कहीं है। बेंजामिन फ्रीडमैन अपने साथी आदिवासियों के खिलाफ हो गए और उन्होंने अपनी संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा यहूदियों के खज़ार मूल के बारे में जानकारी फैलाने में खर्च कर दिया। उन्होंने यह स्वीकार नहीं किया कि खज़ार अपने लिए "यहूदी" शब्द का इस्तेमाल करते थे, बल्कि उन्हें "स्वयंभू यहूदी" कहा। फ्रीडमैन ने इज़राइल की स्थापना को अब तक का सबसे बुरा अंतरराष्ट्रीय अपराध माना और दावा किया कि यह अनिवार्य रूप से तीसरे विश्व युद्ध का कारण बनेगा।

खज़ार हूणों से संबंधित एक तुर्क-मंगोलियाई लोग थे। खज़ारों को युद्ध का बहुत शौक था, और परिणामस्वरूप, अन्य एशियाई लोगों ने उन्हें पश्चिम की ओर खदेड़ दिया। हमारे युग की पहली शताब्दियों में, खज़ारों ने काला सागर और कैस्पियन सागर के उत्तर में, यानी दक्षिणी रूस के एक बड़े क्षेत्र पर विजय प्राप्त की। वहाँ उन्होंने उस क्षेत्र के 25 कृषक लोगों को अपने अधीन करके एक महान शक्ति स्थापित की। यह साम्राज्य 7वीं और 8वीं शताब्दी में अपने सबसे शक्तिशाली दौर में था, जब यह निर्विवाद रूप से यूरोप का सबसे शक्तिशाली राज्य था। लगभग 1000 ईस्वी में, रूसियों ने खज़ारों को हरा दिया, जिसके कारण कुछ खज़ार कुलीन वर्ग यूरोप, मुख्यतः हंगरी, स्पेन और जर्मनी भाग गए। हालाँकि, कई मिलियन की वास्तविक आबादी वहीं रही, जिससे पूर्वी यूरोप और दक्षिणी रूस की खज़ार आबादी बनी, जिसमें 20वीं शताब्दी की शुरुआत में लगभग 1.1 करोड़ खज़ार यहूदी शामिल थे।

यहूदी विश्वकोश के अनुसार, खज़ार लूटपाट करने वाले और बहुत प्रतिशोधी लोग थे। यहूदी विश्वकोश भी मानता है कि तथाकथित पूर्वी यहूदी (अश्केनाज़िम) खज़ारों के वंशज हैं। यहूदी विश्वकोश के अनुसार

इतिहासकार आर्थर कोएस्टलर के अनुसार, खज़ार क्रूर और गंदे थे, शौच या पेशाब के बाद खुद को साफ नहीं करते थे, कभी अपने अंडरवियर नहीं बदलते थे, और उन्हें सड़ कर चिथड़े कर देते थे। खज़ार लिंग, या पुरुष अंग की पूजा करते थे। लगभग 740 ई. में, खज़ार राजा बुलान अपने लोगों के बर्बर तरीकों से तंग आ गया और उसने उस समय के तीन मुख्य धर्मों, इस्लाम, ईसाई धर्म और तल्मूडिज़्म के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया, जिनमें से तल्मूडिज़्म को बाद में यहूदी धर्म के रूप में जाना जाने लगा। सत्ता के भूखे राजा बुलान को तल्मूडिज़्म पसंद आया, जिसके अनुयायी, मसीहा के आने पर, सभी देशों की संपत्ति पर नियंत्रण हासिल कर लेंगे और सभी लोगों को गुलाम बना लेंगे। तल्मूडिज़्म को खज़ार साम्राज्य का आधिकारिक धर्म बनाया गया था। संपूर्ण खज़ार लोगों को, जिनमें खज़ारों में समाहित हो चुके लोगों के अवशेष भी शामिल थे, तल्मूडवाद में परिवर्तित कर दिया गया और लिंग-संबंधी पंथ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। युद्धप्रिय और क्रूर खज़ार लोगों का यहूदी धर्म में धर्मांतरण मानव इतिहास की सबसे विनाशकारी घटनाओं में से एक है। एक क्रूर लोगों ने एक क्रूर धर्म अपनाया।
खज़ार साम्राज्य के वंशजों ने बाद में पूर्वी यूरोप और दक्षिणी रूस की 1.1 करोड़ की यहूदी-भाषी यहूदी आबादी का गठन किया, जिसका धर्म तल्मूड पर आधारित था। यिडिश खज़ारों की भाषा है, जिसने हिब्रू से वर्णमाला और अन्य भाषाओं, विशेष रूप से जर्मन से कई उधार शब्द ग्रहण किए हैं। "यहूदी जर्मन" शब्द यिडिश के लिए एक ग़लत नाम है, क्योंकि हालाँकि यिडिश में जर्मन से उधार शब्द शामिल हैं, यह एक जर्मनिक भाषा नहीं बल्कि एक तुर्किक भाषा है। खज़ार आबादी का एक बड़ा हिस्सा पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका में चला गया। ये तथाकथित अश्के-नाज़ी यहूदी, खज़ारों के प्रत्यक्ष वंशज हैं, और तथाकथित सेफ़र्डिक यहूदी, आंशिक रूप से स्पेन जाकर बसने वाले खज़ारों के वंशज हैं और आंशिक रूप से स्पेन जाकर बसने वाले फ़िलिस्तीनी यहूदियों के वंशज हैं। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि आज दुनिया की 90% से ज़्यादा यहूदी आबादी खज़ारों की वंशज है। इसके अलावा, खज़ारों ने ज़्यादातर सेफ़र्डिक यहूदियों को भी अपने में समाहित कर लिया है।

अपने ही लोगों में, इसलिए खुद को "यहूदी" कहने वाले लोगों के बारे में बात करते समय खज़ारों का ज़िक्र करना स्वाभाविक है। इस लेख में, मैं "खज़ार" और "यहूदी" शब्दों का प्रयोग समानार्थक शब्दों के रूप में करता हूँ।

ज़ारवादी शासन रूसी खज़ारों के लिए एक ख़तरा था, और खज़ार भी ज़ारवादी शासन के लिए ख़तरा थे। ज़ारों ने खज़ारों को व्यापार और बैंकिंग पर नियंत्रण करने की अनुमति नहीं दी, जैसा कि खज़ारों ने कई अन्य देशों में किया था। खज़ारों को कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रखा गया था जहाँ उन्हें रहने की अनुमति थी। खज़ारों और बाकी आबादी के बीच लगातार संघर्ष होते रहते थे, ज़्यादातर इसलिए क्योंकि खज़ार, जो कुशल सट्टेबाज़ थे, ने रूसी खेतों पर नियंत्रण कर लिया और निर्मम सूदखोरी से कई खेतों को बर्बाद कर दिया। नरसंहार - यहूदियों का उत्पीड़न - अक्सर भड़क उठते थे, जिनमें खज़ारों की बेरहमी से हत्या कर दी जाती थी।

खज़ार कार्यकर्ताओं ने अपने राजनीतिक संघर्ष में हत्या का इस्तेमाल शुरू कर दिया था। तल्मूड के अनुसार, किसी ईसाई की हत्या करना जायज़ था और एक अच्छा काम भी। कई ज़ारों पर हत्या के प्रयास किए गए, जिसके कारण खज़ारों के विरुद्ध पुलिस कार्रवाई बढ़ गई। खज़ारों ने 1881 में ज़ार अलेक्जेंडर द्वितीय की हत्या करने में सफलता प्राप्त की। 1901 और 1906 के बीच, खज़ारों के नेतृत्व में समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी की आतंकवादी शाखा ने छह मंत्रियों की हत्या कर दी। रूसियों के लिए राजनीतिक हिंसा का ऐसा प्रयोग अज्ञात था। यह एक विशुद्ध बोल्शेविक परंपरा थी, जिसने बाद में क्रांति के दौरान भयावह रूप धारण कर लिया।

अलेक्जेंडर द्वितीय की हत्या का ज़ारशाही शासन और यहूदियों, या खज़ारों के बीच संबंधों पर निर्णायक प्रभाव पड़ा। हत्या के बाद, पूरे रूस में यहूदी-विरोधी प्रदर्शन भड़क उठे। ज़ारशाही प्रशासन ने यहूदियों के प्रति अपने पहले के अपेक्षाकृत उदार रवैये को बदल दिया। तथाकथित मई कानून लागू किए गए, जिनमें अन्य बातों के अलावा, यहूदियों के प्रवास और विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने के अधिकारों को प्रतिबंधित किया गया। जनसंख्या के अनुपात में उच्च शिक्षा में रूसियों की तुलना में यहूदी ज़्यादा थे, लेकिन अब उच्च शिक्षा में उन पर स्थानीय निवासियों की संख्या के अनुसार कोटा लागू कर दिया गया। यहूदियों का रूसी किसानों को रोज़गार देने का अधिकार रद्द कर दिया गया, और अन्य यहूदी

व्यापारिक गतिविधियाँ भी प्रतिबंधित थीं। 1882 के मई कानूनों ने ज़ारवादी शासन और यहूदियों के बीच संघर्ष की शुरुआत को चिह्नित किया, जो अक्टूबर क्रांति के साथ समाप्त हुआ। तब से, सभी देशों में यहूदियों ने ज़ारिस्ट रूस के खिलाफ काम किया। रोथ्सचाइल्ड बैंकिंग राजवंश ने ज़ार पर युद्ध की घोषणा की। इसने ऋण देने से इनकार कर दिया और ज़ार के विरोधी विदेशी क्रांतिकारी समूहों को वित्तपोषित करना शुरू कर दिया।
आखिरकार, खज़ारों ने रूस में तख्तापलट करने में सफलता प्राप्त की। अक्टूबर 1917 का तख्तापलट 100% खज़ार ऑपरेशन था, जो कि खज़ारों के। मार्क्स और वी। लेनिन द्वारा इस तख्तापलट के लिए बनाए गए सिद्धांतों से अस्पष्ट था। ऐतिहासिक सच्चाई यह है कि खज़ारों ने तख्तापलट की योजना बनाई, वित्तपोषित किया और उसे अंजाम दिया। लेनिन के नेतृत्व में 100 यहूदियों के एक मुख्य समूह ने एक सीलबंद ट्रेन से रूस पहुंचने से पहले स्विस रिसॉर्ट्स में तख्तापलट के लिए अभ्यास किया परिशिष्ट 2
आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, खज़ारों के नेतृत्व में बोल्शेविकों ने रूसी तख्तापलट के शुरुआती वर्षों में निम्नलिखित संख्या में लोगों की हत्या की (इसके अलावा, हज़ारों लोगों को श्रम शिविरों में भेज दिया गया और बंधक बना लिया गया):
ज़ार का परिवार (सात ईसाई)
28 बिशप और आर्चबिशप
6,775 पुजारी
6,575 शिक्षक
8,800 डॉक्टर
54,850 अधिकारी
260,000 सैनिक
150,000 पुलिस अधिकारी
48,000 जेंडरमे
355,250 बुद्धिजीवियों के प्रतिनिधि
198,000 मज़दूर
915,000 किसान
"वर्ग शत्रु" या "प्रतिक्रांतिकारी" का लेबल हत्या के लिए पर्याप्त कारण था, लेकिन वास्तव में, रूसी अभिजात वर्ग को नष्ट कर दिया गया ताकि रूसी लोग खज़ारों के विरुद्ध प्रतिक्रांति न कर सकें। हालाँकि, खज़ारों

रूस में अल्पसंख्यक थे, और रूसी बुद्धिजीवियों की हत्या करके उनके उजागर होने का खतरा समाप्त कर दिया गया था।
बेंजामिन फ्रीडमैन का तर्क है कि खज़ारों के इतिहास और वास्तविक स्वरूप को जानना 1917 के बाद के विश्व इतिहास को समझने की "कुंजी" है। खज़ारों के स्वरूप को समझे बिना, हमारे समय की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को समझना असंभव है, क्योंकि लगभग हर महत्वपूर्ण राजनीतिक घटना में खज़ारों का हाथ रहा है। खज़ार सभी राष्ट्रों में काम करते हैं, तबाही मचाते हैं, जैसा कि उनका धर्म उन्हें करने का आदेश देता है। खज़ारों के स्वरूप को उनके धर्म, तल्मूडवाद, जिसे अब "यहूदी धर्म" कहा जाता है, को जाने बिना नहीं समझा जा सकता। निम्नलिखित प्रमाण इस बात का प्रमाण है कि खज़ार वास्तव में शैतान के अवतार हैं:
यीशु ने यहूदियों से कहा: "तुम अपने पिता शैतान के हो, और अपने पिता की इच्छाओं को पूरा करना चाहते हो। वह शुरू से ही हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर नहीं रहता, क्योंकि उसमें सत्य है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता है, तो अपनी ही बातें बोलता है, क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पिता है" (यूहन्ना 8:44)। इससे यीशु का तात्पर्य था कि यहूदी रब्बियों की "पूर्वजों की परंपराओं" की शिक्षा, जो उन्होंने स्वयं गढ़ी थी, शैतान से प्रेरित थी और परमेश्वर के वचन को निरर्थक बनाती थी। यीशु के बाद, यहूदी रब्बियों ने इस परंपरा में कई घृणित बातें जोड़ीं, और इस परंपरा को तल्मूड नामक एक विशाल ग्रंथ में संकलित किया गया है। तल्मूड मूसा की पुस्तकों, या तोराह, का शैतानी नस्लवाद में अनुवाद करता है: सभी कानून केवल यहूदियों पर ही बाध्यकारी हैं, जो तल्मूड के अनुसार एकमात्र लोग हैं। तल्मूड के अनुसार, अन्य राष्ट्र पशु हैं। ईसाइयों से संबंधित तल्मूड के कुछ अंश इस प्रकार हैं:
सेफ़र या इज़राइल 177b: ईसाइयों को मार डालो; उन्हें मार डालो, और तुम ईश्वर को ऐसे प्रसन्न करोगे मानो तुम उसके लिए धूप जला रहे हो।
हिल्कोथ अकुम X,1: ईसाइयों को या तो धर्मांतरित किया जाना चाहिए या मार दिया जाना चाहिए। ज़ोहर I 219b: ईसाई नेता मूर्तिपूजक हैं और उन्हें मार दिया जाना चाहिए। ज़ोहर II, 43aa: ईसाइयों का विनाश एक आवश्यक बलिदान है।
हिल्कोथ अकुम X,2: ईसाई धर्म अपनाने वाले यहूदियों को मार दिया जाना चाहिए और अंत तक सताया जाना चाहिए।

जलकुट सिमोनी 245: जो कोई भी ईसाइयों का खून बहाएगा, उसे परमेश्वर की स्वीकृति मिलेगी मानो उसने उसके लिए बलिदान दिया हो।
ज़ोहर I, 160a: यहूदियों को हमेशा ईसाइयों को धोखा देने की कोशिश करनी चाहिए। यहूदियों को उनसे मुक्त होना चाहिए और उनका शासक बनना चाहिए।
इओरे डीआ 148: यहूदियों से हमेशा ईसाइयों के प्रति अपनी घृणा छिपाने का आग्रह किया जाता है।
बाबा कामा 113b: जब ईसाइयों से झूठ बोला जाता है तो परमेश्वर का नाम अपवित्र नहीं होता; ईसाइयों को धोखा दिया जा सकता है।
सन्हेद्रिन 99a: जब मसीहा आएगा, तो वह ईसाइयों का नाश कर देगा।
और यीशु पर तल्मूड:
जेबामोथ 49a: यीशु व्यभिचार से पैदा हुआ एक नाजायज़ बच्चा था। कल्लाह 1b: यीशु मासिक धर्म के दौरान गर्भाधान किया गया एक नाजायज़ बच्चा था।
सन्हेद्रिन 67a; अबोदाह ज़राह II; सब्बाथ XIV: यीशु पंडिरा नामक एक सैनिक का पुत्र था।
सब्त 104ब: यीशु एक जादूगर और पागल था। मरियम एक व्यभिचारिणी थी।
महासभा 90अ: यीशु का आने वाले संसार में कोई स्थान नहीं है।
ज़ोहर III, 282: यीशु एक जानवर की तरह मरा, और उसे उस गंदे ढेर में दफनाया गया जहाँ मरे हुए कुत्तों और गधों के शव फेंके जाते हैं और जहाँ कुत्तों की तरह एसाव (ईसाई) और इश्माएल (मुसलमान) के बेटों को दफनाया जाता है, साथ ही यीशु और मोहम्मद, और खतनारहित और अशुद्ध लोगों को भी।
चूँकि तल्मूड में इतने भयानक निर्देश हैं, इसलिए इसका एक बचाव भी है: "कोई भी गैर-यहूदी जो तल्मूड पर एक नज़र भी डालता है, उसे मौत की सज़ा दी जाती है" (सैनहेड्रिन 59a) और "गैर-यहूदियों के साथ हमारे धार्मिक मामलों पर चर्चा करना सभी यहूदियों को मारने के समान होगा, क्योंकि अगर गैर-यहूदियों को पता चल जाए कि हम उनके बारे में क्या सिखाते हैं, तो वे हमें खुलेआम मार डालेंगे" (लिब्रे डेविड 37)। तल्मूड के अनुसार, यहूदियों को दुनिया पर विजय प्राप्त करनी चाहिए और ईसाइयों का नाश करना चाहिए, क्योंकि वे स्वयं एक जाति के रूप में "मसीहा" हैं:
"मसीहा को प्रस्तुत करना - बिना किसी रूपक के, यहूदी लोग" (केथुबथ IIIa, संदर्भ 4)।

तल्मूड आज के "यहूदियों" की आधिकारिक विचारधारा है। यह इज़राइल राज्य की भी आधिकारिक विचारधारा है। तल्मूड के अनुसार, इज़राइल का असली उद्देश्य पूरी दुनिया पर विजय प्राप्त करना और ईसाई धर्म का विनाश करना है। लेकिन यहूदी इसे छिपाने में कामयाब रहे हैं, और कई लोग इज़राइल को एक सामान्य देश और यहाँ तक कि "ईश्वर का राज्य" भी मानते हैं। तल्मूड की शिक्षाओं को अपनाने वाला हर व्यक्ति दो पैरों पर चलने वाला एक जीवित शैतान है, और इज़राइल राज्य वस्तुतः पृथ्वी पर शैतान का राज्य है।

धार्मिक दृष्टि से, शैतान सबसे गहरे नरक के समान है, अर्थात वे सभी मृत लोग जो ईश्वर और स्वर्ग से ज़्यादा खुद को और दुनिया को प्यार करते थे। नरक सभी लोगों को प्रभावित करता है, लेकिन तल्मूड के अनुसार, केवल जीवित लोगों का ही सबसे बुरे नरकों से सीधा संबंध है। तल्मूड का जन्म नरक के प्रवाह, यानी शैतान से हुआ था। तल्मूड शब्द का अर्थ है "वन शस्त्रागार" (यशायाह 22:8), जो पत्राचार विज्ञान के अनुसार, मानवीय बुद्धि से उत्पन्न होने वाली बुराई और अन्याय को दर्शाता है।

"फिर शैतान उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और उसे संसार के सारे राज्य और उनका वैभव दिखाया, और उससे कहा, 'यदि तू गिरकर मेरी आराधना करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूँगा'" (मत्ती 4:8-9)।

"यहूदी" इसी शैतान की पूजा करते हैं। इसी शैतान से पूरी दुनिया को जीतने और सभी राष्ट्रों को गुलाम बनाने की इच्छा उत्पन्न होती है। यहूदी धर्म, या तल्मूडवाद, मृत्यु के बाद के जीवन में किसी भी विश्वास को शामिल नहीं करता है। एक यहूदी का सुख उसके सांसारिक जीवन में धनी और शक्तिशाली होने में है। दूसरे शब्दों में, यहूदी धर्म केवल एक धर्म नहीं है, बल्कि राजनीतिक विश्व प्रभुत्व की तलाश करने वाला एक आंदोलन है।
मार्टिन लूथर भी तल्मूड से परिचित थे और उन्होंने अपनी पुस्तक "यहूदियों और उनके झूठों पर" में इसके बारे में लिखा है। लूथरन चर्च ने लूथर के इस सराहनीय कार्य को कायरतापूर्वक अस्वीकार कर दिया है। लूथर अन्य बातों के अलावा कहते हैं:

"उनके तल्मूड और रब्बी लिखते हैं कि एक यहूदी के लिए किसी गैर-यहूदी को मारना पाप नहीं है, लेकिन अगर वह अपने किसी यहूदी साथी को मार डाले तो यह पाप है। और अगर वह किसी गैर-यहूदी से ली गई शपथ तोड़ता है, तो यह पाप नहीं है। दूसरे शब्दों में, गोइम से चोरी करना और लूटना (जैसा कि वे अपने सूदखोरी के साथ करते हैं) कथित तौर पर ईश्वर की सेवा है।"
"इसलिए, जब आप किसी सच्चे यहूदी को देखें, तो आप स्पष्ट विवेक के साथ क्रूस का चिन्ह बना सकते हैं और बिना किसी हिचकिचाहट के कह सकते हैं: शैतान अवतार ले रहा है।" (यहूदियों और उनके झूठ पर)।
यहूदियों की विश्व प्रभुत्व और अन्य राष्ट्रों को कमज़ोर करने की चाहत, 29 अगस्त, 1897 को बेसल में ज़ायोनी सम्मेलन में डॉ. मैक्स मंडेलस्टम के उद्घाटन भाषण (ले टेम्प्स, 3 सितंबर, 1897) में भी स्पष्ट है:
"यहूदियों को अन्य सभी राष्ट्रों के उदय और सफलता को रोकने के लिए हर संभव प्रयास और अपनी पूरी शक्ति का उपयोग करना चाहिए, ताकि हम अपने ऐतिहासिक लक्ष्य, अर्थात् विश्व प्रभुत्व, को प्राप्त कर सकें।"
अंतिम न्याय (जो 1757 में आध्यात्मिक दुनिया में समाप्त हुआ) के बाद, हमारे ग्रह के लोगों को स्वतंत्र इच्छाशक्ति वापस मिल गई। शैतान, जो खज़ारों के बीच रहता था, एक हज़ार साल की कैद (लगभग 740-1740, प्रकाशितवाक्य 20:1-3) के बाद रिहा कर दिया गया। खज़ारों ने दुनिया पर अपनी विजय और ईसाई धर्म के विनाश की शुरुआत की। "उसके बाद उसे थोड़े समय के लिए रिहा किया जाना चाहिए" (प्रकाशितवाक्य 20:3) वाक्यांश का यही अर्थ है। अब खज़ारों को लूटपाट और विजय का अवसर दिखाई दिया: पश्चिम में ईसाइयों के नियंत्रण वाले समृद्ध देश थे।
ईश्वरीय कृपा ने खज़ारों के बीच रहने वाले शैतान को थोड़े समय के लिए स्वतंत्र रहने दिया ताकि शैतान के सभी तरीके मानवता के सामने प्रकट हो सकें और मानवता शैतान की शक्ति से बच सके। हालाँकि, आधुनिक "ईसाइयों" ने इसे नहीं समझा है। इसके विपरीत, उन्होंने इस शैतान की सेवा करना शुरू कर दिया है। यह तथ्य, यदि कुछ भी हो, तो स्वीडन-बोर्ग के इस दावे को प्रमाणित करता है कि कई लोग जो खुद को ईसाई कहते हैं, वे अजगर, यानी शैतान की सेवा करते हैं। इज़राइल राज्य और खज़ार यहूदियों, जो आज शैतान के अवतार बन गए हैं, के प्रति अंध समर्थन को और कैसे समझा जा सकता है?

खज़ारों के अंतर्राष्ट्रीय अपराध

यहूदियों द्वारा किए गए अंतर्राष्ट्रीय अपराधों की जानकारी कई भाषाओं में इस पते पर उपलब्ध है:
https://islam-radio.net/
खज़ारों की लूटपाट और ईसाइयों को धोखा देने की प्रवृत्ति ने अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग में अपनी सबसे बड़ी सफलता हासिल की। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, खज़ार सट्टेबाज मेयर अम्शेल रोथ्सचाइल्ड ने सूदखोरी और ऋण मुद्रा पर आधारित एक अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग संस्था स्थापित करने में सफलता प्राप्त की, जिसने वैश्विक मौद्रिक अर्थव्यवस्था को विकृत कर दिया और लगभग सभी राष्ट्रों को गुलाम बना लिया। रोथ्सचाइल्ड के अलावा, कई अन्य खज़ार परिवार, विशेष रूप से वारबर्ग, पूरे राष्ट्रों को धोखा देने और लूटने में सफल रहे। अमेरिकी फेडरल रिजर्व, जिसका स्वामित्व खज़ारों के अंतर्राष्ट्रीय बैंकों के पास है, विश्व इतिहास का सबसे लाभदायक घोटाला है, जिसके माध्यम से खज़ार बैंकों ने भारी मात्रा में धन पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया है। फ़ेडरल रिज़र्व अधिनियम खज़ार बैंकर पॉल वारबर्ग के दिमाग की उपज था और इसे कांग्रेस ने 1913 की क्रिसमस की पूर्व संध्या पर नोटों के एक बड़े बंडल में छिपाकर पारित किया था, जब ज़्यादातर प्रतिनिधि क्रिसमस मनाने के लिए जा चुके थे। अमेरिकी सरकार द्वारा अपना पैसा छापने के बजाय, यह काम खज़ारों के बैंकों ने धोखे से हड़प लिया और अमेरिकी सरकार कर्ज़दार बन गई। आज, अमेरिका पर केंद्रीय बैंक का बहुत बड़ा कर्ज़ है, जिसने पैसा छापने और उसे ब्याज पर उधार देने के अलावा कुछ नहीं किया है। हालाँकि, यहूदी बैंकों ने मानवता के लिए कोई लाभ नहीं पहुँचाया है: उन्होंने केवल पैसा उधार दिया है और ब्याज, और ब्याज पर ब्याज, वसूला है, जिससे सभी देशों को भयानक आर्थिक नुकसान हुआ है। यह संपूर्ण मानव अर्थव्यवस्था का कैंसरकारी विकास है। मेयर अम्शेल रोथ्सचाइल्ड तल्मूड के एक उत्साही पाठक थे, और उन्होंने अपने दस बच्चों को यह निर्देश दिया था: "गोइम (गैर-यहूदी) केवल पशु मल हैं, और दुनिया की दौलत यहूदियों की है" (काउंट चेरेप-स्पिरिडोविच: द सीक्रेट वर्ल्ड गवर्नमेंट। यूएसए 1926)। खज़ारों के बैंक आज भी इसी विचारधारा के अनुसार काम करते हैं।

अपनी तल्मूडिक विचारधारा के अनुसार, खज़ार बैंकरों ने अपने धन का इस्तेमाल ईसाइयों को नष्ट करने के लिए किया है। कई युद्ध और क्रांतियाँ खज़ार बैंकों द्वारा शुरू की गई हैं या कम से कम उनका समर्थन किया गया है (खज़ार बैंकर ज़ायन के बुद्धिमान पुरुषों का हिस्सा हैं)। इनमें, उदाहरण के लिए, फ्रांसीसी क्रांति, रूसी क्रांति, अमेरिकी गृहयुद्ध, स्पेनिश गृहयुद्ध, प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध, साथ ही द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के युग में संयुक्त राज्य अमेरिका और इज़राइल के युद्ध शामिल हैं। अक्सर, खज़ार बैंकों ने युद्ध के दोनों पक्षों को वित्तपोषित किया है। उदाहरण के लिए, अमेरिकी गृहयुद्ध में, पेरिस स्थित रोथ्सचाइल्ड्स बैंक ने दक्षिणी राज्यों को और लंदन स्थित बैंक ने उत्तरी राज्यों को वित्तपोषित किया था। खज़ारों ने युद्धों और क्रांतियों के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से दो करोड़ से अधिक "गोइम" की हत्या करने में सफलता प्राप्त की है।

आम लोग खज़ारों के झूठ पर विश्वास कर लेते हैं क्योंकि उनके पास सटीक जानकारी प्राप्त करने का कोई तरीका नहीं है। भले ही कुछ अल्पसंख्यकों को सच्चाई पता हो, लेकिन इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता क्योंकि ज़्यादातर मीडिया खज़ारों और उनके झूठ का प्रचार करता है। यह ख़ास तौर पर दुखद है कि ख़ुद को ईसाई कहने वाले कई लोग खज़ारों को "ईश्वर के चुने हुए लोग" मानते हैं, यह मानते हुए कि बाइबल में "यहूदी" शब्द आधुनिक खज़ारों को दर्शाता है। हालाँकि, बाइबल में, "यहूदी" शब्द उस व्यक्ति को दर्शाता है जो जाति या राष्ट्रीयता की परवाह किए बिना, अच्छाई और सच्चाई में रहता है। खज़ारों को "ईश्वर के चुने हुए लोग" मानना ईश्वर का मज़ाक उड़ाना है।

उपरोक्त पाठ आज लोगों को समझ से परे लग सकता है, लेकिन ऐसा पाठ की वजह से नहीं, बल्कि इसलिए है क्योंकि आज लगभग हर किसी का यहूदी धर्म के बारे में दिमाग़ खराब कर दिया गया है। 90% से ज़्यादा लोग यहूदियों के प्रति सहानुभूति रखते हैं, जिनमें से राष्ट्रीय समाजवादियों ने "साठ लाख" लोगों की हत्या कर दी थी। नाज़ियों द्वारा "साठ लाख यहूदियों" के विनाश के बारे में मीडिया में जो भयावह प्रचार अस्सी वर्षों से जारी है, उसे स्वयंसिद्ध सत्य माना जाता है, हालाँकि इसके पक्ष में एक भी वास्तविक प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है, बल्कि इसके विरुद्ध अनेक प्रमाण प्रस्तुत किए गए हैं। सभी कथित "साक्ष्य" नाज़ियों और यातना शिविरों के कैदियों के "साक्षात्कार" हैं। यह सिद्ध हो चुका है कि कथित नरसंहार में किसी भी व्यक्ति का वध नहीं किया गया था।

गैस चैंबर। सच तो यह है कि ये यातना शिविर श्रम शिविर थे, न कि विनाश शिविर। इनमें इस्तेमाल होने वाली ज़ाइक्लोन बी गैस ने टाइफस पैदा करने वाली जूँओं को खत्म किया, इंसानों को नहीं। यह बात फाँसी के विशेषज्ञ डॉ. आर्थर आर. बुट्ज़ ने अपनी पुस्तक "द होक्स ऑफ़ द ट्वेंटिएथ सेंचुरी" (अमेरिका 1977) में कही है, और इसकी पुष्टि रूस में हाल ही में खोले गए यातना शिविर के अभिलेखागार से भी की जा सकती है। 1998 की गर्मियों में, ऑशविट्ज़ शिविर से "यहाँ 40 लाख यहूदियों को मार डाला गया था" का चिन्ह हटा दिया गया था, क्योंकि रेड क्रॉस का अनुमान था कि शिविर में गैर-यहूदियों सहित लगभग 2,50,000 लोग मारे गए थे। नाज़ियों ने यहूदियों पर अत्याचार तो किए, लेकिन उनकी हत्या नहीं की। जर्मनी में किसी यहूदी की हत्या करने पर मौत की सज़ा दी जाती थी। लेकिन कम्युनिस्ट नाज़ियों के मुख्य विरोधी थे, और जर्मन कम्युनिस्टों का एक बड़ा हिस्सा यहूदी थे। जर्मन यातना शिविर संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे अन्य देशों के समान शिविरों से बहुत अलग नहीं थे।

टाइफस से मरने वाले जर्मन यातना शिविर के कैदियों की लाशों के ढेर को अमेरिका में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की फिल्मों में "समाप्त यहूदियों" के रूप में प्रस्तुत किया गया था। कोई भी ईमानदार इतिहासकार जो यह कहने की हिम्मत करता है कि "होलोकॉस्ट" का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है, उसे यहूदी-विरोधी या नव-नाज़ी करार दिया जाता है, और उसका करियर बर्बाद कर दिया जाता है, या इज़राइली खुफिया सेवा मोसाद द्वारा जहर दिए जाने के बाद दिल का दौरा पड़ने से उसकी मृत्यु हो जाती है। कई "इज़राइल के मित्र" भी उन लोगों को सताते हैं जो "साठ लाख" की प्रामाणिकता पर सवाल उठाने की हिम्मत करते हैं। ये खज़ारों द्वारा दिमाग़ धोए गए साधारण "ईसाई" हैं, जो खज़ारों का बचाव करके अपनी पूरी अज्ञानता का प्रदर्शन करते हैं।

विश्व पंचांग 1940 (पृष्ठ 129) में यहूदियों की संख्या 15,390,359 और 1949 (पृष्ठ 289) में 15,713,638 बताता है। द्वितीय विश्व युद्ध के दशक के दौरान, यहूदियों की संख्या में 3,00,000 से ज़्यादा की वृद्धि हुई। नाज़ी अभिलेखागार में यहूदियों के विनाश का कोई कार्यक्रम नहीं मिला है। "होलोकॉस्ट" खज़ारों द्वारा रचा गया एक झूठ है, जिससे उन्हें अपार धन इकट्ठा करने और अपार सहानुभूति प्राप्त करने में मदद मिली है।

और फ़िलिस्तीनियों से उनकी मातृभूमि छीनकर इस झूठ के आधार पर इज़राइल राज्य की स्थापना की। इस झूठ का यह भी अर्थ है कि बहुत कम लोग "यहूदी-विरोधी" कहलाने के डर से इज़राइल और अंतर्राष्ट्रीय यहूदियों के कार्यों की आलोचना करने का साहस करते हैं। साथ ही, यह झूठ खज़ारों को स्वयं दंडित होने से बचाने के लिए एक प्रकार का टीका भी है, जो खज़ारों के अपराधों के बारे में सभी राष्ट्रों को पता चलने पर होता। होलो-कॉस्ट का झूठ फैलाकर, खज़ार एक समूह, अर्थात् जर्मनों के विरुद्ध घृणा भड़काने के दोषी हैं।
1930 के दशक में, अंतर्राष्ट्रीय यहूदियों ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। उनके पास जर्मनों के नस्लीय विनाश की भी योजनाएँ थीं। अपनी पुस्तक "जर्मनी मस्ट पेरिश" (अमेरिका 1941) में, यहूदी नाथन कॉफ़मैन मांग करते हैं कि "हवाई बमबारी के बाद बची हुई जर्मन आबादी, पुरुष और महिला दोनों, की नसबंदी की जानी चाहिए ताकि जर्मन नस्ल का पूर्ण विनाश सुनिश्चित हो सके।" लेखक अलेक्सांद्र सोलजेनित्सी का अनुमान है कि यहूदियों द्वारा स्थापित सोवियत राज्य ने 6 करोड़ से ज़्यादा लोगों की हत्या की।
यहूदियों को हत्यारा और झूठा बताने वाले ईसा मसीह के शब्द आज के खज़ारों पर भी पूरी तरह लागू होते हैं जो तल्मूड का पालन करते हैं। हर साल, इज़राइली खुफिया सेवा मोसाद दर्जनों ऐसे लोगों को ज़हर देती है जो यहूदी खज़ारों की पृष्ठभूमि और "होलोकॉस्ट" के असली मकसद से वाकिफ हैं या जो विश्व की घटनाओं में यहूदियों की भूमिका से वाकिफ हैं। मोसाद के पास दुनिया के सभी "यहूदी-विरोधी" लोगों की सूचियाँ हैं, जिनके नाम उसके कंप्यूटर प्रोग्राम होटलों, एयरलाइनों, रेलवे, शिपिंग कंपनियों और ट्रैवल एजेंसियों की फाइलों से खोजते हैं। हत्या आमतौर पर ज़हर देकर की जाती है, ताकि पीड़ित को पता ही न चले कि क्या हो रहा है और कुछ समय बाद दिल का दौरा पड़ने जैसे किसी स्वाभाविक कारण से उसकी मौत हो जाती है।
जब हम इज़राइल और अमेरिका में आज की शक्तिशाली यहूदी आबादी की नीतियों का अवलोकन करते हैं, तो हमें विशिष्ट खज़ार विशेषताएँ दिखाई देती हैं। काउंट फोल्के बर्नाडोट निश्चित रूप से खज़ारों के वंशजों द्वारा मारे गए एकमात्र प्रसिद्ध व्यक्ति नहीं हैं। अपनी पुस्तक "द फ़ाइनल जजमेंट" (यूएसए 1998) में, माइकल कॉलिन्स पाइपर ने इज़राइली ख़ुफ़िया सेवा और अमेरिकी यहूदियों पर राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या का आरोप लगाया है।

यहूदी कैनेडी के हत्यारों की पहचान को प्रभावी ढंग से छिपाने में कामयाब रहे हैं क्योंकि अमेरिका में उनके पास असाधारण मीडिया शक्ति है। पाइपर का सुझाव है कि कैनेडी की हत्या का कारण यह था कि उन्होंने इज़राइल के परमाणु हथियारों का प्रभावी ढंग से विरोध किया था। अमेरिकी मीडिया ने पाइपर के शोध के बारे में एक शब्द भी नहीं बताया है। रॉबर्ट विल्टन की पुस्तक "द लास्ट डेज़ ऑफ़ द रोमानोव्स" (वंता 2000) दर्शाती है कि बोल्शेविक रूस में सत्ता हथियाने और ज़ार के परिवार की हत्या करने में सफल रहे। विल्टन ने 17 वर्षों तक लंदन टाइम्स के लिए रूसी संवाददाता के रूप में काम किया और क्रांति और घटनास्थल पर ज़ार के परिवार की हत्याओं की जाँच पर नज़र रखी। आज, कुछ शोधकर्ता कह सकते हैं कि खज़ारों ने अमेरिका पर भी कब्ज़ा कर लिया है। खज़ार अमेरिकी मीडिया और बैंकिंग को नियंत्रित करते हैं और सभी सामाजिक संस्थाओं में घुसपैठ कर चुके हैं। खज़ार वाशिंगटन में सबसे शक्तिशाली राजनीतिक दबाव समूह हैं। राष्ट्रपति ट्रम्प के प्रशासन में आधे से ज़्यादा वरिष्ठ अधिकारी खज़ार हैं। अमेरिकी यहूदी और इज़राइल दुनिया की सबसे प्रभावी रूप से संगठित आबादी का गठन करते हैं (ली ओ'ब्रायन; अमेरिकी यहूदी संगठन और इज़राइल। यूएसए 1986)।
उपर्युक्त बेंजामिन फ्रीडमैन ने कई प्रस्तुतियों में खज़ारों द्वारा दुनिया पर प्रभुत्व स्थापित करने के प्रयासों के बारे में चेतावनी दी और कहा कि इज़राइल राज्य की स्थापना तृतीय विश्व युद्ध का कारण बनेगी। फ्रीडमैन के अनुसार, खज़ार प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध में युद्धों के बढ़ने के लिए ज़िम्मेदार थे। खज़ारों ने प्रथम विश्व युद्ध में अमेरिका के प्रवेश पर ब्रिटेन के साथ सहमति व्यक्त की और पुरस्कार के रूप में तथाकथित बाल्फोर समझौता प्राप्त किया। खज़ारों ने अधिकारियों को पर्ल हार्बर बेस की चेतावनी देने से रोककर अमेरिका को द्वितीय विश्व युद्ध में घसीटा, जबकि जापानी हमले की पहले से जानकारी थी। अमेरिका में यहूदी मीडिया ने अमेरिका को युद्ध में शामिल होने के लिए मजबूर किया। द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप, खज़ारों ने इज़राइल राज्य की स्थापना की। बेंजामिन फ्रीडमैन को पता था कि वह किस बारे में बात कर रहे थे, क्योंकि वह स्वयं एक खजर थे और खजरों के आंतरिक हलकों को जानते थे।

खज़ार प्रथम विश्व युद्ध शुरू करने के लिए भी ज़िम्मेदार थे। अमेरिका में खज़ार प्रेस ने अमेरिका को युद्ध में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।
कार्ल मार्क्स एक खज़ार बैंकर के पुत्र थे, जिन्होंने खज़ारों के विश्व प्रभुत्व के लिए अपनी शिक्षाएँ लिखीं। कार्ल मार्क्स के पूर्वज 300 से ज़्यादा वर्षों तक रब्बी रहे थे, इसलिए ताल्मूड की शैतानी भावना उनमें जन्म से ही थी। आज, मार्क्स के समकक्ष दिवंगत राजनीति विज्ञानी, यहूदी ज़िबगनियु ब्रेज़िंस्की हैं, जिन्होंने एक नए प्रकार की तानाशाही का निर्माण किया है जो मार्क्सवाद से भी ज़्यादा भयावह है। इस मॉडल में, पूरी दुनिया पर "एक ऐसे अभिजात वर्ग का शासन है जो पारंपरिक मूल्यों से बंधा नहीं है और अपने राजनीतिक उद्देश्यों के लिए लोगों को नियंत्रित और निगरानी करने के लिए नवीनतम राय बनाने वाली तकनीकों का उपयोग करने में संकोच नहीं करता" (ज़. ब्रेज़िंस्की: बिटवीन टू एजेस)। ऐसा अभिजात वर्ग लंबे समय से अस्तित्व में है और इसमें तथाकथित बिल्डरबर्ग समूह के सदस्य, मेसोनिक ऑर्डर का शीर्ष नेतृत्व, सीएफआर (विदेश संबंध परिषद), टीसी (त्रिपक्षीय आयोग), और कुछ अन्य गुप्त संगठन शामिल हैं। हालाँकि, इन सभी समूहों से ऊपर, खज़ारों का गुप्त अभिजात वर्ग, या शीर्ष नेतृत्व है, जिसमें यहूदी फ्रीमेसनरी संगठन (ब'नाई ब्रिथ) और उसके लड़ाकू संगठन (एडीएल), रोथ्सचाइल्ड, वारबर्ग, प्रमुख रब्बी और खज़ार अभिजात वर्ग के अन्य सदस्य शामिल हैं, जिन्हें "सिय्योन के बुद्धिमान पुरुष" कहा जा सकता है। खज़ारों का गुप्त नेतृत्व अपने विश्व प्रभुत्व में मदद के लिए गैर-यहूदी अभिजात वर्ग का उपयोग करता है। तानाशाही का यह नया ब्रेज़िंस्की मॉडल पूरी तरह से सत्ता के गुप्त प्रयोग पर आधारित है, जिसके बारे में आम जनता को कभी कुछ पता नहीं चलेगा। खज़ार गुप्त रूप से शासन करने में अत्यंत कुशल हैं और उन्हें सैकड़ों वर्षों का अनुभव है।
खज़ार अभिजात वर्ग दुनिया पर कब्ज़ा करना आसान बनाने के लिए दूसरे देशों को व्यवस्थित रूप से कमज़ोर करने की कोशिश कर रहा है। देशों को कर्ज़ देकर गुलाम बनाना, खज़ारों द्वारा उन्हें कमज़ोर करने का मुख्य तरीका है। वर्तमान में, नॉर्वे को छोड़कर, सभी देश खज़ार बैंकों के कर्ज़दार हैं।

हालाँकि, नॉर्वे पूरी तरह से खज़ारों के नियंत्रण में है, क्योंकि नॉर्वे में अपनी जनसंख्या के अनुपात में सबसे ज़्यादा फ्रीमेसन (17,000 से ज़्यादा) हैं (ओल्सेन, अल्फ्रेड: डेन रसिस्टिस्के सियोनिस्टिस्के माफिया आई नॉर्गे, नॉर्वे 1994)।
इसके अलावा, एड्स, नशीली दवाओं की तस्करी, अश्लील साहित्य और हिंसक मनोरंजन, और शरणार्थी नीति भी मौजूद हैं। इन कार्रवाइयों में, कासर अपनी गुप्त संस्थाओं—खासकर फ्रीमेसन—का इस्तेमाल अपनी सहायता के लिए करते हैं। यहाँ तक कि प्राथमिक विद्यालय भी खज़ारों द्वारा शुरू किया गया एक आविष्कार है, जिनकी अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा ने यूरोपीय राष्ट्रीयता की भावना को कमज़ोर किया और यूरोपीय संघ की नींव रखी, जो मूल रूप से एक खज़ार षड्यंत्र भी था। हालाँकि खज़ार स्वयं पृथ्वी पर सबसे कट्टर राष्ट्रवादी लोग हैं, फिर भी वे सभी देशों की राष्ट्रवादी ताकतों के खिलाफ लड़ते हैं, और अपने मीडिया माफिया के ज़रिए देशभक्ति के ज़रा से भी संकेत को "अति-दक्षिणपंथी" करार देते हैं।
स्वीडनबॉर्ग की रचनाओं के ज्ञान के बिना कासारों के हज़ारों षड्यंत्रों को समझा नहीं जा सकता: "ये लोग अन्य लोगों से बिल्कुल अलग हैं, और उनमें समाज से जुड़ी हर चीज़ को नष्ट या विकृत करने की गहरी इच्छा है... और जब भी उन्हें मौका मिलता है, वे इसमें शामिल हो जाते हैं और व्यवस्था - यानी समाज के नियमों को नष्ट करने से ज़्यादा उन्हें कोई खुशी नहीं मिलती। इसका कारण प्रेम और व्यवस्था, जो कि ईश्वर है, के प्रति उनकी अर्जित घृणा है। मुझे इसका बहुत अनुभव है।" (स्वीडनबॉर्ग: डायरियम स्पिरिचुअल, 2260)।
खज़ार हमेशा कमज़ोर और मूर्ख लोगों को सत्ता के पदों पर बिठाने और राष्ट्रों को कमज़ोर करने के अपने अंतर्राष्ट्रीय खेल को खेलने के लिए बुद्धिमान और नैतिक रूप से श्रेष्ठ लोगों को दबाने की कोशिश करते हैं। यहूदियों की विश्व प्रभुत्व और अन्य राष्ट्रों को कमज़ोर करने की चाहत, 29 अगस्त, 1897 को बेसल में ज़ायोनी सम्मेलन में डॉ. मैक्स मान-डेलस्टाम के उद्घाटन भाषण (ले टेम्प्स, 3 सितंबर, 1897) में भी स्पष्ट है: "यहूदियों को अन्य सभी राष्ट्रों के उदय और सफलता को रोकने के लिए हर संभव प्रयास और अपनी पूरी शक्ति का उपयोग करना चाहिए, ताकि हम अपने ऐतिहासिक लक्ष्य, अर्थात् विश्व प्रभुत्व, को प्राप्त कर सकें।" यह सोचना भयावह है कि क्रूर तल्मूडवादियों के पास इज़राइल की परमाणु शक्ति है, जो पूरी तरह से हथियारों से लैस है। तल्मूड के अनुसार, ईसाइयों का विनाश एक "आवश्यक बलिदान" है।

यह कब शुरू होगा? क्या आधुनिक ईसाई इतने अंधे हैं कि वे यह नहीं देख पा रहे हैं कि इज़राइल और अंतर्राष्ट्रीय यहूदी उनके अस्तित्व के लिए ख़तरा हैं?
ख़ज़ारों ने अपनी प्रचार मशीनरी से सभी राष्ट्रों का ब्रेनवॉश करने में कामयाबी हासिल कर ली है। आज, बहुत कम लोग ख़ज़ारों के लक्ष्यों और तरीकों से वाकिफ़ हैं, और ख़ज़ार ऐसे लोगों पर बेहद क्रूरता से अत्याचार करते हैं। ख़ज़ारों के अंतर्राष्ट्रीय संगठन उन सभी को व्यवस्थित रूप से प्रताड़ित करते हैं जो "होलोकॉस्ट" या दुनिया पर प्रभुत्व स्थापित करने के ख़ज़ारों के प्रयासों के बारे में सच्चाई उजागर करने की हिम्मत करते हैं। इसमें उन्हें कई "इज़राइल के दोस्त" मदद करते हैं, जो सीधे-सादे लोग हैं जिन्हें उन्होंने धोखा दिया है। ख़ज़ार एक जातीय समूह, यानी जर्मनों के ख़िलाफ़ नफ़रत भड़काने के लिए होलोकॉस्ट के झूठ फैलाने के दोषी हैं।
किताब के अंत में, मैंने उन रचनाओं की एक सूची शामिल की है जो ख़ज़ारों के असली स्वरूप पर प्रकाश डालती हैं। इनमें से ज़्यादातर किताबें बुद्धिमान ईसाइयों द्वारा लिखी गई हैं और इनका मुख्यधारा के मीडिया के प्रचार से कोई लेना-देना नहीं है। इन पुस्तकों की सहायता से पाठक खज़ारों के ब्रेनवॉश से मुक्त हो सकते हैं, जिसने सभी को प्रभावित किया है। मैंने अपने ग्रंथों में इन पुस्तकों को उद्धृत किया है। परिशिष्ट 1 देखें।
नए यरूशलेम का कार्य उस पुराने सर्प, सिय्योन के बुद्धिमान पुरुषों, या गुप्त यहूदी विश्व सरकार का सिर कुचलना है: "और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा" (उत्पत्ति 3:15)।

मैं अरकाना कोएलेस्टिया से कुछ अंशों की सूची संलग्न कर रहा हूँ जो यहूदियों, या खज़ारों, के स्वभाव और उद्देश्य के बारे में और जानकारी प्रदान करते हैं। स्वीडनबॉर्ग खज़ारों की यहूदी पृष्ठभूमि से परिचित नहीं थे और उन्होंने उन्हें यहूदी कहा। ये संख्याएँ अरकाना कोएलेस्टिया के संगत अंशों को दर्शाती हैं।

आर्काना कोएलेस्टिया अंग्रेजी में यहां उपलब्ध है:
https://newchristianbiblestudy.org/swedenborg/

यहूदियों का धार्मिक और राजनीतिक महत्व

यहूदियों के लिए, चर्च के सत्य केवल प्रतिनिधित्व थे, और उन्हें आस्था के आंतरिक सत्यों को जानने की अनुमति नहीं थी, 301–303। यहूदियों पर वचन की आंतरिक बातें क्यों प्रकट नहीं की गईं, 2520. आंतरिक बातें इसलिए प्रकट नहीं की गईं क्योंकि यहूदी उन्हें तुच्छ समझते, 3398, 3479. यहूदियों के लिए वचन पूरी तरह से बंद था, 3769. वे आंतरिक सत्य प्राप्त नहीं कर सके, 4433. उन्होंने आंतरिक सत्य को दबा दिया, 4429, 4433. याकूब के वंशज आंतरिक कलीसिया को प्राप्त नहीं कर सके, 4680. आंतरिक कलीसिया यहूदियों को नहीं दी जा सकी, 4844, 4845, 4847. यहूदी आंतरिक सत्य में विश्वास नहीं करते, 4865. यहूदियों से आंतरिक सत्य छिपाए गए थे जब वे अभ्यावेदन में थे, और यही उनका पवित्रीकरण था, 8788, 8806. यहूदियों का आंतरिक मन परमेश्वर की आराधना के दौरान बंद रखा गया था, 9962. इस्राएली और यहूदी लोगों के लिए आंतरिक मन पूरी तरह से बंद था, 10490. यदि उनका आंतरिक भाग खुल जाता, तो वे नष्ट हो जाते, 10533। यहूदियों का आंतरिक मन अशुद्ध था, और इसलिए यह उपासना के दौरान बंद रहता था, 10575, 10629।

यहूदियों की उपासना केवल बाह्य थी, 1200। वे आंतरिक मामलों के बारे में जानना नहीं चाहते थे, क्योंकि वे आंतरिक रूप से बाह्य से अलग थे, 10396, 10401, 10407। इसलिए, उनके बीच एक संगत कलीसिया स्थापित करना संभव नहीं था, बल्कि केवल कलीसिया का एक प्रतिनिधित्व ही स्थापित हो सका, 10396। क्योंकि यहूदी परमेश्वर की आंतरिक उपासना के बारे में कुछ भी जानना नहीं चाहते थे, 3479। फिर भी, वे पवित्र चीज़ों और स्वयं प्रभु का प्रतिनिधित्व करते थे, क्योंकि वे एक प्रकार के पवित्र बाह्य रूप में रहने में सक्षम थे, 3479। इसी कारण से, यहूदियों को आज तक संरक्षित रखा गया है, 3479। लेकिन कोई भी आंतरिक पवित्रता उन्हें प्रभावित नहीं करती, 3479। यहूदी दुष्ट आत्माओं से घिरे हुए थे यहूदी केवल बाहरी मामलों में थे क्योंकि वे लालची थे, 4459. यह बाहरी से आंतरिक अलगाव के कारण ही था कि यहूदियों ने अपने दुश्मनों के साथ क्रूरता से व्यवहार किया, 4903.

यहूदी पवित्र चीज़ों का प्रतिनिधित्व करने में सक्षम थे क्योंकि उन्होंने बाहरी अनुष्ठानों में परमेश्वर की आराधना की थी, 8588। हालाँकि वे सभी राष्ट्रों में सबसे बुरे थे, वे कलीसिया का प्रतिनिधित्व करने में सक्षम थे, लेकिन उनके पास एक समान कलीसिया नहीं थी, 9320। यहूदियों की खातिर शब्द के बाहरी अर्थ को बदलना पड़ा, 10453, 10461। यहूदियों के आंतरिक मनुष्य को बाहर करना पड़ा ताकि वे बाहरी मनुष्य के माध्यम से स्वर्ग के संपर्क में रह सकें, 10492। यहूदियों को आराधना के बाहरी पहलुओं के साथ चमत्कारों के माध्यम से स्वर्ग से संबंध प्रदान किया गया था, 10500, 10602। प्रभु के आगमन के बाद उन्हें यह और नहीं दिया जा सका, और उन्हें कनान देश से निष्कासित कर दिया गया, 10500। यहूदियों ने वचन को केवल बाहरी रूप से देखा, आंतरिक रूप से नहीं, 10549–10551। यहूदी प्रभु यीशु और उनके राज्य से संबंधित वचन के आंतरिक सत्यों को सहन नहीं कर सके, 10694, 10701, 10707।

याकूब के वंशजों का कलीसिया में प्रतिनिधित्व था, लेकिन स्वयं कलीसिया का नहीं, 4281, 7048। यहूदी कनानियों के वंशज हैं और अपनी सास के साथ व्यभिचार करते थे, 4818। यहूदियों में बिल्कुल भी वैवाहिक प्रेम नहीं था, 4837। यहूदी धर्म आध्यात्मिक व्यभिचार पर आधारित था, 4868। यहूदी अनेक देवताओं की सेवा करने के लिए प्रवृत्त थे, 8301। उन्होंने यहोवा की सेवा केवल इसलिए की ताकि वे अन्य राष्ट्रों से ऊपर उठ सकें, 10566, 10570। यहूदी केवल यहोवा के नाम की आराधना करते थे, 10559–10561, 10566।

यहूदियों को चुना नहीं गया था, लेकिन उन्होंने हठपूर्वक कलीसिया होने का दावा किया, 4290, 4293। वे पवित्र होने में सक्षम थे बाहर से पवित्र, भीतर से पवित्र न होना, 4293. जो लोग सोचते हैं कि यहूदी फिर भी ईसाई धर्म अपना लेंगे, वे गलत हैं, 4847. यह गलत धारणा कि यहूदियों को एक बार फिर चुना जाएगा, 8301. ईसाइयों की गलती वचन के आंतरिक अर्थ के बारे में उनकी अज्ञानता से उपजी है, 4847.

यहूदियों में आध्यात्मिक प्रेम का पूर्णतः अभाव था, वे भौतिक और सांसारिक प्रेम में व्यस्त थे, 4307. यहूदी लोगों का चरित्र यीशु के दृष्टांतों में प्रकट होता है, 4314. यहूदियों की विरासत में मिली दुष्टता ऐसी थी कि वे प्रलोभनों का सामना नहीं करते थे, 4317.

प्रभु इस्राएलियों के सामने सिनाई पर्वत पर बादल, धुएँ और अंधकार में प्रकट हुए, जो यहूदियों की ग्रहणशीलता के अनुरूप था, 1861, 6832। यहूदियों को राष्ट्रों को नष्ट करने की अनुमति दी गई थी क्योंकि वे स्वयं सभी राष्ट्रों में सबसे बुरे थे, 9320। इस्राएली आंतरिक रूप से कैसे थे, 10454-10457, 10462-10466। वचन में, सच्चे यहूदी वे लोग हैं जो भलाई और सच्चाई में जीते हैं। इन्हें अब्राहम, इसहाक और याकूब के वंश के रूप में संदर्भित किया गया है, न कि यहूदी लोगों के रूप में, 3373। यहूदी लोगों को वचन में यहूदा इस्करियोती द्वारा दर्शाया गया है, 4750, 4751।

अगर खज़ारों को लगता है कि इस्राएल की मदद से वे दुनिया को जीत लेंगे, तो वे गलत हैं। यदि खज़ार अपना शैतानी अंतर्राष्ट्रीय खेल जारी रखते हैं, तो भी परमेश्वर अपना वादा निभाएगा: "और मैं उन पर, यरूशलेम के निवासियों और यहूदा के लोगों पर वह सारी विपत्ति डालूँगा जो मैंने उनके विरुद्ध घोषित की है, यद्यपि उन्होंने मेरी बात नहीं मानी" (यिर्मयाह 36:31)। स्वीडनबॉर्ग के अनुसार, चूँकि यहूदी पुनर्जन्म लेने से इनकार करते हैं, इसलिए वे अपने बुरे मार्गों से कभी नहीं हटेंगे। इसलिए उनका भाग्य वैसा ही है जैसा यिर्मयाह ने वर्णित किया है।

नया यरूशलेम प्रभु की अपनी कलीसिया है। स्वीडनबॉर्ग के माध्यम से आया स्वर्गीय सिद्धांत परमेश्वर, स्वर्ग और नरक का अंतिम और सच्चा ज्ञान है, अर्थात् "सनातन सुसमाचार" (प्रकाशितवाक्य 14:6)। इसका उपयोग शैतान के विनाश को रोकने के लिए किया जा सकता है। नया यरूशलेम एक उग्रवादी कलीसिया है जिसे शैतान के विरुद्ध सदैव संघर्ष करना होगा। नया यरूशलेम पत्राचार विज्ञान की "पत्नी" है, और यहूदी "सर्प" या शैतान हैं। नए यरूशलेम का कार्य उस साँप, यानी सिय्योन के बुद्धिमान पुरुषों का सिर कुचलना है: "मैं तेरे और तेरी पत्नी के बीच, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा" (उत्पत्ति 3:15)। सिर कुचलने का अर्थ है शक्ति छीन लेना। एड़ी पर वार करने का अर्थ है उसे कामुक बनाना, यानी उसे स्वर्गीय चीज़ों के बजाय सांसारिक चीज़ों की ओर ले जाना। और यहूदी अपने मनोरंजन उद्योग और मीडिया के साथ ठीक यही कर रहे हैं। इसी कारण, नए चर्च के प्रत्येक सदस्य को खज़ार शैतान की साज़िशों का पर्दाफ़ाश करने और इस प्रकार मानवता को बचाने के लिए काम करना चाहिए।

वर्तमान पतित "ईसाई" चर्च ने खज़ारों के साथ एक समझौता कर लिया है।
स्वीडनबॉर्ग खज़ारों के स्वभाव और आकांक्षाओं को किसी भी अन्य मनोवैज्ञानिक की तुलना में अधिक स्पष्टता से प्रकट करते हैं, क्योंकि उनकी मुलाक़ात खज़ारों से आध्यात्मिक जगत में हुई थी, जहाँ मानव का वास्तविक स्वरूप प्रकट होता है। स्वीडनबॉर्ग के अनुसार, यहूदी (अर्थात, खज़ार) विश्व इतिहास के सबसे क्रूर लोग हैं, जिनका सबसे बड़ा आनंद अन्य लोगों का विनाश है। यदि खज़ार तीसरा विश्व युद्ध जीत जाते, तो वे करोड़ों लोगों का विनाश कर देते। नए यरूशलेम के सभी सदस्य भी मारे जाते। हालाँकि, प्रभु ऐसा नहीं होने देंगे। नए यरूशलेम के लिए ही प्रभु भविष्यवक्ता यिर्मयाह (अध्याय 36) के माध्यम से जो कुछ कहा है, उसे पूरा करेंगे।
स्वीडनबॉर्ग ने आत्माओं के जगत में कई यहूदियों से मुलाकात की और जो कुछ उन्होंने देखा, उसे सरलता से सुनाया। स्वीडनबॉर्ग ने यहूदियों की शैतानी भूमिका का खुलासा किया: यहूदियों में समाज से जुड़ी हर चीज़ को नष्ट करने की आंतरिक इच्छा होती है (आध्यात्मिक डायरी, 2260)। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे ईश्वर से घृणा करते हैं, जो स्वयं अच्छाई और व्यवस्था है (ibid., 2260)। स्वीडनबॉर्ग ने कहा कि आत्माओं की दुनिया में, यहूदी ऐसे शहरों में रहते थे जहाँ सड़कें टखनों तक मल से ढकी रहती थीं (अर्काना कोएलेस्टिया, 940)। पत्राचार के विज्ञान में, मल और मूत्र मानवीय स्वार्थ से उत्पन्न बुराइयों और अन्याय का प्रतिनिधित्व करते हैं। हालाँकि, इन शहरों में केवल श्रेष्ठ यहूदी ही रहते थे। अधिकांश यहूदी जंगल में रहते थे, जहाँ उनका एकमात्र आनंद हर व्यक्ति को विकृत करना, उबालना और यातना देकर मार डालना था (अर्काना कोएलेस्टिया, 941)। खज़ारों का असली स्वभाव ऐसा ही है, जिन्हें कई साधारण लोग "ईश्वर के चुने हुए लोग" मानते हैं।
खज़ारों में स्वार्थ अपने चरम पर पहुँच गया है। आज के खज़ार स्वीडनबॉर्ग के समय से कहीं ज़्यादा बदतर हैं, क्योंकि विरासत में मिली बुराई हर पीढ़ी के साथ बढ़ती जा रही है। आज, खज़ार एक विशाल, बेहद सुव्यवस्थित माफिया हैं जिसका लक्ष्य तल्मूड की शिक्षाओं का पालन करना है: दुनिया पर विजय प्राप्त करना, ईसाइयों का विनाश करना और सभी राष्ट्रों को गुलाम बनाना। छल, सूदखोरी, मीडिया शक्ति, युद्धोन्माद और हत्या पर आधारित खज़ारों की अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियाँ मानवता के विरुद्ध अपराध हैं।

खज़ारों को एक जाति या जातीय समूह नहीं, बल्कि एक विशाल आपराधिक माफिया माना जा सकता है जो राष्ट्रों के अस्तित्व के लिए ख़तरा है। हालाँकि कई साधारण खज़ार सभ्य लोग हैं, फिर भी वे तल्मूड के भयावह लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए खज़ार नेतृत्व द्वारा नियंत्रित और शोषित श्रृंखला की अंतिम कड़ी हैं।
मुझे पता है कि उपरोक्त पाठ कई लोगों को चौंकाने वाला लग सकता है। लेकिन स्वर्ग के प्रकाश में चीज़ें ऐसी ही होती हैं: स्वर्ग का प्रकाश शैतान के सार को प्रकट करता है। खज़ारों के माध्यम से, सबसे गहरे नरक से एक प्रवाह हमारे ग्रह पर आया है ("आप हमें एक गर्म गुफा में गुलामी में देखते हैं, अब हवा की शक्ति में स्वतंत्र हैं"। गोएथे: फॉस्ट)। हाल के दशकों में खज़ार हमारे ग्रह पर प्रमुख आबादी रहे हैं, हालाँकि बहुत कम लोग यह जानते हैं। पूरी 20वीं सदी को इतिहास में "खज़ारों का युग" कहा जा सकता है। खज़ार हमारे समय की लगभग सभी प्रमुख समस्याओं के लिए ज़िम्मेदार हैं।
खज़ारों के विरुद्ध संघर्ष अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम का सर्वोच्च रूप है, क्योंकि इसका लक्ष्य समस्त मानवता को शैतान से बचाना है। खज़ार और उनका सैन्य राज्य इज़राइल मानवता के अस्तित्व के लिए खतरा हैं। इज़राइल को एक यहूदी राज्य के रूप में समाप्त किया जाना चाहिए और फ़िलिस्तीनियों के अधिकार बहाल किए जाने चाहिए। इज़राइल और खज़ारों द्वारा नियंत्रित अमेरिका हमारे ग्रह के लिए सबसे गंभीर ख़तरा हैं।
यह ध्यान देने योग्य है कि खज़ार असाधारण रूप से बुद्धिमान हैं। वे शायद दुनिया के सबसे बुद्धिमान लोग हैं, जो सांसारिक मामलों में, विशेष रूप से वित्तीय मामलों में, अपनी बुद्धिमत्ता शैतान से प्राप्त करते हैं।

यहूदियों, या खज़ारों के बारे में एक अच्छी साइट:

https://islam-radio.net/islam/english/english.htm

अध्याय 4: मित्र राष्ट्रों की विजय और जर्मन जनता का नरसंहार

द्वितीय विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्रों (ब्रिटेन, फ्रांस, अमेरिका और सोवियत संघ) की विजय वास्तव में खज़ारों की विजय थी, जिन्होंने 1933 में ही जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी थी। दुनिया भर के खज़ारों ने जर्मन वस्तुओं का बहिष्कार शुरू कर दिया। यहूदियों ने 1938 में युद्ध की अपनी घोषणा को फिर से दोहराया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, यहूदियों ने चर्चिल, रूज़वेल्ट और स्टालिन के सलाहकार के रूप में कार्य किया और वास्तव में युद्ध का निर्देशन भी किया।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, यहूदी समाचार पत्रों ने जर्मनों को क्रूर राक्षसों के रूप में चित्रित किया और उनके विरुद्ध व्यापक घृणा भड़काई। इसके परिणामस्वरूप मित्र राष्ट्रों द्वारा जर्मनों के विरुद्ध युद्ध अपराध किए गए। मित्र राष्ट्रों ने कई युद्ध अपराध किए, लेकिन आधुनिक मीडिया इस बारे में चुप रहता है, क्योंकि यह विजेताओं का इतिहास है। खज़ार यहूदी अपने प्रेस के माध्यम से एक जातीय समूह, अर्थात् जर्मनों, के विरुद्ध घृणा भड़काने के दोषी थे।

मित्र राष्ट्रों के विपरीत, जर्मन किसी भी स्तर पर नरसंहार के दोषी नहीं थे। होलोकॉस्ट युद्ध प्रचार था, जिसे खज़ारों ने आज तक जारी रखा है। जर्मन सेना अनुशासित थी और उसने युद्ध अपराध नहीं किए, बल्कि गेनेवा कन्वेंशन का सम्मान किया, जो युद्ध में नागरिकों की हत्या को प्रतिबंधित करता है।

मित्र राष्ट्रों ने जर्मन शहरों पर बमबारी करते हुए दस लाख से ज़्यादा जर्मन नागरिकों, जिनमें मुख्यतः महिलाएँ, बच्चे और बुज़ुर्ग शामिल थे, की हत्या कर दी, क्योंकि उनके सैनिक मोर्चे पर थे। इकसठ जर्मन शहरों, जिनमें से अधिकांश के पास कोई सैन्य लक्ष्य नहीं था, को सैकड़ों बमवर्षक दस्तों द्वारा ध्वस्त कर दिया गया। बमबारी का विचार चर्चिल के यहूदी सलाहकार, प्रोफ़ेसर फ्रेडरिक लिंडमैन का था, जिनका उद्देश्य अधिक से अधिक जर्मन नागरिकों को मारना था। अकेले ड्रेसडेन पर हुए आतंकवादी हमले में लगभग 400,000 जर्मन नागरिक मारे गए, जो कि हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए परमाणु बम विस्फोटों से भी अधिक है, जो कि युद्ध अपराध थे।

युद्ध के अंत में, जब सोवियत संघ जर्मन क्षेत्र पर हमला करने में सक्षम हो गया, तो उसने हज़ारों नागरिकों की हत्या कर दी और लगभग 20 लाख जर्मन महिलाओं के साथ बलात्कार किया। स्टालिन के यहूदी सलाहकार, कमिसार इल्या एहरेनबर्ग ने मोर्चे पर वितरित पर्चों के माध्यम से उन्हें ऐसा करने के लिए प्रेरित किया था। सोवियत संघ ने ब्रिटेन और अमेरिका के विपरीत, जिनेवा कन्वेंशन पर हस्ताक्षर नहीं किए थे।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान और उसके बाद जर्मनों के प्रति नफ़रत यहूदी मीडिया द्वारा फैलाई गई थी। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, अनुमानित 90 लाख जर्मन नागरिक और युद्धबंदी जनसंख्या स्थानांतरण, युद्ध शिविरों, अकाल और महामारियों में मारे गए, और लगभग 35 लाख जर्मन युद्धबंदी मारे गए जिन्हें सोवियत गुलाग शिविरों में भेज दिया गया था। युद्ध के बाद, जर्मनी बर्बादी की स्थिति में था और दवा और भोजन की भारी कमी थी। इसके अलावा, मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी के लगभग सभी उद्योग और कई वैज्ञानिकों को लूट लिया, जिससे जर्मन भूख से मर गए, उदाहरण के लिए, टाइफस से, जो यातना शिविरों में भी फैला था।

युद्ध के बाद, यहूदियों ने तथाकथित नूर्नबर्ग न्यायाधिकरण का गठन किया, जिसमें 3,000 अधिकारी थे, जिनमें से 2,400 यहूदी थे। यहूदी जर्मन सैन्य नेतृत्व से बदला लेना चाहते थे, जिनमें से दर्जनों को झूठे सबूतों के आधार पर यातनाएँ दी गईं और मार डाला गया। आत्महत्या करने वालों को छोड़कर सभी जर्मन सैन्य नेताओं को फाँसी पर लटका दिया गया। यहूदी पूछताछकर्ताओं ने अपने पीड़ितों को यातनाएँ दीं, और उदाहरण के लिए, अभियुक्तों के अंडकोष नियमित रूप से कुचल दिए जाते थे। ये मुकदमे एक दयनीय तमाशा थे जिसमें यहूदियों ने जर्मनों से उनके गैर-मौजूद अन्याय का बदला लिया।

युद्ध के बाद, मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी को दो भागों, पूर्वी जर्मनी और पश्चिमी जर्मनी, में विभाजित कर दिया। आज तक किसी भी शांति संधि पर हस्ताक्षर नहीं हुए हैं। जर्मनी लगभग 1,00,000 विदेशी सैनिकों के साथ एक अधिकृत देश बना हुआ है। युद्ध के बाद जर्मन संविधान (ग्रुंडगेसेट्ज़) में राष्ट्रीय समाजवाद के सभी रूपों का अपराधीकरण शामिल है, और नरसंहार का खंडन करने वालों को जेल में डाल दिया जाता है।

मित्र राष्ट्रों द्वारा हस्ताक्षरित एक गुप्त संधि (गेहेइमे स्टैट्सवर्टाग) उन्हें 2099 तक जर्मन मीडिया और शिक्षा पर नियंत्रण रखने की अनुमति देती है, जिससे राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय समाजवाद से जुड़ी किसी भी चीज़ की अभिव्यक्ति पर रोक लग जाती है।
द्वितीय विश्व युद्ध में खज़ारों ने विजय प्राप्त की। जर्मनी अपने श्रेष्ठ शत्रु, तीन महाशक्तियों, को पराजित करने में असमर्थ रहा। जर्मनी का असली दुश्मन अंतर्राष्ट्रीय खज़ार यहूदी थे। यहूदियों ने न केवल युद्ध जीता, बल्कि युद्ध के बाद जर्मनी की पीड़ा को भी जारी रखा और आज तक अपना झूठा युद्ध प्रचार जारी रखा है। विशेष रूप से, होलोकॉस्ट का झूठ पूरी दुनिया के दिमाग में भर दिया गया है। फ़िनलैंड में भी, होलोकॉस्ट को नकारने के लिए आपको जल्द ही जेल हो सकती है (इस क़ानून पर 2025 की शरद ऋतु में संसद में बहस होगी)। यहूदी होलोकॉस्ट के झूठ और अन्य आरोपों के ज़रिए एक जातीय समूह, यानी जर्मनों के ख़िलाफ़ नफ़रत भड़काने के दोषी हैं। पूरी दुनिया का दिमाग़ राष्ट्र-विरोधी विचारों से धो दिया गया है, जिससे राष्ट्रीय समाजवाद को सबसे बुरी विचारधारा और एडॉल्फ हिटलर को दुष्ट के रूप में चित्रित किया जा रहा है। वास्तविकता अलग है: एडॉल्फ हिटलर और राष्ट्रीय समाजवाद अब तक की सबसे प्रगतिशील विचारधाराओं और नीतियों में से एक थे, जो अपराधी यहूदी अंतरराष्ट्रीय शक्ति के लिए एक ख़तरा थे।

1945 में एडॉल्फ हिटलर: "यह अवश्यंभावी है कि मैं अपने लोगों के लिए मरूँगा, लेकिन मेरी आत्मा कब्र से उठेगी, और दुनिया जान जाएगी कि मैं सही था।"

Good video about the German genocide:
https://rumble.com/v55e9f8-hellstorm.html

राष्ट्रीय समाजवाद और हिटलर के बारे में सच्चाई

“हिटलर उस घृणा से बच जाएगा जो अब उसे घेरे हुए है क्योंकि वह अब तक के सबसे उल्लेखनीय व्यक्तियों में से एक है। उसमें वह क्षमता थी जिससे किंवदंतियाँ बनती हैं।" जॉन एफ. कैनेडी, संयुक्त राज्य अमेरिका के 35वें राष्ट्रपति।
यहूदियों की विश्व प्रभुत्व की चाहत और अन्य राष्ट्रों को कमज़ोर करने की चाहत, 29 अगस्त, 1897 को बेसल में ज़ायोनी सम्मेलन में डॉ. मैक्स मंडेलस्टम के उद्घाटन भाषण (ले टेम्प्स, 3 सितंबर, 1897) में स्पष्ट है: “यहूदियों को अन्य सभी राष्ट्रों के उदय और सफलता को रोकने के लिए हर संभव प्रयास और अपनी पूरी शक्ति का उपयोग करना चाहिए, ताकि हम अपने ऐतिहासिक लक्ष्य, अर्थात् विश्व प्रभुत्व, को प्राप्त कर सकें।" यह संक्षेप में पूरे यहूदी एजेंडे का सार था। 1933 और 1941 के बीच जर्मनी इतना सफल रहा कि यहूदियों ने उसे नष्ट करने का फैसला कर लिया। जर्मनी की सफलता खज़ार यहूदियों की योजनाओं के अनुकूल नहीं थी। यहूदियों ने द्वितीय विश्व युद्ध से पहले ही जर्मनी के खिलाफ अपना झूठा प्रचार शुरू कर दिया था, लेकिन युद्ध के दौरान और युद्धोत्तर विश्व में भी इसे जारी रखा। एडॉल्फ हिटलर ने पाँच वर्षों में जर्मनी को यूरोप का सबसे धनी और शक्तिशाली देश बना दिया। नवंबर 1936 में विंस्टन चर्चिल ने कहा: "जर्मनी बहुत शक्तिशाली है। हमें इसे नष्ट करना होगा।" हिटलर के जर्मनी की सफलता ही द्वितीय विश्व युद्ध का कारण बनी। खज़ारों की जर्मनों के प्रति घृणा विश्व युद्ध से शांत नहीं हुई, और यह घृणा आज भी जारी है।
जब 30 जनवरी, 1933 को एडॉल्फ हिटलर सत्ता में आया, तो उसने एक गरीब, बीमार, निराश और दिवालिया देश पर कब्ज़ा कर लिया, जिसमें 60 लाख लोग बेरोज़गार थे और युद्ध क्षतिपूर्ति के भारी बोझ तले दबे थे। हिटलर ने तुरंत यहूदियों के स्वामित्व वाले रेडियो और प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया, यहूदी बैंकरों को बर्खास्त कर दिया और अंतर्राष्ट्रीय यहूदी बैंकों को बंद कर दिया। बैंकों से ब्याज वसूलने पर मृत्युदंड का प्रावधान किया गया। हिटलर ने एक नया जर्मन मार्क बनाया, जिसका मूल्य श्रम उत्पादकता पर आधारित था।

जर्मन अर्थव्यवस्था तुरंत बढ़ने लगी। जर्मनी फलने-फूलने लगा: कोई कर्ज़ नहीं, कोई मुद्रास्फीति नहीं, पाँच साल में पूर्ण रोज़गार, अपराध लगभग नगण्य, कोई बेघर या भिखारी नहीं, पाँच साल में एक विश्व शक्ति, बैंकों का जर्मनी पर शासन नहीं रहा। आधुनिक पाठ्यपुस्तकों में इनमें से किसी का भी उल्लेख नहीं है, क्योंकि हिटलर के जर्मनी के बारे में कुछ भी सकारात्मक कहने की अनुमति नहीं है।
कुछ ही समय में, जर्मनी दुनिया का सबसे उन्नत और समृद्ध देश बन गया। मानव इतिहास में ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। यह तब हुआ जब जर्मनी ने ब्याज दरों और ऋण वित्तपोषण पर आधारित अपनी बैंकिंग प्रणाली को त्याग दिया, जबकि बाकी दुनिया रोथ्सचाइल्ड्स के सूदखोरी के अधीन मंदी में रही।
1933 की शुरुआत में, यहूदियों ने जर्मन वस्तुओं का बहिष्कार शुरू कर दिया, जिससे जर्मनी उन देशों के साथ वस्तु विनिमय व्यापार करके बचता था जिन्हें यहूदी बैंकों की आवश्यकता नहीं थी। यहूदियों ने जर्मनी के खिलाफ एक दुष्प्रचार युद्ध भी शुरू किया, जो युद्ध के दौरान जारी रहा और आज तक जारी है। जर्मनों को क्रूर, बर्बर जानवर के रूप में चित्रित किया गया।
डेविड ब्राउन 1934: "हम यहूदी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध छेड़ेंगे।" द्वितीय विश्व युद्ध पूरी तरह से यहूदियों द्वारा आयोजित किया गया था। हिटलर विश्व युद्ध नहीं चाहता था और उसने चर्चिल के सामने 20 से ज़्यादा शांति प्रस्ताव रखे, जिन्हें चर्चिल ने अस्वीकार कर दिया। एडॉल्फ हिटलर जर्मनी और ऑस्ट्रिया में बेहद लोकप्रिय था, जिसे बाद में जर्मनी में मिला लिया गया। हिटलर की उपलब्धियाँ अपार थीं। कुछ ही समय में, उसने जर्मनी को एक उन्नत, शक्तिशाली राज्य में बदल दिया जहाँ विज्ञान और कला का विकास हुआ। लोग बहुत खुश थे, और युवा लोग हिटलर को अपना आदर्श मानते थे। राष्ट्रीय समाजवाद ने अन्य देशों में भी रुचि पैदा की, और 30 देशों के स्वयंसेवकों ने जर्मन सेना के एसएस बलों में भर्ती हुए। लेकिन जर्मनी के विरुद्ध यहूदी आतंक का प्रचार पूरे युद्ध के दौरान और उसके समाप्त होने के बाद भी जारी रहा। युद्ध के बाद, विशेष रूप से नरसंहार का झूठा प्रचार इस प्रचार का मुख्य लक्ष्य रहा है।

पूरे जर्मनी पर साठ लाख यहूदियों की हत्या का आरोप है, जबकि रेड क्रॉस ने 1956 में अनुमान लगाया था कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान लगभग 3,00,000 यहूदी बीमारी और प्राकृतिक कारणों से मारे गए थे। नाज़ी जर्मनी में, किसी यहूदी की हत्या की सज़ा मौत थी, और कोई सामूहिक हत्या नहीं होती थी।

आज, अगर आप दुनिया में किसी से भी युद्धकालीन जर्मनी के बारे में पूछें, तो तुरंत जवाब मिलता है, "हिटलर ने साठ लाख यहूदियों को मार डाला।" राष्ट्रीय समाजवाद और हिटलर के खिलाफ दुष्प्रचार 80 से ज़्यादा सालों से जारी है और इसने पूरी दुनिया का दिमाग़ धो दिया है। राष्ट्रपति और राजघराने 27 जनवरी को, जो आधिकारिक नरसंहार स्मृति दिवस है, "साठ लाख" पीड़ितों की याद में ऑशविट्ज़ में अपना सिर झुकाते हैं। फ़िनलैंड में, एक ऐसा कानून लागू हो रहा है जिसके तहत नरसंहार से इनकार करने पर जेल तक की सज़ा हो सकती है, जो पूरी तरह से बेतुका है।

एडॉल्फ हिटलर "जर्मनी के महान नेता और उद्धारक" की उपाधि के हकदार हैं, और राष्ट्रीय समाजवाद विश्व इतिहास की सर्वश्रेष्ठ सामाजिक प्रणालियों में से एक के रूप में पहचाने जाने का हकदार है। लेकिन जैसा कि गोएथे ने कहा था: "सब कुछ बदल गया है, एक झटके में चला गया है, अब शीर्ष वही है जो कभी सबसे निचला था। यह भी उस सही सिद्धांत पर आधारित है कि सबसे निचला सबसे ऊँचा बन जाता है।" दूसरे शब्दों में, इतिहास उलट गया है: अच्छाई को बुराई माना गया है (राष्ट्रीय समाजवाद और हिटलर) और बुराई को अच्छाई माना गया है (खज़ार और मित्र राष्ट्र)।
हिटलर ने सूदखोरी और यहूदी बैंकिंग प्रणाली का त्याग किया और अन्य राष्ट्रों के लिए एक उदाहरण बन गया। यही कारण है कि जर्मनी का विनाश हुआ और जर्मनी की सफलता के कारणों की जानकारी अभी भी दबाई जा रही है: यहूदी बैंकिंग प्रणाली का अस्वीकार। यहूदियों की अंतर्राष्ट्रीय शक्ति बैंकिंग प्रणाली पर आधारित है। एडॉल्फ हिटलर अब तक के सबसे बुद्धिमान राजनेताओं में से एक थे, जो अपने लोगों, जर्मनों से प्यार करते थे। यहूदी प्रश्न पर वह सही थे और उन्होंने यहूदियों को जर्मनी को नष्ट करने से रोका, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय यहूदी उन्हें और जर्मनी दोनों को नष्ट करने में सफल रहे। हिटलर के बारे में झूठा प्रचार 80 से ज़्यादा सालों से जारी है। अब सच बताने का समय आ गया है।

A good video series about National Socialism:
https://archive.org/embed/europa-the-last-battle_20220927

अध्याय 5: नरसंहार पर अधिक

प्रोफ़ेसर रॉबर्ट फ़ौरिसन इस बारे में इस प्रकार लिखते हैं:
“मैं उन जर्मनों का अध्ययन देखना चाहूँगा जिन्हें यहूदियों की हत्या के लिए जर्मनों ने फाँसी दी थी। जी हाँ, रूस के मरिंका में, (जर्मन) मेयर ने एक यहूदी महिला की हत्या कर दी। जर्मन सेना ने उसे कोर्ट मार्शल के लिए ले जाया, उसे मौत की सजा सुनाई और उसे फाँसी दे दी। मुझे ऐसे कई उदाहरण पता हैं। फील्ड मार्शल लिस्ट, वॉन कुचलर, वॉन मैनस्टीन, जनरल ओटो डेस्लोच, फील्ड मार्शल वॉन क्लेस्ट, जनरल किटल: इनमें से प्रत्येक व्यक्ति ने एक जर्मन सैनिक, अधिकारी या असैन्य कर्मचारी को फाँसी देने का आदेश दिया क्योंकि उसने एक या एक से अधिक यहूदियों की हत्या की थी। अगर इरादा यहूदियों को शारीरिक रूप से नष्ट करने का था तो यह कैसे संभव था? मेरी राय में, यहूदियों को बुलेवार्ड ऑफ़ राइटियस जेंटाइल्स में वॉन मैनस्टीन, लिस्ट, वॉन कुचलर, वॉन क्लेस्ट और किटल के लिए पेड़ लगाने चाहिए। जे-रूसलम। और एडॉल्फ हिटलर क्यों नहीं? हिटलर ने यहूदियों की हत्या करने वालों को फाँसी देने का आदेश दिया था। संशोधनवादियों को ऐसे मामलों की जाँच करनी चाहिए।”

60 लाख की संख्या का क्या महत्व है और यह कहाँ से आई है?

इस रहस्यमय संख्या की जड़ें बहुत दिलचस्प हैं। यहूदियों ने 1890 से 1945 तक अत्याचारों के बारे में अपने प्रचार में लगातार साठ लाख की संख्या पर ज़ोर दिया है। द्वितीय विश्व युद्ध 1945 में समाप्त हुआ, और तब से, रहस्यमय संख्या 60 लाख ने एक पवित्र और अलंघनीय तथ्य का दर्जा हासिल कर लिया है। यह समाचारों, अखबारों और मनोरंजन जगत, खासकर यहूदी हॉलीवुड में, होलोकॉस्ट धोखाधड़ी के बार-बार चलाए गए गंदे और धोखेबाज़ अभियान के ज़रिए हासिल किया गया था। जैसा कि यहूदी कम्युनिस्ट सामूहिक हत्यारे व्लादिमीर लेनिन ने कहा था, "बार-बार दोहराया गया झूठ सच बन जाता है।" यह यहूदी धोखाधड़ी अभियान पिछले कुछ वर्षों में लगातार तेज़ होता गया है।

जब भी यहूदियों को अपने धोखे और मानवता के विरुद्ध अपराधों के बारे में बढ़ती जागरूकता का आभास हुआ, उन्होंने अपने द्वारा नियंत्रित मीडिया नेटवर्क में अपने द्वारा रचे गए नरसंहार की ज़ोरदार शिकायत की। यही कारण है कि वे लगातार जनमत को प्रभावित करते रहे।

विश्व के नेता, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राजा, रानी, पोप, पुजारी और धर्मगुरु उन काल्पनिक "60,00,000 यहूदियों" के सामने विनम्र श्रद्धा से घुटने टेकते हैं, जिन्हें "नाज़ी गैस चैंबरों" में नहीं मारा गया था, क्योंकि ऐसे कोई चैंबर थे ही नहीं। ऐतिहासिक शोध से पता चलता है कि साठ लाख की संख्या के प्रति यहूदियों का अजीब जुनून तोराह में एक प्राचीन धार्मिक भविष्यवाणी से उपजा है। कुछ स्रोतों के अनुसार, भविष्यवाणी में कहा गया था कि यहूदी फ़िलिस्तीन को मुक्त और पुनः प्राप्त कर सकते हैं और "इज़राइल" की यहूदी मातृभूमि की स्थापना तभी कर सकते हैं जब 60,00,000 यहूदी अपने रक्तपिपासु आदिवासी देवता यहोवा के लिए एक अग्नि बलिदान (अर्थात "नरसंहार") में मारे जाएँ। यहूदी लेखक बेंजामिन ब्लेंच ने अपनी पुस्तक "हिब्रू शब्दों के रहस्य" में इस सिद्धांत की पुष्टि की है:

"हिब्रू शब्द ताशुवु, जिसका अर्थ है 'तुम लौट रहे हो', गलत वर्तनी में लिखा गया है। व्याकरण के नियमों के अनुसार, एक और वव होना चाहिए जिससे ताशुवु बनता है। वव अक्षर का अर्थ संख्या छह भी है, इसलिए इसके बिना, यह शब्द यहूदियों के अपने वतन लौटने की भविष्यवाणी का प्रतीक होगा। अंकशास्त्र के अनुसार, इस शब्द को वर्ष 708 में भी बदला जा सकता है, जो हिब्रू कैलेंडर 5708 (प्रथा के अनुसार सहस्राब्दी के बिना) में वर्ष 1948 है। इस प्रकार यह भविष्यवाणी पूरी तरह से पूरी हुई जब हम पवित्र इज़राइल लौटे, जिसमें 6 (वव) गायब था, यानी हमारे महत्वपूर्ण साठ लाख लोग जो प्रलय में नष्ट हो गए थे।"

छह अंक से संबंधित धार्मिक लेखन, विशेष रूप से यहूदियों के बीच, की व्याख्या करने वाली अनगिनत अन्य समान टिप्पणियाँ हैं। एक अवलोकन के अनुसार, टोरा की भविष्यवाणी के अनुसार, इजरायल राज्य की स्थापना से पहले छह मिलियन यहूदियों को "गायब" होना होगा।

इज़राइली इतिहासकार टॉम सेगेव साठ लाख की संख्या को होलोकॉस्ट कथा को राजकीय धर्म में बदलने का एक प्रयास बताते हैं। रॉबर्ट बी. गोल्डमैन के अनुसार, होलोकॉस्ट के बिना कोई यहूदी राज्य नहीं होता। इससे एक सरल निष्कर्ष निकलता है: भविष्यवाणी पूरी होने और इज़राइल को एक "आधिकारिक राज्य" बनने के लिए, साठ लाख यहूदियों को भट्टियों में जलाया जाना चाहिए (यूनानी शब्द "होलोकॉस्ट" का अर्थ है होमबलि)। यहोवा यहूदी लोगों के शुद्धिकरण की माँग करता है, जिसका अर्थ है कि साठ लाख आत्माओं को चिता पर शुद्ध किया जाना चाहिए।

क्या यह महज संयोग है कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान साठ लाख यहूदियों की "गैस चैंबरों" में हत्या और "भट्ठियों" में जलाए जाने की तुच्छ और निरर्थक कहानी ने यहूदियों को दुनिया की नज़रों में वह प्रेरणा और औचित्य प्रदान किया जिसकी उन्हें युद्ध समाप्त होने के बाद 1948 में "वादा किए गए देश" में "विजयी होकर लौटने" के लिए आवश्यकता थी? उन्होंने हथियारों और आतंकवाद के बल पर फ़िलिस्तीन के अधिकांश हिस्से पर कब्ज़ा कर लिया और वहाँ से जातीय सफ़ाया कर दिया और इज़राइल नामक एक नस्लवादी रंगभेदी राज्य की स्थापना की। यह सब संयोग से तोरा की प्राचीन भविष्यवाणी से बिल्कुल मेल खाता था। बिल्कुल नहीं! आज, नरसंहार की कहानी एक पंथ-जैसी धार्मिक हठधर्मिता का हिस्सा बन गई है, जिसे राज्य द्वारा नियंत्रित और संरक्षित किया जाता है, क्योंकि कुछ यूरोपीय देशों में तो कारावास या भारी जुर्माने की धमकी के बावजूद भी इस पर सवाल नहीं उठाया जा सकता, न ही इस पर विवाद किया जा सकता है और न ही इसकी आलोचना की जा सकती है! यह एक नरसंहार उद्योग बन गया है, जिसमें यहूदी धन-संकट के लाभ के लिए "यहूदियों के दुख" का जमकर शोषण किया जाता है। और तो और, यह यहूदी कट्टरपंथियों और आदर्शवादियों के लिए एक हथियार बन गया है ताकि वे उन "चुने हुए लोगों" के किसी भी गैर-यहूदी विरोध, आलोचना या निर्णय को दबा सकें, जिन्हें उन्होंने खुद को "चुने हुए लोग" माना है।
अफ़वाहों में एक आम बात यह थी कि जर्मन यहूदियों का सामूहिक नरसंहार कर रहे थे, लेकिन हत्या के तरीके बहुत अलग-अलग थे: भाप, गैस, बिजली, आग, तेज़ाब, डूबना, वैक्यूम पंप, रक्तप्रवाह में हवा का इंजेक्शन, वगैरह। यह अभी भी अज्ञात है कि गैस चैंबरों ने आखिरकार इस भयावह प्रचार युद्ध में जीत कैसे हासिल की।
सितंबर 1944 में, जर्मनों ने रेड क्रॉस को ऑशविट्ज़-बिरकेनौ यातना शिविर में आमंत्रित किया क्योंकि मित्र देशों के प्रचार का दावा था कि जर्मन शिविरों में ज़हरीली गैस से यहूदियों का सफाया कर रहे थे।

रेड क्रॉस प्रतिनिधिमंडल को यहूदियों और अन्य लोगों से बात करने की पूरी आज़ादी दी गई थी, जिनमें शिविर से जुड़े ब्रिटिश युद्धबंदी और शिविर में काम करने वाले नागरिक स्वयंसेवक भी शामिल थे, जो वास्तविक निवासियों और युद्ध अपराधियों के अलावा वहाँ मौजूद थे। ये समूह एक-दूसरे के संपर्क में रहते थे, इसलिए उन्हें एक-दूसरे के मामलों की जानकारी होती थी।

प्रतिनिधियों ने शिविर की सावधानीपूर्वक जाँच की और उन्हें कोई गैस चैंबर नहीं मिला। उन्होंने सभी समूहों, जिनमें नागरिक कर्मचारी और अंग्रेज़ लोग भी शामिल थे, से पूछा कि क्या उन्हें "आधुनिक शावर" के बारे में कुछ पता है जहाँ कैदियों को समूहों में गैस से मारा जाता था, जैसा कि प्रचार में दावा किया जाता था। किसी को भी, एक भी यहूदी को नहीं, एक भी अंग्रेज़ को नहीं, एक भी नागरिक कर्मचारी को नहीं, और न ही किसी और को ऐसी चीज़ों के बारे में कुछ पता था। प्रतिनिधियों को कोई "गैस चैंबर" नहीं मिला। अपनी रिपोर्ट में, उन्हें यह निष्कर्ष निकालना पड़ा कि ऑशविट्ज़ में कोई गैस चैंबर नहीं थे।

युद्ध के बाद, रेड क्रॉस और वेटिकन ने उन लोगों का साक्षात्कार लिया जो शिविरों में रहे थे, और कैदियों ने गैस चैंबरों के बारे में कुछ नहीं कहा (रेड क्रॉस दस्तावेज़ संख्या 9925, जून 1946)। अपनी तीन-भाग की रिपोर्ट (जिनेवा, 1947) में, रेड क्रॉस ने कहा कि एकाग्रता शिविरों में नरसंहार का कोई सबूत नहीं है। इसके अतिरिक्त, यहां कुछ सांख्यिकीय तथ्य दिए गए हैं। आधिकारिक सांख्यिकीय प्रकाशन वर्ल्ड अल्मनैक, जिसने दुनिया भर के यहूदी संगठनों से अपनी जानकारी प्राप्त की है, 1940 में दुनिया में यहूदियों की संख्या (पृष्ठ 129) 15,390,359 और 1949 में 15,713,638 (पृष्ठ 289) बताई है। द्वितीय विश्व युद्ध के दशक के दौरान, यहूदियों की संख्या में 300,000 से अधिक की वृद्धि हुई युद्ध के बाद जर्मनी में लगभग 40 लाख यहूदियों ने होलोकॉस्ट मुआवज़े के लिए आवेदन किया था। ये "60 लाख" कहाँ से आए?

1988 में, अमेरिकी गैस चैंबर विशेषज्ञ फ्रेड ल्यूचर ने ऑशविट्ज़, बिरकेनौ और माज्दानेक के शिविरों की जाँच की और निष्कर्ष निकाला कि गैस चैंबर सिद्धांत तकनीकी रूप से असंभव है और इन शिविरों में लोगों को मारने के लिए कभी कोई गैस चैंबर नहीं बनाए गए थे ('ल्यूचर रिपोर्ट'; जिसे बाद में 'ल्यूचर रिपोर्ट्स' द्वारा परिष्कृत और पूरक बनाया गया, जिसमें तीन अन्य ल्यूचर रिपोर्टें भी शामिल थीं)। अगर गैस चैंबर बताए गए कमरों (जो सामान्य मुर्दाघर निकले) में गैस छोड़ने का प्रयास किया गया होता, तो ल्यूचर के अनुसार, यह आत्महत्या होती: इन मुर्दाघरों में आवश्यक सील नहीं थीं, इसलिए गैस पर्यावरण में फैल जाती और आस-पास के लोगों की जान ले लेती, या फिर, सामान्य सीवर प्रणाली से फैलकर, गैस पूरे शिविर को खतरे में डाल देती।

ल्यूचर ने कथित गैस चैंबरों की दीवारों से नमूने लिए, और उन पर किए गए रासायनिक विश्लेषण, जिनकी पुष्टि जर्मर रुडोल्फ के शोध (रुडोल्फ रिपोर्ट) से हुई है, निस्संदेह साबित करते हैं कि इन "गैस चैंबरों" में हाइड्रोजन साइनाइड (ज़ायक्लोन बी का सक्रिय घटक) का इस्तेमाल नहीं किया गया था, जैसा कि दावा किया गया है! अगर इसका इस्तेमाल किया गया होता, तो हाइड्रोजन साइनाइड दीवारों पर स्थायी और दिखाई देने वाले रंगीन साइनाइड के अवशेष छोड़ देता, जैसा कि उन छोटे "गैस चैंबरों" में देखा जा सकता है जहाँ कपड़ों से जूँएँ साफ़ की जाती थीं। इस प्रकार ल्यूचर की रिपोर्ट से पता चला कि गैस चैंबर, और इस तरह पूरा नरसंहार, जर्मनों को दोषी ठहराने के लिए इस्तेमाल किया गया एक धोखा मात्र है ताकि मित्र राष्ट्रों और यहूदियों द्वारा किए गए चौंकाने वाले और अभूतपूर्व अत्याचार और सामूहिक हत्याएँ (युद्ध के बाद 90 लाख से ज़्यादा जर्मन मारे गए) जगज़ाहिर न हों और यहूदियों और मित्र राष्ट्रों को ज़िम्मेदार न ठहराया जाए।

होलोकॉस्ट एक ऐतिहासिक छलावा है, और इसके अपराधी, खज़ार यहूदी, इतिहास के सबसे बड़े अपराधों में से एक के दोषी हैं, अर्थात् "लोगों के एक समूह के विरुद्ध भड़काना", जिससे जर्मनों को अथाह पीड़ा हुई। हालाँकि, मित्र राष्ट्रों ने जर्मनों का पूरी तरह से ब्रेनवॉश कर दिया है, जैसा कि यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने अपनी इज़राइल यात्रा के दौरान कहा था:

"मैं एक जर्मन यूरोपीय महिला हूँ। और 80 साल से भी कम समय पहले, जर्मनों ने मानव इतिहास के सबसे बड़े अपराध में लाखों यहूदियों की हत्या कर दी थी। हम जर्मनी में सभ्यता के इस अमानवीय पतन के लिए ऐतिहासिक और स्थायी ज़िम्मेदारी लेते हैं। यह जर्मन अंतरात्मा पर एक अमिट दाग है, जिसे हमें कभी नहीं भूलना चाहिए और कभी नहीं भूलेंगे।" खज़ार जर्मनों की मूर्खता पर हँसते हैं। वे अंतर्राष्ट्रीय मीडिया को नियंत्रित करते हैं और पूरी दुनिया का ब्रेनवॉश करने में कामयाब रहे हैं। उन्होंने होलोकॉस्ट के झूठ पर इज़राइल राज्य की स्थापना की और जर्मनी और अमेरिका को सैकड़ों अरब डॉलर दान करने के लिए मजबूर किया। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध जैसी क्रांतियों और युद्धों और रूस और चीन में साम्यवादी क्रांतियों के माध्यम से, खज़ारों ने अप्रत्यक्ष रूप से 20 करोड़ से ज़्यादा गोइम (गैर-यहूदियों) की हत्या की है।

होलोकॉस्ट के बारे में एक अच्छा पता:
https://islam-radio.net/islam/english/index_revision.htm

अध्याय 6: ईसाई चर्चों की बड़ी गलतियाँ

1745 में, विश्व इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण, यदि सबसे महत्वपूर्ण नहीं, घटनाओं में से एक घटित हुई: ब्रह्मांड के रचयिता, ईश्वर, मानव रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुए और अपने सेवक, स्वीडिश वैज्ञानिक इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग के सामने प्रकट हुए। स्वीडनबॉर्ग ने चेम्बरलेन कार्ल रॉब्सहम को इस घटना के बारे में बताया, और रॉब्सहम ने इसके बारे में नोट्स बनाए। स्वीडनबॉर्ग का विवरण इस प्रकार था:

"मैं लंदन में था और उस रेस्टोरेंट के तहखाने में, जहाँ मैं पहले खाना खाता था, काफी देर से खाना खा रहा था। मेरा अपना एक कमरा भी था, जहाँ हाल ही में हुई एक घटना ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मुझे भूख लगी थी और मैंने खूब खाया। खाना खत्म होने पर, मैंने अपनी आँखों के सामने कुछ धुंधला सा देखा, फिर अंधेरा छा गया, और फिर मैंने ज़मीन पर रेंगने वाले सबसे घिनौने जीव देखे, जैसे साँप, मेंढक वगैरह। मैं चौंक गया क्योंकि मैं पूरी तरह से होश में था, और मेरी समझ तार्किक थी। आखिरकार, अंधेरा छा गया, लेकिन अचानक वह छँट गया, और मैंने कमरे के एक कोने में एक आदमी को बैठे देखा। चूँकि मैं उस समय बिल्कुल अकेला था, इसलिए जब उसने बात करना शुरू किया और मुझसे कहा, "इतना मत खाओ," तो मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। फिर मेरी आँखें धुंधली हो गईं, लेकिन जल्द ही ठीक हो गईं, और मैंने खुद को कमरे में अकेला पाया।
किसी अप्रत्याशित भय ने मुझे जल्दी से घर जाने के लिए प्रेरित किया। मैंने अपने मकान मालिक को कुछ भी पता नहीं चलने दिया, लेकिन मैंने सोचा... जो कुछ हुआ था, उसके बारे में ध्यान से सोच रहा था, और मैं इसे एक आकस्मिक घटना या किसी भौतिक घटना का परिणाम नहीं मान सकता था।
मैं घर गया, लेकिन रात में वही व्यक्ति मेरे सामने प्रकट हुआ, लेकिन अब मुझे डर नहीं लग रहा था। फिर उसने कहा कि वह प्रभु परमेश्वर, संसार का रचयिता और उद्धारकर्ता है, और उसने मुझे मानवजाति को वचन के आध्यात्मिक सार को समझाने के लिए चुना है, और वह स्वयं मुझे समझाएगा कि मुझे इस विषय पर लिखना चाहिए।

उसी रात, नर्क और स्वर्ग की आध्यात्मिक दुनिया मेरे लिए एक विश्वसनीय तरीके से खुल गई, जहाँ मैंने अपने कई
परिचितों को हर तरह की अवस्था में पहचाना, और उस दिन से, मैंने अपनी सभी वैज्ञानिक गतिविधियाँ छोड़ दीं और उन आध्यात्मिक विषयों पर काम किया जिनके बारे में लिखने का आदेश प्रभु ने मुझे दिया था। हर दिन, प्रभु अक्सर मेरी भौतिक आँखें खोल देते थे ताकि दिन के मध्य में मैं एक और जीवन देख सकूँ और आनंदित सतर्कता के साथ स्वर्गदूतों और आत्माओं से बातचीत कर सकूँ।"

यही हुआ, और ईसाई समुदाय को अभी तक इस घटना की जानकारी नहीं है। इस विषय पर, स्वीडनबॉर्ग स्वयं अपनी पुस्तक वेरा क्रिस्टियाना रेलिजियो (सच्चा ईसाई धर्म) में निम्नलिखित लिखते हैं:
VIII. चूँकि प्रभु स्वयं को व्यक्तिगत रूप से व्यक्त नहीं कर सकते, जैसा कि ऊपर बताया गया है, और चूँकि उन्होंने फिर भी भविष्यवाणी की है कि वे आएंगे और एक नए चर्च की स्थापना करेंगे, जो कि नया यरूशलेम है, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि वे ऐसा एक ऐसे व्यक्ति के माध्यम से करेंगे जो न केवल इस नए चर्च की शिक्षाओं को समझने में सक्षम है, बल्कि उन्हें मुद्रित रूप में प्रकाशित भी कर सकता है।
779. मैं सत्य प्रमाणित करता हूँ कि प्रभु स्वयं अपने सेवक के रूप में मेरे सामने प्रकट हुए और मुझे इस मिशन पर भेजा। उन्होंने मेरी आध्यात्मिक आँखें भी खोलीं और मुझे आध्यात्मिक दुनिया में ले गए, जिससे मुझे स्वर्ग और नर्क देखने और स्वर्गदूतों और आत्माओं से बातचीत करने का अवसर मिला, और यह कई वर्षों से जारी है। मैं यह भी प्रमाणित करता हूँ कि अपने बुलावे के पहले दिन से, मुझे इस चर्च के सिद्धांत के बारे में किसी भी स्वर्गदूत से कुछ नहीं मिला है, बल्कि केवल प्रभु से ही मिला है, जैसा कि मैं पढ़ता हूँ। वचन।

लाखों ईसाई प्रभु के द्वितीय आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, इस बात से अनभिज्ञ कि यह 1700 के दशक में ही हो चुका है। स्वीडनबॉर्ग की धार्मिक रचनाएँ प्रभु का द्वितीय आगमन (मत्ती 24:30) और "शाश्वत सुसमाचार" (प्रकाशितवाक्य 14:6) हैं। प्रभु ने स्वीडनबॉर्ग की आध्यात्मिक समझ को खोला, और इस प्रकार इन रचनाओं का जन्म हुआ। यह तर्कसंगत ही था कि प्रभु एक वैज्ञानिक के माध्यम से आए, जिसे उन्होंने बचपन से ही प्रशिक्षित किया था, क्योंकि हमारा युग विज्ञान का युग है।

कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट पादरियों ने स्वीडनबॉर्ग द्वारा भेजी गई इन धर्मशास्त्रीय पुस्तकों को स्वीकार नहीं किया, बल्कि उन्हें अस्वीकार कर दिया। यह ईसाई चर्चों की पहली बड़ी भूल है। यह भूल यहूदी पादरियों द्वारा ईसा मसीह को अस्वीकार करने जितनी ही बड़ी है। स्वीडनबॉर्ग ने अपनी पुस्तकें विश्वविद्यालय के प्रमुख विद्वानों को भी भेजीं, लेकिन उन्होंने भी उन्हें अस्वीकार कर दिया। स्वीडनबॉर्ग का धर्मशास्त्रीय लेखन असाधारण रूप से व्यापक है। आधुनिक संस्करणों में, इसमें लैटिन में लिखे गए पाठ का लगभग दो मीटर का शेल्फ स्पेस शामिल है। उन्होंने अपनी धर्मशास्त्रीय रचनाएँ "द लॉर्ड्स मैनिफेस्टेशन" से शुरू करके अपने जीवन के अंत तक लिखीं। स्वीडनबॉर्ग को कभी बहुत लोकप्रियता नहीं मिली, लेकिन उनकी रचनाएँ सत्य के खोजियों के एक छोटे से समूह तक ही पहुँच पाईं। उन्होंने स्वयं कभी अपनी रचनाओं के आधार पर कोई मण्डली स्थापित नहीं की। उन्होंने अपना कार्य केवल लेखन और प्रकाशन तक ही सीमित रखा। हालाँकि, अपनी एक रचना में, उन्होंने लिखा है कि एक नया चर्च कहीं और स्थापित किया जाएगा और उनकी रचनाएँ उसके लिए उपयोगी होंगी।

स्वीडनबॉर्ग के धर्मशास्त्र पर आधारित छोटे चर्च वास्तव में स्थापित हुए हैं, मुख्यतः ब्रिटेन, अमेरिका और स्वीडन में, और कुछ अन्य जगहों पर भी। मैंने ब्रिटेन, अमेरिका और स्वीडन के इन चर्चों का अध्ययन किया और पाया कि वे अभी तक वह नया चर्च नहीं हैं जिसका स्वीडनबॉर्ग नए चर्च से मतलब रखते हैं। इन चर्चों ने स्वीडनबॉर्ग की रचनाओं का अन्य भाषाओं में अनुवाद करने में बहुमूल्य कार्य किया है, लेकिन वे, उदाहरण के लिए, खज़ारों के माध्यम से आधुनिक दुनिया पर शैतान के प्रभाव को नहीं समझ पाए हैं: "देखो, हम एक गर्म गुफा में दास थे, अब हवा के वश में स्वतंत्र हैं; रहस्य अभी भी स्पष्ट रूप से छिपा हुआ है, जिसे राष्ट्रों द्वारा बाद में समझा जा सकता है। इफिसियों 6:12।" (जे. डब्ल्यू. बनाम गोएथे: फॉस्ट, भाग 2, अंक 4)। इसका अर्थ है कि शैतान खज़ार लोगों की मदद से नरक से पृथ्वी पर आया है। खज़ार यहूदी शैतान की पूजा करते हैं क्योंकि शैतान, या पाताल लोक, उन्हें दुनिया में शक्ति देता है, और इसीलिए वे उसकी पूजा करते हैं: "फिर शैतान उसे अपने साथ एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और उसे सारे जगत के राज्य और उसका वैभव दिखाकर कहा, 'यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूँगा।'" (मत्ती 4:8–9)।

आज, शैतान ने हमारे ग्रह पर इतनी शक्ति प्राप्त कर ली है कि केवल स्वीडनबॉर्ग के कार्यों पर आधारित नया चर्च ही उसकी शक्ति को दबा सकता है। आधुनिक ईसाई, जिन्होंने प्रभु के द्वितीय आगमन को अस्वीकार किया, शैतान के साथ गठबंधन में हैं और ईसाई चर्चों की दूसरी बड़ी भूल के दोषी हैं, अर्थात्, खज़ार यहूदियों को ईश्वर की चुनी हुई प्रजा और इज़राइल को ईश्वर का राज्य मानना। खज़ारों ने अपनी खज़ार पृष्ठभूमि को छुपाया है, और इन धोखेबाज ईसाइयों ने उन्हें फ़िलिस्तीन के यहूदियों का वंशज और फ़िलिस्तीन पर कब्ज़ा करने का अधिकार माना है। इसलिए यह खज़ार लोगों द्वारा जानबूझकर ईसाइयों को धोखा देने का मामला है, क्योंकि खज़ार लोगों का फ़िलिस्तीन से कोई लेना-देना नहीं है। यहूदी ग्रंथ तल्मूड, बाबा कामा 113ब: "ईसाइयों से झूठ बोलने पर ईश्वर का नाम अपवित्र नहीं होता; ईसाइयों को धोखा दिया जा सकता है।"

इज़राइल का वर्तमान राज्य निश्चित रूप से ईश्वर का राज्य नहीं है, बल्कि वास्तव में हमारे ग्रह पर शैतान का मुख्यालय है। यहूदियों ने एक बार यीशु को अस्वीकार कर दिया था और शैतान को चुना था। खज़ारों का यहूदी शैतान की पूजा में धर्मांतरण पृथ्वी पर शैतान की शक्ति में भारी वृद्धि थी, और खज़ार यहूदियों को "ईश्वर के चुने हुए लोग" मानने वाले ईसाइयों का विश्वास खज़ार यहूदियों की शक्ति का अंतिम स्तंभ था।

केवल स्वीडनबॉर्ग के कार्यों पर आधारित नया चर्च - नया जेरूसलम - ही खज़ार यहूदियों को टेलस पर पूर्ण शक्ति प्राप्त करने और खज़ार यहूदियों के नेतृत्व में पूरी दुनिया पर शैतान का राज्य स्थापित करने से रोक सकता है।

ईसाई चर्च, जिनका अब ईश्वर और स्वर्ग से कोई संबंध नहीं है, खज़ारों को दुनिया में शक्ति प्राप्त करने के लिए ज़िम्मेदार हैं।

ईसाई चर्चों की तीसरी बड़ी भूल त्रिएकत्व का मिथ्या सिद्धांत है, लेकिन इसके बारे में द डिवाइन ट्रिनिटी, पृष्ठ 142 में अधिक जानकारी दी गई है।

अध्याय 7: यहूदी वित्तीय शक्ति और उसका इतिहास

विश्व राजनीति को समझने के लिए अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय शक्ति और उसके इतिहास को समझना अत्यंत आवश्यक है। मैंने निम्नलिखित पाठ पार्टिसानी पत्रिका से उधार लिया है। यह लेख लंबा है, लेकिन महत्वपूर्ण है। मैंने चित्रों को हटा दिया है और पाठ को थोड़ा संपादित किया है। धन्यवाद, पार्टिसानी पत्रिका!

पार्टिसानी अपने संग्रह में "बैंकों से घृणा क्यों की जाती है" शीर्षक से लेखों की एक श्रृंखला प्रकाशित कर रही है। पिछले लेखों में वित्तीय पूंजीवाद के बारे में समझाने के बाद, अब इस परजीवी आर्थिक व्यवस्था की जड़ों की जाँच करने का समय आ गया है। पश्चिमी देशों में बैंकिंग कार्टेल के प्रभुत्व का कारण क्या है?

अपनी पुस्तक "द ज्यूडेन अंड दास विर्टशाफ्ट्सलेबेन" (यहूदी और आर्थिक जीवन) में, जर्मन अर्थशास्त्री और समाजशास्त्री वर्नर सोम्बार्ट लिखते हैं कि यहूदियों ने ही आधुनिक वित्तीय पूंजीवाद को उसके जटिल ऋण और सट्टेबाज़ी के साधनों के साथ विकसित किया। यहूदी पवित्र साहित्य में धन उधार देना पहले से ही एक केंद्रीय विषय था।

तोराह में मूसा की पाँचवीं पुस्तक यहूदियों को निर्देश देती है: "तुम किसी भी इस्राएली से धन, भोजन, या किसी भी ऐसी चीज़ पर ब्याज नहीं लेना जो आम तौर पर ब्याज पर उधार दी जाती है। तुम किसी विदेशी से ब्याज ले सकते हो, लेकिन अपने देशवासियों से नहीं। जब तुम इन नियमों का पालन करोगे, तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उस देश में तुम्हारे सभी कार्यों में तुम्हें आशीष देगा जहाँ तुम प्रवेश करने वाले हो।"

उद्धरण के अंत में "जिस भूमि पर अब तुम अधिकार करने जा रहे हो" का संदर्भ, कम से कम वर्तमान समय के संदर्भ में देखने पर, दिलचस्प तो है ही, जहाँ वैश्विक वित्तीय क्षेत्र ने वास्तव में पूरे देशों पर नियंत्रण कर लिया है। मध्यकालीन यहूदी इतिहास के प्रोफेसर हैम हिलेल बेन-ससून ने नचुम ग्रॉस की पुस्तक "यहूदियों का आर्थिक इतिहास" में लिखा है कि 12वीं से 15वीं शताब्दी तक पूरे यूरोप में यहूदियों के लिए "सूदखोरी आय का मुख्य स्रोत थी"।

बेन-सैसून के अनुसार, यही कारण है कि "यहूदी-विरोधी उत्पीड़न" ने "न केवल धार्मिक विशेषताओं को बल्कि एक आर्थिक आयाम को भी ग्रहण कर लिया।" दूसरी ओर, यहूदी इतिहासकार रॉबर्ट चेज़न ने मध्ययुगीन यूरोप में प्रचलित विचारों का वर्णन इस प्रकार किया है: "यहूदियों द्वारा धन उधार देने को एक ऐसे साधन के रूप में देखा जाता था जिसके द्वारा यहूदी ईसाई धर्म और ईसाई समुदाय के विरुद्ध अंतहीन युद्ध छेड़ते थे।" मैरिस्टेला बोटिसिनी और ज़वी एकस्टीन द्वारा संपादित पुस्तक "द चॉसेन फ्यू: हाउ एजुकेशन शेप्ड ज्यूइश हिस्ट्री" ने इस मिथक को दूर करने का प्रयास किया है कि ईसाइयों ने यहूदियों को धन उधार देने के लिए "मजबूर" किया (जिसे कई लोग यहूदी बैंकरों के स्वयं शोषक न होने, बल्कि "ईसाइयों के शिकार" होने के पक्ष में एक तर्क मानते हैं)।
बोटिसिनी और एकस्टीन के अनुसार, यहूदियों ने मध्ययुगीन व्यवस्था से सदियों पहले धन उधार देना और ब्याज लेना शुरू कर दिया था, जिसमें यूरोपीय ईसाइयों ने बैंकिंग का काम यहूदियों को आउटसोर्स किया था।
ब्याज लेना केवल टोरा में अन्य यहूदियों के शोषण के निषेध द्वारा सीमित किया गया है। हालाँकि, टोरा के अनुसार, गैर-यहूदी बैंकरों के लिए आसान शिकार हैं। टोरा की शिक्षाओं को व्यवहार में भी पूरी लगन से लागू किया गया है।

"वैश्विक अर्थव्यवस्था के आधार" के रूप में यहूदी

"कैपिटलिज़्म एंड द ज्यूज़" पुस्तक के लेखक जेरी ज़ेड. मुलर ने अध्ययन किया है कि सदियों से यहूदी बैंकिंग कैसे बदली है। मुलर की रुचि, अन्य बातों के अलावा, उन यहूदियों में थी जिन्होंने यूरोप के कुछ सबसे प्रभावशाली वित्तीय संस्थानों, ड्यूश बैंक और ड्रेस्डनर बैंक की स्थापना की थी।
अपनी पुस्तक में, मुलर इस बात पर भी ज़ोर देते हैं कि यहूदियों को सूदखोरी के धंधे में "मजबूर" नहीं किया गया था, बल्कि यह "उनका अपना पेशा" था। मुलर के अनुसार, यहूदी सूदखोरी को "आसपास के समाज से लाभ उठाने का एक प्रभावी तरीका" भी मानते थे, जो औसतन यहूदियों से कम शिक्षित था।

सारा अब्रावेया स्टीन द्वारा लिखित पुस्तक "प्लम्स: ऑस्ट्रिच फेदर्स, ज्यूज़ एंड अ लॉस्ट वर्ल्ड ऑफ़ ग्लोबल कॉमर्स" इससे भी अधिक मुखर है, जो तर्क देती है कि 20वीं सदी के मोड़ पर वैश्वीकरण की प्रक्रिया में, यहूदी "वह गोंद थे जिसने अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार को एक साथ बाँधे रखा।"
स्टीन के कथन को पाठकों को डेविड रिकार्डो की याद दिलाकर पूरक बनाया जा सकता है, जो एक यहूदी थे और 19वीं सदी के मोड़ पर इंग्लैंड में रहते थे और जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय मुक्त व्यापार का जनक माना जाता है। रिकार्डो ने उस समय बैंकिंग क्षेत्र के लिए एक पैरवीकार के रूप में काम किया था जब बैंकों की आय का एक बड़ा हिस्सा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और मुद्रा बाज़ारों के वित्तपोषण से आता था। रिकार्डो ने स्कूलों में पढ़ाए जाने वाले "तुलनात्मक लाभ के सिद्धांत" को और विकसित किया, जिसके अनुसार सभी देशों को आत्मनिर्भर उत्पादन संरचना से हटकर केवल कुछ वस्तुओं के उत्पादन में विशेषज्ञता हासिल करने का प्रयास करना चाहिए, बाकी वस्तुओं को विदेशों से खरीदना चाहिए। रिकार्डो के सिद्धांत से उनके अपने वित्तपोषकों को लाभ हुआ, जिनका लाभ निर्यात और आयात की मात्रा के सीधे अनुपात में बढ़ता गया। (20वीं सदी में, यहूदी अर्थशास्त्री पॉल सैमुएलसन, रिकार्डो की तरह ही मुक्त व्यापार के प्रचारक के रूप में उभरे)।

यहूदी और केंद्रीय बैंकों का जन्म

अपनी पुस्तक में, सोम्बार्ट लिखते हैं कि यहूदियों ने दुनिया के पहले केंद्रीय बैंक, बैंक ऑफ एम्स्टर्डम की स्थापना में भाग लिया था। पूरे यूरोपीय इतिहास में, केंद्रीय बैंकों ने निजी बैंकिंग क्षेत्र के पैरोकार और वास्तविक अर्थव्यवस्था के विरुद्ध वित्तीय अर्थव्यवस्था के सबसे महत्वपूर्ण हथियार के रूप में कार्य किया है। वित्तीय अर्थव्यवस्था का प्रभुत्व तब शुरू होता है जब केंद्रीय बैंक को वित्त मंत्रालय से अलग कर दिया जाता है, क्योंकि संयुक्त राजनीतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया अब वित्त की दुनिया पर लागू नहीं होती। सत्ता राजनीतिक निर्णयकर्ताओं से बैंकरों के पास स्थानांतरित हो जाती है।
यहूदी वर्चुअल लाइब्रेरी स्वीकार करती है कि 1694 में बैंक ऑफ इंग्लैंड की स्थापना के लिए भी यहूदी जिम्मेदार थे।

यह वित्तीय अर्थव्यवस्था और वास्तविक अर्थव्यवस्था के बीच संघर्ष का एक महत्वपूर्ण मोड़ था, क्योंकि इंग्लैंड अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक अर्थव्यवस्था का केंद्र बन गया था। जल्द ही, अंग्रेजी राज्य केंद्रीय बैंक का ऋणी बन गया, जिसने एक ऐसी स्थिति के लिए एक अंतरराष्ट्रीय मिसाल कायम की जिसमें वित्तीय क्षेत्र सरकारी ऋण के माध्यम से पूरे समाज को बंधक बनाने में सक्षम है।
अपनी पुस्तक "ट्रेजर आइलैंड्स" में, वैश्विक भ्रष्टाचार पर शोध करने वाले एक गैर-काल्पनिक लेखक निकोलस शेक्सन बताते हैं कि 20वीं सदी में, बैंक ऑफ इंग्लैंड ने एक अंतरराष्ट्रीय धन शोधन और कर पनाहगाह नेटवर्क बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यहूदियों द्वारा स्थापित इस केंद्रीय बैंक ने दुनिया भर में कर पनाहगाह स्थापित करने वाली परियोजनाओं को बढ़ावा देकर ब्रिटिश राजकोष की खुलेआम अवहेलना की, जहाँ अपराधी, आतंकवादी और वित्तीय अभिजात वर्ग अपनी गलत कमाई छिपा सकते थे। शेक्सन के अनुसार, इस केंद्रीय बैंक ने, उदाहरण के लिए, अमेरिका स्थित यहूदी माफिया मेयर लैंस्की का आक्रामक रूप से समर्थन किया, जिसने बहामास में एक कर पनाहगाह का निर्माण करते हुए अपने आपराधिक साम्राज्य का विस्तार किया। आज, लैन-स्की को संगठित अपराध की कर-हेवन अर्थव्यवस्था का जनक माना जाता है। (लैंस्की का 21वीं सदी का समकक्ष सोवियत संघ में जन्मे यहूदी माफिया सरगना सेम्योन मोगिलेविच है, जो परमाणु हथियारों से लेकर वेश्याओं तक, सब कुछ बेचता है और अपने वित्तीय नेटवर्क के ज़रिए तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में भी हेरफेर करने में सक्षम है।)

वित्तीय शक्ति यूरोप से अमेरिका की ओर स्थानांतरित

20वीं सदी के मोड़ पर, वैश्विक वित्त का केंद्र यूरोप से संयुक्त राज्य अमेरिका की ओर स्थानांतरित होने लगा। अमेरिकी संघीय रिज़र्व की स्थापना 1913 तक नहीं हुई थी, लेकिन इसकी पृष्ठभूमि अपने यूरोपीय समकक्षों से अलग नहीं थी। यूरोप पर शासन करने वाला रोथ्सचाइल्ड परिवार, पुराने महाद्वीप पर किसी भी तरह से एकमात्र यहूदी बैंकिंग परिवार नहीं था। उनके साथ, वारबर्ग परिवार, अन्य लोगों के साथ, ब्याज लेता था। परिवार के एक सदस्य, पॉल मोरित्ज़ वारबर्ग, अमेरिका में रहने वाले धनी लोएब बैंकिंग परिवार में जन्मी एक यहूदी महिला से विवाह करने के बाद 1902 में जर्मनी से संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए।

संयुक्त राज्य अमेरिका जाने के कुछ ही समय बाद, वारबर्ग ने एक केंद्रीय बैंक की स्थापना के लिए ज़ोरदार पैरवी शुरू कर दी और कुछ ही वर्षों में उन्हें अपनी मंज़ूरी मिल गई। अपनी पुस्तक "ऑल द प्रेसिडेंट्स बैंकर्स: द हिडन अलायंसेज दैट ड्राइव अमेरिकन पावर" में, गैर-काल्पनिक लेखिका नोमी प्रिंस बताती हैं कि वारबर्ग ने फेड की स्थापना में रोथ्सचाइल्ड्स के प्रतिनिधि के रूप में काम किया।

फेड का स्वामित्व निजी वाणिज्यिक बैंकों के एक समूह के पास है, इसलिए केंद्रीय बैंक समग्र रूप से समाज के हितों का प्रतिनिधित्व करने का प्रयास भी नहीं करता है। फेड सार्वजनिक निगरानी से बाहर काम करता है, क्योंकि अधिकारियों को केंद्रीय बैंक का ऑडिट करने की अनुमति नहीं है। प्रिंस के अनुसार, फेड की स्थापना का लक्ष्य शुरू से ही अमेरिका को दुनिया का अग्रणी वित्तीय केंद्र बनाना था।

1900 और 2000 के दशक में स्थापित बैंकों के उदय के बाद भी रोथ्सचाइल्ड्स ने अमेरिका में अपना अधिकांश प्रभाव बनाए रखा, लेकिन सदियों पुराने यहूदी राजवंश के साथ-साथ, नए दिग्गज उभरे। नए बैंकों में सबसे शक्तिशाली गोल्डमैन सैक्स था, जिसकी स्थापना 1869 में न्यूयॉर्क के यहूदियों ने की थी। फाइनेंशियल टाइम्स के अनुसार, "अपने लगभग पूरे 147 साल के इतिहास में, गोल्डमैन ने वरिष्ठ पदों पर केवल यहूदी पुरुषों को ही नियुक्त किया है।"

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान गोल्डमैन की राजनीतिक शक्ति में एक बड़ी छलांग लगी, जब बैंक के यहूदी निदेशक, सिडनी वेनबर्ग ने हिटलर के विरुद्ध युद्ध प्रयासों के एक भाग के रूप में अमेरिकी उद्योग का उपयोग करने की योजना बनाई। वेनबर्ग ने फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट के विजयी राष्ट्रपति अभियान को वित्तपोषित करके अपनी स्थिति तक पहुँच बनाई थी। रूजवेल्ट और वेनबर्ग की युद्ध मशीन को ब्रिटेन से तीखा समर्थन प्राप्त था, जिसके प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने यहूदी अर्नेस्ट कैसल और हेनरी स्ट्राकोश द्वारा उधार दिए गए धन से अपनी शराब और जुए की लत को पूरा किया। स्ट्राकोश ने हिटलर के जर्मनी के विरुद्ध युद्ध के लिए सक्रिय रूप से पैरवी की, और चर्चिल, जिन्होंने नाममात्र के लिए देश का नेतृत्व एक ऋण-दास के रूप में किया, ने वही किया जो उन्हें बताया गया था।

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद, केंद्रीय बैंकों के साथ-साथ दो नए प्रकार की वैश्विक वित्तीय संस्थाएँ स्थापित की गईं:

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) और विश्व बैंक (WB)। दोनों बैंकों के जनक हैरी डेक्सटर व्हाइट थे, जो एक यहूदी व्यक्ति थे और सोवियत संघ के लिए जासूस के रूप में काम करते थे। इन बैंकों की स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यह सुनिश्चित करने के लिए की गई थी कि पश्चिमी देश अब राष्ट्रीय समाजवादी जर्मनी या फ़ासीवादी इटली जैसे स्वतंत्र आर्थिक क्षेत्र न बनाएँ। हालाँकि यहूदी दुनिया की आबादी का केवल कुछ प्रतिशत ही हैं, फिर भी उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय सूदखोरी प्रणाली की सभी सबसे महत्वपूर्ण संस्थाओं का विकास किया है।

सूदखोरी के विरोधी

"यहूदी अमीर हैं क्योंकि वे एक-दूसरे के प्रति ईमानदार और दयालु हैं। हालाँकि, वे बाकी दुनिया को अपना घृणित दुश्मन मानते हैं।"
- टैसिटस

जैसा कि रोमन साम्राज्य के सबसे महत्वपूर्ण इतिहासकार, टैसिटस के इस उद्धरण से पता चलता है, यहूदी आर्थिक शक्ति को कम से कम दो हज़ार वर्षों से यूरोप में एक सामाजिक नासूर माना जाता रहा है।
यद्यपि साहूकारों के भ्रष्ट शासकों के साथ लगभग बिना किसी अपवाद के मधुर संबंध रहे हैं, फिर भी यूरोप में बैंकिंग शक्ति के कट्टर शत्रु हमेशा से रहे हैं। हालाँकि, प्राचीन रोम के दिनों से वित्तीय पूँजीवाद का स्वरूप कई बार बदला है। तो, बैंकिंग-विरोधी संघर्ष का आधुनिक अग्रदूत किसे माना जा सकता है? सबसे महत्वपूर्ण बैंकिंग-विरोधी विचारक संभवतः आविष्कारक आर्थर किटसन हैं, जिनका जन्म 1859 में इंग्लैंड में हुआ था, जिन्होंने 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ही मौद्रिक सुधार के लिए अपना सतत अभियान शुरू कर दिया था। द्वितीय विश्व युद्ध से पहले के दशकों में, उनके लेखन ने दुनिया भर के विविध समूहों को प्रेरित किया, वैज्ञानिकों और आर्थिक सिद्धांतकारों से लेकर यहूदी-विरोधी राजनीतिक कार्यकर्ताओं तक।
यद्यपि किटसन का नाम आज अधिकांश राष्ट्रवादियों और आर्थिक न्याय के पैरोकारों के लिए भी परिचित नहीं है, फिर भी आंदोलनों पर उनका अप्रत्यक्ष प्रभाव निर्विवाद रहा है।

प्रकाश बल्ब के आविष्कारक और जनरल इलेक्ट्रिक के संस्थापक थॉमस एडिसन ने 1922 में कहा था कि किटसन ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिनसे वे मिले थे जो धन के वास्तविक स्वरूप को समझते थे। किटसन और एडिसन, दोनों ही निजी बैंकों से मौद्रिक शक्ति को समाज में स्थानांतरित करना चाहते थे, क्योंकि वे जानते थे कि ब्याज-दासता राजनीति को भ्रष्ट करती है और न केवल राज्य के खजाने को, बल्कि ईमानदार उद्यमियों के खजाने को भी खाली कर देती है।

एडिसन के साथ, किटसन की प्रशंसा 20वीं सदी के सबसे सम्मानित अर्थशास्त्रियों में से एक, इरविंग फिशर ने भी की थी। किटसन ने कवि एज्रा पाउंड को भी प्रेरित किया, जो पिछली सदी के सबसे प्रसिद्ध बैंकिंग-विरोधी कलाकार और यहूदियों द्वारा सताए गए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए शहीद हुए थे।

20वीं सदी के शुरुआती बैंकिंग आलोचक विशेष रूप से स्वर्ण मानक के विरोधी थे। किटसन के अनुसार, स्वर्ण मानक के कारण अंतर्राष्ट्रीय बैंक कीमती धातुओं के व्यापार के माध्यम से मुद्रा के मूल्य में हेरफेर करने में सक्षम हो गए थे: जब बैंकर बाजार से सोना निकालकर अपनी तिजोरियों में जमा करते थे, तो कम आपूर्ति के कारण सोने की कीमत बढ़ जाती थी और परिणामस्वरूप, मुद्रा का मूल्य भी बढ़ जाता था। मुद्रा की क्रय शक्ति में वृद्धि के कारण वास्तविक अर्थव्यवस्था की कीमतों में गिरावट आई। बैंकरों ने इस अवसर का लाभ उठाकर वास्तविक अर्थव्यवस्था के उत्पादन को सस्ते दामों पर खरीद लिया। इसके बाद, बैंकों ने अपना जमा किया हुआ सोना वापस बाजार में छोड़ दिया, जिससे मुद्रा के मूल्य में गिरावट आई और कीमतें बढ़ गईं। बैंकरों ने वास्तविक अर्थव्यवस्था के उत्पादन को ऊँची कीमतों पर बेचकर फिर से इस अवसर का लाभ उठाया।

किटसन और उनके सहयोगियों ने स्वर्ण मानक का विरोध किया क्योंकि स्वर्ण बाजार में हेरफेर करके, बैंकर स्वयं कोई अतिरिक्त मूल्य सृजित किए बिना वास्तविक अर्थव्यवस्था का खून चूस लेते थे। स्वर्ण मानक के बजाय, किटसन ने एक राष्ट्रीयकृत मौद्रिक प्रणाली का आह्वान किया जिसमें राज्य पर्याप्त नई मुद्रा सृजित करे ताकि अर्थव्यवस्था का विकास हो सके और नागरिकों को बिना अधिक गर्मी और बुलबुले पैदा किए रोजगार मिल सके।

वास्तविक धन बनाम भ्रामक धन

शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि किटसन ने नोबेल पुरस्कार विजेता फ्रेडरिक सोडी के माध्यम से वर्तमान बैंकिंग-विरोधी आंदोलन को प्रभावित किया। सोडी एक अंग्रेज रेडियोकेमिस्ट थे जिन्होंने 1920 और 1940 के दशक में धन की प्रकृति पर कई किताबें लिखीं। किटसन से प्रेरित होकर, सोडी ने निजी बैंकिंग प्रणाली पर हमला किया और वास्तविक धन (वास्तविक अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पन्न) और भ्रामक धन (धन और ऋण) के बीच अंतर किया। उनके विचार में, भ्रामक धन वास्तविक धन को नष्ट कर देता है। सोडी को यह पागलपन लगता था कि धन और ऋण की मात्रा लगभग असीमित रूप से बढ़ सकती है, और अंततः वास्तविक अर्थव्यवस्था और प्रकृति की क्षमता से कहीं अधिक बड़ी हो जाती है। सोडी ने कहा कि निजी मुद्रा प्रणाली ने समाजों को "ऋण में डूबने" के लिए प्रेरित किया है। ऋण पिरामिड के बढ़ने से, बदले में, नियमित आर्थिक पतन हुआ, जिसके दौरान वास्तविक अर्थव्यवस्था में दिवालिया कंपनियों से धन बैंकरों के पास स्थानांतरित हो गया।
सोड्डी के माध्यम से, बैंकिंग क्षेत्र में सुधार के किटसन के विचार संयुक्त राज्य अमेरिका तक पहुँचे, जहाँ 1929 के शेयर बाजार में आई गिरावट के बाद उन्हें गंभीरता से लिया गया। सोड्डी से प्रेरित होकर, शिकागो के अर्थशास्त्रियों ने 1933 में बैंकिंग सुधार के लिए एक प्रस्ताव तैयार किया, जो निजी वाणिज्यिक बैंकों को अचानक से नई मुद्रा बनाने से रोकता। इस सुधार का उद्देश्य भविष्य में होने वाली दुर्घटनाओं को रोकना, वित्तीय अर्थव्यवस्था के विकास की सीमाएँ निर्धारित करना और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को स्थिर करना था। 2007-2008 के वित्तीय संकट के बाद, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) ने भी अपने अध्ययन "द शिकागो प्लान रिविजिटेड" में शिकागो योजना में प्रस्तुत मौद्रिक प्रणाली के लाभों को स्वीकार किया। (तब से, शिकागो योजना ने समकालीन मौद्रिक कार्यकर्ता आंदोलनों को प्रेरित किया है, जैसे कि आर्थिक लोकतंत्र और आधुनिक मौद्रिक सिद्धांत [एमएमटी]। इन आंदोलनों ने अपना संदेश मुख्य रूप से पश्चिमी देशों में वामपंथियों को दिया है, इसलिए यह समझा जा सकता है कि मौद्रिक कार्यकर्ता अपने आर्थिक सिद्धांत की यहूदी विरोधी पृष्ठभूमि और विशेष रूप से राष्ट्रवादी किटसन और सोड्डी के साथ इसके महत्वपूर्ण संबंध को प्रचारित करने में अनिच्छुक रहे हैं।

इसके अलावा, सोड्डी द्वारा अपनी पुस्तक "वेल्थ, वर्चुअल वेल्थ एंड डेट" में प्रस्तुत वित्तीय बाज़ारों में आंतरिक अस्थिरता के सिद्धांत को बाद में यहूदी अर्थशास्त्री हाइमन मिंस्की के नाम से जोड़ दिया गया।
किटसन और सोड्डी केवल बैंकिंग प्रणाली के काम करने के तरीके का वर्णन करने से संतुष्ट नहीं थे। वे यह भी जानना चाहते थे कि निजी धन के प्रभुत्व से वास्तव में किसे लाभ होता है। उनके अनुसार, बाज़ार किसी भी तरह से चेहराविहीन नहीं थे। नवंबर 1921 में, सोड्डी ने बर्कबेक कॉलेज और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के छात्रों को वास्तविक अर्थव्यवस्था और वित्तीय अर्थव्यवस्था के बीच अंतर पर दो व्याख्यान दिए। व्याख्यान के सबसे क्रांतिकारी हिस्से में, नोबेल पुरस्कार विजेता ने अपने विचार व्यक्त किए:
“पूंजीपति – – एक परोपकारी व्यक्ति के रूप में देखा जाना चाहता है, क्योंकि वह अपना पैसा शराब पर नहीं, बल्कि [समाज के लिए] धन उत्पन्न करने वाली व्यावसायिक गतिविधियों पर खर्च करता है। अगर वह वास्तव में ऐसा करता, तो उसे परोपकारी कहा जा सकता था। हालाँकि, एक बार जब समुदाय उसके द्वारा उधार दिया गया पैसा खर्च कर देता है, तो वह ब्याज सहित ऋण चुकाने की माँग करने लगता है। धन उधार देने के कारण, पूरी सभ्यता असहाय होकर यहूदियों के हाथों में आ गई है। बेहतर होता कि पूंजीपति अपना पैसा मनोरंजन पर खर्च करते [समुदाय को उधार देने के बजाय]।

बैंकिंग-विरोधी और यहूदी-विरोधी

1939 में, सोड्डी ने अंग्रेज उद्यमी वाल्टर क्रिक के साथ मिलकर "निजी धन को समाप्त करो, या ऋण में डूबो" नामक एक पुस्तिका प्रकाशित की। 19 मार्च को नॉर्थम्प्टन डेली इको में क्रिक द्वारा दिए गए बयान के बाद, अंतर्राष्ट्रीय यहूदी समुदाय ने उनकी कंपनी का बहिष्कार शुरू कर दिया। 1925:
"यहूदियों में मौद्रिक प्रणाली के माध्यम से विनाश करने की क्षमता है। यहूदी अंतर्राष्ट्रीय हैं। इस देश में, अंग्रेज़ नहीं, बल्कि यहूदी धन को नियंत्रित करते हैं। यह ब्रिटिश साम्राज्य के सामने अब तक का सबसे बड़ा ख़तरा है।"
किक राष्ट्रवादी संगठन द ब्रिटन्स के एक प्रमुख व्यक्ति थे, जिससे किटसन भी जुड़े थे।

अपनी आत्मकथा, आउट ऑफ़ स्टेप में, अंग्रेज़ राष्ट्रीय समाजवादी नेता अर्नोल्ड लीज़ बताते हैं कि किटसन राजनीति और वित्तीय मामलों को किस तरह एक-दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए मानते थे:
“[किटसन] सभी राजनेताओं और दलों से नफ़रत करते थे क्योंकि उन्होंने अतार्किक और गुप्त रूप से स्वर्ण मानक को अपनाने का फ़ैसला किया था। – – आज, मौद्रिक सुधारक उन्हें इस क्षेत्र में अग्रणी मानते हैं। – किटसन ने मुझे यहूदी मज़ाक का असली मतलब समझना सिखाया।”

विश्व राजनीति में धन-शक्ति की भूमिका को आत्मसात करने के बाद, लीज़ ने ब्रिटेन में राष्ट्रीय समाजवादी आंदोलन का संगठन शुरू किया। उन्होंने हिटलर के जर्मनी के ख़िलाफ़ युद्ध का कड़ा विरोध किया। लीज़ ने किटसन के दर्शन को अपने छात्र कॉलिन जॉर्डन को भी दिया, जो युद्धोत्तर यूरोप में सबसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय समाजवादी कार्यकर्ताओं में से एक बन गए।

द्वितीय विश्व युद्ध के एक अन्य विरोधी हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर जोसेफ़ शुम्पीटर थे, जिन्हें व्यापक रूप से सबसे महत्वपूर्ण आधुनिक अर्थशास्त्रियों में से एक और "पूंजीवाद की खोज करने वाले व्यक्ति" के रूप में माना जाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका जाने से पहले, शुम्पीटर ने अन्य पदों के अलावा ऑस्ट्रिया के वित्त मंत्री के रूप में भी कार्य किया। नवीनतम वित्तीय संकट के साथ, शुम्पीटर का प्रभाव और भी बढ़ गया है, क्योंकि उन्हें पहला शोधकर्ता माना जाता है जिसने यह खोज की कि बैंक लेखांकन कार्यों के माध्यम से अचानक से नई मुद्रा बनाते हैं। अन्य प्रमुख मौद्रिक सुधारकों की तरह, शुम्पीटर यहूदियों के घोर आलोचक थे और उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के परिणाम को "यहूदियों की विजय" कहा था।

औद्योगिक पूँजी बनाम वित्तीय पूँजी

शुम्पीटर और अन्य मौद्रिक सुधारकों की एडॉल्फ हिटलर के प्रति सहानुभूति को समझना आसान है। राष्ट्रीय समाजवादी जर्मनी ने सिद्धांत को व्यवहार में लाया, अन्यायपूर्ण विदेशी ऋणों का त्याग किया और राष्ट्रीयकृत मुद्रा के साथ एक आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था का निर्माण किया। 1920 की शुरुआत में ही, हिटलर ने अपने भाषण "हम यहूदी-विरोधी क्यों हैं" में बहुत ही परिचित तर्कों का इस्तेमाल किया:

"कार्यशील पूँजी, यानी औद्योगिक पूँजी—मेरा मतलब औज़ारों, कार्यशालाओं, मशीनों और कारखानों से है—के ख़िलाफ़ लड़ना मूर्खता होगी। हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि पूँजी के इस वर्ग का शोषण न हो। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि औद्योगिक पूँजी पर हमला किया जाए। हमारे लोगों को [औद्योगिक पूँजी से नफ़रत करने के लिए] बरगलाया गया है ताकि वे असली दुश्मन पर ध्यान न दें। असली दुश्मन ऋण और वित्तीय पूँजी है। हमें इन्हीं से लड़ना होगा। - - आसपास के समाज में चाहे कुछ भी हो रहा हो, ऋण पूँजी बढ़ती ही रहती है।

20वीं सदी की शुरुआत में, आर्थिक और नस्लीय मुद्दे सार्वजनिक बहस में स्वाभाविक रूप से जुड़े हुए थे, क्योंकि उदाहरण के लिए, यहूदियों की आलोचना अभी तक हमारी संस्कृति में पूरी तरह से वर्जित नहीं हुई थी। इसलिए, जाने-माने व्यवसायी, पत्रकार और दार्शनिक कभी-कभी बैंकिंग पदानुक्रम में शीर्ष पर यहूदियों की भूमिका पर अपना रुख़ रखते थे। फ़िनलैंड में, आमुलेहती ने 15 फ़रवरी, 1924 को हेनरी फ़ोर्ड की पुस्तक "द इंटरनेशनल ज्यू" की समीक्षा प्रकाशित की, जिसमें इस कृति पर टिप्पणी की गई थी: आगे लिखा है:

“अंतर्राष्ट्रीय यहूदियों की कोई मातृभूमि नहीं है; उनकी मातृभूमि पूरी दुनिया है, और उनके कदम दुनिया के गैर-यहूदी लोग हैं। इस प्रकार, उन्होंने भयानक विश्व युद्ध की सबसे बड़ी फसल चमकदार सोने में काटी, संघर्ष के दोनों पक्षों का बेरहमी से अपने फायदे के लिए शोषण किया, यहाँ तक कि एक ही यहूदी बैंकिंग परिवारों के सदस्यों ने दोनों पक्षों में एक-दूसरे के साथ घनिष्ठ सहयोग में काम किया।”

अपनी पुस्तक में, फोर्ड ने वैश्विक राजनीतिक वर्चस्व की एक तस्वीर पेश की, जिसके बारे में उनका दावा था कि यहूदियों ने वित्तीय सट्टेबाजी, धन उधार और राजनीतिक भ्रष्टाचार के माध्यम से हासिल किया था। फोर्ड ने वास्तविक अर्थव्यवस्था और वित्तीय अर्थव्यवस्था के बीच एक सख्त अंतर भी किया, और अन्य बातों के अलावा लिखा:

“वैश्विक वित्तीय श्रृंखला में, हर कड़ी पर एक यहूदी पूंजीपति, एक यहूदी धनी परिवार, या एक यहूदी-नियंत्रित बैंकिंग समूह है। कई लोग इसे गैर-यहूदियों को नियंत्रित करने के लिए यहूदियों द्वारा एक व्यवस्थित योजना के रूप में देखते हैं; अन्य इसे यहूदी समुदाय की भावना और इस परंपरा का परिणाम मानते हैं कि वंशज अपने माता-पिता के काम को जारी रखते हैं, जो इस प्रकार अधिक व्यापक रूप से फैलता है।

पुराने नियम में दिए गए वर्णन के अनुसार, इस्राएल एक बेल की तरह बढ़ता है जो नई शाखाएँ उगाती है और अपनी पुरानी जड़ों को और गहरा करती है, लेकिन यह सब एक ही विकास का हिस्सा है।
अमेरिका में, 'पूँजी' शब्द का प्रयोग आमतौर पर उत्पादन के लिए इस्तेमाल होने वाले धन के लिए किया जाता है, और निर्माता, फोरमैन, औज़ारों और श्रम के क्रेता को ग़लती से 'पूँजीपति' कहा जाता है। नहीं, वह सही अर्थों में पूँजीपति नहीं है। उसे भी पूँजीपति के पास जाना होगा ताकि वह अपनी योजनाओं को पूँजीपति के पैसे से अंजाम दे सके। उसके ऊपर एक ऐसी शक्ति है जो उसके साथ उससे भी ज़्यादा कठोरता और निर्दयता से पेश आती है जितना वह अपने मज़दूरों के साथ कभी पेश आने की हिम्मत नहीं करेगा।
यह इस समय की त्रासदी का एक पहलू है कि 'श्रम' और 'पूँजी' एक-दूसरे को चीर रहे हैं, हालाँकि दोनों में से किसी के पास भी उन परिस्थितियों पर निर्णय लेने की शक्ति नहीं है जिनका दोनों विरोध करते हैं और जिनके तहत दोनों पीड़ित हैं - जब तक कि वे उन अंतरराष्ट्रीय वित्तपोषकों के समूह से सत्ता छीनने का कोई रास्ता नहीं खोज लेते जो इन परिस्थितियों का निर्माण और शोषण करते हैं।

यहूदियों की भूमिका वर्जित हो जाती है

20वीं सदी के पूर्वार्ध में, कई प्रतिष्ठित कलाकारों और विचारकों ने हिटलर और फोर्ड के तर्कों की याद दिलाते हुए विश्व राजनीति का विश्लेषण किया। मार्टिन हाइडेगर, जिन्हें सबसे पिछली सदी के एक महत्वपूर्ण दार्शनिक, एज़रा पाउंड ने 1931 में लिखा था कि राजनीतिक रूप से यहूदियों के प्रभाव से लड़ना बेहद मुश्किल था, क्योंकि उनके पास बड़ी पूँजी (ग्रोसकैपिटल) थी।
कवि एज्रा पाउंड ने 15 मार्च, 1942 को अपने युद्धकालीन रेडियो प्रसारण में लंदन के यहूदी बैंकरों द्वारा दिए गए ब्याज-आधारित ऋणों के बारे में बात की, जिसने दुनिया भर के स्वतंत्र राज्यों की औद्योगिक आत्मनिर्भरता को नष्ट और "सड़ा" दिया था।
द्वितीय विश्व युद्ध के साथ, राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय समाजवाद और फासीवाद दशकों तक पश्चिमी देशों में हाशिए पर रहे।

परिणामस्वरूप, अब हमारे पास ब्याज-दासता के विरुद्ध विद्रोह का नेतृत्व करने के लिए सोड्डी, शुम्पीटर, हाइडेगर या पाउंड जैसे व्यापक रूप से सम्मानित वैज्ञानिक और कलाकार नहीं हैं।
हालाँकि, असाधारण अवसरों पर, अभिजात वर्ग के सदस्य आश्चर्यजनक बयान दे सकते हैं। पूर्व विदेश व्यापार मंत्री पर्टी सलोलेनन को 2012 में सार्वजनिक रूप से तब सूली पर चढ़ा दिया गया था जब उन्होंने लाइव टेलीविज़न पर कहा था कि अमेरिका विदेश नीति में इज़राइल के हितों को बढ़ावा देता है क्योंकि संयुक्त राज्य अमेरिका में यहूदी आबादी के पास "काफी" धन और मीडिया शक्ति है।
किसी कारण से, जब राष्ट्रपति मार्टी अह्तिसारी ने अपनी आत्मकथा मटकल्ला (ऑन द रोड) में बताया कि कैसे "यहूदी लॉबी" मध्य पूर्व में ज़ायोनी नीति अपनाने के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति पर धन का दबाव डालने के लिए दबाव डालती है, तो ऐसा कोई हंगामा नहीं हुआ। यहूदी आर्थिक शक्ति के बारे में बहुत ही बेबाकी से बोलने के बाद, वैश्विक यहूदी समुदाय ने तुरंत ही संसद सदस्य के पद से सलोलेनन को बर्खास्त करने की मांग शुरू कर दी।

वित्तीय पूँजीवाद का एक नया युग

जबकि अभिजात वर्ग ने "राजनीतिक शुद्धता" का हवाला देकर नस्ल और यहूदी धर्म पर चर्चाओं को दबा दिया, अर्थशास्त्र और पूँजीवाद पर चर्चाओं का स्वर भी बदल गया। 1980 के दशक में, पश्चिमी देशों में यह मानसिकता फैलने लगी कि अमीर बनने के सभी तरीके "समान रूप से अच्छे" हैं। कैसीनो पूँजीवाद और तेज़ी से बढ़ते एकाधिकारवाद का एक दशक शुरू हुआ। समाज का शोषण करने वाले शेयर बाज़ार के सट्टेबाज़ों को कारखाना निर्माताओं के बराबर उत्पादक "उद्यमी" माना जाने लगा। फ़िल्म "वॉल स्ट्रीट" में, असली यहूदी वित्तीय आतंकवादी अशर एडेलमैन पर आधारित गॉर्डन गेको नामक पात्र ने "लालच अच्छा है" शब्दों के साथ उस समय की भावना को अभिव्यक्त किया।
जैसे-जैसे संस्कृति बदली, "सूदखोरी" शब्द पुराना लगने लगा। यह शब्द जल्द ही नागरिकों, पत्रकारों और शोधकर्ताओं की शब्दावली से गायब हो गया।

इसी समय, ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका ने बैंकिंग क्षेत्र के कानूनों को खत्म करना शुरू कर दिया और शेष पश्चिमी देशों ने भी उनका अनुसरण किया। ब्रिटेन में, प्रधानमंत्री मार्गरिट थैचर ने वित्तीय क्षेत्र की सर्वोच्चता के लिए संघर्ष किया, जिनके सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक सलाहकार यहूदी कीथ जोसेफ और अल्फ्रेड शेरमैन थे। दूसरी ओर, अमेरिकी बैंकरों की सेवा राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने की, जिनके प्रमुख आर्थिक सलाहकार यहूदी मिल्टन फ्रीडमैन थे। जोसेफ, शेरमैन और फ्रीडमैन तथाकथित नवउदारवादी थे।
उनके अंतिम गुरु ऑस्ट्रिया में जन्मे एक यहूदी व्यक्ति लुडविग वॉन मिज़ेस थे, जो 1940 में राष्ट्रीय समाजवादियों से भागकर अमेरिका आ गए थे। (वॉन मिज़ेस की पत्नी मार्गिट ने अपने संस्मरणों में बताया है कि यह जोड़ा रिचर्ड कौडेनहोव-कैलेर्गी के घनिष्ठ मित्र थे, जो यूरोपीय जनसंख्या विनिमय की अपनी योजना के लिए जाने जाते थे।)

अटकलें लगने लगीं

"संयुक्त राज्य अमेरिका दुनिया पर राज करता है, लेकिन संयुक्त राज्य अमेरिका पर कौन राज करता है?" यह एक जाना-माना अलंकारिक प्रश्न है। रीगन ने फ्रीडमैन के राजनीतिक कार्यक्रम को ईमानदारी से लागू किया, जिसके परिणामस्वरूप बैंकर वास्तविक अर्थव्यवस्था की कंपनियों, करदाताओं, शहरों, बचतकर्ताओं और अन्य आर्थिक कर्ताओं का अधिक से अधिक कल्पनाशील तरीकों से शोषण करने में सक्षम हो गए। इससे धन का अंतर बढ़ता गया, और हम आज भी इसके कारण हुई व्यापक बेरोजगारी और जन्म दर में तीव्र गिरावट से पीड़ित हैं। 1980 के दशक में, दुर्भाग्य से दुनिया ने "जंक बॉन्ड", "स्वैप" और "शत्रुतापूर्ण अधिग्रहण" जैसे कई नए मौद्रिक शब्दों को सीखा।
इनमें माइकल मिल्केन, इवान बोएस्की, रोनाल्ड पेरेलमैन, कार्ल इकान, सॉलोमन ब्रदर्स और ड्रेक्सेल बर्नहैम लैम्बर्ट जैसे जाने-माने यहूदी बैंक और वित्तीय अपराधी शामिल थे।
1980 के दशक में उधार के पैसे से वित्तपोषित कॉर्पोरेट अधिग्रहण आम हो गए। आज, ये पश्चिमी पूंजीवाद का एक अभिन्न अंग हैं। अधिग्रहण का मूल फार्मूला यहूदी हेनरी क्राविस द्वारा विकसित किया गया था: अधिग्रहणकर्ता अपनी पसंद की कंपनी को उधार के पैसे से खरीदता है (जो उस समय अक्सर यहूदी ड्रेक्सेल बैंक से आता था) और फिर कंपनी को पूरी तरह से बर्बाद कर देता है, उदाहरण के लिए कारखानों को बंद करके और कर्मचारियों की छंटनी करके।

फिर हमलावर कंपनी के विनाश से उत्पन्न "बचत" को अपने पास रख लेता है और दिवालिया कंपनी को उस कर्ज़ को चुकाने के लिए छोड़ देता है जिसे हमलावर ने मूल रूप से अधिग्रहण के वित्तपोषण के लिए लिया था।
कॉर्पोरेट छापेमारी पर शायद सबसे प्रसिद्ध गैर-काल्पनिक पुस्तक जेम्स बी. स्टीवर्ट की "डेन ऑफ़ थीव्स" है। अपनी पुस्तक में, स्टीवर्ट स्वीकार करते हैं कि वॉल स्ट्रीट के यहूदियों ने ही शत्रुतापूर्ण कॉर्पोरेट अधिग्रहणों को विकसित किया, क्योंकि बैंकिंग उद्योग में काम करने वाले गोरे लोग इस रणनीति को बहुत "गंदा" और अपमानजनक मानते थे। स्टीवर्ट के अनुसार, न्यूयॉर्क के यहूदियों में ऐसी कोई नैतिक बाधा नहीं थी।
उधार के पैसे से प्रतिस्पर्धी कंपनियों पर कब्ज़ा करके, अंदरूनी लोगों ने बड़े पैमाने पर निजी एकाधिकार भी बनाना शुरू कर दिया, जिसने छोटी, ईमानदार कंपनियों को बाजार से बाहर कर दिया। इस तरह, आर्थिक शक्ति कम से कम हाथों में केंद्रित होती गई। आर्थिक शक्ति राजनीतिक शक्ति से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई थी, जिसे वित्तीय अभिजात वर्ग डॉलर, यूरो, पाउंड और येन से भी अधिक प्यार करता है।

अर्थव्यवस्था और राज्यों के विरुद्ध वित्तीय आतंकवाद

यहूदी पॉल सिंगर, जिन्हें "गिद्ध पूँजीपति" और "वित्तीय आतंकवादी" कहा जाता है, ने बाद में क्रैविस की मुख्यधारा की अधिग्रहण तकनीक को और निखारा और अपना ध्यान कंपनियों से हटाकर पूरे राज्यों पर केंद्रित कर दिया। संयुक्त राष्ट्र के पूर्व उप-महासचिव विंस्टन टबमैन के अनुसार, सिंगर का काम "बच्चों की हत्या" करना है। वित्तीय प्रकाशन ब्लूमबर्ग सिंगर को "दुनिया का सबसे ख़तरनाक निवेशक" और "प्रलय का दिन" निवेशक कहता है। वित्तीय आतंकवादी सिंगर उन देशों से, जो द्वितीयक बाज़ार में दिवालिया माने जाते हैं, लगभग शून्य मूल्य पर बॉन्ड खरीदकर अमीर बन गया है। इसके बाद इस यहूदी व्यवसायी ने दिवालिया देशों पर मुकदमा दायर किया और माँग की कि वे अपने कर्ज़ों का अंतिम पैसा तक ब्याज सहित भुगतान करें, भले ही इसके लिए बच्चों के अस्पतालों को बंद करके या रक्षा खर्च में कटौती करके ब्याज का भुगतान करना पड़े।

सिंगर के शिकार हुए थिसेनक्रुप के अध्यक्ष ने यहूदी निवेशक की कार्यप्रणाली को "मनोवैज्ञानिक आतंक" कहा।
सिंगर ने तो यहाँ तक माँग की है कि कर्ज़ में डूबे देश अपने केंद्रीय बैंक के भंडार और पेंशन फंड उन्हें सौंप दें। 2012 में, सिंगर ने घाना में एक ब्याज विवाद के सिलसिले में अर्जेंटीना के एक नौसेना युद्धपोत को ज़ब्त करने का प्रयास किया था। "स्वतंत्र" देशों को अपमानित करके, यहूदी सिंगर ने ठोस रूप से प्रदर्शित किया है कि अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक कानून अन्य सभी कानूनों से ऊपर है। इसी कारण, सिंगर की तुलना अक्सर यहूदी महा-निवेशक जॉर्ज सोरोस से की जाती है, जिन्होंने भी सट्टा हमलों से देशों की मुद्राओं का मूल्य नष्ट करके उन्हें घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया है।
ब्लूमबर्ग के अनुसार, सिंगर ने लूटे गए धन को विशेष रूप से तीन राजनीतिक परियोजनाओं में निवेश किया है: वित्तीय गतिविधियों को प्रतिबंधित करने वाले कानूनों को खत्म करना, समलैंगिक लॉबिंग, और इज़राइल के वर्चस्व को मज़बूत करना। क्या यह सामान्य है?

जब राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था एक पिरामिड योजना बन गई

सिंगर, सोरोस और उनके सहयोगियों की वित्तीय योजनाओं के बारे में पहली बार पढ़कर आम आदमी का सिर आसानी से घूम सकता है। हालाँकि, शोषण की ये जटिल प्रतीत होने वाली योजनाएँ हमेशा एक ही ढाँचे पर आधारित होती हैं: बैंक कॉर्पोरेट अधिग्रहणों को वित्तपोषित करने के लिए हवा से नई मुद्रा बनाते हैं, वास्तविक कंपनियों को ऋण दासता में बाँधते हैं, और प्रतिभूतियों की कीमतों को कृत्रिम रूप से बढ़ाते हैं। जब ऋण बुलबुले फूटते हैं, तो दिवालियापन की कार्यवाही के माध्यम से संपार्श्विक वास्तविक उद्यमियों से बैंकरों और बैंकरों के साथ संबद्ध बड़े निवेशकों को हस्तांतरित हो जाता है।
1980 के दशक में फ्रीडमैन और वॉन माइस की शिक्षाओं के अनुसार उपभोक्ताओं, ईमानदार उद्यमियों और समाज की रक्षा करने वाले कानूनों को ध्वस्त कर दिया गया, जिससे पश्चिमी मौद्रिक नीति एक बैंकिंग कार्टेल द्वारा संचालित एक पिरामिड योजना बन गई।

वॉल स्ट्रीट और लंदन के बड़े बैंकों की सफलता ने छोटे यूरोपीय बैंकों को भी बाज़ारों का दोहन करने के लिए मजबूर कर दिया, क्योंकि खूनी प्रतिस्पर्धी माहौल में ईमानदार संचालक जल्दी ही विलुप्त हो गए। अपराध ईमानदारी से ज़्यादा फायदेमंद होता है।
यह स्थिति इस तथ्य से और भी बदतर हो गई कि 1985 में, यहूदी प्रोफ़ेसर केनेथ रोगॉफ़ ने एक सिद्धांत विकसित किया कि केंद्रीय बैंकों को राजनीतिक नियंत्रण से "स्वतंत्र" होना चाहिए। चूँकि केंद्रीय बैंकों की भूमिका निजी बैंकों की निगरानी करना है, इसलिए रोगॉफ़ की माँग का मतलब था कि राज्य को वाणिज्यिक बैंकों पर नज़र नहीं रखनी चाहिए। राजनेताओं ने रोगॉफ़ के विचार को तुरंत अपना लिया, और आज बैंक व्यावहारिक रूप से अपने कार्यों के लिए समाज के प्रति जवाबदेह नहीं हैं।
केंद्रीय बैंक बैंकिंग जगत में कानून-व्यवस्था बनाए नहीं रखते; बल्कि, वे वित्तीय अभिजात वर्ग के लिए लॉबी समूह हैं। उदाहरण के लिए, यूरोपीय सेंट्रल बैंक के पूर्व प्रमुख, मारियो ड्रैगी, यहूदी गोल्डमैन सैक्स बैंक के एक संरक्षक थे। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि उनकी नीतियों ने वित्तीय अभिजात वर्ग को लाभ पहुँचाया और आम यूरोपीय लोगों का जीवन कष्टमय बना दिया।

"टू बिग टू फेल" - एक और यहूदी आविष्कार

अब आपराधिक बैंकरों के जेल जाने की संभावना कम हो गई है। उदाहरण के लिए, 2007-2008 के वित्तीय संकट के मुख्य दोषियों में से किसी को भी अभी तक उनके अपराधों के लिए ज़िम्मेदार नहीं ठहराया गया है। बैंकिंग जगत में "टू बिग टू जेल" की घटना की जड़ें 1992 में हैं, जब अमेरिकी न्याय विभाग ने यहूदी सॉलोमन ब्रदर्स आपराधिक बैंक के खिलाफ आरोप न लगाने का फैसला किया था (एक प्रक्रिया जिसे विलंबित अभियोजन समझौता (DPA) के रूप में जाना जाता है)। व्यवहार में, कुलीन बैंकों को अपराध करने की खुली छूट दी गई थी, क्योंकि सबसे कठोर प्रतिबंध, यानी जुर्माना भी बैंक अधिकारियों के बजाय शेयरधारकों पर लगाया जाता था। शेयरधारकों (जिनमें से कई आम लोगों के पेंशन फंड हैं, उदाहरण के लिए) का भाग्य प्रबंधन के लिए बहुत कम रुचि का विषय है, क्योंकि अक्सर मालिकों को लूटना उनके लिए लाभदायक होता है।
"टू बिग टू जेल" का प्रतिरूप है "टू बिग टू फेल", अर्थात निजी अभिजात्य बैंक जिन्हें करदाताओं के पैसे से कृत्रिम रूप से जीवित रखा जाता है।

यह घटना वित्तीय संकट के दौरान सामने आई, जब राजनेताओं ने करदाताओं के करोड़ों अरब डॉलर और यूरो उन आपराधिक बैंकों में डाल दिए जो दिवालिया होने के कगार पर थे, जबकि बैंकों द्वारा लूटे गए नागरिक आत्महत्या, गरीबी और बेरोजगारी के भंवर में फंस गए। राजनेताओं के अनुसार, बैंक करदाताओं के पैसे के हकदार थे क्योंकि वे "विफल होने के लिए बहुत महत्वपूर्ण" थे।
इज़राइली अखबार हारेत्ज़ ने 2015 में लिखा था कि "टू बिग टू फेल" मॉडल के जनक यहूदी बैंकर सैनफोर्ड वेइल थे, जिन्होंने "अकेले ही अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग की प्रकृति बदल दी।" वेइल ने 1998 में ट्रैवलर्स ग्रुप और सिटीकॉर्प का विलय करके सिटीग्रुप नामक एक एकल "वित्तीय सुपरमार्केट" में पहला "टू बिग टू फेल" बैंक बनाया। अन्य बैंकों ने भी जल्द ही इसका अनुसरण किया।
इस विलय ने मेगाबैंकों को आम बचतकर्ताओं के पैसे से अपने जुए का वित्तपोषण करने में सक्षम बनाया। इस तरह, सट्टेबाजों ने वास्तविक अर्थव्यवस्था पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली। (वेइल के नेतृत्व में सिटीग्रुप का विलय उस समय अमेरिकी कानून के विरुद्ध था, लेकिन अमेरिकी फेडरल रिजर्व के यहूदी प्रमुख, एलन ग्रीनस्पैन ने अपने यहूदी साथी को इसकी अनुमति दे दी। वेइल और ग्रीनस्पैन को इस अपराध के लिए कभी ज़िम्मेदार नहीं ठहराया गया।)

लॉबिंग और राजनीतिक भ्रष्टाचार

"टू बिग टू फेल" मॉडल ने सिटीग्रुप को काफ़ी राजनीतिक प्रभाव दिया। 2016 की शरद ऋतु में, द न्यू रिपब्लिक ने अमेरिकी डेमोक्रेटिक पार्टी की चुनाव प्रचार टीम के लीक हुए ईमेल की रिपोर्ट दी, जिससे अमेरिकी राजनीतिक व्यवस्था में भ्रष्टाचार की गंभीरता का पता चला।
इन संदेशों से पता चला कि राष्ट्रपति के रूप में अपने पहले कार्यकाल के लिए, बराक ओबामा ने अपने अभियान के दानदाताओं से वादा किया था कि वे उनके प्रशासन के सदस्यों को नियुक्त कर सकेंगे। सिटीग्रुप के यहूदी सीईओ, माइकल फ्रोमैन ने ओबामा के अभियान प्रबंधक को "सूची" विषय पर एक ईमेल भेजा। यहूदी बैंकर द्वारा सूचीबद्ध लोग अमेरिका के अगले नेता बने।

जब वित्तीय संकट शुरू हुआ, तो ओबामा ने अपने सिटीग्रुप अभियान के दानदाताओं को करदाताओं द्वारा वित्त पोषित एक भारी-भरकम बेलआउट पैकेज देकर धन्यवाद दिया, क्योंकि बैंक लगभग दिवालिया हो गया था। अपनी पुस्तक कॉन्फिडेंस मेन में, गैर-काल्पनिक लेखक रॉन सुस्किंड बताते हैं कि कैसे विशाल बैंक यूबीएस अमेरिकाज़ के यहूदी प्रमुख रॉबर्ट वुल्फ ने ओबामा को आने वाले वित्तीय संकट के बारे में पहले ही सूचित कर दिया था ताकि राष्ट्रपति बैंक बेलआउट की सावधानीपूर्वक तैयारी कर सकें।

ओबामा की वुल्फ से पहली मुलाकात 2006 में यहूदी वित्तीय अभिजात्य जॉर्ज सोरोस द्वारा आयोजित एक पार्टी में हुई थी। (वित्तीय संकट के मुख्य दोषियों को आम तौर पर यहूदी केंद्रीय बैंकर एलन ग्रीनस्पैन माना जाता है, जिन्होंने बैंकिंग अपराधों पर आँखें मूंद लीं, यहूदी लैरी समर्स और रॉबर्ट रुबिन की जोड़ी, जिन्होंने ट्रेजरी विभाग में बैंकों की ओर से पैरवी की, और रोलांड अर्नॉल, एक यहूदी जिसने धोखाधड़ी वाले बंधक विकसित किए, जिससे संकट पैदा हुआ।)
हालाँकि, राजनीतिक प्रभाव की बात करें तो गोल्डमैन सैक्स के सामने सिटीग्रुप और यूबीएस भी फीके पड़ जाते हैं। यूरोपीय केंद्रीय बैंक के अध्यक्ष ड्रैगी और अमेरिकी वित्त मंत्री स्टीवन मनुचिन, दोनों ने गोल्डमैन सैक्स से ही अपनी ख्याति अर्जित की। 2017 में, इन्वेस्टोपेडिया ने "दुनिया पर राज करने वाले 26 गोल्डमैन सैक्स पूर्व छात्रों" की एक सूची प्रकाशित की। गोल्डमैन सैक्स का प्रभाव केवल धन-संपत्ति पर आधारित नहीं है, क्योंकि संपत्ति के मामले में यह दुनिया के सबसे बड़े बैंकों में शुमार नहीं है। गोल्डमैन सैक्स की सफलता का रहस्य यह है कि इसने सभी पारंपरिक और "सामान्य" बैंकिंग गतिविधियों को अपने प्रतिस्पर्धियों को आउटसोर्स कर दिया है, और इसके बजाय उच्च-दांव वाले दांव लगाने और सरकारों व बहुराष्ट्रीय कुलीन कंपनियों का शोषण करने पर ध्यान केंद्रित किया है। गोल्डमैन को दुनिया की सारी संपत्ति का मालिक होने की ज़रूरत नहीं है - बस इतना ही काफी है कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और व्यापार जगत के नेता उसकी बात मानें। गोल्डमैन मलाई निकालता है। अपनी पुस्तक "ब्रसेल्स सोल्ड आउट" के लिए प्रसिद्ध, गैर-काल्पनिक लेखिका जाना किवी ने कहा है कि सिटीग्रुप और गोल्डमैन सैक्स का भी यूरोप में काफी प्रभाव है। अमेरिकी आधारित बैंक यूरोपीय सेवा मंच (ईएसएफ) और यूरोपीय उद्योगपतियों की गोलमेज (ईआरटी) के माध्यम से यूरोपीय आयोग की पैरवी करके यूरोपीय संघ के कानून में हेरफेर करते हैं।

अपनी पुस्तक में, किवी बताती हैं कि कैसे आर्थिक नीति-निर्माण को मतदाताओं से हटाकर ईएसएफ और ईआरटी को सौंप दिया गया है, जो लोकतंत्र के सभी सिद्धांतों के विपरीत है। ईएसएफ की स्थापना यहूदी पीडोफाइल लियोन ब्रिटन ने की थी, और ईआरटी की स्थापना यहूदी रोथ्सचाइल्ड यूरोप कंपनी के यहूदी निदेशक पेहर गिलेनहैमर ने की थी। ब्रिटन की कृतियों में एमएआई बैंकिंग सर्वोच्चता समझौता भी शामिल है, जो टीटीआईपी का अग्रदूत था।

2018 में, यह स्पष्ट हो गया कि यूरोपीय संघ के नेताओं की पहल पर, यूरोप में महाद्वीपीय वर्चस्व की मांग करने वाला एक मेगा-बैंक बनाया जा रहा था। भारी नकदी प्रवाह के साथ, यह बड़ा बैंक राजनीतिक शक्ति को कम होते जा रहे कुलीन वर्गों के हाथों में केंद्रित कर देगा। इस परियोजना का नेतृत्व अमेरिका स्थित वित्तीय अभिजात्य स्टीफन फीनबर्ग ने किया था, जिन्हें जर्मनी के कॉमर्जबैंक और ड्यूश बैंक को एकल ब्याज दर वाली कंपनी में विलय करने का काम सौंपा गया था। संयोग से, फीनबर्ग भी यहूदी हैं। डॉयचे और कॉमर्जबैंक पारंपरिक रूप से केवल पैसा कमाने से संतुष्ट नहीं रहे हैं, बल्कि उन्होंने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भी सक्रिय रूप से हेरफेर किया है। विशेष रूप से, डॉयचे ने यूरोपीय संघ के अधिकारियों और राजनेताओं को रिश्वत देने और उन पर दबाव बनाने में अपनी अलग पहचान बनाई है।

पश्चिम में भ्रष्टाचार इतने भयावह स्तर पर पहुँच गया है कि अभिजात वर्ग अब इसे छिपाने की भी जहमत नहीं उठाता। जेरूसलम पोस्ट ने 2016 में स्वीकार किया था कि अमेरिकी डेमोक्रेटिक पार्टी के राष्ट्रपति चुनाव के बजट का कम से कम आधा हिस्सा यहूदी अरबपतियों से आता है, जबकि यहूदी देश की आबादी का केवल लगभग दो प्रतिशत ही हैं। 2018 में, ब्लूमबर्ग ने बताया कि कैसे यहूदी शेयर बाजार के अनुभवी जेम्स ग्लासमैन ने संयुक्त राज्य अमेरिका में एक और भी खतरनाक लॉबिंग संस्कृति पैदा कर दी थी, जहाँ वित्तीय अभिजात वर्ग अपने शेयर बाजार के मुनाफे को अधिकतम करने के लिए अलग-अलग दिनों में बिल्कुल विपरीत कानूनों के लिए लॉबिंग कर सकता था। उसी वर्ष, फाइनेंशियल टाइम्स ने राजनीति में लॉबिंग करने वाले सबसे महत्वपूर्ण सट्टेबाज अरबपतियों की सूची बनाई, जो सभी यहूदी थे: डोनाल्ड सुस्मान, जॉर्ज सोरोस, जिम सिमंस, स्टीवन कोहेन और पॉल सिंगर।

फ़ाइनेंशियल टाइम्स के अनुसार, यहूदी लॉबिस्ट पश्चिमी देशों में गैर-श्वेत आप्रवासन और "समलैंगिक अधिकारों" को लेकर ख़ास तौर पर चिंतित हैं। फ़िनलैंड में, हेलसिंगिन सनोमैट ने रिपोर्ट दी है कि कैसे सोरोस यूरोपीय शरणार्थी संकट में पैसा लगा रहे हैं। लॉरेंस फ़िंक, एक यहूदी व्यक्ति जो ब्लैकरॉक, जो जर्मनी की अर्थव्यवस्था जितनी बड़ी एक वित्तीय कंपनी है, के प्रमुख हैं, मीडिया में व्यावसायिक नेताओं से राष्ट्रवाद के ख़िलाफ़ खुलकर लड़ने का आह्वान कर रहे हैं। गोल्डमैन सैक्स, एक यहूदी कंपनी जो मुफ़्त आप्रवासन की पैरवी करती है, भी इसी मुहिम में शामिल है।

क्या गाज़ा का रास्ता हमारा भी रास्ता है?

उदारवादी अक्सर दावा करते हैं कि यहूदियों की राजनीतिक और आर्थिक शक्ति की बात करना "षड्यंत्र सिद्धांत" है। हालाँकि, इस घटना के बारे में कुछ भी गुप्त नहीं है—सारी जानकारी सार्वजनिक स्रोतों से उपलब्ध है, जिसमें उदारवादी अख़बार और यहूदी-स्वामित्व वाले बैंकों के प्रेस रिलीज़ शामिल हैं।
उदाहरण के लिए, कोई भी इस बात पर विवाद नहीं कर सकता कि यहूदियों के स्वामित्व वाली ब्लैकरॉक दुनिया की सबसे बड़ी परिसंपत्ति प्रबंधन कंपनी है, यहूदियों के स्वामित्व वाली ब्लैकस्टोन दुनिया की सबसे बड़ी ज़मींदार है, या यहूदियों के स्वामित्व वाली जोसेफ़ सफ़्रा दुनिया के सबसे अमीर बैंकर हैं। अमेरिका और यूरोपीय संघ में प्रमुख राजनीतिक पदों और भरोसेमंद पदों पर गोल्डमैन सैक्स के प्रतिनिधित्व पर कोई विवाद नहीं कर सकता। आज भी, यहूदी अभिजात वर्ग पर अपने निवास स्थान, रूस और यूक्रेन, दोनों में, सबसे बड़े बैंकों से धन की हेराफेरी करने का संदेह है। रूस में, इस गबन का मुख्य व्यक्ति यहूदी विश्व कांग्रेस के नेता बोरिस मिंट्स हैं, और यूक्रेन में, यह नए राष्ट्रपति इगोर कोलोमोइस्की का वित्तपोषक है।
ज़ायोनी आर्थिक व्यवस्था किस प्रकार के व्यावहारिक परिणाम उत्पन्न करती है? भविष्यवाणी की दृष्टि से फ़िलिस्तीन एक बहुत ही महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रयोगशाला है। जब 1948 में यहूदियों ने फ़िलिस्तीन पर हिंसक कब्ज़ा कर लिया, तो देश की मूल आबादी को ज़ायोनी अभिजात वर्ग की सेवा के लिए अधीन कर दिया गया था।

अन्य बातों के अलावा, इज़राइल ने फ़िलिस्तीनी जल संसाधनों को लूटा है, जिससे कृत्रिम अभाव और सूखा पैदा हुआ है, जिसका इस्तेमाल ज़ायोनी सरकार राजनीतिक अधीनता के औज़ार के रूप में करती है।
2012 में, यह स्पष्ट हो गया कि इज़राइल गाज़ा में खाद्य आयात को नियंत्रित करता है ताकि फ़िलिस्तीनी आबादी के कैलोरी सेवन को कृत्रिम रूप से कम रखा जा सके ताकि वे लड़ न सकें, लेकिन इतना अधिक रखा जा सके कि वे मरें नहीं। इज़राइली राजनयिकों के अनुसार, यहूदी राज्य का लक्ष्य "गाज़ा की अर्थव्यवस्था को पतन के कगार पर रखना" था। इज़राइल की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था भूखे फ़िलिस्तीनियों के शारीरिक श्रम पर आधारित है। पश्चिम के दृष्टिकोण से, जो दीर्घकालिक आर्थिक संकटों, बेरोज़गारी और धन की कमी से जूझ रहा है, इस स्थिति में कुछ बहुत ही परिचित बात है।
क्या गाज़ा का रास्ता हमारा भी रास्ता है? ज़ायोनी तख्तापलट के साथ, फ़िलिस्तीन नस्लीय आधार पर कुलीन वर्गों और दासों में बँट गया। अगर वित्तीय अभिजात वर्ग पश्चिमी देशों की वास्तविक अर्थव्यवस्था का शोषण करता रहा, तो यूरोप भविष्य का गाजा बन सकता है, जहाँ लोगों को कृत्रिम भूख और कृत्रिम आर्थिक पतन के ज़रिए नियंत्रित रखा जाएगा। इतिहास गवाह है कि ऐसी स्थिति में एकमात्र समाधान क्रांति है, क्योंकि उत्पीड़क स्वेच्छा से अपना धन और शक्ति नहीं छोड़ेंगे।

अंतिम तोप (15 सितंबर, 2025)

इज़राइल वर्तमान में गाजा में नरसंहार कर रहा है: 60,000 से ज़्यादा फ़िलिस्तीनियों की हत्या कर दी गई है। इनमें कम से कम 20,000 बच्चे हैं। और यह नरसंहार जारी है।
अमेरिका चुप है, लेकिन यूरोपीय देशों में इज़राइल का हल्का विरोध हो रहा है। फ़िनलैंड में, ईसाई डेमोक्रेट इज़राइल का बचाव करते हैं और हमास को दोषी ठहराते हैं; इससे पता चलता है कि वे खज़ारों को "ईश्वर के चुने हुए लोग" मानते हैं और यहूदियों की किसी भी आलोचना को बर्दाश्त नहीं करेंगे। प्रभु का नया चर्च इस पागलपन का अंत करेगा।
यहूदियों, या खज़ारों, की विश्व शक्ति आंशिक रूप से उनकी वित्तीय शक्ति पर आधारित है। अब समय आ गया है कि फ़िनलैंड यूरो से अपनी मुद्रा अपनाए और अपनी मौद्रिक नीति में सुधार शुरू करे ताकि हम "गाज़ा मॉडल" की स्थिति में न पहुँच जाएँ।

फ़िनलैंड इस समय गहरे आर्थिक और राजनीतिक संकट से जूझ रहा है। ज़ायन के बुद्धिमान लोग यूक्रेन में युद्ध के तुरंत बाद यूरोप और रूस के बीच युद्ध छेड़ने की कोशिश कर रहे हैं। मूर्ख फ़िनिश राजनेता रूस के प्रति अपनी नफ़रत में सबसे मुखर हैं, और वह भी पूरी तरह से बेवजह। एक कुशल यहूदी सूचना युद्ध चल रहा है। यह मुख्यधारा के मीडिया द्वारा चलाया जा रहा है, जिसका नेतृत्व खज़ारों द्वारा किया जा रहा है। हम एक खतरनाक दौर में जी रहे हैं।
प्रभु के नेतृत्व में नया चर्च मानवता को नरक की शक्ति से, यानी खज़ारों की शक्ति से मुक्ति दिलाता है।

अध्याय 8: नए चर्च के सिद्धांत

दार्शनिक विधियाँ और मूलभूत अवधारणाएँ

"परमात्मा के प्रति अत्यधिक समर्पण के बिना, कोई भी पूर्ण और सच्चा विद्वान दार्शनिक नहीं बन सकता। सच्चा दर्शन और ईश्वर के प्रति अवमानना, दोनों विपरीत हैं। अनंत सत्ता के प्रति सम्मान को दर्शन से कभी अलग नहीं किया जा सकता। जो कोई भी स्वयं को बुद्धिमान समझता है, भले ही उसकी बुद्धि उसे ईश्वरीय और अनंत सत्ता को पहचानना न सिखाए, अर्थात् जो कोई भी ईश्वरत्व के ज्ञान के बिना यह सोचता है कि उसके पास ज्ञान है, उसके पास ज्ञान ही नहीं है।" (स्वीडनबोर्ग: प्रिंसिपिया)।

"नया चर्च सभी चर्चों का मुकुट होगा। यह पूर्ववर्ती चर्चों से इस मायने में भिन्न है कि इसका सिद्धांत न केवल आध्यात्मिक मन को, बल्कि प्राकृतिक मन को भी प्रकाशित करता है। यह दुनिया को न केवल एक नया धर्मशास्त्र देता है, बल्कि एक नया दर्शन और एक नया विज्ञान भी देता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रभु को न केवल स्वर्ग के परमेश्वर के रूप में, बल्कि पृथ्वी के परमेश्वर के रूप में भी प्रकट किया जा सकता है; न केवल धर्मशास्त्रियों के परमेश्वर के रूप में, बल्कि दार्शनिकों और वैज्ञानिकों के परमेश्वर के रूप में भी।" (अल्फ्रेड एक्टन: एन इंट्रोडक्शन टू द वर्ड एक्सप्लेंड)।

इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग की रचनाओं को उनकी विधियों और अवधारणाओं की सटीक विषयवस्तु को समझे बिना नहीं समझा जा सकता। स्वीडनबॉर्ग की कई शब्दावली आधुनिक भाषाओं की अवधारणाओं से भिन्न हैं। इस अध्याय में, मैं स्वीडनबॉर्ग की सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिक अवधारणाओं और विधियों की संक्षेप में व्याख्या करूँगा। इस अध्याय को पढ़ने से आपको स्वीडनबॉर्ग की रचनाओं को समझने में मदद मिलेगी। जिन लोगों ने स्वीडनबॉर्ग की शब्दावली का अध्ययन किया है, वे बाद में उनकी रचनाओं के स्पष्ट तर्क का आनंद ले पाएँगे।
आधुनिक विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाने वाला दर्शन मानवीय बुद्धि पर आधारित है, जो वंशानुगत बुराई से दूषित है और इसलिए सत्य की समझ की ओर नहीं ले जाती। स्वीडनबॉर्ग का दर्शन ईश्वर-प्रकाशित बुद्धि पर आधारित है और हमें धार्मिक सत्यों को समझने में मदद करता है। आधुनिक दार्शनिकों की प्रेरणा उनका अपना बौद्धिक गौरव है; स्वीडनबॉर्ग की प्रेरणा सत्य के लिए सत्य का प्रेम था। आधुनिक दर्शन न केवल अनुपयोगी है, बल्कि हानिकारक भी है, क्योंकि यह लोगों को ईश्वर से दूर ले जाता है। सच्चा दर्शन हमेशा ईश्वर के ज्ञान की ओर ले जाता है।

उद्देश्य, कारण और प्रभाव। सतत और असंतत अंश।

असंतत अंशों की क्रियाविधि को समझे बिना, आत्मा और आध्यात्मिक जगत के अस्तित्व को कभी नहीं समझा जा सकता। आधुनिक मनुष्य सतत अंशों की क्रियाविधि को अच्छी तरह समझता है, लेकिन असंतत अंशों से बहुत कम लोग परिचित हैं। इसी कारण, बहुत कम लोग उन घटनाओं के कारणों को समझ पाते हैं जो अपने प्रभावों के संदर्भ में असंतत होती हैं। अधिकांश लोग यह निष्कर्ष निकालते हैं कि प्रभावों के कारण पूर्ववर्ती प्रभाव हैं, और इस प्रकार वे झूठे निष्कर्षों की एक अंतहीन श्रृंखला में फंस जाते हैं। हमारे समय के विज्ञान ने प्रभावों के बारे में प्रचुर मात्रा में जानकारी एकत्र की है, लेकिन इस ज्ञान भंडार को कारण-और-प्रभाव संबंध का उपयोग करके संसाधित नहीं किया जा सकता क्योंकि असंतत अंश ज्ञात नहीं हैं। इन बातों को स्पष्ट करने के लिए उदाहरणों का उपयोग किया जाना चाहिए।

सभी घटनाओं का एक उद्देश्य (लैटिन: फ़िनिस), एक कारण (कॉसा) और एक प्रभाव (इफेक्टस) होता है। इस त्रिपक्षीय विभाजन को निम्न प्रकार से भी वर्णित किया जा सकता है: अंतिम या अंतरतम कारण, अप्रत्यक्ष कारण या साधन, और कारणों द्वारा उत्पन्न घटना, अर्थात् प्रभाव। उदाहरण: भेड़ खाना। भेड़िये की उस भेड़ को खाने की इच्छा जिसे वह देखता है (उद्देश्य)। भेड़िये के वंशानुगत और अर्जित शिकार तंत्र (अप्रत्यक्ष कारण, अर्थात् साधन)। भेड़ खाना (प्राप्त उद्देश्य, अर्थात् प्रभाव)। मनुष्यों में, यह त्रिपक्षीय विभाजन हमेशा इच्छा (उद्देश्य), अज्ञान (कारण), और क्रिया (प्रभाव) के पैटर्न का अनुसरण करता है। स्वीडनबॉर्ग की प्रेम की अवधारणा इच्छा का पर्याय है, क्योंकि व्यक्ति जिससे प्रेम करता है, उसकी इच्छा भी करता है। इस अर्थ में प्रेम आधुनिक मनोविज्ञान में प्रेरणा की अवधारणा से लगभग मेल खाता है। स्वीडनबॉर्ग बुद्धि शब्द को समझ के पर्याय के रूप में और लाभ शब्द को क्रिया के पर्याय के रूप में प्रयोग करते हैं। इस प्रकार त्रिपक्षीय विभाजन इस प्रकार है: प्रेम (उद्देश्य), बुद्धि (कारण), और लाभ-योग्यता (प्रभाव)। उदाहरण: पेक्का एक रेत का महल बनाना चाहता है (इच्छा = प्रेम = उद्देश्य)। पेक्का जानता है कि रेत का महल कैसे और कहाँ बनाना है (समझ = बुद्धि = कारण)। पेक्का एक रेत का महल बनाता है (क्रिया = लाभ = प्रभाव)।

उदाहरण में उल्लिखित रेत के महल के कारण पेक्का की इच्छा और समझ हैं: अंतरतम कारण पेक्का की इच्छा, अर्थात् प्रेम, और अप्रत्यक्ष या साधनात्मक कारण पेक्का की समझ, अर्थात् बुद्धि, अर्थात् रेत के महल बनाने में उसका ज्ञान और कौशल है। जब कोई बाहरी पर्यवेक्षक रेत के महल को देखता है, तो वह निश्चित रूप से इसके निर्माण के कारणों को नहीं समझ सकता है, लेकिन ये स्पष्ट रूप से ऊपर बताए गए कारण हैं। इसी प्रकार, अधिकांश प्राकृतिक घटनाओं के कारणों को इन घटनाओं से सीधे नहीं देखा जा सकता है। ऐसे मामलों में, एक संवेदी व्यक्ति गलती से यह निष्कर्ष निकाल लेता है कि कारण वे प्राकृतिक घटनाएँ हैं जो इन घटनाओं से पहले हुई थीं।

उपरोक्त सूत्र सभी मानवीय क्रियाओं और रचनाओं पर लागू किया जा सकता है। मामले बेशक बहुत जटिल हो सकते हैं, लेकिन उन्हें हमेशा कारण-और-परिणाम संबंधों के रूप में समझा जा सकता है।

ध्यान देने योग्य सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि रेत के ढेर का कारण भौतिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक है। अधिक सटीक रूप से, अप्रत्यक्ष कारण बौद्धिक रूप से आध्यात्मिक, अर्थात् आध्यात्मिक है, और उद्देश्य, अर्थात् आंतरिक कारण, आध्यात्मिक रूप से प्रेरक, अर्थात् दिव्य है। स्वीडनबॉर्ग के दर्शन में उनके अर्थ को स्पष्ट करने के लिए मैं लैटिन से व्युत्पन्न नए शब्दों का प्रयोग करता हूँ।

इस त्रिगुणात्मक विभाजन का एक अच्छा उदाहरण मानवीय वाणी और लेखन है। इस स्थिति में, प्रत्येक शब्द के अपने बाह्य वाचन या लिखित (प्रभाव) रूप के अतिरिक्त, दो आंतरिक कारण होते हैं, आध्यात्मिक और दिव्य। आध्यात्मिक कारण व्यक्ति की समझ में प्रत्येक शब्द के बारे में जानकारी से बनता है, जो निश्चित रूप से व्यक्ति-दर-व्यक्ति भिन्न होता है। दूसरी ओर, दिव्य कारण शब्द द्वारा उत्पन्न प्राथमिकताओं और भावनाओं, अर्थात् प्रेरणा के स्तर पर प्रतिक्रियाओं से बनता है। दिव्य कारण भी व्यक्ति-दर-व्यक्ति भिन्न होता है। यह समझकर कि शब्दों के आध्यात्मिक और दिव्य दोनों अर्थ होते हैं, और एक ही शब्द के संबंध में ये अर्थ अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग हो सकते हैं, कोई भी अन्य रचनाओं की तुलना में परमेश्वर के वचन की अनूठी प्रकृति को समझ सकता है। यद्यपि परमेश्वर का वचन—अर्थात्, कुछ रचनाएँ जिन्हें परमेश्वर ने मनुष्यों के माध्यम से लिखवाया है—सामान्य शब्दों से बना है जिनका लोग अपने दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं, उनके आध्यात्मिक और दिव्य अर्थ पूरी तरह से भिन्न हैं।

चूँकि परमेश्वर अनंत सत्य और अनंत अच्छाई है, इसलिए परमेश्वर के वचन का प्रत्येक शब्द—और यहाँ तक कि प्रत्येक अक्षर और अल्पविराम—में भी अनंत मात्रा में सत्य और अच्छाई निहित है, क्योंकि वचन का आंतरिक कारण स्वयं ईश्वरीय अनंत प्रेम है, और साधनात्मक कारण ईश्वरीय अनंत ज्ञान है। मैं इस अध्याय में बाद में परमेश्वर के वचन के त्रि-भागीय विभाजन पर लौटूँगा।

त्रि-भागीय कारण-प्रभाव-उद्देश्य केवल मनुष्यों या पशुओं के कार्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रत्येक विद्यमान वस्तु या पदार्थ के लिए मानव-निर्माण का एक सार्वभौमिक तंत्र है। वनस्पति जगत, सभी प्रकार के पदार्थ, ग्रह, सौरमंडल आदि भी इसी विभाजन का पालन करते हैं। फिर भी, निमित्त कारण आध्यात्मिक है, और अंतरतम कारण आकाशीय है।

हालाँकि, इन कारणों को इंद्रियों द्वारा अनुभव नहीं किया जा सकता, क्योंकि ये आध्यात्मिक जगत में घटित होते हैं, जो मानो सभी भौतिक घटनाओं के भीतर स्थित है। आध्यात्मिक जगत आध्यात्मिक पदार्थ से बना है, जो पदार्थ से इस मायने में भिन्न है कि इसमें समय या स्थान का कोई आयाम नहीं है। आध्यात्मिक जगत, भौतिक जगत से संगति के माध्यम से जुड़ा हुआ है। लेकिन इस पर बाद में और अधिक चर्चा की जाएगी।

त्रिपक्षीय विभाजन का सबसे आंतरिक कारण ईश्वरीय त्रिमूर्ति है: ईश्वरीय प्रेम, या अच्छाई (उद्देश्य), ईश्वरीय ज्ञान, या सत्य (साधनात्मक कारण), और ईश्वरीय क्रिया, या उपयोगिता (प्रभाव)। इससे मनुष्य का त्रिपक्षीय विभाजन उत्पन्न होता है—ईश्वर की छवि: इच्छा, या प्रेम; समझ, या बुद्धि; और क्रिया, या लाभ। हालाँकि, इच्छा, समझ और क्रिया एक-दूसरे के साथ निरंतर संबंध में नहीं हैं, जैसे, उदाहरण के लिए, मीटर जो एक ही वस्तु के विभिन्न परिमाणों को मापते हैं। हालाँकि वे एक कारण-और-प्रभाव श्रृंखला में एक-दूसरे से संबंधित हैं, फिर भी वे प्रकृति में भिन्न हैं। जो वस्तुएँ समान रूप से बढ़ती या घटती हैं, वे एक निरंतर अंश बनाती हैं। इस प्रकार, प्रेम स्वयं मात्रात्मक रूप से भिन्न हो सकता है। यही बात बुद्धि और उपयोगिता पर भी लागू होती है। कोई किसी चीज़ से थोड़ा या बहुत प्रेम कर सकता है। समझ और उपयोगिता की भी अलग-अलग मात्राएँ होती हैं। प्रेम, समझ और उपयोगिता, प्रत्येक अपना-अपना सतत पैमाना बनाते हैं, जिस पर उनकी मात्रा भिन्न हो सकती है। लेकिन जैसे-जैसे हम प्रेम से समझ के माध्यम से क्रिया की ओर बढ़ते हैं, हम चरणों में आगे बढ़ते हैं: प्रेम, समझ और क्रिया एक-दूसरे के संबंध में असतत मात्राएँ हैं।

आधुनिक मनुष्यों के लिए सतत मात्राएँ स्वयंसिद्ध हैं, क्योंकि वे दैनिक जीवन का हिस्सा हैं। उदाहरणों में तापमान, लंबाई, भार और चमक में अंतर शामिल हैं। सतत मात्राओं के बारे में जानकारी संवेदी बोध और विभिन्न माप उपकरणों के माध्यम से आसानी से प्राप्त की जा सकती है। इसके विपरीत, असतत मात्राओं में प्रगति इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त नहीं की जा सकती; इस प्रगति को समझने के लिए सहज बुद्धि की आवश्यकता होती है। असतत मात्राएँ एक-दूसरे से उसी तरह संबंधित हैं जैसे विचार वाणी से या पसंद अभिव्यक्ति से। विचार और पसंद वाणी और अभिव्यक्ति के कारण हैं। ये कारण आध्यात्मिक हैं।

एक कट्टर भौतिकवादी विचार और वरीयता को केवल मस्तिष्क कोशिकाओं की कार्यप्रणाली मान सकता है, लेकिन वह इस तथ्य की व्याख्या कैसे करेगा कि मनुष्य विचार और वरीयता को ग्रहण और अनुभव करता है? इस अनुभव के लिए अनुभव की वस्तुओं से पृथक एक अंग या तंत्र की आवश्यकता होती है। यह अंग वास्तव में मानव मन है, जो आध्यात्मिक है और मस्तिष्क के साथ एक असंतत संबंध में है।

सामान्यतः, आध्यात्मिक जगत और भौतिक जगत एक-दूसरे के साथ असंतत या असतत संबंध में हैं। भौतिक जगत में रहने वाला व्यक्ति अपनी इंद्रियों के माध्यम से आध्यात्मिक जगत के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं कर सकता, लेकिन वह इसकी असतत डिग्री का अध्ययन करके आध्यात्मिक जगत के अस्तित्व को समझ सकता है। असतत डिग्री के बीच के नियमों का अध्ययन करने वाले विज्ञान को निरूपण और सहसंबंध का सिद्धांत कहा जाता है। यह सिद्धांत, जिसे सहसंबंध विज्ञान के रूप में भी जाना जाता है, प्राचीन काल के ऋषियों के लिए ज्ञान का स्रोत था, जिन्होंने इसे विज्ञानों का विज्ञान कहा था। हालाँकि, यह विज्ञान धीरे-धीरे जादू में बदल गया, जो स्वार्थी उद्देश्यों के लिए पत्राचार का दुरुपयोग है। आज, पत्राचार का विज्ञान अज्ञात है।

प्राचीन विद्वानों ने केवल आंतरिक अंशों—उद्देश्य और कारण—का अध्ययन किया था। हमारे समय के विद्वान केवल प्रभावों, अर्थात् भौतिक जगत का अध्ययन करते हैं। स्वीडनबॉर्ग की विधियों का महान वैज्ञानिक और दार्शनिक महत्व इस तथ्य में निहित है कि वे अनुसंधान की इन दोनों विधियों के संयोजन के लिए एक दिशानिर्देश प्रदान करते हैं। हमारे समय का विज्ञान आंतरिक अंशों के ज्ञान के बिना विकसित नहीं हो सकता: बड़ी मात्रा में आँकड़ों का पृथक रूप से विश्लेषण नहीं किया जा सकता। प्राचीन काल का ज्ञान अनुभवजन्य ज्ञान के अभाव से बोझिल था। पत्राचार के विज्ञान का परिप्रेक्ष्य विज्ञान के दर्शन के लिए नई और अभूतपूर्व संभावनाओं को खोलता है। जो लोग पत्राचार को समझते हैं, वे ईश्वर और आध्यात्मिक जगत को प्राकृतिक जगत से, मानो दर्पण से देख सकते हैं।

असतत अंशों की अज्ञानता कई आधुनिक विज्ञानों के विकास में बाधक है। उदाहरण के लिए, आधुनिक भौतिकी गुरुत्वाकर्षण और विद्युत-चुंबकीय तरंग गति के मूलभूत प्रश्नों की व्याख्या नहीं कर पाई है क्योंकि यह ईथर की क्रियाविधि को नहीं समझती। इस क्रियाविधि की व्याख्या स्वीडनबॉर्ग की कृति प्रिंसिपिया में की गई है। आधुनिक भौतिकी की एक रचना, जैसे ए. आइंस्टीन का "सापेक्षता का विशेष सिद्धांत", आत्मकेंद्रित बुद्धि की किसी भी झूठ को सच मानने की क्षमता को प्रदर्शित करती है।

संवाद का विज्ञान

आजकल, बहुत कम लोग यह समझते हैं कि हम अपनी इंद्रियों से जो कुछ भी देखते हैं उसका एक आध्यात्मिक कारण होता है। अधिकांश लोग केवल अपने अनुभवों से ही कारण और प्रभाव का अनुमान लगाते हैं। ऐसा माना जाता है कि प्रेक्षित घटना A, प्रेक्षित घटना B का कारण बनती है। हालाँकि, कारण-कार्य संबंध का अस्तित्व स्वयं समझ में नहीं आता, क्योंकि जिन कारणों ने A को जन्म दिया, वे B को भी जन्म दे सकते हैं, या A और B के कारण पूरी तरह से भिन्न हो सकते हैं। A और B के बीच का लौकिक और स्थानिक संबंध हमें यह निष्कर्ष निकालने की अनुमति नहीं देता कि A ने B को उत्पन्न किया। चूँकि असतत अंशों की क्रियाविधि अज्ञात है, इसलिए आमतौर पर यह माना जाता है कि एक प्रभाव दूसरे प्रभाव का कारण बनता है। वास्तव में, समस्त आधुनिक वैज्ञानिक चिंतन इसी भ्रांतिपूर्ण धारणा पर आधारित है। हालाँकि, हम संगति विज्ञान की सहायता से स्वयं को इस त्रुटि से मुक्त कर सकते हैं।
मानव मन का परीक्षण करके निरूपण और संगति को आसानी से समझा जा सकता है। किसी व्यक्ति की मानसिक, या आंतरिक, विशेषताएँ और अवस्थाएँ उसके हाव-भाव और हाव-भाव में प्रतिबिम्बित होती हैं। कौन किसी व्यक्ति के हाव-भाव और हाव-भाव से उसे खुश या दुखी नहीं पहचानेगा? यह कहा जा सकता है कि किसी व्यक्ति के हाव-भाव और हाव-भाव उसकी आंतरिक भावनाओं - उसके विचारों और इच्छाशक्ति - का प्रतिनिधित्व करते हैं। हाव-भाव और हाव-भाव मानसिक घटनाओं (विचारों और इच्छाशक्ति) की भौतिक छवि हैं। यदि यह भौतिक छवि मानसिक घटनाओं को सच्चाई से दर्शाती है, अर्थात, यदि कोई व्यक्ति जो खुश दिखाई देता है, वास्तव में अपने विचारों और इच्छाशक्ति से खुश है, तो हम कहते हैं कि उसके हाव-भाव और हाव-भाव उसकी आंतरिक भावनाओं के अनुरूप हैं।

दूसरी ओर, यदि कोई व्यक्ति जो अंदर से दुखी है, खुश होने का दिखावा करता है, तो उसके भाव उसकी आंतरिक भावनाओं का प्रतिनिधित्व तो करते हैं, लेकिन वे उनसे मेल नहीं खाते, क्योंकि उनका दिखावा उनके बाहरी भावों को अर्थ देता है जो वास्तव में एक अलग आंतरिक स्थिति के अनुरूप होते हैं। इसलिए, जब आंतरिक और बाह्य एक ही घटना का प्रतिनिधित्व करते हैं, तो यह मेल प्राप्त होता है। प्रतिनिधित्व तब भी प्राप्त हो सकता है जब बाह्य आंतरिक से भिन्न घटना का प्रतिनिधित्व करता है।

समानताएँ न केवल मनुष्यों के बाह्य और आंतरिक पहलुओं के बीच, बल्कि प्राकृतिक जगत की सभी घटनाओं और आध्यात्मिक जगत की संगत घटनाओं के बीच भी मौजूद हैं। हालाँकि, इन संगतियों को संवेदी अवलोकनों पर आधारित तर्क के माध्यम से नहीं खोजा जा सकता; इसके बजाय, इनके लिए सहज बुद्धि पर आधारित संगति के विज्ञान की आवश्यकता होती है। आजकल, बहुत कम लोगों में सहज बुद्धि होती है।

ईश्वर है, आध्यात्मिक जगत है, और प्राकृतिक जगत है। प्राकृतिक जगत आध्यात्मिक जगत की एक छवि है, जिसका अर्थ है कि यह हर विवरण में आध्यात्मिक जगत से मेल खाता है। आध्यात्मिक जगत, बदले में, ईश्वर का प्रतिरूप है, जिसका अर्थ है कि आध्यात्मिक जगत की सभी घटनाओं के अपने दिव्य प्रतिरूप हैं। मानव प्राणी, जो ईश्वर का प्रतिरूप हैं, प्राकृतिक जगत का एक लघु रूप हैं, इसलिए मानव प्राणी, प्राकृतिक जगत और आध्यात्मिक जगत के बीच एक साम्य है। प्राचीन ऋषिगण मनुष्य को एक सूक्ष्म जगत और एक लघु स्वर्ग मानने में सही थे।

ईश्वर से आध्यात्मिक जगत में और आध्यात्मिक जगत से प्राकृतिक जगत में एक अंतर्वाह होता है। यह प्रवाह ईश्वर (प्राथमिक कारण) से आध्यात्मिक वातावरणों के माध्यम से आध्यात्मिक जगत की ओर और आध्यात्मिक जगत से प्राकृतिक वातावरणों के माध्यम से प्राकृतिक जगत की ओर पृथक रूप से प्रवाहित होता है। विपरीत प्रवाह संभव नहीं है, जैसे, उदाहरण के लिए, पृथ्वी से सूर्य तक प्रकाश और ऊष्मा का कोई प्रवाह नहीं है। तीन आध्यात्मिक वायुमंडल और तीन प्राकृतिक वायुमंडल हैं। आध्यात्मिक जगत और प्राकृतिक जगत दिव्य प्रवाह, या जीवन के प्राप्तकर्ता हैं, और उनमें कोई जीवन नहीं है, भले ही इंद्रियों को ऐसा प्रतीत हो।

आध्यात्मिक जगत में दिव्यता सूर्य के रूप में दिखाई देती है, जो प्राकृतिक जगत के सूर्यों के अनुरूप है। इस प्रकार सूर्य ईश्वर का प्रतिरूप है। हालाँकि, आध्यात्मिक जगत का सूर्य स्वयं ईश्वर नहीं है, बल्कि उनसे निकलने वाला प्रकाश और ऊष्मा है, जो केवल सूर्य के रूप में ही दिखाई देते हैं। ईश्वर स्वयं दिव्य पुरुष हैं, अर्थात् उस सूर्य के भीतर प्रभु ईसा मसीह। इस सूर्य से निकलने वाला प्रकाश दिव्य सत्य है, और ऊष्मा दिव्य अच्छाई है। इसका अर्थ है कि प्राकृतिक जगत का प्रकाश और ऊष्मा सत्य और अच्छाई के अनुरूप, या प्रतीक हैं। चूँकि प्राकृतिक जगत की सभी घटनाएँ आध्यात्मिक जगत की घटनाओं के अनुरूप होती हैं, इसलिए सभी अनुरूपताओं को सूचीबद्ध करने से पूरे पुस्तकालय भर जाएँगे। इस संदर्भ में, मैं केवल कुछ उदाहरणों पर चर्चा करूँगा। इन अनुरूपताओं को समझना इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग के धर्मशास्त्रीय और दार्शनिक कार्यों की कुंजी है।

चंद्रमा विश्वास के समतुल्य है। ऐसा इसलिए है क्योंकि चंद्रमा सूर्य के प्रकाश को, जो ईश्वरीय सत्य का प्रतीक है, पृथ्वी तक पहुँचाता है। जब कोई व्यक्ति विश्वास करता है, तो उसे सत्य प्रत्यक्ष रूप से नहीं, बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से अधिकारियों से प्राप्त होता है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश चंद्रमा से होकर गुजरने पर मंद पड़ जाता है, उसी प्रकार विश्वास से प्राप्त ज्ञान भी उस ज्ञान की तुलना में मंद पड़ जाता है जो व्यक्ति ईश्वर (सूर्य) के प्रत्यक्ष दर्शन से प्राप्त करता है। चंद्रमा केवल रात्रि में ही चमकता है, और रात्रि आध्यात्मिक अंधकार का प्रतीक है, इसलिए लोग केवल अंधकारमय समय में ही विश्वास का सहारा लेते हैं। इस दृष्टि से, हमारा समय रात्रि के मध्य (ईसाई धर्म में) के अनुरूप है, क्योंकि आज लगभग सभी लोग अपनी समझ के माध्यम से ईश्वर से सीधे आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के बजाय विश्वास का सहारा लेते हैं। सूर्य का प्रकाश ऊष्मा के साथ संयुक्त होता है, लेकिन चंद्रमा का प्रकाश लगभग पूरी तरह से ऊष्मा रहित होता है। यह उन लोगों के प्रेमहीनता के अनुरूप है जो विश्वास के माध्यम से ईश्वर के निकट आते हैं। एक प्रबुद्ध मन दर्जनों अन्य उदाहरणों के साथ चंद्रमा के प्रतीक का विश्लेषण जारी रख सकता है।

चूँकि सब कुछ आध्यात्मिक सूर्य, ईश्वर-मनुष्य, या ईश्वर से उत्पन्न हुआ है, इसलिए सभी संगति ईश्वरीय सत्यों और अच्छाइयों या उनके विपरीतों से जुड़ी हुई हैं। ईश्वर-मनुष्य के दो गुण - ईश्वरीय सत्य और ईश्वरीय अच्छाई - सृष्टि में दो प्रकार की आध्यात्मिकता के अनुरूप हैं - प्रेरणा का स्तर, या दिव्य, जिसे फिनिश शब्द ताइवाल-लिनेन (स्वर्गीय) द्वारा वर्णित किया गया है, और बौद्धिक-सूचनात्मक, या आध्यात्मिक, जिसे हेन्किनेन (आध्यात्मिक) शब्द द्वारा वर्णित किया जा सकता है। यह दो लिंगों में विभाजन को भी जन्म देता है, क्योंकि पुरुष सत्य का प्रतीक हैं और महिलाएं अच्छाई का: पुरुष अज्ञानता से शासित होते हैं, और महिलाएं इच्छाशक्ति से। लिंगों के मिलन से उत्पन्न नया जीवन ईश्वर-मनुष्य से प्रवाहित होने वाली ऊष्मा के साथ मिलकर प्रकाश के नए रचनात्मक प्रभाव से मेल खाता है। यही सभी जीवित सृष्टि के दो लिंगों में विभाजन का कारण है।

बुराई और गलत भी ईश्वर द्वारा निर्धारित होते हैं: जो कुछ भी ईश्वरीय व्यवस्था के विपरीत है वह बुरा और गलत है। ईश्वर ने बुराई और असत्य की रचना नहीं की, बल्कि उसने अपनी रचना, मनुष्य को, ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार या उसके विरुद्ध जीने की स्वतंत्र इच्छा दी है। जब मनुष्य ईश्वरीय व्यवस्था के विरुद्ध जीवन जीता है, तो उसने उसी समय बुराई और अधर्म की भी रचना की है। इसी प्रकार नरक अस्तित्व में आए हैं, क्योंकि प्राकृतिक जगत में बुराई और अधर्म आध्यात्मिक जगत की बुराइयों और अधर्म के अनुरूप हैं। प्राकृतिक जगत में अच्छाई और सत्य स्वर्ग के अनुरूप हैं, जबकि बुराई और असत्य नरक के अनुरूप हैं। नरक मूत्र और मल के भी अनुरूप है: मूत्र स्वयं मनुष्यों द्वारा उत्पन्न असत्य है, और मल मनुष्यों द्वारा उत्पन्न बुराई है।

यहाँ अनुरूपता के कुछ और उदाहरण दिए गए हैं। स्वर्ग समग्र रूप से मनुष्य के अनुरूप है और इसलिए इसे महानतम मनुष्य (लैटिन: मैक्सिमस होमो) कहा जाता है। इस मानव प्राणी में, शरीर के सभी अंग आध्यात्मिक विषयों के अनुरूप हैं। उदाहरण के लिए, हृदय अच्छाई का, फेफड़े सत्य का, आँखें समझ का, कान आज्ञाकारिता का, भुजाएँ शक्ति का, आदि। शरीर के सबसे छोटे अंग का भी अपना आध्यात्मिक प्रतिरूप होता है। प्राकृतिक जगत का प्राणी जगत विभिन्न प्राथमिकताओं का, जो कि दिव्य पदार्थ हैं, प्रतिरूप है। प्रत्येक प्राणी प्रजाति का अपना सटीक प्रतिरूप होता है। इसी प्रकार, वनस्पति जगत के प्रत्येक जीव का भी एक प्रतिरूप होता है।

विभिन्न पौधे आमतौर पर मन के आध्यात्मिक मामलों से मेल खाते हैं। जो पौधे और जानवर मनुष्यों के लिए लाभदायक और स्वास्थ्यवर्धक हैं, वे स्वर्गीय अनुरूप हैं; जो मनुष्यों के लिए हानिकारक और अस्वस्थ हैं, वे नारकीय अनुरूप हैं। विभिन्न धातुएँ, मिट्टी और खनिज भी अनुरूप हैं।

इन्हीं अनुरूपताओं के कारण ही इस्राएली कलीसिया में जटिल बलिदान अनुष्ठान और अन्य नियम थे। यह कलीसिया एक प्रतिनिधि कलीसिया थी, जिसके सभी अनुष्ठान आध्यात्मिक और स्वर्गीय अनुरूप थे। हालाँकि, अधिकांश इस्राएली हृदय से दुष्ट थे। इस कारण, कलीसिया की गतिविधियाँ उनके लिए केवल प्रतिनिधित्व थीं, क्योंकि सच्ची अनुरूपताएँ तभी साकार हो सकती हैं जब आंतरिक और बाह्य आध्यात्मिक गुण समान हों। इस्राएली इस मायने में विशिष्ट लोग थे कि वे बाहरी अच्छाई और आंतरिक बुराई में एक साथ रह सकते थे। कई आधुनिक यहूदी भी ऐसे ही हैं: यहूदा विश्वासघाती का प्रतीक है, और यहूदी विश्वासघाती राष्ट्र का प्रतीक हैं।

मनुष्यों द्वारा निर्मित सभी वस्तुएँ और चीज़ें भी समान हैं। इन समानताओं के कारण, परमेश्वर का वचन भी स्पष्ट समानताओं के साथ लिखा गया है। स्वीडनबॉर्ग की रचनाएँ "अर्काना कोएलेस्टिया" और "एपोका-लिप्सिस रेवेलाटा" मूसा की पहली और दूसरी पुस्तकों तथा प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के सभी शब्दों की सटीक आध्यात्मिक समानताएँ प्रस्तुत करती हैं।

ईश्वर (उद्देश्य), आध्यात्मिक जगत (कारण) और प्राकृतिक जगत (प्रभाव) का त्रिपक्षीय विभाजन यह दर्शाता है कि स्वर्ग और नरक, साथ ही मानव मन भी इसी विभाजन का अनुसरण करते हैं। हालाँकि, यह तथ्य आज व्यापक रूप से ज्ञात नहीं है। मानव मन की केवल सबसे निचली, या प्राकृतिक, परत ही ज्ञात है, और ऐसा माना जाता है कि इसे विकसित करके, सर्वोच्च ज्ञान और बुद्धि प्राप्त की जा सकती है। हालाँकि, सच्चा ज्ञान और बुद्धि मानव मन की दो आंतरिक परतों में निहित है। मानव मन के त्रिस्तरीय विभाजन की अज्ञानता हमारे समय के दार्शनिक अंधकार का एक कारण है, इसलिए इसकी गहन जाँच अत्यंत दार्शनिक और पद्धतिगत महत्व की है।

समकालीन मनोविज्ञान ने स्वयं को केवल प्रभावों, अर्थात् मानव मन की सबसे बाहरी, प्राकृतिक परत, के अध्ययन तक सीमित कर लिया है। वहाँ से, इसने पशु की खोज की और निष्कर्ष निकाला कि मनुष्य वास्तव में विकसित पशु से अधिक कुछ नहीं है। प्राचीन काल के मनीषियों ने मनुष्य के अंतरतम भाग का अध्ययन किया और वहाँ ईश्वर को पाया। शोध के दोनों दृष्टिकोण एक तरह से सही रहे हैं: पशु मनुष्य के बाहरी मन में निवास करता है, लेकिन ईश्वर और स्वर्ग उसके आंतरिक मन में निवास करते हैं। इसी कारण, जिस व्यक्ति के मन की आंतरिक परतें नहीं खुलतीं, वह पशु ही रहता है।

मानव मन एक दार्शनिक साधन के रूप में

मन के तीन स्तरों के अनुरूप तीन स्वर्ग हैं। मानव मन के स्वर्ग और स्तर दोनों एक-दूसरे के संबंध में पृथक हैं और सहसंबंधों के माध्यम से जुड़े हुए हैं। अंतरतम, या तीसरा स्वर्ग, और मन के उसके संगत स्तर को आकाशीय या स्वर्गीय कहा जाता है। स्वर्गीय स्वर्ग के देवदूत, जो सभी देवदूतों की तरह शारीरिक रूप से मृत मनुष्य हैं, दिव्यता का दिव्य प्रवाह प्राप्त करते हैं, जैसा कि मानव मन का संगत स्तर करता है। दूसरे, या मध्य, स्वर्ग में आने वाला प्रवाह आध्यात्मिक, या मानसिक होता है, और इस स्वर्ग और मन के संगत स्तर को आध्यात्मिक कहा जाता है। पहले, या सबसे बाहरी, स्तर और स्वर्ग को प्राकृतिक कहा जाता है। तीसरा स्तर दूसरे की तुलना में ईश्वर के अधिक निकट है, जो बदले में पहले से अधिक निकट है। मैं आध्यात्मिक जगत अध्याय में स्वर्ग और सामान्य रूप से आध्यात्मिक जगत की संरचना के बारे में अधिक विस्तार से बताऊँगा।
दिव्य स्तर मानव मन की सबसे आंतरिक और उच्चतम डिग्री है, और इसी डिग्री की ओर दिव्यता सबसे पहले और तुरंत प्रवाहित होती है। इस डिग्री के माध्यम से, दिव्यता मनुष्य का मार्गदर्शन करती है और उसकी निम्न डिग्री को व्यवस्थित करती है, हालाँकि मनुष्य आमतौर पर इससे अनभिज्ञ होता है। इस डिग्री को वह द्वार कहा जा सकता है जिसके माध्यम से प्रभु मनुष्य तक पहुँचते हैं। यही डिग्री वास्तव में एक व्यक्ति को मानव बनाती है।

अंतरतम स्तर को मानव आत्मा भी कहा जाता है, और निम्नतम स्तरों की तरह, इसके भी दो भाग होते हैं, अर्थात् इच्छाशक्ति और समझ। अंतरतम स्तर की इच्छाशक्ति और समझ को दिव्य कहा जाता है, और इस स्तर का प्रवाह प्राकृतिक जगत में रहने वाले लोगों की आंतरिक अनुभूति, या सहज बुद्धि को जन्म देता है। पत्राचार विज्ञान में इस स्तर का वर्णन स्वर्ण और तैल वृक्ष जैसे शब्दों से किया गया है।

मानव मन का मध्य या दूसरा स्तर मानसिक या आध्यात्मिक है। दिव्यता अप्रत्यक्ष रूप से आकाशीय स्वर्ग के माध्यम से इस स्तर में प्रवाहित होती है। आध्यात्मिक इच्छाशक्ति और समझ आध्यात्मिक स्तर में निवास करती है। इस स्तर का प्रवाह पृथ्वी पर रहने वाले लोगों में विवेक को जन्म देता है। इस स्तर को चाँदी और बेल जैसे शब्दों द्वारा दर्शाया जाता है।

प्रथम, या बाह्यतम, स्तर प्राकृतिक है। प्राकृतिक मन ठीक वही है जिसे वर्तमान में मन के रूप में समझा जाता है। प्राकृतिक इच्छाशक्ति और समझ की सहायता से, हम पृथ्वी पर अपने व्यावहारिक कार्यों का प्रबंधन करते हैं। प्राकृतिक मन को आत्माओं के संसार से एक प्रवाह प्राप्त होता है, जो स्वर्ग और नर्क के बीच का स्थान है। प्राकृतिक संगति में तांबा और अंजीर का पेड़ शामिल हैं। प्राकृतिक स्तर के निम्नतम स्तर को इंद्रियजन्य या कामुक कहा जाता है, और उच्चतम स्तर को विवेकजन्य या तर्कसंगत कहा जाता है।

ये तीन अवस्थाएँ प्रत्येक मनुष्य में जन्म से ही विद्यमान रहती हैं, लेकिन जीवन में आगे चलकर ये खुलती हैं या सक्रिय होती हैं, हालाँकि ये बंद भी रह सकती हैं। प्राकृतिक विज्ञानों में प्रगति के कारण, आधुनिक मनुष्यों में प्राकृतिक स्तर प्राचीन काल के लोगों की तुलना में काफ़ी ऊँचा हो जाता है। दुर्भाग्य से, आधुनिक लोगों में अक्सर यही स्तर सक्रिय रहता है। किसी व्यक्ति का आदर्श विकास ऐसा होगा कि प्राकृतिक स्तर प्रारंभिक वयस्कता में अपने चरम पर पहुँच जाए, उसके बाद आध्यात्मिक स्तर सक्रिय हो और अंततः वृद्धावस्था में दिव्य स्तर सक्रिय हो। यदि ये दो उच्चतर अवस्थाएँ नहीं खुलतीं, तो व्यक्ति एक इंद्रियजन्य-प्राकृतिक मानव बना रहता है जो अपनी विश्वदृष्टि इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त गलत जानकारी पर आधारित करता है।

जब तक उच्चतर अवस्थाएँ विकसित नहीं होतीं, तब तक कोई भी व्यक्ति वास्तव में सक्षम वैज्ञानिक या दार्शनिक नहीं बन सकता। केवल वही व्यक्ति जिसका आध्यात्मिक मन खुला हुआ है, सत्य को समझ सकता है।

एक सहज व्यक्ति एक भी सत्य को समझे बिना, एक संपूर्ण पुस्तकालय भरने के लिए पर्याप्त स्मृति संचित कर सकता है। एक सहज व्यक्ति अपने द्वारा अर्जित जानकारी को सत्य मान सकता है, लेकिन वास्तव में, जानकारी तभी सत्य बनती है जब उसमें आध्यात्मिक या दिव्य समझ समाहित हो। ऐसा इसलिए है क्योंकि जानकारी के आंतरिक कारण भी होने चाहिए, और सत्य के मामले में, ये कारण आध्यात्मिक और दिव्य होते हैं। एक छोटा सा उदाहरण इस बात को स्पष्ट करने में मदद कर सकता है: दो व्यक्ति एक ही गणितीय समीकरण पढ़ते हैं। एक व्यक्ति गणित से परिचित है और तुरंत समीकरण को सत्य समझ लेता है। दूसरे व्यक्ति को गणित की पर्याप्त समझ नहीं है, वह समीकरण को नहीं समझता है, और इसलिए उसे सत्य नहीं मानता। यदि दूसरा व्यक्ति किसी विशेषज्ञ से सीखता है कि समीकरण सत्य है और वह उसे सत्य मानता है, तब भी वह उसके लिए सत्य नहीं है, क्योंकि सत्य के लिए आवश्यक है कि आंतरिक कारण (समझ) और बाह्य प्रभाव (गणितीय कथन) एक-दूसरे के अनुरूप हों, जो इस मामले में नहीं हैं।

यह तथ्य कि जानकारी तभी सत्य बनती है जब उसमें आध्यात्मिक या दिव्य बोध समाहित हो, विज्ञान के दर्शन में अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वैज्ञानिक और दार्शनिक स्वयं दार्शनिक उपकरण हैं, जिनकी उपलब्धियों का मूल्यांकन केवल उनकी समझ के स्तर के अनुसार ही किया जा सकता है। एक दार्शनिक जिसकी चेतना के उच्चतर स्तर बंद हैं, वह सत्य को नहीं समझ सकता, भले ही वह स्वयं को बुद्धिमान समझता हो। इस दृष्टि से, हमारा युग दार्शनिक दृष्टि से पूर्णतः अंधकारमय है, क्योंकि ऐसा एक भी दार्शनिक या वैज्ञानिक नहीं है जिसका आध्यात्मिक—यहाँ तक कि दिव्य—मन का स्तर खुला हो। समकालीन दार्शनिकों ने स्वयं को भाषा के तार्किक चक्रव्यूह में बंद कर लिया है और अंधकार को प्रकाश और प्रकाश को अंधकार के रूप में देखते हैं। हमारे समय का प्रचलित दर्शन मनुष्य को ईश्वर से दूर ले जाता है, लेकिन सच्चा दर्शन मनुष्य को ईश्वर की ओर ले जाता है।

प्राकृतिक और आध्यात्मिक स्तर स्वयं के संबंध में सतत हैं, लेकिन एक-दूसरे के संबंध में पृथक हैं। प्राकृतिक स्तर का विकास आध्यात्मिक स्तर को नहीं खोलता। प्राकृतिक स्तर का विकास ज्ञान और कौशल प्राप्त करके होता है।

स्वाभाविक लोग स्वार्थ के लिए कार्य करते हैं, और यही स्वार्थी गतिविधियाँ आध्यात्मिक मन को बंद रखती हैं। आध्यात्मिक स्तर तभी खुलता है जब व्यक्ति अपने स्वार्थ से ज़्यादा सत्य से प्रेम करने लगता है। हालाँकि, व्यक्ति अपनी समझ के आधार पर सत्य से प्रेम नहीं कर सकता; उसे स्वयं सत्य की सहायता की आवश्यकता होती है, और यह सत्य ईश्वर के समान ही है। बदले में, व्यक्ति केवल धर्म के माध्यम से ही ईश्वर से जुड़ सकता है, इसलिए सच्चे दर्शन में धर्म सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

स्वाभाविक लोग धार्मिक सिद्धांतों का आविष्कार कर सकते हैं और धर्म-सभाएँ स्थापित कर सकते हैं, लेकिन सच्चा धर्म तभी अस्तित्व में आता है जब ईश्वर और स्वर्ग से सच्चा संबंध हो। ईश्वर के साथ सच्चा संबंध तभी स्थापित हो सकता है जब व्यक्ति ईश्वरीय नियमों से प्रेम करते हुए और उनका पालन करते हुए अपना जीवन व्यतीत करे। व्यक्ति ईश्वरीय नियमों के बारे में केवल ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के माध्यम से ही जान सकता है। ईश्वरीय रहस्योद्घाटन क्या है, और ईश्वरीय नियमों के अनुसार कैसे जीवन जिया जाए? ये ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर यह पुस्तक देने का प्रयास करती है।

दिव्य स्तर भी ईश्वर के नियमों के अनुसार जीवन जीने और उनसे प्रेम करने से ही खुलता है। आध्यात्मिक और दिव्य के बीच अंतर यह है कि आध्यात्मिक व्यक्ति पहले सत्य को अपनी समझ में ग्रहण करता है और फिर, समझ के माध्यम से, अपनी इच्छा में अच्छाई को ग्रहण करता है, जबकि दिव्य व्यक्ति पहले अच्छाई को अपनी इच्छा में ग्रहण करता है और फिर, बोध के माध्यम से, अपनी समझ में सत्य को ग्रहण करता है। दिव्य व्यक्ति में बोध की आंतरिक शक्ति, या सहज बुद्धि होती है, जिसका आध्यात्मिक व्यक्ति में अभाव होता है। आध्यात्मिक व्यक्ति में बोध की शक्ति के बजाय विवेक होता है। चूँकि दिव्यता पहले अच्छाई में प्रवाहित होती है और फिर अच्छाई के माध्यम से सत्य में, दिव्य स्तर आध्यात्मिक स्तर की तुलना में स्वयं दिव्यता के अधिक निकट होता है, और दिव्य व्यक्ति आध्यात्मिक व्यक्ति की तुलना में अधिक बुद्धिमान होता है।

प्राकृतिक लोग तीन प्रकार के होते हैं। पहले, वे लोग जो उन दिव्य नियमों को नहीं जानते जिनके अनुसार मनुष्य को जीना चाहिए। ऐसे लोग प्राकृतिक ही रहते हैं क्योंकि मनुष्य स्वयं दिव्य नियमों को नहीं सीख सकते; वे केवल प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रकटीकरण के माध्यम से ही उनका ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

आज लोग प्रत्यक्ष ईश्वरीय रहस्योद्घाटन प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि उनकी वंशानुगत बुराई ईश्वर से आने वाले समस्त प्रवाह को विकृत कर देती है। हमारे ग्रह के आदि मानव इस संबंध में भिन्न थे, क्योंकि उनकी वंशानुगत बुराई बहुत कम थी, और उन्हें आध्यात्मिक विषयों का ज्ञान प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन के माध्यम से प्राप्त होता था। अप्रत्यक्ष रूप से, मनुष्य ईश्वरीय नियमों का ज्ञान उन अन्य लोगों के माध्यम से प्राप्त करते हैं जिन्होंने स्वयं अपने धर्म के माध्यम से यह ज्ञान प्राप्त किया है। प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन के समाप्त होने के बाद से, ईश्वरीय ज्ञान हमारे ग्रह पर लिखित रहस्योद्घाटन के माध्यम से आया है।

दूसरे, कुछ स्वाभाविक लोग हैं जो ईश्वरीय आज्ञाओं (दस आज्ञाओं) को जानते तो हैं, लेकिन उनके अनुसार जीवन नहीं जीते, केवल सांसारिक और भौतिक चीज़ों की परवाह करते हैं। आज अधिकांश लोग, विशेष रूप से ईसाई जगत में, ऐसे ही हैं। वे भी स्वाभाविक ही रहते हैं, अर्थात उनके उच्च स्तर खुलते नहीं हैं।

तीसरे, कुछ लोग ऐसे भी हैं जो ईश्वरीय नियमों को जानते तो हैं, लेकिन उनका खंडन और तिरस्कार करते हैं। ऐसे लोग स्वाभाविक ही रहते हैं और ईश्वरत्व का जितना विरोध करते हैं, उसके अनुसार कामुक बन जाते हैं। कामुक लोग प्राकृतिक रूप से सबसे निम्न स्तर के होते हैं, और वे भौतिक इंद्रियों की त्रुटियों और भ्रमों से ऊपर उठने में असमर्थ होते हैं। कई आधुनिक लोग भी इसी समूह में आते हैं। जिन वैज्ञानिकों और दार्शनिकों ने अपने हृदय में ईश्वर को नकार दिया है, वे अन्य लोगों की तुलना में अधिक कामुक हैं और सामान्य लोगों की तुलना में भ्रम के दलदल में अधिक गहरे धँसे हुए हैं। जो लोग कामुक बने रहे हैं, वे शारीरिक मृत्यु के बाद नरक में जाएँगे। हालाँकि, मरने वाले सभी बच्चे स्वर्ग जाएँगे, जहाँ उन्हें स्वर्गदूतों के रूप में प्रशिक्षित किया जाएगा।

चूँकि प्राकृतिक और आध्यात्मिक मनुष्यों के बीच का अंतर व्यापक रूप से ज्ञात नहीं है, और चूँकि यदि कोई वास्तव में अपनी आध्यात्मिक बुद्धि का विकास करना चाहता है, तो इस अंतर को समझना महत्वपूर्ण है, इसलिए मैं इस विषय पर नीचे और विस्तार से चर्चा करूँगा। सह-आकाशीय मनुष्य हमारे समय में इतना दुर्लभ और समझने में कठिन है कि मैं इस संदर्भ में उसकी चर्चा करना आवश्यक नहीं समझता। इसके अलावा, सह-आकाशीय मामले प्रेरक कारकों से संबंधित हैं, जिनका वर्णन बौद्धिक प्रक्रियाओं की तुलना में अधिक कठिन है।

लिखित दर्शन विशेष रूप से आध्यात्मिक लोगों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि दिव्य लोगों का दर्शन आंतरिक होता है, और वे आध्यात्मिक लोगों की तरह दार्शनिक चिंतन पसंद नहीं करते।

1. एक प्राकृतिक व्यक्ति जिसका आध्यात्मिक स्तर खुल गया है।

एक प्राकृतिक व्यक्ति तब पूर्ण व्यक्ति होता है जब उसका आध्यात्मिक स्तर खुल जाता है, क्योंकि तब वह आत्मा से स्वर्ग के स्वर्गदूतों के बीच और शरीर से मनुष्यों के बीच होता है, और दोनों में प्रभु की सुरक्षा में रहता है। एक आध्यात्मिक व्यक्ति जीवन के लिए परमेश्वर के वचन से मार्गदर्शन प्राप्त करता है। वह ईश्वरीय सत्यों के अनुसार जीने का प्रयास करता है, और उसका प्राकृतिक मन उसके आध्यात्मिक मन से प्रकाशित होता है। उसे लगता है कि उसकी आत्मा स्वर्गदूतों के साथ है, हालाँकि वह उन्हें प्रत्यक्ष रूप से नहीं देख सकता। कुछ लोग जिन्होंने आध्यात्मिक स्तर प्राप्त कर लिया है, वे अपने प्राकृतिक मन की आँखों में स्वर्गदूतों को चमकीले धब्बों या तारों के रूप में देख सकते हैं। दुष्ट आत्माएँ भी आध्यात्मिक व्यक्ति के दृष्टि क्षेत्र में चमकीले धब्बों के रूप में प्रकट हो सकती हैं, लेकिन वे स्वर्गदूतों से इस मायने में भिन्न होती हैं कि वे बेचैन होकर घूमती हैं। इस प्रकार, आध्यात्मिक लोगों को कभी-कभी बुरी प्रवृत्तियों के प्रति आगाह किया जाता है। एक प्राकृतिक व्यक्ति जिसका आध्यात्मिक स्तर खुला हुआ है, कभी-कभी ज्यामितीय पैटर्न के रूप में संपूर्ण देवदूत समुदायों को अपनी ओर आते हुए भी देख सकता है। वह अन्य प्रकार के संकेतों का भी अनुभव कर सकता है जो उसके आध्यात्मिक विकास का मार्गदर्शन करते हैं। कभी-कभी उनकी चेतना इस प्रकार खुल जाती है कि वे अपने आस-पास की वस्तुओं और चीज़ों में समानताएँ देखते हैं। समय-समय पर, आध्यात्मिक लोग प्रलोभन में पड़ जाते हैं, जिससे वे एक निश्चित अवधि के लिए निराशा में डूब जाते हैं।

2. एक प्राकृतिक व्यक्ति जिसका आध्यात्मिक स्तर खुला तो नहीं है, लेकिन पूरी तरह से बंद भी नहीं है।

ऐसे लोग वे होते हैं जो अपने पड़ोसी के प्रति एक निश्चित सीमा तक प्रेम में रहते हैं, लेकिन जिनके पास केवल कुछ ही सच्चे सत्य होते हैं।

आध्यात्मिक स्तर केवल सत्य और भलाई के संयोग से ही खुलता है, और केवल सत्य या केवल भलाई इस स्तर को नहीं खोल सकती। इसलिए, यदि पर्याप्त वास्तविक सत्य, भलाई या अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम नहीं है, तो यह स्तर नहीं खुल सकता, लेकिन इसके खुलने की संभावना बनी रहती है। यही इस कहावत का अर्थ है कि आध्यात्मिक स्तर पूरी तरह से बंद नहीं है। इस घटना की तुलना वनस्पति जगत की घटनाओं से की जा सकती है, क्योंकि भलाई आध्यात्मिक ऊष्मा है और सत्य आध्यात्मिक प्रकाश है, और विकास केवल ऊष्मा या केवल प्रकाश के प्रभाव से नहीं होता, बल्कि केवल तभी होता है जब प्रकाश और ऊष्मा का संयोजन होता है। जो लोग अपने पड़ोसियों के प्रति ऐसे प्रेम में रहते हैं, उन्हें उनकी शारीरिक मृत्यु के बाद सत्य सिखाया जाता है, और वे देवदूत बन जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे वे लोग जिनका आध्यात्मिक स्तर पृथ्वी पर पहले ही खुल चुका था। इस समूह में अक्सर सरल और निष्कपट लोग शामिल होते हैं, जिनकी बुद्धि, हालाँकि, केवल एक मामूली स्तर तक ही पहुँच पाई है। मृत्यु के बाद, वे स्वर्ग के सबसे निचले हिस्से में, दूसरों की तुलना में कमज़ोर प्रकाश में होते हैं, क्योंकि किसी व्यक्ति की समझ में जितने अधिक वास्तविक आध्यात्मिक सत्य होंगे—अर्थात, वह जितना अधिक बुद्धिमान होगा—आध्यात्मिक जगत में वह उतना ही अधिक प्रकाशमान होगा।

3. एक स्वाभाविक व्यक्ति जिसका आध्यात्मिक स्तर पूरी तरह से बंद है।

आध्यात्मिक स्तर उन लोगों के लिए बंद है जो बुराई और अन्याय में जीते हैं। बुराई और अन्याय ईश्वर के विरोध से निर्धारित होते हैं, न कि नैतिक या सामाजिक विचारों से। इस प्रकार, एक सामाजिक रूप से निष्कलंक और सम्मानित व्यक्ति अपने आंतरिक मन में अत्यधिक दुष्ट हो सकता है और इस प्रकार सबसे बुरे नरकों से जुड़ा हो सकता है, जबकि एक सज़ा काट रहा कैदी आंतरिक रूप से एक अच्छा व्यक्ति हो सकता है जिसकी आत्मा स्वर्गदूतों की संगति में रहती है। आध्यात्मिक स्तर सभी बुराई और गलत का विरोध करता है, क्योंकि यह स्वयं स्वर्ग के रूप में है और ईश्वर से प्रवाह ग्रहण करता है।
आध्यात्मिक स्तर उन सभी के लिए बंद है जो ईश्वर और स्वर्ग से अधिक अपने आप को और संसार को प्रेम करते हैं, अर्थात् जो अपने पड़ोसी के प्रति न्याय और प्रेम से पहले अपने हितों को प्राथमिकता देते हैं।

आध्यात्मिक स्तर उन लोगों के लिए बहुत ही बंद है जो सत्ता की लालसा में दूसरों को नियंत्रित करना चाहते हैं, क्योंकि ऐसा आत्म-प्रेम ईश्वर के प्रेम के सबसे बड़े संभावित विरोध में है। आध्यात्मिक स्तर उन लोगों के लिए भी बंद है जो प्रसिद्धि और सम्मान के साथ-साथ सांसारिक धन की भी लालसा रखते हैं।
आत्म-प्रेम, धन और सांसारिक वस्तुओं का प्रेम आध्यात्मिक स्तर को बंद कर देता है, और ऐसे लोग कभी भी दर्शन और आध्यात्मिक सत्य की गहराई तक नहीं पहुँच पाते। इन लोगों में, न केवल आध्यात्मिक स्तर, बल्कि प्राकृतिक स्तर का उच्चतम स्तर, अर्थात् तार्किक स्तर भी बंद होने लगता है, जिससे केवल प्राकृतिक स्तर का निम्नतम स्तर, अर्थात् कामुक स्तर ही खुला रह जाता है। कामुक लोग इंद्रियों द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर अपना विश्वदृष्टिकोण बनाते हैं, जिससे अनेक त्रुटियाँ और स्पष्ट बुराई उत्पन्न होती है।
एक प्राकृतिक व्यक्ति जो बुराई और अन्याय के माध्यम से कामुक हो गया है, आध्यात्मिक दुनिया में अब मानव रूप में नहीं, बल्कि एक संकर के रूप में प्रकट होता है। जिन दार्शनिकों और वैज्ञानिकों ने ईश्वर के अस्तित्व को नकार दिया है, वे दूसरों की तुलना में अधिक कामुक हैं और इस प्रकार बुराई और अन्याय में अधिक गहराई से फंसे हुए हैं। अपने अवलोकनों के आधार पर, स्वीडनबॉर्ग ऐसे लोगों के परलोक का वर्णन इस प्रकार करते हैं:

“मुझे कई विद्वानों से उनके इस संसार से चले जाने के बाद बातचीत करने का अवसर मिला है। उनमें से कुछ अपने जीवनकाल में महान हस्तियाँ थे और साहित्यिक जगत में उनकी उत्कृष्ट रचनाओं के लिए उनकी प्रशंसा की गई। अन्य लोग उतने प्रसिद्ध नहीं थे, हालाँकि उनके पास आंतरिक ज्ञान था। जिन लोगों ने अपने हृदय में ईश्वर को अस्वीकार कर दिया था, वे इतने मूर्ख हो गए थे कि उन्हें आध्यात्मिक सत्य तो दूर, किसी भी सामाजिक वास्तविकता की समझ नहीं थी। मैंने यह भी स्पष्ट रूप से महसूस किया कि उनके मन के आंतरिक भाग इतने बंद थे कि वे काले दिखाई देते थे—ऐसी चीजें आध्यात्मिक जगत में दिखाई देती हैं—और वे स्वर्ग के प्रकाश को बिल्कुल भी सहन नहीं कर सकते थे और इसलिए स्वर्ग से किसी भी प्रवाह को अपने भीतर प्रवेश नहीं करने देते थे। आंतरिक मन का अंधकार उन लोगों में सबसे अधिक गहरा और व्यापक प्रतीत होता था, जो अपनी वैज्ञानिक शिक्षा के आधार पर ईश्वर के विपरीत में विश्वास करने लगे थे। ऐसे लोग अपने परलोक में हर असत्य को खुशी-खुशी स्वीकार कर लेते हैं। वे उसे ऐसे सोख लेते हैं जैसे स्पंज पानी सोख लेता है, लेकिन जो कुछ भी सत्य है वह उनसे झरने की तरह उछलकर बाहर आ जाता है।

जिन लोगों ने ईश्वर को नकार दिया है और अपनी मान्यताओं को प्रकृति पर आधारित कर लिया है, उनके आंतरिक अंग मानो अस्थि-पंजर बन गए हैं। उनकी खोपड़ी आबनूस की तरह मोटी और काली है और उनकी नाक तक फैली हुई है, जो इस बात का संकेत है कि वे अब सत्य को समझने में सक्षम नहीं हैं। आध्यात्मिक दुनिया में उनका निवास एक दलदल में है, जहाँ उन्हें उनके पापों से संबंधित प्रतिमाओं द्वारा पीड़ा दी जाती है। उनकी नरक की अग्नि सम्मान और प्रसिद्धि की उनकी लालसा है। इसी से प्रेरित होकर, वे एक-दूसरे पर आक्रमण करते हैं और उन लोगों को पीड़ा देते हैं जो उन्हें ईश्वर के रूप में नहीं पूजते, शैतानी उत्साह के साथ, और जब उनमें से एक समाप्त होता है, तो दूसरा शुरू हो जाता है। जिन लोगों ने अपने भीतर स्वर्ग का प्रकाश प्राप्त नहीं किया है, क्योंकि उन्होंने ईश्वर को स्वीकार नहीं किया है, उनके लिए सभी सांसारिक शिक्षाएँ ऐसे ही मामलों में समाप्त हो जाती हैं। (डी कोएलो एट डी इन्फर्नो, पृष्ठ 354)।

उन दार्शनिकों और वैज्ञानिकों के लिए स्थिति बिल्कुल अलग है जिनका आध्यात्मिक स्तर पृथ्वी पर रहते हुए ही विकसित हो चुका है। स्वीडनबॉर्ग उनकी स्थिति का वर्णन इस प्रकार करते हैं:
"जिन लोगों ने ज्ञान और विज्ञान की सहायता से सच्ची समझ और बुद्धि प्राप्त की है, और इसे एक उपयोगी जीवन में लागू किया है, साथ ही ईश्वरत्व को पहचाना है, वचन से प्रेम किया है, और आध्यात्मिक रूप से नैतिक जीवन जिया है, उनके लिए विज्ञान ज्ञान के साधन रहे हैं और विश्वास के मामलों में उन्हें मज़बूत करने का काम किया है। मैंने ऐसे लोगों के आंतरिक अंगों, अर्थात् उनके आत्मिक मन को समझा और देखा है। ये अंग एक चमकदार श्वेत या नीले प्रकाश में पारदर्शी थे, जिसमें चमकीले हीरे, माणिक और नीलम दिखाई देते थे, यह इस बात पर निर्भर करता था कि प्रत्येक व्यक्ति का ईश्वर में कितना विश्वास था और विज्ञान के माध्यम से ईश्वर के प्रति कितना दृढ़ विश्वास था। आध्यात्मिक दुनिया में दिखाई देने पर सच्ची समझ और सच्चा ज्ञान ऐसा ही दिखता है। वहाँ वे स्वर्गीय प्रकाश के प्रभाव के रूप में प्रकट होते हैं, और वह प्रकाश ईश्वर से प्रवाहित होने वाला दिव्य सत्य है, जो समस्त समझ और ज्ञान का स्रोत है।" (ibid., n. 356)।

4. प्राकृतिक मनुष्यों और पशुओं के बीच अंतर।

इसलिए मनुष्यों में मन के तीन स्तर, या इच्छाशक्ति और समझ के तीन स्तर होते हैं, जिन्हें क्रमिक रूप से खोला जा सकता है। इन स्तरों की सहायता से, मनुष्य अपनी समझ को स्वर्ग के प्रकाश तक बढ़ा सकते हैं और सत्यों को देख सकते हैं, न केवल प्राकृतिक, सामाजिक और नैतिक सत्य, बल्कि आध्यात्मिक और दिव्य सत्य भी, और इन सत्यों से वे निष्कर्ष निकाल सकते हैं और अपनी बुद्धि का असीमित विकास कर सकते हैं। पशुओं में मन के दो उच्चतर स्तर नहीं होते, बल्कि केवल प्राकृतिक स्तर होता है। उच्चतर स्तरों के बिना, पशुओं में किसी भी चीज़ के बारे में समझ के साथ सोचने की क्षमता नहीं होती, बल्कि वे केवल अपनी प्रजाति-विशिष्ट विरासत में मिली और अर्जित तंत्रों का ही उपयोग कर सकते हैं। और चूँकि वे सोचने में असमर्थ हैं, इसलिए वे बोलने में भी असमर्थ हैं, क्योंकि शब्दों पर महारत हासिल करने के लिए सोचने की क्षमता की आवश्यकता होती है। स्वर्ग के सार्वभौमिक प्रवाह के कारण, सभी मनुष्यों में तार्किक रूप से सोचने और बोलने की क्षमता होती है। यह सार्वभौमिक प्रवाह प्राकृतिक स्तर के उच्चतम स्तर, जो कि तर्कसंगत स्तर है, तक पहुँचता है। बुद्धि स्तर आध्यात्मिक और प्राकृतिक स्तरों के बीच एक प्रकार का मध्यस्थ है। पशुओं का कोई बुद्धि स्तर नहीं होता। एक कामुक मनुष्य, जो निम्नतम प्राकृतिक मनुष्य है, पशु से केवल इस मायने में भिन्न होता है कि वह अपनी स्मृति को जानकारी से भर सकता है, उसके साथ सोच और बोल सकता है।
आध्यात्मिक और दिव्य स्तर मनुष्य को पशुओं से अलग करते हैं, और इन्हीं के कारण, शारीरिक मृत्यु के बाद भी मानव जीवन अनंत काल तक चलता रहता है। पशुओं में अमर आत्मा नहीं होती, क्योंकि आत्मा और प्राण मन के ठीक यही दो उच्च स्तर हैं। प्रत्येक प्राकृतिक मनुष्य को अपने मन को ईश्वर और स्वर्ग की ओर ऊपर उठाकर और दस आज्ञाओं के अनुसार जीवन व्यतीत करके, एक आध्यात्मिक या दिव्य मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म लेने का अवसर प्राप्त होता है, क्योंकि ये ईश्वरीय नियम हैं। दुर्भाग्य से, आज अधिकांश लोग इस अवसर का लाभ नहीं उठाते, बल्कि अपने मन को पूरी तरह से स्वयं और संसार की ओर नीचे की ओर मोड़ देते हैं, जिससे वे स्वयं को पशुओं के स्तर तक गिरा देते हैं, और कुछ तो उससे भी नीचे।

मानव मन के ये दो उच्चतर स्तर ही सिद्ध करते हैं कि मनुष्य का विकास पशुओं से नहीं हुआ है।
यीशु के शब्द, "तुम्हें ऊपर से, फिर से जन्म लेना होगा" (यूहन्ना 3:7), आध्यात्मिक और दिव्य स्तरों के उद्घाटन की ओर संकेत करते हैं। इस पुनर्जन्म में, मनुष्य ईश्वर से एक नई समझ और एक नई इच्छाशक्ति प्राप्त करता है, जो ईश्वरीय सत्य और भलाई को प्राप्त कर सकती है। यह पुनर्जन्म एक धीमी प्रक्रिया है, जिसकी तुलना शैशवावस्था से वयस्कता तक के शारीरिक विकास से की जा सकती है। पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति की तुलना उस व्यक्ति से की जा सकती है, जो अपने जीवन में पहली बार उस धुंधली गुफा से बाहर आता है जहाँ वह रहता है: सूर्य का प्रकाश उसकी आँखों को चकाचौंध कर देता है।

ईश्वर का वचन एक दार्शनिक के साधन के रूप में

चूँकि प्राकृतिक जगत की सभी घटनाएँ आध्यात्मिक और दिव्य विषयों से संबंधित हैं, इसलिए वाणी और लेखन के भी अपने प्रतिरूप हैं। यह समझना आसान है जब हम यह समझते हैं कि मानव वाणी और लेखन (प्रभाव) व्यक्ति के विचारों (कारण) और इच्छा (इरादे) से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार, किसी व्यक्ति द्वारा लिखे या बोले गए प्रत्येक शब्द में उस शब्द के प्रति उसकी इच्छा और समझ निहित होती है। और चूँकि अलग-अलग शब्दों का अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग अर्थ होता है, इसलिए प्रत्येक शब्द का अपना आंतरिक अर्थ होता है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि उसे किसने व्यक्त किया है। उदाहरण के लिए, "घर" शब्द दो अलग-अलग लोगों में अलग-अलग विचारों और भावनाओं को जगाता है। इन विचारों और भावनाओं को शब्द का आंतरिक अर्थ कहा जाता है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि शब्द को कौन व्यक्त करता है। यही बात उन शब्दों के लिए भी सत्य है जो ईश्वरीय प्रकटीकरण के रूप में आए हैं। इन शब्दों का आंतरिक अर्थ मानवीय शब्दों से भिन्न होता है, क्योंकि ये स्वयं ईश्वर द्वारा बोले गए हैं। इनका बाह्य रूप मानव निर्मित शब्दों के समान ही होता है, लेकिन इनका आंतरिक अर्थ भिन्न होता है: इनका मूल कारण, या उद्देश्य, ईश्वरीय प्रेम है, और इनका साधनात्मक कारण ईश्वरीय ज्ञान है। ऐसे शब्दों को ईश्वर का वचन कहा जाता है, और चूँकि ईश्वरीय प्रेम और ज्ञान अनंत हैं, इसलिए इन शब्दों में अनंत शक्ति और ज्ञान निहित है।

हालाँकि, केवल वे ही लोग जिनकी समझ परमेश्वर द्वारा खोली गई है, परमेश्वर के वचन को समझ सकते हैं। कोई व्यक्ति अपनी समझ के आधार पर वचन को नहीं समझ सकता। परमेश्वर का वचन हमारे ग्रह पर लिखित रूप में पुराने वचन द्वारा लाया गया है, जिसके लेखन खो गए हैं और जिससे कई प्राचीन धर्मों की उत्पत्ति हुई है, और वचन द्वारा, जो बाइबल के निम्नलिखित लेखन को संदर्भित करता है: मूसा की पाँच पुस्तकें, यहोशू, न्यायियों, शमूएल की दो पुस्तकें, राजाओं की दो पुस्तकें, भजन संहिता, यशायाह, यिर्मयाह, विलापगीत, यहेजकेल, दानिय्येल, होशे, योएल, आमोस, ओबद्याह, योना, मीका, नहूम, हबक्कूक, सपन्याह, हाग्गै, जकर्याह, मलाकी, चार सुसमाचार और यूहन्ना का रहस्योद्घाटन। बाइबल के अन्य लेखन परमेश्वर का वचन नहीं हैं, बल्कि चर्च परिषदों द्वारा किए गए परिवर्धन हैं। बल्कि, वे परमेश्वर के वचन के लिए एक दीपक और कुंजी के रूप में कार्य करते हैं।

अपने स्वाभाविक, या शाब्दिक, अर्थ के अलावा, परमेश्वर के वचन का एक आध्यात्मिक और दिव्य अर्थ भी है। ये अर्थ आपस में गुंथे हुए हैं, जैसे प्रभाव, कारण और उद्देश्य। उदाहरण के लिए, "चोरी न करना" आज्ञा का, अपने स्वाभाविक अर्थ में, यह अर्थ है कि यदि कोई व्यक्ति चोरी करता है या बेईमानी से धन अर्जित करता है, तो वह परमेश्वर के विरुद्ध कार्य करता है। उसी बात का आध्यात्मिक अर्थ यह है कि यदि कोई व्यक्ति झूठ और मिथ्या शिक्षा देकर किसी अन्य व्यक्ति से आध्यात्मिक सत्य प्राप्त करने का अवसर छीन लेता है, तो वह परमेश्वर के विरुद्ध कार्य करता है। स्वर्गीय अर्थ का अर्थ है कि किसी व्यक्ति को धर्म का उपयोग अपने स्वार्थ के साधन के रूप में नहीं करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने पर वह प्रभु से चोरी कर रहा होता है। बहुत बार, पुजारी और विभिन्न प्रकार के "उपदेशक" इस आज्ञा के स्वर्गीय अर्थ का उल्लंघन करते हैं।

जब कोई व्यक्ति जिसका आध्यात्मिक या दिव्य स्तर खुल गया है, परमेश्वर के वचन को पढ़ता या सुनता है, तो वह परमेश्वर और स्वर्ग के साथ संबंध स्थापित करता है। इस मामले में, उसकी समझ और इच्छाशक्ति ईश्वरीय प्रभाव से भरी होती है, जो उसे सत्य और भलाई से जुड़े मामलों में कई तरह से मार्गदर्शन और दिशा देती है। इस प्रकार, वचन के माध्यम से, मनुष्य परमेश्वर और स्वर्ग के सीधे संपर्क में आ सकता है।

एक प्राकृतिक व्यक्ति, जिसकी उच्चतर क्षमताएँ बंद हैं, वचन के माध्यम से परमेश्वर और स्वर्ग से जुड़ नहीं सकता, क्योंकि उसकी अपनी इच्छा सभी स्वर्गीय प्रवाह के विपरीत है। जो लोग पुनर्जन्म नहीं पाए हैं, उनके लिए वचन को पढ़ना और सुनना परमेश्वर की उपस्थिति का निर्माण करता है, लेकिन वे उसके साथ वास्तविक संपर्क स्थापित नहीं करते।
एक दार्शनिक या वैज्ञानिक जिसका उच्चतर मन खुला है, अर्थात् जिसकी बुद्धि प्रबुद्ध है और जो प्रतिदिन परमेश्वर के वचन का पाठ करता है, वह दिन-प्रतिदिन अधिक से अधिक आंतरिक बुद्धि और ज्ञान प्राप्त करता है और उन्हें अपने क्षेत्र के ज्ञान में लागू कर सकता है। यह बुद्धि और ज्ञान परमेश्वर के वचन—जीवन के जल—के माध्यम से उसके भीतर से प्रस्फुटित होता है। यही यीशु का अर्थ था जब उन्होंने कहा:

"जो कोई मेरे द्वारा दिया गया जल पीएगा, वह फिर कभी प्यासा न होगा। वास्तव में, जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसके भीतर अनन्त जीवन के लिए उमड़ता हुआ जल का सोता बन जाएगा" (यूहन्ना 4:14)।

जल सत्य का प्रतीक है, और यीशु द्वारा दिया गया जल दिव्य सत्य है। आधुनिक ईसाई धर्म—जो वचन के आंतरिक अर्थों को नहीं जानता—ने परमेश्वर के वचन को साधारण लेखन तक सीमित कर दिया है और उसकी शक्ति को नकार दिया है। वास्तव में, अपने आंतरिक अर्थों के कारण, वचन में असीम शक्ति और ज्ञान है, अर्थात् स्वर्ग और पृथ्वी की समस्त शक्ति। लाखों लोगों की किताबों की अलमारियों में एक सर्वज्ञ गृह शिक्षक तो होता है, लेकिन वे उसका उपयोग करना नहीं जानते।

कुछ दार्शनिक शब्द

स्वीडनबॉर्ग द्वारा प्रयुक्त कई अवधारणाएँ आधुनिक भाषाओं में प्रयुक्त उनके समकक्षों से भिन्न हैं। इसका मूल कारण यह है कि सामान्य भाषा रोज़मर्रा के तर्क को प्रतिबिम्बित करती है, जो वैज्ञानिक चिंतन के लिए पर्याप्त सटीक नहीं है। स्वीडनबॉर्ग को अपने दर्शन में नए शब्द गढ़ने पड़े, जिनका उपयोग उन्होंने कई बातों को किसी और की तुलना में अधिक स्पष्टता से समझाने के लिए किया।

स्वीडनबॉर्ग की जटिल दार्शनिक शब्दावली के कारण ही उनकी अत्यंत बुद्धिमान कृति "प्रिंसिपिया" व्यापक रूप से प्रसिद्ध नहीं हो पाई, हालाँकि यह दर्शन और भौतिकी के प्रत्येक पुस्तकालय में सम्माननीय स्थान की हकदार है।
आधुनिक लोगों को स्वीडनबॉर्ग की अवधारणाओं को समझने के लिए काफी मेहनत करनी पड़ती है, लेकिन एक बार जब उनकी समझ व्यापक हो जाती है, तो उन्हें अपने विचारों की दुनिया भी स्पष्ट दिखाई देगी। नीचे, मैं स्वीडनबॉर्ग की कुछ सबसे महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं की संक्षेप में व्याख्या करूँगा।

इच्छाशक्ति और समझ

मानव शरीर द्वैतवादी है। यह इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि मनुष्य के शरीर के दो सममित भाग होते हैं, दो हाथ और दो पैर, मस्तिष्क के दो गोलार्ध, आदि। शरीर के दो मुख्य कार्य भी हैं जिन पर अन्य सभी कार्य निर्भर करते हैं, अर्थात् हृदय और फेफड़ों का कार्य। चूँकि मानव आत्मा शरीर से संबंधित है, इसलिए यह भी द्वैतवादी है। मानव मन दो भागों से मिलकर बना है, इच्छाशक्ति और समझ। इच्छाशक्ति में मानवीय प्रेरणा से संबंधित सभी बातें शामिल हैं, जैसे प्राथमिकताएँ, इच्छाएँ और जुनून। समझ में मानव ज्ञान और बुद्धि से संबंधित सभी विषय शामिल हैं, जैसे स्मृति, तर्क और बुद्धि। पत्राचार के विज्ञान में, हृदय इच्छाशक्ति का प्रतिनिधित्व करता है और फेफड़े समझ का प्रतिनिधित्व करते हैं।
इच्छाशक्ति प्रेम का पर्याय है, क्योंकि प्रेम मानव शरीर में एक प्रेरक इंजन की तरह है। स्टर्न, मानचित्र और कम्पास समझ के अनुरूप हैं। इच्छाशक्ति और समझ के बीच की परस्पर क्रिया मानव जीवन को सक्षम बनाती है। इच्छाशक्ति और समझ हृदय और फेफड़ों की तरह एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं; दोनों में से कोई भी अपने आप कार्य नहीं कर सकता। सभी मानवीय कार्यों का पता इच्छाशक्ति और समझ के सहयोग से लगाया जा सकता है।
इच्छाशक्ति मानवीय अच्छाई या बुराई का स्थान है, जबकि समझ सत्य और असत्य का स्थान है। सत्य और असत्य मानव मन में एक साथ विद्यमान हो सकते हैं, लेकिन अच्छाई और बुराई नहीं; एक व्यक्ति अपनी इच्छाशक्ति में या तो अच्छा होता है या बुरा, जिसका अर्थ है कि वह या तो ईश्वर की ओर या संसार की ओर मुड़ा है।

प्रेम

स्वीडनबॉर्ग की प्रेम की अवधारणा आधुनिक प्रेम की अवधारणा से काफ़ी भिन्न है। स्वीडनबॉर्ग के लिए, "प्रेम" इच्छाशक्ति का पर्याय है और व्यक्ति की प्रेरणा के स्तर, यानी उसकी प्रवृत्तियों को दर्शाता है। प्रेम के दो मुख्य प्रकार और कई उप-प्रकार हैं। मुख्य प्रकार स्वर्गीय प्रेम और नारकीय प्रेम हैं। स्वर्गीय प्रेम दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित है, जिनके कई अलग-अलग रूप हैं। मुख्य श्रेणियाँ हैं प्रभु के प्रति प्रेम और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम। नारकीय प्रेम की मुख्य श्रेणियाँ हैं आत्म-प्रेम और संसार के प्रति प्रेम। आत्म-प्रेम और प्रभु के प्रति प्रेम, दोनों विपरीत हैं, जैसे संसार के प्रति प्रेम और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम।
एक व्यक्ति को अपने माता-पिता से शरीर और आत्मा दोनों विरासत में मिलते हैं। आज लोग अपने माता-पिता से एक खास तरह का आत्म-प्रेम और संसार के प्रति प्रेम विरासत में पाते हैं। ये प्रेम हर परिवार में अलग-अलग होते हैं। कुछ परिवारों में, आत्म-प्रेम का एक खास रूप प्रचलित होता है, जैसे सत्ता का प्रेम या बौद्धिक सम्मान का प्रेम। कुछ परिवारों में, सांसारिक प्रेम प्रबल होता है, जैसे धन का लोभ या कामुक सुखों की चाह। सामान्यतः, प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी प्रकार के आत्म-प्रेम या सांसारिक प्रेम से प्रभावित होता है। प्रत्येक व्यक्ति में दोनों प्रकार के नारकीय प्रेम होते हैं, लेकिन उनमें से केवल एक ही प्रबल होता है, और इसे प्रबल प्रेम कहते हैं। आत्म-प्रेम और सांसारिक प्रेम के हज़ारों रूप होते हैं। आत्म-प्रेम और सांसारिक प्रेम, आत्माओं की दुनिया के माध्यम से, नरक से व्यक्ति में प्रवाहित होते हैं।
नारकीय प्रेम का प्राप्तकर्ता माता-पिता से विरासत में मिली बुरी इच्छाशक्ति या विरासत में मिली बुराई है। विरासत में मिली बुराई सीधे आदम से नहीं आई, जैसा कि कई आधुनिक ईसाई मानते हैं, बल्कि हज़ारों वर्षों से सैकड़ों पीढ़ियों से चली आ रही है, जिन्होंने ईश्वर और स्वर्ग से ज़्यादा खुद को और दुनिया को प्यार किया। इसका अंतिम रूप व्यक्ति को अपने माता-पिता से विरासत में मिलता है। विरासत में मिली बुराई व्यक्ति के विचारों से नहीं, बल्कि उसकी प्राथमिकताओं से संबंधित होती है।

वंशानुगत बुराई तब होती है जब कोई व्यक्ति जन्म से ही ईश्वर और स्वर्ग से अधिक स्वयं को और संसार को प्रेम करता है।
ईश्वर से मनुष्य के पुनर्जन्म से वंशानुगत बुराई नष्ट हो जाती है, और पुनर्जन्म लेने वाले माता-पिता की संतानों की वंशानुगत बुराई स्वयं माता-पिता की तुलना में कम गंभीर होती है। इस प्रकार, केवल पुनर्जन्म के माध्यम से ही मानवता अपनी वंशानुगत बुराई से मुक्त हो सकती है। धर्म का कार्य इस पुनर्जन्म के साधन प्रदान करना है, और इसीलिए सच्चा धर्म मानवता के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। पुनर्जन्म लेने वाले बच्चों में वंशानुगत बुराई का क्रमिक ह्रास एक नई मानव प्रजाति के जन्म को संभव बनाता है। इस नई मानव प्रजाति को होमो स्पिरिचुअलिस शब्दों से वर्णित किया जा सकता है, क्योंकि यह अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम और ईश्वर के प्रति प्रेम से संचालित होती है। होमो सेपियन्स प्रजाति ने अपनी वंशानुगत बुराई को इतना बढ़ा दिया है कि उसका पुनर्जन्म बहुत कठिन है, लेकिन असंभव नहीं।
आज, वंशानुगत बुराई इतनी बढ़ गई है कि छोटे बच्चों के भी आध्यात्मिक रूप से नष्ट होने का खतरा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि आधुनिक समय में ऐसा कोई सच्चा धर्म नहीं रहा जो इस विकास को रोक सके। हालाँकि, अब इस पुस्तक के आधार पर एक ऐसे धर्म का जन्म हुआ है। यह पुस्तक इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग के धर्मशास्त्रीय कार्यों की एक कड़ी है, जो प्रभु के द्वितीय आगमन (मत्ती 24:30) पर आधारित हैं।
स्वीडनबॉर्ग द्वारा दिए गए रहस्योद्घाटन पर आधारित नया चर्च अभी भी इतना छोटा है कि इसका अस्तित्व और महत्व अभी तक व्यापक रूप से समझा नहीं गया है। आज, केवल कुछ ही लोग वंशानुगत बुराई में वृद्धि को देख पाते हैं, क्योंकि यह अक्सर लोगों के बाहरी जीवन में छिपी रहती है। यदि कोई आधुनिक लोगों की प्राथमिकताओं और प्रवृत्तियों का परीक्षण करे, तो यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि मानवता कितनी गहराई तक नरक में डूब गई है।
प्रत्येक व्यक्ति का एक प्रेम होता है जो उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण होता है। इसे उसका प्रमुख प्रेम कहा जाता है। उसके अन्य सभी प्रेम इस प्रेम के अधीन होते हैं, और यह निर्धारित करता है कि वह हृदय से किस प्रकार का व्यक्ति है। यह प्रेम व्यक्ति को उसकी शारीरिक मृत्यु के बाद स्वर्ग या नरक के किसी विशिष्ट समुदाय में ले जाता है। यदि किसी व्यक्ति का प्रमुख प्रेम, उदाहरण के लिए, धन का प्रेम है, तो वह अपने सभी कार्यों में यह सोचेगा कि वह अपनी संपत्ति कैसे बढ़ा सकता है।

यदि वे अधिक धन अर्जित करने में सफल हो जाते हैं, तो वे प्रसन्न होंगे, लेकिन यदि वे अपना धन खो देते हैं तो दुखी होंगे। दूसरी ओर, यदि किसी व्यक्ति का प्रमुख प्रेम अपनी बुद्धि के सम्मान के लिए प्रेम है, तो वे अपने हर कार्य में अपनी बुद्धि का प्रदर्शन करने का प्रयास करेंगे; वे अपना समय अध्ययन, डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने और महत्वाकांक्षी प्रकाशनों में लगाएंगे, लेकिन केवल अपने लिए प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त करने के लिए।
केवल वे ही जो पुनर्जन्म लेते हैं, स्वर्गीय प्रेम रखते हैं। स्वर्गीय प्रेम स्वयं और संसार से अधिक ईश्वर और स्वर्ग से प्रेम करना है। प्रभु के प्रति प्रेम, प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार और उनके मार्गदर्शन में जीने की इच्छा है। अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम, अपने सभी कार्यों में दूसरों के प्रति ईमानदार और वफ़ादार रहने और भलाई करने का प्रयास है, यह जानते हुए कि ऐसा करने से व्यक्ति ईश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य कर रहा है।
आजकल, "प्रेम" शब्द अक्सर कामुकता से जुड़ा होता है। हालाँकि, यौन प्रेम के दो अलग-अलग प्रकार हैं। जो लोग पुनर्जन्म नहीं लेते हैं, उनके लिए यौन प्रेम केवल शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति है, जैसा कि पशुओं के साथ होता है। जो लोग पुनर्जन्म लेते हैं, उनके लिए यौन प्रेम वैवाहिक प्रेम है, जो केवल एक साथी, यानी अपने जीवनसाथी के प्रति ही होता है। आधुनिक समय में, वैवाहिक प्रेम अत्यंत दुर्लभ है, क्योंकि बहुत कम लोग ही आध्यात्मिक रूप से पुनर्जन्म लेते हैं। वैवाहिक प्रेम स्वर्ग के मूल प्रेमों में से एक है, क्योंकि इसकी जड़ें प्रभु और स्वर्ग के विवाह तथा अच्छाई और सत्य के मिलन में हैं। यह प्रेम केवल उन जीवनसाथी में पाया जाता है जो दस आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीते हैं और प्रभु से प्रेम करते हैं। इस प्रेम में ऐसे रहस्य छिपे हैं जिन्हें बहुत कम लोग जानते हैं।

आंतरिक और बाह्य मानव

प्रत्येक मनुष्य में एक आंतरिक और एक बाह्य मानव दोनों होते हैं। आंतरिक मानव में आंतरिक मन और आध्यात्मिक शरीर, या आत्मा शामिल हैं। आंतरिक मानव के भीतर एक अंतरतम मानव भी होता है, जो मानव आत्मा है।

जिनका आध्यात्मिक या दिव्य मन खुल गया है, उनका आंतरिक व्यक्तित्व उन लोगों से बिल्कुल अलग होता है जिनका उच्च मन बंद है। जिनका पुनर्जन्म हुआ है, उनका आंतरिक व्यक्तित्व देवदूतों की संगति में होता है, लेकिन जिनका पुनर्जन्म नहीं हुआ है, अर्थात् दुष्ट लोग, उनका आंतरिक व्यक्तित्व दुष्ट आत्माओं की संगति में होता है। हालाँकि, एक दुष्ट व्यक्ति के पास—और अधिकांश मामलों में होता भी है—एक सुंदर बाहरी व्यक्तित्व हो सकता है, जिसके सहारे वह अपनी आंतरिक बुराई को छुपाता है। नरक में सबसे बुरे शैतान वे लोग हैं जो संसार में रहते हुए बाहरी तौर पर धर्मपरायण और सम्माननीय थे, लेकिन इस बाहरी धर्मपरायणता का उपयोग केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए करते थे। आज कई उच्च पदस्थ चर्च और सामुदायिक पदाधिकारी ऐसे ही शैतान हैं।
एक नई मानव प्रजाति का निर्माण आवश्यक है, क्योंकि आधुनिक मनुष्यों की विरासत में मिली बुराई पहले ही उस स्तर पर पहुँच चुकी है जहाँ से पीछे हटना बहुत कठिन है, यद्यपि असंभव नहीं। इसके लिए एक बुद्धिमानी से संचालित वैश्विक नए चर्च की आवश्यकता है जो मानवता के सर्वश्रेष्ठ लोगों को अपने पंखों के नीचे एकत्रित करे और एक नए मानव के निर्माण का कार्य करे। यह सृष्टि प्रभु यीशु मसीह के प्रत्यक्ष संरक्षण और बिन्यामीन (भजन 68) के नेतृत्व में होगी।

एक नई मानव प्रजाति

नया यरूशलेम, या नया चर्च, कई क्रांतिकारी घटनाओं को जन्म देगा। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण है होमो सेपियन्स प्रजाति के स्थान पर एक नए मानव का जन्म। यह मानव प्रजाति पुनर्जन्म लेने वाले लोगों से जन्म लेगी, जिनके वंशज धीरे-धीरे तथाकथित वंशानुगत बुराई से मुक्त होंगे। इसमें दर्जनों पीढ़ियाँ लग सकती हैं। यह मानव प्रजाति धीरे-धीरे अस्तित्व में आएगी क्योंकि दस आज्ञाएँ उनके हृदय या आत्मा में समाहित हो जाएँगी। इस मानव प्रजाति को "होमो स्पिर-इटुअलिस" या "आध्यात्मिक मनुष्य" कहा जा सकता है, क्योंकि इसके सदस्य अच्छाई को सत्य के साथ जोड़ते हैं और वंशानुगत बुराई दूर हो जाती है। हालाँकि, वंशानुगत बुराई अनंत काल तक धीरे-धीरे ही दूर होती है, और मनुष्य कभी भी पूरी तरह से शुद्ध नहीं हो पाएगा।
ईश्वर के प्रति प्रेम और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम इस नए मानव प्रकार की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं।

नया मानव प्रकार नए विज्ञानों और कलाओं के साथ-साथ एक बिल्कुल नई जीवन-शैली का निर्माण करेगा। यिर्मयाह 31:31-34 और 24:7 तथा यशायाह 65:17-25 इस मानव प्रजाति के बारे में बताते हैं।

यद्यपि नया चर्च एक स्वीडिश वैज्ञानिक से शुरू होता है, फिर भी यह अंतर्राष्ट्रीय हो जाता है और शुरुआत में मुख्य रूप से छात्रों, शिक्षित लोगों और हृदय से ईश्वर की खोज करने वालों को अपने सदस्यों के रूप में आकर्षित करता है। स्वीडनबॉर्ग के सभी कार्य नए चर्च की सेवा करते हैं, जिसमें उनके वैज्ञानिक कार्य भी शामिल हैं, जो विज्ञान के एक नए दर्शन का बीज हैं।

नई मानव प्रजाति—होमो स्पिरिचुअलिस—होमो सेपियन्स से भी अधिक बुद्धिमान होगी। इसके सदस्यों में पहले मनुष्यों की तरह ही समानताएँ देखने की क्षमता विकसित होगी। इस क्षमता के कारण, नई मानव प्रजाति समानताओं के विज्ञान पर आधारित एक नए विज्ञान दर्शन का निर्माण करेगी। समानताओं का विज्ञान प्राचीन मनुष्यों के लिए विज्ञानों का विज्ञान था, जो किसी भी तरह से वानरों के वंशज नहीं थे, जैसा कि कुछ आधुनिक वैज्ञानिक मानते हैं। स्वीडनबॉर्ग यह भी भविष्यवाणी करते हैं कि यह नई मानव प्रजाति वैवाहिक प्रेम को पुनः खोजेगी, जो प्राचीन मनुष्यों के लिए प्रेम का सबसे महत्वपूर्ण रूप था।

आप जो इसे पढ़ रहे हैं, विश्व इतिहास की इस अंतिम और सर्वोत्कृष्ट क्रांति में एक महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। यदि आप इस पुस्तक में प्रस्तुत आंतरिक आराधना, या पश्चाताप के निर्देशों का पालन करते हैं, तो आपको सीधे प्रभु से ज्ञान प्राप्त होगा, और आपको आज के पतित "ईसाई" समुदायों की तरह किसी भी अंधविश्वास की आवश्यकता नहीं होगी। आप सभी से कह सकते हैं, "ननक लिसेट": "अब समझ के द्वारा विश्वास के रहस्यों को भेदने की अनुमति है।" "और आत्मा और दुल्हन कहती हैं, 'आ!' और जो प्यासा है, वह आए, और जो कोई चाहे, वह जीवन का जल सेंतमेंत ले ले" (प्रकाशितवाक्य 22:17)। और "जो इन बातों की गवाही देता है, वह कहता है, 'मैं शीघ्र ही आनेवाला हूँ।' आमीन, हे प्रभु यीशु, आ!" (प्रकाशितवाक्य 22:20)।

आधुनिक युग इतना नारकीय हो गया है कि केवल एक नई मानव प्रजाति ही मानवता को विनाश से बचा सकती है।

वैश्विक समस्याओं का समाधान होमो सेपियन्स प्रजाति द्वारा नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह पूरी तरह से पतित हो चुकी है। केवल प्रभु द्वारा सृजित नए लोग, एक नई मानव प्रजाति जिसके हृदय में दस आज्ञाएँ लिखी हों, ही पृथ्वी को आसन्न विनाश से बचा सकती है। नए यरूशलेम की पुनर्जन्म पद्धति एक नई मानव प्रजाति का निर्माण करेगी जो अब एक-दूसरे के प्रति बुराई नहीं करेगी। इस प्रकार, भविष्यवाणी किया गया स्वर्ग पृथ्वी पर वापस आ जाएगा। लेकिन इसमें कई पीढ़ियाँ लगेंगी, और यह प्रसव पीड़ा के बिना नहीं होगा। इस नए, अधिक बुद्धिमान मानव के जन्म का वर्णन दानिय्येल 12 और यशायाह 65:17-25 में किया गया है।

आध्यात्मिक जगत

"मुझे पता है कि बहुत से लोग मानते हैं कि जीवित रहते हुए किसी के लिए भी आत्माओं और फ़रिश्तों से संवाद करना असंभव है, और कई लोग कहेंगे कि मैंने जो कुछ भी कहा है वह मेरी कल्पना मात्र है। कुछ लोग सोचेंगे कि मैं ये बातें ध्यान आकर्षित करने के लिए कह रहा हूँ, जबकि कुछ अन्य आपत्तियाँ उठाएँगे। हालाँकि, मुझे इसकी बिल्कुल भी चिंता नहीं है, क्योंकि मैंने देखा है, सुना है और महसूस भी किया है।"

स्वीडनबॉर्ग: आर्काना कोएलेस्टिया, पृष्ठ 68.

आध्यात्मिक जगत तीन भागों में विभाजित है। स्वर्ग है, जहाँ शारीरिक रूप से मृत लोग, जिन्होंने पृथ्वी पर रहते हुए सत्य और भलाई को अपने स्वार्थ से ज़्यादा प्यार किया, निवास करते हैं। नर्क वह स्थान है जहाँ वे लोग निवास करते हैं जिन्होंने स्वयं से और संसार से सबसे अधिक प्रेम किया। आध्यात्मिक जगत स्वर्ग और नर्क के बीच का एक स्थान है, जहाँ एक शारीरिक रूप से मृत व्यक्ति सबसे पहले आता है और जो पृथ्वी पर जीवित रहते हुए व्यक्ति की आत्मा से जुड़ा होता है।
आध्यात्मिक जगत आध्यात्मिक, या आध्यात्मिक पदार्थ से बना है, जो पदार्थ से इस मायने में भिन्न है कि इसमें समय या स्थान का कोई आयाम नहीं होता। आध्यात्मिक जगत प्राकृतिक जगत से असंतत संगति के माध्यम से जुड़ा हुआ है। चूँकि प्राकृतिक जगत आध्यात्मिक जगत का प्रतिबिंब है, आध्यात्मिक जगत में प्राकृतिक जगत जैसी ही वस्तुएँ समाहित हैं, अंतर केवल इतना है कि आध्यात्मिक जगत की वस्तुएँ और वस्तुएँ आध्यात्मिक पदार्थ से निर्मित हैं।
आध्यात्मिक पदार्थ ईश्वर से उत्पन्न होता है, जो आध्यात्मिक जगत में सूर्य के रूप में दृश्यमान है। इस सूर्य से, जिसके भीतर ईश्वर मानव रूप में विद्यमान हैं, ऊष्मा प्रवाहित होती है, जो दिव्य अच्छाई या प्रेम है, और प्रकाश, जो दिव्य सत्य या ज्ञान है। दिव्य प्रकाश और ऊष्मा वायुमंडल में प्रवाहित होते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे प्राकृतिक सूर्य ईथर और वायुमंडल को प्रभावित करता है।

जिस प्रकार प्राकृतिक जगत के ईथर और वायुमंडल प्राकृतिक सूर्य के प्रवाह को ग्रहण करते हैं, उसी प्रकार आध्यात्मिक जगत के सूर्य का प्रवाह आध्यात्मिक वायुमंडल में प्रवेश करता है। प्राकृतिक जगत में, एक-दूसरे के सापेक्ष तीन अलग-अलग वायुमंडल होते हैं: शुद्धतम ईथर, या आभा, जिससे गुरुत्वाकर्षण उत्पन्न होता है; ईथर, जिससे विद्युत, चुंबकत्व और प्रकाश उत्पन्न होते हैं; और सबसे बाहरी ईथर, या वायुमंडल। वर्तमान में, ईथर और आभा की क्रियाविधि अज्ञात है, क्योंकि पृथक अंशों के बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है।
आध्यात्मिक जगत में भी तीन सामान्य वायुमंडल होते हैं। प्रत्येक स्वर्गीय समुदाय और प्रत्येक नारकीय समुदाय का भी अपना वायुमंडल होता है, ठीक उसी प्रकार जैसे विभिन्न ग्रहों का वायुमंडल अलग-अलग होता है। अपनी शारीरिक मृत्यु के बाद, प्रत्येक मनुष्य अंततः उस वायुमंडल में पहुँचता है जो उसकी आंतरिक प्राथमिकताओं या इच्छा के अनुरूप होता है। आध्यात्मिक जगत के सभी वायुमंडल ईश्वर से अच्छाई और सत्य का प्रवाह प्राप्त करते हैं। हालाँकि, नरक में, यह प्रवाह उलट जाता है, जिससे वहाँ बुराई और अन्याय का बोलबाला हो जाता है। मनुष्य, आत्माएँ, देवदूत, पशु और वनस्पतियों में स्वयं जीवन नहीं होता, बल्कि जीवन आध्यात्मिक जगत के सूर्य से एक दिव्य प्रवाह के रूप में आता है; यहाँ तक कि प्राकृतिक जगत भी जीवन का प्राप्तकर्ता है, उसका रचयिता नहीं।

आत्माओं का जगत

आत्माओं का जगत न तो स्वर्ग है और न ही नर्क, बल्कि दोनों के बीच का एक स्थान है। प्रत्येक व्यक्ति मृत्यु के बाद वहाँ जाता है और अपने सांसारिक जीवन की गुणवत्ता के अनुसार एक निश्चित अवधि तक वहाँ रहता है। उसके बाद, वह या तो स्वर्ग जाएगा या नर्क। कुछ लोग आत्माओं के जगत में केवल एक क्षण के लिए रहते हैं, तो कुछ वर्षों के लिए। हालाँकि, यह ध्यान रखना चाहिए कि आत्माओं के जगत में समय वास्तव में बीतता नहीं है; बल्कि, आध्यात्मिक अवस्थाओं में परिवर्तन समय के अंतर के अनुरूप होते हैं। यह तथ्य कि आध्यात्मिक जगत में कोई स्थान या समय नहीं है, केवल वही व्यक्ति समझ सकता है जिसका आध्यात्मिक या स्वर्गीय मन खुल गया हो। पत्राचार के विज्ञान के अनुसार, समय और स्थान की घटनाएँ अच्छाई और सत्य के साथ-साथ बुराई और असत्य की अवस्थाओं के अनुरूप होती हैं। आत्माओं की दुनिया में शारीरिक रूप से मृत लोगों को आत्मा कहा जाता है।

अच्छी आत्माएँ, या देवदूत आत्माएँ, वे हैं जो स्वर्ग जा रही हैं और अपने आंतरिक मन के माध्यम से एक स्वर्गीय समुदाय से जुड़ी हुई हैं। दूसरी ओर, दुष्ट आत्माएँ नरक से जुड़ी हुई हैं। पृथ्वी पर रहते हुए, व्यक्ति अपने आंतरिक मन या आत्मा के माध्यम से पहले से ही आत्माओं की दुनिया में होता है, और वहाँ मानव रूप में भी दिखाई देता है। इसलिए प्राकृतिक दुनिया में रहने वाले मनुष्य तीन स्तरों वाले होते हैं: शरीर, आत्मा और आत्मा। अपने भौतिक शरीर के साथ, मनुष्य प्राकृतिक दुनिया में कार्य करते हैं, उनकी आत्मा आत्मा की दुनिया में कार्य करती है, और उनकी आंतरिक इच्छा, या आत्मा, उनके अंतिम निवास स्थान को निर्धारित करती है, या तो स्वर्ग या नरक में। आत्मा मानव आत्मा का सबसे आंतरिक भाग है, जिसमें ईश्वर सीधे और तुरंत प्रवाहित होता है।

आत्माओं की दुनिया स्वर्ग और नरक दोनों की शक्तियों से प्रभावित होती है। नरक बुराई करने की निरंतर इच्छा का स्रोत है, जबकि स्वर्ग अच्छाई करने की इच्छा का स्रोत है। ये विरोधी प्रवाह स्वर्ग और नरक के बीच एक संतुलन बनाते हैं, जो आत्माओं की दुनिया में और उसके माध्यम से, प्राकृतिक मनुष्य के आंतरिक मन में व्याप्त रहता है। प्राकृतिक मनुष्य सीधे स्वर्ग या नरक से जुड़ा नहीं है, लेकिन यह संबंध आत्माओं की दुनिया में आत्माओं द्वारा मध्यस्थता से होता है। प्रत्येक प्राकृतिक मनुष्य का आंतरिक मन कम से कम दो अच्छी और दो बुरी आत्माओं से जुड़ा होता है। इससे मनुष्य द्वारा अनुभव की जाने वाली स्वतंत्र इच्छाशक्ति का निर्माण होता है, जिससे उन्हें यह चुनने की अनुमति मिलती है कि वे अच्छी या बुरी आत्मा का अनुसरण करें। हालाँकि, मनुष्य इस बात से अवगत नहीं हैं कि वे आत्माओं से जुड़े हुए हैं, क्योंकि आत्माएँ मानव विचारों को प्रभावित नहीं करतीं, केवल प्राथमिकताओं को प्रभावित करती हैं। इसलिए आत्माएँ मनुष्य की इच्छा से जुड़ी होती हैं, जबकि बौद्धिक भाग स्वर्ग से आने वाले सामान्य प्रवाह के अधीन रहता है। इस सामान्य प्रवाह का अर्थ है कि अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के मनुष्य तर्क के नियमों को सोच, बोल और समझ सकते हैं।

ईश्वर, जिन्हें आध्यात्मिक जगत में भगवान कहा जाता है, मानव आत्मा में प्रवाह के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से और आध्यात्मिक जगत के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्यों का मार्गदर्शन करते हैं। शुरुआत में ऐसा नहीं था, क्योंकि हमारे ग्रह पर पहले मनुष्य स्वर्गीय थे और ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार जीवन जीते थे। उनमें अभी तक वह विरासत में मिली बुराई नहीं थी जो आज लोगों पर हावी है।

मानवता की विरासत में मिली बुराई के कारण, प्रभु आज लोगों को दिव्य व्यवस्था के सामान्य प्रवाह में मार्गदर्शन नहीं दे सकते, जैसा कि उन्होंने प्राचीन लोगों का किया था, क्योंकि आधुनिक मनुष्यों की इच्छा दिव्य व्यवस्था के बिल्कुल विपरीत है। इस कारण, प्रभु लोगों को उन दुष्ट आत्माओं के संपर्क में ला सकते हैं जो उनकी विरासत में मिली बुराई के अनुरूप हैं, जिनके बिना दुष्ट लोग बिल्कुल भी जीवित नहीं रह सकते, क्योंकि जीवन वास्तव में आध्यात्मिक जगत से एक प्रवाह है। हालाँकि, प्रभु लोगों को अच्छी आत्माओं के संपर्क में भी लाते हैं ताकि उनकी सहायता से, लोग धीरे-धीरे अपनी बुराई से मुक्त हो सकें और आध्यात्मिक या स्वर्गीय प्राणियों के रूप में विकसित हो सकें। ऐसा विकास ही पुनर्जन्म का अर्थ है, जिसमें प्रभु लोगों में एक नई समझ और एक नई इच्छाशक्ति का निर्माण करते हैं। जब कोई व्यक्ति प्रभु की ओर मुड़ता है और पाप से बचता है, अर्थात दिव्य व्यवस्था के विपरीत जीवन जीता है, तो उस व्यक्ति से जुड़ी अच्छी आत्माएँ बुरी आत्माओं पर विजय प्राप्त करती हैं। जैसे-जैसे पुनर्जन्म जारी रहता है, प्रभु व्यक्ति को और भी बेहतर दिव्य आत्माओं के संपर्क में ला सकते हैं। पुनर्जन्म के साथ-साथ मानव बुद्धि के विकास का यही आधार है, क्योंकि देवदूत आत्माओं की श्रेष्ठता उनकी बुद्धि और विवेक के कारण है। यदि किसी व्यक्ति का पुनर्जन्म नहीं होता, तो उससे जुड़ी दुष्ट आत्माएँ, अच्छी आत्माओं पर हावी हो जाती हैं, और उसकी स्थिति साल-दर-साल बिगड़ती जाती है, जिससे जब वह मरता है, तो उसकी अपनी आत्मा उसे उसके स्वभाव के अनुरूप नरक में ले जाती है। आजकल ऐसा बहुत से लोगों के साथ होता है, लेकिन इसे पहचानना आसान नहीं है, क्योंकि दुष्ट लोग भी तर्कसंगत रूप से सोचने और बोलने की क्षमता रखते हैं। दूसरी ओर, मरने वाले सभी बच्चे स्वर्ग जाते हैं, क्योंकि वे अपनी विरासत में मिली बुराई के लिए ज़िम्मेदार नहीं होते, क्योंकि केवल वयस्क ही अपनी स्वतंत्र इच्छा से अपनी आध्यात्मिक यात्रा की दिशा निर्धारित कर सकते हैं। आजकल, स्वर्ग आने वाले नए देवदूत मुख्यतः मृत बच्चे होते हैं।

स्वर्ग आत्माओं की दुनिया के ऊपर है, और नरक उसके नीचे। आत्माओं की दुनिया से, लोग अपने अंतिम और शाश्वत गंतव्य की ओर बढ़ते हैं, यानी स्वर्ग, अगर उनके भीतर अच्छाई और सच्चाई का मिलन हो, और नरक, अगर उनके भीतर बुराई और झूठ का मिलन हो। आत्माओं की दुनिया ही वह जगह है जहाँ यह मिलन होता है।

अच्छाई और सत्य का मिलन इच्छा और समझ के मिलन के समान है, क्योंकि इच्छा अच्छाई को स्वीकार करती है और समझ सत्य को स्वीकार करती है। इसी प्रकार, बुराई और असत्य का मिलन भी व्यक्ति की इच्छा और समझ में होता है। अपनी समझ के आधार पर, एक व्यक्ति यह सोच सकता है कि वह जो सोचता है वह सत्य है और अच्छा भी है, लेकिन वह अपनी इच्छा के आधार पर ऐसा नहीं सोचता जब तक कि वह स्वयं भी उस अच्छे की इच्छा न करे और न करे। लेकिन जब वह उस अच्छे की इच्छा करता है और स्वेच्छा से उसे करता है, तो वह कार्य उसकी समझ और उसकी इच्छा, अर्थात् स्वयं व्यक्ति में होता है। जो केवल उसकी समझ में है, लेकिन उसकी इच्छा में नहीं है, वह वास्तव में उसकी स्मृति और ज्ञान में है, लेकिन उस स्थिति में, यह केवल बाहरी ज्ञान है जिसे उसकी इच्छा स्वीकार नहीं करती। जब किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक संसार में अच्छाई और सत्य का मिलन होता है, अर्थात जब वह जो समझता है उसे चाहता है, तो प्रभु उसे स्वर्ग की ओर ले जाते हैं। ऐसा व्यक्ति उस मार्ग को देखता है जो उसकी अच्छाई और सत्य के अनुरूप स्वर्गीय समुदाय की ओर ले जाता है। इसी प्रकार, एक दुष्ट आत्मा, जिसमें बुराई और झूठ एक साथ होते हैं, उस गुफा का मुख पाती है जो उसकी बुराई और झूठ के अनुरूप नरक की ओर ले जाती है। प्रभु किसी को नरक में नहीं डालते, बल्कि दुष्ट आत्मा अपनी इच्छा से वहाँ खींची जाती है। आत्माओं की दुनिया में, अच्छी आत्माओं से बची हुई बुराई और अन्याय छीन लिया जाता है, और उन्हें सत्य और भलाई दी जाती है। इसी प्रकार, दुष्ट आत्माओं के पास संसार में रहते हुए जो थोड़ी-बहुत अच्छी चीज़ें और सत्य थे, वे भी उनसे छीन लिए जाते हैं। उन्हें उनके बुरे कर्मों के अनुरूप अन्याय दिया जाता है। इस प्रकार अच्छी आत्माएँ अधिक सत्य और भलाई प्राप्त करती हैं, लेकिन दुष्ट आत्माएँ सब कुछ खो देती हैं। प्रभु का यही आशय है जब वे कहते हैं: "क्योंकि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा, और उसके पास बहुतायत होगी। जिसके पास नहीं है, उससे जो कुछ उसके पास है, वह भी छीन लिया जाएगा" (मत्ती 13:12)।

मानव आत्मा का स्वरूप मानव है, इसलिए उसमें मनुष्य के समान सभी अंग होते हैं। मनुष्य का प्राकृतिक शरीर आत्मा के लिए एक उपकरण मात्र है, जो मृत्यु के बाद उसे छोड़ देती है। आत्माओं की दुनिया में, सब कुछ प्राकृतिक दुनिया जैसा ही होता है, इसलिए बहुत से लोग मृत्यु के बाद यह नहीं मानते कि वे मर गए हैं, बल्कि सोचते हैं कि वे अभी भी पृथ्वी पर जीवित हैं।

आत्माओं की दुनिया में पहाड़, पहाड़ियाँ, जंगल, शहर, झीलें, नदियाँ, इमारतें, जानवर, पौधे आदि हैं। हालाँकि, ये भौतिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक पदार्थ हैं।

स्वर्ग

स्वर्ग की प्रकृति को केवल संगति विज्ञान के माध्यम से ही समझा जा सकता है। चूँकि ईश्वर मानव रूप में हैं और स्वर्ग में सूर्य के रूप में प्रकट होते हैं, इसलिए स्वर्ग भी मानव रूप में है, क्योंकि स्वर्ग समग्र रूप से ईश्वर के अनुरूप है। स्वर्ग को महानतम मनुष्य भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें ब्रह्मांड में रहने वाले सभी अच्छे लोग शामिल हैं।
चूँकि स्वर्ग में अनगिनत स्वर्गीय समुदाय हैं, इसलिए इन समुदायों की प्रकृति को निम्नलिखित विभाजन द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है: दो मुख्य विभाजन या राज्य हैं, जबकि निजी विभाजन में तीन सामान्य विभाजन या तीन स्वर्ग शामिल हैं, और इन स्वर्गों के भीतर असंख्य देवदूत समुदाय हैं।
वे देवदूत जो दिव्य प्रवाह को मुख्यतः अपनी इच्छा में और गौण रूप से अपनी समझ में ग्रहण करते हैं, वे प्रभु के दिव्य या स्वर्गीय राज्य के हैं। वे देवदूत जो दिव्य प्रवाह को मुख्यतः अपनी समझ में ग्रहण करते हैं, वे प्रभु के आध्यात्मिक राज्य के हैं। दिव्य देवदूत अंतरतम या सर्वोच्च स्वर्ग का निर्माण करते हैं, जबकि आध्यात्मिक देवदूत आंतरिक या उच्चतर स्वर्ग का निर्माण करते हैं। सर्वोच्च स्वर्ग को तृतीय स्वर्ग भी कहा जाता है, और उच्चतर स्वर्ग को द्वितीय स्वर्ग कहा जाता है।
वह दिव्यता जो प्रथम, या बाह्य, या प्राकृतिक स्वर्ग में प्रवाहित होती है, उसे प्राकृतिक दिव्यता कहते हैं। परन्तु चूँकि प्राकृतिक स्वर्ग का अर्थ संसार के स्वर्ग से भिन्न है, इसलिए इस स्वर्ग को अधिक सटीक रूप से आध्यात्मिक-प्राकृतिक या दिव्य-प्राकृतिक स्वर्ग कहा जाता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि दिव्य प्रवाह आध्यात्मिक या दिव्य स्वर्ग से होकर आता है या नहीं।

इसी प्रकार, तीसरे और दूसरे स्वर्ग में भी एक आंतरिक और एक बाहरी भाग है, जहाँ आंतरिक भाग के स्वर्गदूतों को दिव्य प्रवाह अधिक प्राप्त होता है और बाहरी भाग के स्वर्गदूतों को आध्यात्मिक प्रवाह अधिक प्राप्त होता है। इस प्रकार, ये तीन अलग-अलग स्वर्ग, हालाँकि, दो राज्य हैं।

यह याद रखना चाहिए कि स्वर्ग इसलिए स्वर्ग नहीं हैं क्योंकि स्वर्गदूत वहाँ निवास करते हैं, बल्कि इसलिए हैं क्योंकि प्रभु ईश्वर-मनुष्य स्वर्गों का निर्माण करते हैं। स्वर्ग दिव्य प्रवाह के प्राप्तकर्ता हैं। सभी स्वर्गदूत वे लोग हैं जिनके भौतिक शरीर मर चुके हैं। मनुष्यों से अलग कोई आत्मिक प्राणी, प्रधान स्वर्गदूत या पतित स्वर्गदूत नहीं हैं; ऐसी अवधारणाएँ तब उत्पन्न हुई हैं जब परमेश्वर के वचन का आंतरिक अर्थ ज्ञात नहीं है। माइकल, गेब्रियल आदि शब्द वचन के आंतरिक अर्थ के अनुसार व्यक्तिगत स्वर्गदूतों को नहीं, बल्कि संपूर्ण स्वर्गदूतीय समुदायों को संदर्भित करते हैं। ऐसे स्वर्गदूतीय समुदायों का अक्सर एक विशिष्ट आध्यात्मिक कार्य होता है।

स्वर्ग का भी संसार की तरह कोई समय या स्थान नहीं है, बल्कि स्वर्ग मानव मन के आंतरिक भागों में है। प्रभु का यही तात्पर्य है जब वे कहते हैं: "परमेश्वर का राज्य प्रत्यक्ष रूप से नहीं आता, और न यह कहा जा सकता है, 'देखो, यहाँ है,' या 'वहाँ है,' क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर है" (लूका 17:20-21)। फिर भी, स्वर्गदूतों के पास एक परिपूर्ण आध्यात्मिक शरीर होता है और वे स्वर्ग में अनेक कार्य करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे मनुष्य पृथ्वी पर करते हैं। स्वर्ग पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों के भीतर भी होता है जब वे अपने जीवन में परमेश्वर के नियमों, या दस आज्ञाओं का पालन करते हैं। स्वर्गदूतों का आंतरिक मन निर्धारित करता है कि वे किस स्वर्गीय समुदाय से संबंधित हैं। क्योंकि उनका आंतरिक मन ईश्वरीय सत्य और अच्छाई को ग्रहण करने के लिए जितना अधिक खुला होता है, वे स्वर्ग में उतने ही गहरे होते हैं। प्रत्येक मनुष्य की तरह, प्रत्येक स्वर्गदूत के मन के तीन अलग-अलग स्तर होते हैं। जिन स्वर्गदूतों का तीसरा, या अंतरतम, स्तर खुला होता है, वे अंतरतम स्वर्ग में होते हैं। ये स्वर्गदूतों में सर्वश्रेष्ठ हैं और ईश्वरीय प्रवाह को अपनी इच्छाशक्ति में और इस प्रकार तुरंत अपने जीवन में ग्रहण करते हैं। वे इस बात पर विचार या आश्चर्य नहीं करते कि कोई बात सत्य और अच्छी है या नहीं, बल्कि तुरंत ही मामले के सही पक्ष को समझ लेते हैं। दूसरे, या आंतरिक, स्तर के खुले हुए देवदूत आंतरिक स्वर्ग में रहते हैं। वे पहले स्मृति के माध्यम से सत्य और अच्छाई को अपनी समझ में लाते हैं और उसके बाद ही अपनी इच्छाशक्ति में।

बाह्य, या प्राकृतिक, स्वर्ग में वे लोग हैं जिन्होंने ईश्वर में विश्वास करते हुए एक पवित्र और अच्छा जीवन जिया है, लेकिन जिनका प्रेम और विश्वास कम रहा है। प्रभु आकाशीय स्वर्गदूतों को एक चमकते लाल सूर्य के रूप में प्रकट होते हैं। आध्यात्मिक स्वर्गदूतों को, वे एक श्वेत-दमकते सूर्य के रूप में प्रकट होते हैं, जिसका प्रकाश चंद्रमा के प्रकाश जैसा होता है। इस मामले में, लाल चमक दिव्य प्रेम से और श्वेत चमक दिव्य सत्य से मेल खाती है। प्रभु अक्सर एक देवदूत के रूप में प्रकट होते हैं। इस मामले में, वे स्वर्गदूतों से इस तथ्य से भिन्न हैं कि उनके चेहरे से दिव्यता चमकती है। स्वर्ग में, दिव्य सत्य के अलावा कोई अन्य प्रकाश नहीं है और दिव्य अच्छाई के अलावा कोई अन्य ऊष्मा नहीं है। स्वर्ग में हर चीज़ प्रभु के साथ उसके संबंध से निर्धारित होती है। स्वर्ग में स्वर्गदूत भी पृथ्वी पर दिन के समय के अनुरूप अवस्था में परिवर्तन का अनुभव करते हैं। अवस्था में ये परिवर्तन अच्छाई और सत्य की गुणवत्ता और मात्रा से संबंधित हैं, जो स्वर्गदूतों के बीच भिन्न होते हैं। अवस्था के इन परिवर्तनों के बिना, देवदूत अच्छाई और सत्य के निरंतर प्रवाह से ऊब जाएँगे, क्योंकि संसार के मनुष्यों की तरह, उनके अनुभवों के लिए उनकी इंद्रियों में परिवर्तन की आवश्यकता होती है। देवदूतों के वस्त्र, उनके आवासों की तरह, उनकी आंतरिक अवस्थाओं के अनुसार भी बदलते रहते हैं। देवदूतों के वस्त्र प्रायः चमकदार और बहुमूल्य रत्नों से सुसज्जित होते हैं। इसी प्रकार, उनके घर भी उतने ही सुंदर होते हैं जितनी उनकी अच्छाई और सत्य की आवश्यकता होती है। स्वर्ग में, महल और अन्य इमारतें हैं जिनकी सुंदरता किसी भी सांसारिक वास्तुकला से कहीं अधिक है।

सामान्यतः, स्वर्ग का जीवन पृथ्वी के जीवन के समान ही है, लेकिन स्वर्ग में सब कुछ कहीं अधिक परिपूर्ण है। प्रत्येक देवदूत कुछ न कुछ उपयोगी कार्य करता है, और वहाँ आलस्य का कोई नामोनिशान नहीं है। स्वर्ग में देवदूत वह कार्य करते हैं जिसके लिए उनके पास सबसे अधिक क्षमताएँ और क्षमताएँ होती हैं, इसलिए अच्छे लोगों के लिए पेशे का चुनाव अक्सर अगले जन्म में ही तय होता है। हालाँकि, स्वर्ग में कार्य किसी भी प्रकार की मजबूरी में नहीं किया जाता; वहाँ सभी कार्य मधुर गतिविधि हैं जो भलाई करने के प्रेम से उत्पन्न होती हैं।

स्वर्ग में भी विवाह होते हैं, क्योंकि मानव कामुकता कभी लुप्त नहीं होती। वैवाहिक प्रेम अच्छाई और सत्य के मिलन के अनुरूप है, क्योंकि वैवाहिक प्रेम प्रभु और स्वर्ग के मिलन से अवतरित होता है और स्वर्ग के मूल प्रेम का निर्माण करता है।

वैवाहिक प्रेम के बिना, व्यक्ति प्रभु से तत्काल प्रवाह प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि स्वर्ग में दिव्यता का अर्थ है दिव्य प्रेम और ज्ञान का विवाह। हालाँकि, स्वर्गीय विवाहों का कार्य सांसारिक विवाहों की तरह वंश-परंपरा को आगे बढ़ाना नहीं होता, बल्कि स्वर्ग में पति-पत्नी का मिलन नए सत्यों और अच्छाइयों को जन्म देता है। इसी कारण, पुत्र और पुत्रियाँ पत्राचार विज्ञान में सत्य और अच्छाई का प्रतीक हैं।
स्वर्ग में भी मंदिर, सरकारी कार्यालय, पुस्तकालय और सामान्यतः सभी प्रकार की सामाजिक गतिविधियाँ होती हैं, जैसे पृथ्वी पर होती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि स्वर्गीय पदार्थ प्राकृतिक जगत के पदार्थों के समान हैं। स्वर्ग में सब कुछ पृथ्वी की तुलना में अधिक परिपूर्ण है, क्योंकि वहाँ आत्मा सांसारिक जीवन की तरह भारी पदार्थों से बंधी नहीं है। स्वीडनबॉर्ग ने अपनी रचना "दे कोएलो एट एजुस मिराबिलिबस, एट डे इन्फर्नो" (अंग्रेजी: स्वर्ग, उसके चमत्कार और नर्क) में स्वर्गीय जीवन-पद्धति का विस्तार से वर्णन किया है। मैं इस कृति से स्वर्ग में स्वर्गदूतों की बुद्धि और ज्ञान का वर्णन उद्धृत करता हूँ:

“269. स्वर्गदूतों का ज्ञान अवर्णनीय है, लेकिन इसकी कुछ सामान्य विशेषताएँ प्रस्तुत की जा सकती हैं। स्वर्गदूत एक शब्द में मनुष्य के हज़ार शब्दों से कहीं अधिक व्यक्त कर सकते हैं, और एक स्वर्गदूत के एक शब्द में भी बहुत कुछ ऐसा होता है जो मानव भाषाओं में व्यक्त नहीं किया जा सकता। स्वर्गदूतों की वाणी के प्रत्येक विवरण में गुप्त ज्ञान की एक अविच्छिन्न श्रृंखला समाहित होती है जिसे मानव ज्ञान कभी नहीं समझ सकता। जो स्वर्गदूत शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते, वे अपनी वाणी के स्वर में व्यक्त करते हैं, जो उनकी भावनाओं को व्यक्त करता है। जैसा कि खंड 236 और 241 में उल्लेख किया गया है, एक स्वर्गदूत की वाणी का स्वर उनकी प्राथमिकताओं को व्यक्त करता है, और उनके शब्द उन प्राथमिकताओं से उत्पन्न विचारों को व्यक्त करते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि कोई भी भाषा स्वर्गीय वस्तुओं का वर्णन नहीं कर सकती। इसी प्रकार, स्वर्गदूत कुछ शब्दों में एक पूरी पुस्तक का विवरण व्यक्त कर सकते हैं, और वे प्रत्येक शब्द में ऐसी बातें शामिल कर सकते हैं जो मन को आंतरिक ज्ञान की ओर ले जाती हैं, क्योंकि उनकी वाणी का प्रत्येक शब्द उनके स्नेह और विचारों के अनुरूप होता है। शब्द अपने विचारों के क्रम के अनुसार असीम रूप से भिन्न होते हैं।

आंतरिक देवदूत किसी वक्ता की आवाज़ के लहजे और कुछ शब्दों से उसके पूरे जीवन की गुणवत्ता जान सकते हैं, क्योंकि जब वे सुनते हैं कि वक्ता के अलग-अलग विचारों को व्यक्त करते समय उसकी आवाज़ का लहजा कैसे बदलता है, तो वे समझ जाते हैं कि उनका प्रमुख प्रेम क्या है, और उसमें उनके जीवन का सारा विवरण लिखा है। यह देवदूतों की बुद्धि की गुणवत्ता को दर्शाता है। मानवीय बुद्धि की तुलना में, उनकी बुद्धि एक की तुलना में असंख्य के समान है।"

इसलिए, स्वर्ग में प्रवेश करने वाले वे लोग हैं जिन्होंने इस संसार में रहते हुए ईश्वर को स्वीकार किया और अपनी आस्था के आदेशों के अनुसार जीवन जिया। आजकल, विशेष रूप से तथाकथित विश्वासियों के बीच, यह व्यापक भ्रांति है कि कोई व्यक्ति केवल ईश्वर में अंध विश्वास करके स्वर्ग में प्रवेश कर सकता है, चाहे उसका जीवन कैसा भी हो। ऐसे लोग मानते हैं कि मृत्युशय्या पर ईश्वर से प्रार्थना करना और भक्ति के अन्य कार्य करना ही उद्धार पाने, अर्थात् स्वर्ग में प्रवेश पाने के लिए पर्याप्त है। ऐसे लोग मृत्यु के बाद निराश होते हैं जब उन्हें पता चलता है कि वे नरक में पहुँच गए हैं। सच्चाई यह है कि कोई भी व्यक्ति अपने अंतिम क्षणों में या यहाँ तक कि अपने सांसारिक जीवन के अंतिम दिनों में भी अपनी इच्छाशक्ति और समझ की गुणवत्ता में आमूल-चूल परिवर्तन नहीं कर सकता, यही स्वर्ग में उनके प्रवेश का निर्धारण करता है। एक व्यक्ति की इच्छाशक्ति और समझ वर्षों में धीरे-धीरे विकसित होती है, और यदि वयस्कता में स्वर्गीय प्रवाह प्राप्त नहीं हुआ है, तो वृद्धावस्था में भी इसके प्राप्त होने की संभावना नहीं है। हालाँकि, स्वर्ग में प्रवेश करने में व्यक्ति की इच्छाशक्ति उसकी समझ से अधिक महत्वपूर्ण है: यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम से जिया है, भले ही उसकी समझ कमज़ोर रही हो, तो वह अपनी सद्इच्छा से प्रेरित होकर, वे स्वर्ग पहुँचते हैं।
आज बहुत से लोग, खासकर ईसाई जगत में, यह दृढ़ विश्वास रखते हैं कि व्यक्ति अपने कर्मों के प्रभाव के बिना ईश्वर की कृपा से ही उद्धार पाता है। ऐसे में, वे बिल्कुल नहीं जानते कि ईश्वरीय कृपा कैसे काम करती है। स्वीडनबॉर्ग ईश्वरीय कृपा की व्याख्या इस प्रकार करते हैं:

आइए पहले हम यह समझें कि ईश्वरीय दया क्या है। ईश्वरीय दया समस्त मानवजाति के उद्धार के लिए उसके प्रति शुद्ध दया है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए निरंतर उपलब्ध है और किसी को भी इससे वंचित नहीं किया जा सकता, क्योंकि जो भी बचाया जा सकता है, वह बचाया जाएगा। हालाँकि, ईश्वरीय साधनों के बिना किसी का भी उद्धार नहीं हो सकता। ये ईश्वरीय साधन प्रभु ने अपने वचन में प्रकट किए हैं, और इन्हें ईश्वरीय सत्य कहा जाता है। ये मनुष्य को सिखाते हैं कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए उसे कैसे जीवन जीना चाहिए। इनकी सहायता से, प्रभु लोगों को स्वर्ग की ओर ले जाते हैं, और इनकी सहायता से, वे लोगों को स्वर्गीय जीवन प्रदान करते हैं। प्रभु यह सभी को प्रदान करते हैं, लेकिन वे किसी को भी स्वर्गीय जीवन नहीं दे सकते जब तक कि वे स्वयं बुराई का त्याग न करें, क्योंकि यह बुराई एक बाधा होगी। इसलिए, जिस सीमा तक कोई व्यक्ति बुराई का त्याग करता है, उसी सीमा तक प्रभु, अपने दिव्य साधनों के माध्यम से, उसे उसके बचपन से लेकर उसके सांसारिक जीवन के अंत तक और उसके बाद भी, शुद्ध अनुग्रह के माध्यम से मार्गदर्शन करते हैं। ईश्वरीय अनुग्रह का यही अर्थ है। इसलिए यह स्पष्ट है कि प्रभु का अनुग्रह शुद्ध अनुग्रह है, लेकिन इस अर्थ में तत्काल अनुग्रह नहीं कि मोक्ष प्राप्त होगा। सभी के प्रति अनुग्रह के आधार पर, चाहे उन्होंने कैसा भी जीवन जिया हो।" (डी कोएलो एट डी इन्फर्नो, पृष्ठ 522)।

शरीर की मृत्यु के बाद मनुष्य की स्थिति

जब मानव शरीर प्राकृतिक संसार में आत्मा के एक उपकरण के रूप में अपने कार्य करने में असमर्थ हो जाता है, तो व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। हालाँकि, वास्तविक व्यक्ति, अर्थात् आत्मा, नहीं मरती, बल्कि आत्मा किसी अन्य लोक में जीवन जारी रखने के लिए अपना सांसारिक आवरण त्याग देती है। आत्मा का फेफड़ों और हृदय की कार्यप्रणाली से आंतरिक संबंध होता है, और जब ये कार्य करना बंद कर देते हैं, तो आत्मा और शरीर अलग हो जाते हैं। जब हृदय कार्य करना बंद कर देता है, तो प्रभु व्यक्ति को जागृत करते हैं, अर्थात व्यक्ति की आत्मा को शरीर से निकालकर आत्माओं के लोक में ले जाया जाता है। इसे वचन में पुनरुत्थान कहा गया है, और यह व्यक्ति की मृत्यु के तुरंत बाद होता है, न कि किसी दूर के न्याय के दिन, जैसा कि कई आधुनिक ईसाई मानते हैं। यह स्वतःसिद्ध है कि किसी व्यक्ति का भौतिक शरीर कब्र से नहीं उठ सकता। केवल भगवान ही जीवित हुए हैं, वह भी शारीरिक रूप से।

स्वीडनबॉर्ग को यह भी अनुभवात्मक शिक्षा दी गई कि मृतकों में से लोगों को कैसे जीवित किया जाता है। वह इसका वर्णन इस प्रकार करते हैं:

“मेरी शारीरिक इंद्रियाँ सुन्न हो गईं, एक ऐसी अवस्था जिसमें मैं मानो मृत हो गया था। केवल मेरा आंतरिक जीवन और मेरे विचार अपरिवर्तित रहे, जिससे मैं समझ और याद रख सका कि मेरे साथ क्या हो रहा है और मृतकों में से जागृत हुए अन्य लोगों के साथ क्या होता है। मैंने देखा कि मेरे शरीर ने लगभग पूरी तरह से साँस लेना बंद कर दिया था, लेकिन मेरा आंतरिक आध्यात्मिक शरीर साँस लेता रहा, साथ ही हल्की शारीरिक साँस भी चलती रही। इसके बाद, मेरे हृदय की धड़कन और दिव्य राज्य के बीच एक संबंध स्थापित हो गया, क्योंकि स्वर्गीय राज्य मनुष्यों के हृदय के समान है। फिर मैंने इस राज्य के स्वर्गदूतों को देखा, कुछ दूर, लेकिन दो मेरे सिर के बहुत पास। इसके बाद, मेरी अपनी सभी प्राथमिकताएँ मुझसे छीन ली गईं; हालाँकि, मेरे विचार और धारणाएँ सुरक्षित रहीं। मैं कुछ घंटों तक इसी अवस्था में रहा। मेरे साथ जो आत्माएँ थीं, वे यह सोचकर चली गईं कि मैं पहले ही मर चुका हूँ। मुझे एक सुगंधित गंध भी महसूस हुई, जैसी शव-संरक्षित शरीरों से आती है, क्योंकि जब दिव्य देवदूत मौजूद होते हैं, तो मृत शरीरों से जुड़ी हर चीज़ में एक सुगंधित गंध होती है। जब आत्माएँ इस गंध को सूंघ लेती हैं, इसलिए वे शरीर के पास नहीं आ सकतीं। इस प्रकार, जब कोई व्यक्ति अनन्त जीवन में प्रवेश करता है, तो दुष्ट आत्माएँ मानव आत्मा से दूर रहती हैं। मुझे यह भी देखने और महसूस करने की अनुमति मिली कि मेरे मन के आंतरिक भागों को धकेला और खींचा जा रहा था, मानो उन्हें मेरे शरीर से बाहर निकाला जा रहा हो। मुझे पता चला कि यह प्रभु की ओर से है और यही वास्तव में पुनरुत्थान है।” (डी कोएलो एट एजस मिराबिलिबस, एट डी इन्फर्नो, पृष्ठ 449)।

जब कोई व्यक्ति जागृति के बाद आत्माओं की दुनिया में आता है, तो उसका चेहरा और आवाज़ वैसी ही होती है जैसी वह दुनिया में थी। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे अभी भी अपनी बाहरी अवस्था में हैं, और उनका आंतरिक मन अभी तक दिखाई नहीं दे रहा है।

बाद में, उनका चेहरा और आवाज़ उनकी इच्छा या प्राथमिकताओं के अनुरूप बदल जाती है। शरीर का बाह्य रूप माता-पिता से विरासत में मिलता है, लेकिन आत्मा का बाह्य रूप व्यक्ति की प्राथमिकताओं के अनुरूप होता है। जिन लोगों ने अच्छे और सत्य के प्रति प्राथमिकताएँ रखी हैं, वे आत्माओं की दुनिया में सुंदर दिखाई देते हैं। बुरी प्राथमिकताएँ आत्माओं की दुनिया में कुरूपता उत्पन्न करती हैं। प्रत्येक आत्मा का मानवीय रूप उतना ही सुंदर होता है जितना अधिक वे संसार में रहते हुए ईश्वरीय सत्यों से प्रेम करते हैं और जितना अधिक निकटता से उनके अनुसार जीवन जीते हैं।

एक आत्मिक व्यक्ति में भी वही इंद्रियाँ होती हैं जो प्राकृतिक संसार में रहते समय होती थीं। वे देखते और सुनते हैं, वे सूंघते और चखते हैं, साथ ही महसूस भी करते हैं। वे दुःख और आनंद का अनुभव करते हैं, सोचते, विचार करते, प्रेम करते और इच्छा करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे वे संसार में करते थे। आत्माओं की दुनिया में उनकी एक आंतरिक स्मृति भी होती है जो संसार में उनकी स्मृति से कहीं अधिक सटीक होती है। संसार में रहते हुए भी उनके पास यह आंतरिक स्मृति पहले से ही थी, लेकिन उन्हें इसका एहसास नहीं था। आंतरिक स्मृति में व्यक्ति की सांसारिक यात्रा का सबसे छोटा विवरण भी समाहित होता है। एक व्यक्ति ने जो कुछ भी किया, सोचा, चाहा, देखा, सुना, महसूस किया, कहा और लिखा, वह सब इस आंतरिक स्मृति में समाहित है। इसीलिए इसे जीवन की पुस्तक कहा जाता है।

सामान्यतः, मृत्यु के बाद, स्वर्ग या नर्क पहुँचने से पहले व्यक्ति तीन अवस्थाओं से होकर गुजरता है। पहली अवस्था बाह्य मन की अवस्था है, दूसरी आंतरिक मन की अवस्था है, और तीसरी शिक्षा की अवस्था है, जहाँ व्यक्ति को स्वर्ग के लिए शिक्षा दी जाती है। इस प्रकार ये अवस्थाएँ आत्माओं की दुनिया में पहुँचती हैं। हालाँकि, ऐसे कई लोग हैं जो इन अवस्थाओं से नहीं गुजरते, बल्कि मृत्यु के तुरंत बाद सीधे स्वर्ग या नर्क ले जाए जाते हैं। जिनका पुनर्जन्म हुआ है और जिन्होंने पृथ्वी पर अपने जीवन के दौरान स्वर्ग के बारे में शिक्षा प्राप्त कर ली है, वे आत्माओं की दुनिया में बहुत कम समय बिताते हैं। वे बस अपने शरीर के साथ सांसारिक मैल झाड़ देते हैं, और फिर देवदूत उन्हें स्वर्ग ले जाते हैं। जो लोग हृदय से बुरे हैं, किन्तु बाहरी रूप से ईमानदार और अच्छे व्यक्ति होने का दिखावा करते हैं, तथा अच्छाई और ईमानदारी को धोखे के साधन के रूप में प्रयोग करके अपनी दुष्टता को बढ़ाते हैं, उन्हें सीधे नरक में डाल दिया जाता है।

ऐसे लोगों का वर्णन वचन में इस प्रकार किया गया है: "तुम चूना फिरी हुई कब्रों के समान हो, जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं" (मत्ती 23:27)। हालाँकि, आत्माओं के संसार में अधिकांश आत्माएँ वे हैं जिन्हें वहाँ स्वर्ग या नरक के लिए तैयार किया जा रहा है।

मृत्यु के बाद व्यक्ति की पहली अवस्था बाह्य मन की अवस्था होती है, जो संसार में उसकी अवस्था के समान होती है। उस समय, उनका चेहरा, वाणी और स्वभाव सामान्यतः संसार जैसा ही होता है। अधिकांश लोगों के लिए, यह पहली अवस्था केवल कुछ दिनों तक, कभी-कभी महीनों तक ही रहती है। हालाँकि, धीरे-धीरे व्यक्ति को उसकी दूसरी, या आंतरिक, अवस्था की ओर निर्देशित किया जाता है। अंततः, प्रत्येक व्यक्ति के बाह्य और आंतरिक मन एक-दूसरे के अनुरूप होने चाहिए ताकि वे एक इकाई के रूप में कार्य कर सकें। इस संबंध में, वे लोग धन्य हैं जिनके बाह्य अंग पहले से ही संसार में उनके आंतरिक अंगों के अनुरूप हैं। ऐसा केवल कुछ ही अच्छे लोगों के साथ होता है, और वे वे लोग हैं जिन्होंने वचन से प्रेम किया और उसकी आज्ञाओं के अनुसार जीवन जिया।

मृत्यु के बाद व्यक्ति की दूसरी अवस्था उसके आंतरिक अंगों की अवस्था होती है। उस समय, उसके बाह्य मन के अंग मानो सुप्त अवस्था में होते हैं, और वे वही बन जाते हैं जो वे संसार में रहते हुए आंतरिक रूप से थे, अर्थात् वे जो सोचते और चाहते थे। जो दुष्ट लोग ईमानदार और अच्छे होने का दिखावा करते हैं, वे इसी अवस्था में प्रकट होते हैं और तुरंत नरक में भेज दिए जाते हैं। जब आत्मा अपने आंतरिक अंगों की अवस्था में होती है, तो उसका वास्तविक स्वरूप प्रकट होता है। जो लोग संसार में पहले से ही आंतरिक अच्छाई की अवस्था में थे, वे अब और भी अधिक समझदारी और बुद्धिमत्ता से कार्य करते हैं, क्योंकि अब उनमें शरीर द्वारा उत्पन्न प्रतिरोध नहीं होता। ऐसे लोगों की बुद्धि परलोक में अत्यधिक बढ़ जाती है। आंतरिक अंगों की अवस्था में, प्रत्येक आत्मा का वास्तविक स्वरूप प्रकट होता है, और इसलिए इसी अवस्था में आत्माओं का स्वर्ग और नरक में विभाजन होता है। पहली अवस्था में, अर्थात् बाह्य अंगों की अवस्था में, अच्छी और बुरी आत्माएँ एक साथ थीं। अब जब अच्छी आत्माएं दुष्टों की मूर्खता को समझती हैं तो वे धीरे-धीरे उनसे दूर हो जाती हैं।

इसी प्रकार, दुष्ट आत्माएँ, अपनी इच्छाओं से प्रेरित होकर, अपनी दुष्टता के अनुरूप नरक समुदाय की ओर बढ़ना शुरू कर देती हैं।
आत्माओं के लोक में आत्माओं की तीसरी अवस्था उनकी सीखने की अवधि होती है। हालाँकि, यह अवस्था केवल अच्छी आत्माओं के लिए होती है, क्योंकि दुष्ट आत्माओं को अब अच्छाई और सत्य नहीं सिखाया जा सकता। दूसरी अवस्था के बाद, दुष्ट आत्माओं को उनकी दुष्टता के अनुरूप नरकों में भेज दिया जाता है, क्योंकि दूसरी अवस्था के दौरान, उनकी बुराइयाँ संगत अन्यायों के साथ मिल जाती हैं, इसलिए वे अपने जीवन के अंतिम चरण में पहुँच जाती हैं और हमेशा अपने नरकों में ही रहती हैं।
तीसरे लोक में, अच्छी आत्माओं को सत्य और सद्गुण सिखाए जाते हैं। यह शिक्षा स्वर्गदूतों द्वारा दी जाती है जिन्हें इसी उद्देश्य से आत्माओं के लोक में भेजा गया है। शिक्षा के कई स्थान हैं, और प्रत्येक व्यक्ति को ठीक वही शिक्षा प्राप्त होती है जो उसकी समझ और इच्छा के स्तर के अनुरूप होती है। आत्माओं के लोक में अपनी दूसरी अवस्था से गुजरने के बाद, प्रभु स्वयं अच्छी आत्माओं को इन शिक्षा के स्थानों तक पहुँचाते हैं। जिन लोगों ने संसार में सद्भावना तो रखी है, लेकिन झूठी धार्मिक शिक्षाओं को आत्मसात कर लिया है, उन्हें अपनी शिक्षा से पहले कठोर कष्ट सहने होंगे ताकि वे अपने द्वारा अर्जित पापों से शुद्ध हो सकें। शुद्धिकरण के इन स्थानों को निम्न भूमि कहा जाता है।
विभिन्न धर्मों से संबंधित आत्माओं को उन स्वर्गदूतों द्वारा शिक्षा दी जाती है जिन्होंने उसी धर्म को अपनाया था, लेकिन बाद में ईसाई बन गए, क्योंकि सच्चा ईसाई धर्म स्वर्ग में राज करता है और ईश्वरीय सत्यों से सबसे अधिक मेल खाता है। हालाँकि, ईसाई जगत से बहुत कम अच्छी आत्माएँ आती हैं, क्योंकि ईसाई अक्सर अपनी शिक्षाओं को व्यवहार में नहीं लाते, जो एक सच्चे धर्म के लिए आवश्यक है। हमारे ग्रह पर सर्वश्रेष्ठ आत्माएँ अफ्रीका और एशिया से आती हैं, क्योंकि वहाँ ऐसी जनजातियाँ हैं जो ईश्वरीय नियमों को अपने जीवन में दूसरों की तुलना में अधिक गहराई से लागू करना जानती हैं।
आत्माओं के जगत में सभी शिक्षाएँ परमेश्वर के वचन पर आधारित सिद्धांत के माध्यम से होती हैं। सिद्धांत वह दीपक है जो वचन के आंतरिक अर्थ को समझने के लिए समझ को प्रकाशित करता है, जो स्वर्ग में सभी शिक्षाओं का आधार है।

इस सिद्धांत को स्वर्गीय सिद्धांत कहा जाता है क्योंकि यह प्रभु से स्वर्ग के माध्यम से आया है। यह ठीक वैसा ही है जैसा स्वीडनबॉर्ग की कलम से पृथ्वी पर आया सिद्धांत, जिसे स्वर्गीय सिद्धांत भी कहा जाता है। गैर-ईसाइयों के लिए, दिव्य सिद्धांत उनके अपने धर्म के मानदंडों के अनुसार लागू होता है। आध्यात्मिक जगत में शिक्षण, संसार में शिक्षण से इस मायने में भिन्न है कि जानकारी मुख्यतः स्मृति में संग्रहीत नहीं होती, बल्कि तुरंत व्यावहारिक जीवन में लागू हो जाती है। थोड़े समय के शिक्षण के बाद, अच्छी आत्माएँ अपनी इच्छा और समझ के अनुरूप स्वर्गीय समुदाय में जाने के लिए तैयार हो जाती हैं।
जब कोई व्यक्ति ईश्वर के नियमों का पालन करता है क्योंकि वे ईश्वर के नियम हैं, तो प्रभु धीरे-धीरे उसमें पृथ्वी पर एक नई इच्छा और एक नई समझ पैदा करते हैं, जिसके साथ वह स्वर्ग में पहुँचता है। यदि कोई व्यक्ति ईश्वर के नियमों का पालन केवल इसलिए करता है ताकि लोग उसे ईमानदार और धर्मपरायण समझें, तो वह स्वर्ग नहीं पहुँचेगा, क्योंकि तब वह ईश्वर की नहीं, बल्कि संसार की सेवा कर रहा होता है। मनुष्य की आंतरिक इच्छा ही ईश्वर की सेवा करती है। दस आज्ञाओं (निर्गमन 20:2-17 और व्यवस्थाविवरण 5:6-21) में ईश्वरीय नियमों को पूरी तरह से प्रस्तुत किया गया है। हालाँकि दस आज्ञाएँ साधारण नैतिक नियमों जैसी लगती हैं, लेकिन अपने आंतरिक अर्थों के कारण उनमें मानवजाति का सर्वोच्च ज्ञान समाहित है। इसलिए, सुलैमान के मंदिर में, जो पत्राचार विज्ञान के अनुसार मानव मन की परतों का प्रतिनिधित्व करता है, दस आज्ञाओं से युक्त वाचा का संदूक सबसे पवित्र स्थान पर, करूबों के पंखों के नीचे रखा गया है (1 राजा 8:6)।
जो लोग ईश्वरीय नियमों के विरुद्ध संसार में रहे हैं, वे नरक में जाएँगे। इसलिए नहीं कि प्रभु उन्हें दंड के रूप में वहाँ डालेंगे, बल्कि इसलिए कि उनकी अपनी इच्छाएँ पृथ्वी पर पहले ही नारकीय हो चुकी हैं, इसलिए वे स्वयं ही नरक में खींचे चले जाते हैं। क्योंकि दुष्ट आत्मा को नरक की दुर्गंध, जो उसकी अपनी दुष्टता और अन्याय के अनुरूप है, अच्छी लगती है।

नरक

नरक स्वर्ग के विपरीत है। जबकि स्वर्ग में अच्छाई और सच्चाई का राज है, वहीं नरक में बुराई और झूठ का राज है।

नरक भी अपने आप में नहीं, बल्कि दिव्य प्रवाह से अस्तित्व में आता है। हालाँकि, नरक में दिव्य प्रवाह उलट जाता है, जिससे अच्छाई बुराई में बदल जाती है और सत्य असत्य में। स्वर्ग के देवदूत हमेशा प्रभु की ओर मुख करते हैं, जबकि नरक की आत्माएँ प्रभु से विमुख हो जाती हैं। स्वर्ग की तरह, नरक भी तीन प्रकार के होते हैं। पहला, या सामने वाला नरक, दुष्ट आत्माओं का निवास स्थान है। दूसरा, या मध्य नरक, शैतानी आत्माओं या शैतानों का निवास स्थान है। सबसे निचला, या पीछे वाला नरक, शैतानों का निवास स्थान है।
पहला नरक एक तरह से पहले स्वर्ग से मेल खाता है, और ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने पृथ्वी पर अपने जीवन के दौरान ईश्वर या आध्यात्मिक मामलों की परवाह नहीं की, लेकिन जो बुराई के आगे बहुत ज़्यादा नहीं झुके। मध्य नरक आध्यात्मिक स्वर्ग के विपरीत है, और इसमें वे लोग रहते हैं जिन्होंने अपने जीवन के दौरान मुख्य रूप से बौद्धिक बुराई या अन्याय को अपनाया, और सांसारिक चीज़ों को सबसे ज़्यादा पसंद किया। सबसे निचला नरक आकाशीय स्वर्ग के विपरीत है, और वहाँ रहने वाले शैतानों का प्रमुख गुण आत्म-प्रेम है। ये वे लोग हैं जिन्होंने संसार में रहते हुए स्वयं को सर्वोपरि माना। निम्नतम नरक में सभी धोखेबाज, क्रूर, स्वार्थी और निर्दयी लोग, साथ ही वे लोग भी शामिल हैं जिन्होंने व्यभिचार और अन्य प्रकार के अनैतिक कार्य किए। बहुत से लोग जो संसार में बहुत सफल रहे, लेकिन धर्म के माध्यम से अपनी आत्मा को शुद्ध नहीं कर पाए, वे निम्नतम नरकों में ही अपनी अंतिम विश्राम-स्थली पाएँगे। संसार में रहते हुए कोई व्यक्ति जितना अधिक ईश्वर का विरोध करेगा, वह उतना ही अधिक नरक में गिरेगा।
ईश्वर कई प्रकार से नरक को नियंत्रित करते हैं। सामान्य दिव्य प्रवाह और स्वर्गदूतों की उपस्थिति इसे नियंत्रित रखती है। हालाँकि, अभी भी स्वर्गदूत और स्वर्गदूतीय समुदाय हैं जिनका विशिष्ट कार्य नरक को नियंत्रित रखना है। चूँकि आध्यात्मिक जगत में, अच्छाई के सत्य में ही सारी शक्ति होती है, इसलिए अक्सर एक स्वर्गदूत की शक्तिशाली दृष्टि हज़ार दुष्ट आत्माओं को अचेत करने के लिए पर्याप्त होती है। नरक के भीतर, नियंत्रण बनाए रखने के लिए दंड का प्रयोग किया जाता है। बुराई की प्रकृति के आधार पर कई प्रकार के दंड होते हैं। अक्सर सबसे बुरे शैतानों को पर्यवेक्षक बनाया जाता है। दंड के बिना, दुष्ट आत्माएं क्रोध में पागल हो जाएंगी।

स्वर्ग में इसके विपरीत सत्य है, जहाँ देवदूत अपनी इच्छा से एक-दूसरे का भला करते हैं और उन्हें दंड की आवश्यकता नहीं होती। स्वर्ग पुरस्कारों से शासित है, और नरक दंड से। जिन लोगों ने ईश्वर को नहीं, बल्कि केवल प्रकृति को स्वीकार किया है, और जिन्होंने सभी चीज़ों को अपनी बुद्धि का फल माना है, ऊँचे पदों पर पहुँचे हैं और विभिन्न तरीकों से धन अर्जित किया है, वे अपने अगले जन्म में गुप्त विद्याओं का अध्ययन करेंगे, जो ईश्वरीय व्यवस्था का दुरुपयोग है, और उन्हें उनमें अपने जीवन का सबसे बड़ा आनंद मिलेगा।

जिन लोगों ने ईश्वरीय सत्यों को अपनी इच्छाओं पर लागू किया है और इस प्रकार उन्हें विकृत किया है, वे मूत्र से भरे स्थानों से प्रेम करते हैं, क्योंकि वे ऐसे प्रेम से उत्पन्न होने वाले आनंद के अनुरूप होते हैं।

जो लोग कंजूस और कंजूस रहे हैं, वे तहखानों में रहते हैं और सुअर की लीद और पेट में अपचित भोजन से आने वाली दुर्गंधयुक्त डकारों से प्रेम करते हैं।

जो लोग संसार में केवल विषय-भोगों में लीन रहते हैं, भोजन और सांसारिक सुखों को सर्वोपरि मानते हैं, वे अपने दूसरे जीवन में मल और शौचालयों से प्रेम करते हैं, जो उनके सुखों के अनुरूप हैं। ऐसे सुख आध्यात्मिक गंदगी हैं। वे स्वच्छ स्थानों से घृणा करते हैं।

जिनका आनंद व्यभिचार रहा है, वे अपना दूसरा जीवन वेश्यालयों में बिताते हैं, जहाँ सब कुछ गंदा और मलिन है। वे इन स्थानों से प्रेम करते हैं और पवित्र घरों से घृणा करते हैं। जैसे ही वे स्वयं को किसी पवित्र घर में पाते हैं, वे बेहोश हो जाते हैं। उनके अनुसार, विवाह के उल्लंघन से बड़ा आनंद और कुछ नहीं है।

जो लोग प्रतिशोधी रहे हैं और इस प्रकार एक उग्र और क्रूर चरित्र विकसित कर चुके हैं, वे सड़ती हुई लाशों से प्रेम करते हैं और ऐसे नरकों में निवास करते हैं, इत्यादि। (दे कोएलो एट दे इन्फर्नो, पृष्ठ 488)।"

आशा है कि उपरोक्त पाठ इस पुस्तक के पाठक को यह सोचने पर मजबूर करेगा कि उनका अपना जीवन अंततः उन्हें कहाँ ले जाएगा, स्वर्ग या नरक। यह पुस्तक स्वर्ग की कुंजियाँ प्रदान करती है, इसलिए मैं पाठकों से आग्रह करता हूँ कि वे इस पुस्तक की शिक्षाओं को अपने जीवन में लागू करें।

प्रभु परमेश्वर

प्रभु स्वर्ग और पृथ्वी पर परमेश्वर हैं। प्रभु स्वर्ग, नरक और संपूर्ण ब्रह्मांड पर शासन करते हैं। नए नियम में, परमेश्वर को प्रभु कहा गया है। पुराने नियम में, परमेश्वर को यहोवा, यहोवा परमेश्वर, ईश्वर या प्रभु परमेश्वर कहा गया है; अन्य नामों का भी प्रयोग किया गया है। परमेश्वर एक है; कोई अन्य देवता नहीं हैं।
यह मान्यता कि परमेश्वर एक है, चर्च की सभी शिक्षाओं में सर्वोच्च और सबसे अंतरंग है। धर्मशास्त्रीय विषय मानव मन के उच्चतम स्तर पर हैं, और उनके केंद्र में परमेश्वर हैं, जो एक हैं। परमेश्वर और स्वर्ग से मानव आत्मा में यह बोध प्रवाहित होता है कि परमेश्वर का अस्तित्व है और वह एक हैं। परमेश्वर स्वयं में सार (एस्से) हैं, जो यहोवा हैं। परमेश्वर स्वयं शाश्वत हैं और स्वयं अनंत काल हैं। वह ब्रह्मांड का रचयिता और पालनकर्ता है।
ईश्वर स्वयं प्रेम है, अर्थात् स्वयं अच्छाई है और स्वयं बुद्धि है, अर्थात् स्वयं सत्य है, अर्थात् स्वयं जीवन है। उसने दिव्य प्रेम से दिव्य बुद्धि की सहायता से, अर्थात् दिव्य सत्य की सहायता से दिव्य अच्छाई से ब्रह्मांड की रचना की।
ब्रह्मांड की रचना में उसका लक्ष्य मनुष्यों से बने स्वर्गदूतों का एक स्वर्गीय राज्य स्थापित करना था। उसने इसी उद्देश्य से संपूर्ण ब्रह्मांड की रचना की। यह उद्देश्य, जो सभी उद्देश्यों का उद्देश्य है, ईश्वर में है और ईश्वर से ही आध्यात्मिक जगत की आदि वस्तुओं से लेकर प्राकृतिक जगत की अंतिम वस्तुओं तक, आगे बढ़ता है और इन अंतिम वस्तुओं से आदि वस्तुओं तक, इस प्रकार ईश्वर के पास लौटता है।

ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापी हैं। इन गुणों को तब तक नहीं समझा जा सकता जब तक कोई यह न जान ले कि व्यवस्था क्या है और सृष्टि में उन्होंने ब्रह्मांड और उसके सभी भागों में व्यवस्था स्थापित की। उन्होंने अपनी रचना, मनुष्य को, तर्कसंगत समझ और स्वतंत्र इच्छाशक्ति प्रदान की, और जब मनुष्य ने अपनी स्वतंत्र इच्छाशक्ति का दुरुपयोग किया, तो उसने नरक की रचना की। ईश्वर मनुष्य की स्वतंत्र इच्छाशक्ति को नहीं छीन सकते, क्योंकि यह ईश्वरीय व्यवस्था से संबंधित है, और इसके बिना मनुष्य मनुष्य नहीं होता। ईश्वर की सर्वशक्तिमानता उनकी व्यवस्था के अनुसार कार्य करती है, और वे अपनी व्यवस्था के विपरीत कार्य नहीं कर सकते।
ईश्वर अनंत हैं, और वे समय और स्थान से पहले अस्तित्व में थे। स्थान के संबंध में ईश्वर की अनंतता उनकी विशालता है, और समय के संबंध में, उनकी अनंतता है। हालाँकि, उनकी विशालता में कोई स्थान नहीं है और उनकी अनंतता में कोई समय नहीं है।
यहोवा ईश्वर ने सूर्य की सहायता से, जिसके केंद्र में वे हैं, आध्यात्मिक जगत की रचना की, और आध्यात्मिक जगत की सहायता से अप्रत्यक्ष रूप से प्राकृतिक जगत की रचना की। आध्यात्मिक वस्तुएँ भौतिक हैं और प्राकृतिक वस्तुएँ भौतिक हैं, और ये भौतिक से उत्पन्न हुई हैं और भौतिक से ही अस्तित्व में हैं। आध्यात्मिक जगत में, ईश्वर सभी वस्तुओं की रचना एक क्षण में करता है। आध्यात्मिक जगत का सूर्य यहोवा परमेश्वर का शुद्ध प्रेम है, जो यीशु मसीह के रूप में इसके केंद्र में है, और प्राकृतिक जगत का सूर्य शुद्ध अग्नि है। आध्यात्मिक जगत के सूर्य से आने वाली हर चीज़ जीवित है, और प्राकृतिक जगत के सूर्य से आने वाली हर चीज़ मृत है।

प्रभु, उद्धारक और उद्धारकर्ता

यहोवा परमेश्वर मानवता पर अवतरित हुए और मानवता को छुड़ाने और बचाने के लिए मानवता को धारण किया। वे यहोवा के रूप में अवतरित हुए, जिनके पास दिव्य सत्य और दिव्य अच्छाई थी, अर्थात वे परमपिता परमेश्वर थे। इससे पहले, आत्माओं के जगत और पृथ्वी पर नरक की शक्ति इतनी बढ़ गई थी कि वह पहले से ही स्वर्ग को ख़तरे में डाल रही थी और मानव मन में स्वर्ग के प्रवाह को अवरुद्ध कर रही थी। दुष्ट आत्माओं ने आत्माओं के जगत को भर दिया था, और पूरी मानवता अनंत विनाश के कगार पर थी। अब उद्धार के लिए स्वर्गदूतों की शक्ति और कौशल पर्याप्त नहीं थे; स्वयं परमेश्वर के अवतार की आवश्यकता थी।

निकेया की परिषद के अनुसार, आधुनिक ईसाई धर्म यह सिखाता है कि ईश्वर ने संसार की रचना से पहले अनंत काल में पुत्र को जन्म दिया और उसे मानवजाति के उद्धार और उद्धार के लिए मानवता में भेजा। यह समझ झूठी है और वचन और तर्क के विपरीत है, क्योंकि ईश्वर एक है और किसी अन्य ईश्वर को जन्म नहीं दे सकता। यहोवा ईश्वर स्वयं मानवता में अवतरित हुए और उन्होंने कुँवारी मरियम में मानव रूप धारण किया। यह वचन के निम्नलिखित अंशों से स्पष्ट है:

तब मरियम ने स्वर्गदूत से कहा: यह कैसे होगा? मैं तो किसी पुरुष को जानती ही नहीं? स्वर्गदूत ने उसे उत्तर दिया: पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की शक्ति तुझ पर छाया करेगी: इसलिए वह पवित्र जो तुझ से जन्म लेगा, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। (लूका 1:34,35)।

जब वह इन बातों के बारे में सोच ही रहा था, तो प्रभु का एक दूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा, "हे यूसुफ, दाऊद की सन्तान, अपनी पत्नी मरियम को अपने यहाँ ले आने से मत डर; क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह एक पुत्र जनेगी, और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।" (मत्ती 1:20, 21)।

यह सब इसलिए हुआ है ताकि प्रभु की कही हुई बात पूरी हो:

देखो, एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा, जिसका अर्थ है, "परमेश्वर हमारे साथ।" तब यूसुफ नींद से जागकर प्रभु के दूत की आज्ञा मानकर अपनी पत्नी को अपने यहाँ ले आया।
और जब तक वह अपने जेठे पुत्र को जन्म न दे चुकी, तब तक उसके साथ रहा न: और उसने उसका नाम यीशु रखा। (मत्ती 1:23-25)।

आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। आदि में परमेश्वर के साथ भी वही था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ; और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कुछ भी उसके बिना उत्पन्न न हुआ। और वचन देहधारी हुआ, और हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी महिमा देखी, जो पिता के एकलौते की महिमा थी, जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण थी। (यूहन्ना 1:1-3, 14)।

"वचन देहधारी हुआ" परमेश्वर के देहधारण को दर्शाता है। उपरोक्त उद्धरणों में "पवित्र आत्मा" उस दिव्य सत्य को दर्शाता है जो यहोवा परमेश्वर से निकलता है, जिन्होंने एक दिव्य चमत्कार के रूप में मरियम के अंडकोष को निषेचित किया था। "परमप्रधान की शक्ति" दिव्य भलाई को दर्शाती है, जो यहोवा परमेश्वर, या पिता में भी थी, जो यीशु की आत्मा थे। एक बच्चा अपनी आत्मा और जीवन अपने पिता से और अपना शरीर अपनी माता से प्राप्त करता है, और शरीर इसी आत्मा से जीवित रहता है। इससे यह स्पष्ट है कि प्रभु ने अपनी आत्मा और जीवन यहोवा परमेश्वर से प्राप्त किया और अपनी आत्मा में स्वयं परमेश्वर थे। लेकिन वह अपनी माँ की ओर से मानव थे और धीरे-धीरे उन्होंने इस मानवता को दिव्य सत्य में बदल दिया। इसीलिए प्रभु ने यहोवा परमेश्वर को अक्सर अपना पिता कहा, और यहोवा परमेश्वर ने उन्हें अपना पुत्र कहा। कैथोलिक और प्रोटेस्टेंटों को यह कहते हुए सुनना इससे ज़्यादा घृणित और क्या हो सकता है कि यीशु की आत्मा उनकी माता मरियम या उनके पिता जोसेफ से आई थी? परमेश्वर के पुत्र का जन्म संसार की रचना से पहले अनंत काल में नहीं हुआ था, बल्कि पृथ्वी पर और समय के साथ यीशु मसीह के रूप में हुआ था, जो संसार के उद्धारक और उद्धारकर्ता हैं। यीशु एक यहूदी के रूप में पैदा हुए थे क्योंकि यहूदियों के नरक सबसे बुरे थे, और उन्हें सबसे बुरे नरकों पर विजय प्राप्त करना शुरू करना था। स्वयं यहोवा परमेश्वर का अवतार क्यों आवश्यक था? क्योंकि स्वर्गदूतों की शक्ति पर्याप्त नहीं थी, और यहोवा परमेश्वर स्वयं के रूप में नरक की आत्माओं के पास नहीं जा सकते थे, जैसे सूर्य मनुष्य के निकट नहीं आ सकता। इसलिए, उन्होंने एक साधारण मानव का शरीर धारण किया, जिसमें वे नरक के आक्रमणों, अर्थात् प्रलोभनों का सामना करने में सक्षम थे। वह अपनी आत्मा में स्वयं ईश्वर थे, लेकिन अपनी माँ की ओर से एक साधारण इंसान थे। मरियम का शरीर भी सभी मनुष्यों की तरह, वंशानुगत बुराई से दूषित था।

जैसे-जैसे वे प्रलोभनों या नरक के आक्रमणों पर विजय प्राप्त करते गए, उन्होंने अपनी माता से प्राप्त इस शरीर को धीरे-धीरे त्याग दिया, और क्रूस पर अपनी मृत्यु में, जो नरक का अंतिम आक्रमण था, उन्होंने अपनी माता से प्राप्त शरीर के अंतिम अवशेष भी त्याग दिए और इस शरीर को तीन दिनों में दिव्य मनुष्य या दिव्य सत्य बना दिया, और अंततः स्वयं को दिव्य अच्छाई, जो पिता थे, के साथ पूर्णतः एकाकार कर लिया, और इस प्रकार उस पिता के पास लौट गए, जिनसे वे आए थे।
जब यीशु पृथ्वी पर रहते थे, तो उनकी दो अलग-अलग अवस्थाएँ थीं, विनम्रता और महिमा। जब वे विनम्रता की अवस्था में होते थे, तो वे उस मानवता में होते थे जो उन्हें अपनी माता से विरासत में मिली थी और मानो पिता से अलग हो गए थे, और उन्हें प्रलोभन दिया गया और क्रूस पर मृत्यु का दंश सहना पड़ा। इस अवस्था में, उन्होंने पिता से ऐसे प्रार्थना की मानो वे कोई अजनबी हों। प्रलोभन का अंतिम चरण निराशा है, और इसीलिए उन्होंने क्रूस पर प्रार्थना की, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया?" (मत्ती 27:46)। अस्वीकृति का अर्थ था अपनी माँ से विरासत में मिले शरीर का पूर्ण त्याग। जब वे रूपांतरण की अवस्था में थे, तब वे पिता के साथ एकाकार हो गए थे। रूपांतरण का अर्थ है दिव्य हो जाना। रूपांतरण की अवस्था में, वे अपने तीन शिष्यों के सामने रूपांतरित रूप में प्रकट हुए (मत्ती 17:1-8)। रूपांतरण की अवस्था में, उन्होंने चमत्कार किए और कहा कि वे और पिता एक हैं, पिता उनमें हैं और वे पिता में हैं, और जो कुछ पिता का है वह सब उनका है। वे बीमारों को चंगा नहीं कर सकते थे और मृतकों को जीवित नहीं कर सकते थे, जब तक कि स्वयं परमेश्वर, जो उनकी आत्मा थे, उनकी सहायता न हो। जब पिता के साथ उनका मिलन पूर्ण हो गया, तो उन्होंने कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है" (मत्ती 28:18)। प्रलोभनों पर विजय पाने के साथ-साथ यीशु धीरे-धीरे महिमावान होते गए। इसका अर्थ यह है: "हे पिता, अपने नाम की महिमा कर! तब स्वर्ग से एक आवाज़ आई, 'मैंने इसकी महिमा की है, और मैं इसे फिर से महिमा दूँगा'" (यूहन्ना 12:28)। यहोवा परमेश्वर अपने दिव्य सार में दुनिया में अवतरित हुए ताकि वे मोचन को पूरा कर सकें, जिसका अर्थ था नरक को हराना, स्वर्ग में व्यवस्था लाना और नए चर्च की स्थापना करना, जो प्रारंभिक ईसाई चर्च था।

प्रभु उद्धारकर्ता हैं जिन्होंने मानवता को नरक की शक्ति से मुक्त किया और अपनी मानवता को महिमामंडित किया, या दिव्य बनाया, जिसके बाद वे सदैव दिव्य पुरुष हैं जो स्वर्ग के सूर्य में दृश्यमान हैं, जहाँ से दिव्य प्रेम और दिव्य ज्ञान प्रवाहित होता है।
इस प्रकार, मुक्ति में तीन बातें शामिल थीं: नरक की पराजय, स्वर्ग में व्यवस्था की पुनर्स्थापना, और नए चर्च की स्थापना। मुक्ति के बाद, लोगों को पश्चाताप के माध्यम से उद्धार का अवसर दिया गया: मुक्ति का अर्थ यह नहीं है कि कोई व्यक्ति पश्चाताप के बिना उद्धार पाता है। वर्तमान ईसाई चर्च यह मानने में गंभीर रूप से गलत हैं कि क्रूस पर चढ़ना पश्चाताप के बिना मुक्ति और मोक्ष था। यह झूठ, इस झूठ के साथ कि ईश्वर के तीन अलग-अलग व्यक्ति हैं, अर्थात् तीन अलग-अलग देवता, अर्थात् अथानासियस का पंथ, ने सभी ईसाई चर्चों और संप्रदायों को इस हद तक दूषित कर दिया है कि उनका अब ईश्वर या स्वर्ग से कोई संबंध नहीं है।

पवित्र आत्मा

पवित्र आत्मा वह दिव्यता है जो एक, अनंत, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापी ईश्वर से उनकी दिव्य मानवता के माध्यम से निकलती है, जिसे उन्होंने संसार में स्वयं धारण किया। पवित्र आत्मा कोई पृथक व्यक्ति या ईश्वर नहीं है जो पिता और पुत्र से उत्पन्न होता है, जैसा कि आधुनिक ईसाई चर्च निकेने पंथ के अनुसार बताते हैं (रूढ़िवादी "पुत्र" शब्द को छोड़ देते हैं)। पवित्र आत्मा कुछ और नहीं बल्कि वह दिव्य धारा है जो प्रभु पिता से निकलती है और मानव जीवन का निर्माण करती है, और इसलिए, मानवीय समझ और प्रेम का भी। पवित्र आत्मा के बिना, मनुष्य एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता।
दिव्यता, जिसे पवित्र आत्मा कहा जाता है, इस प्रकार दिव्य मानवता से निकलती है, स्वर्गदूतों के स्वर्ग से होकर संसार में आती है, और इस प्रकार स्वर्गदूतों से मनुष्यों तक पहुँचती है। यह सीधे तीसरे स्वर्ग तक जाती है, अप्रत्यक्ष रूप से उससे होकर मध्य स्वर्ग तक, और इसी प्रकार सबसे बाहरी स्वर्ग तक जाती है। हालाँकि, स्वर्गदूत पवित्र आत्मा नहीं हैं। फिर यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक और चर्च में मुख्यतः पुरोहितों से आम लोगों तक पहुंचता है।

दिव्य पुरुष, अर्थात् प्रभु यीशु मसीह के अलावा कोई भी पवित्र आत्मा प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि यह परमपिता परमेश्वर से, अर्थात् उनके द्वारा भेजी गई उनकी आत्मा से, प्रवाहित होता है, और पवित्र आत्मा का अर्थ है दिव्य प्रवाह। परमपिता परमेश्वर पवित्र आत्मा, अर्थात् अपनी दिव्यता, प्रभु के माध्यम से लोगों तक नहीं भेजते, बल्कि प्रभु स्वयं इसे परमपिता परमेश्वर से, अर्थात् अपनी आत्मा से भेजते हैं।
दिव्य प्रवाह, या पवित्र आत्मा, सामान्यतः निम्नलिखित आध्यात्मिक प्रभावों को समाहित करता है: सुधार और पुनर्जन्म, जिसके बाद नवीनीकरण, पुनरोद्धार, पवित्रीकरण और औचित्य, और अंततः बुराई से शुद्धिकरण, पापों की क्षमा और मोक्ष प्राप्त होता है। ये प्रभु से याजकों और सामान्य लोगों, दोनों तक प्रवाहित होते हैं, और ये उन लोगों द्वारा प्राप्त किए जाते हैं जो प्रभु में रहते हैं। ज्ञानोदय और शिक्षा का पुरोहिताई पर विशेष प्रभाव पड़ता है। इनका प्रभाव इसलिए होता है क्योंकि ये पुरोहित के कर्तव्यों का हिस्सा हैं और अभिषेक के लिए भी आवश्यक हैं।
पवित्र आत्मा, वास्तव में, ईश्वरीय सत्य का अर्थ है, और इस प्रकार वचन भी, और इस अर्थ में प्रभु स्वयं पवित्र आत्मा भी हैं। यह तथ्य कि प्रभु स्वयं पवित्र आत्मा भेजते हैं, इस कथन से भी स्पष्ट है कि "क्योंकि आत्मा अभी तक नहीं दिया गया था, क्योंकि यीशु अभी तक महिमान्वित नहीं हुए थे" (यूहन्ना 7:39), और यह कि यीशु ने अपने शिष्यों पर फूंका: "और यह कहकर, उसने उन पर फूंका और उनसे कहा, 'पवित्र आत्मा ग्रहण करो'" (यूहन्ना 20:22)।

दिव्य त्रिदेव

ईश्वर की सही समझ कलीसिया के विश्वास का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। कलीसिया का संपूर्ण धर्मशास्त्र इसी पर निर्भर करता है। यदि ईश्वर की समझ गलत है, तो कलीसिया का संपूर्ण सिद्धांत गलत है, मानो किसी श्रृंखला की पहली कड़ी ही टूट गई हो। स्वर्ग या नरक में प्रत्येक व्यक्ति का स्थान ईश्वर के बारे में उसकी समझ से निर्धारित होता है: ईश्वर के बारे में उसकी समझ जितनी सटीक और सही होगी, उसका स्थान उतना ही बेहतर होगा। और नरक के शैतान और राक्षस या तो परमेश्वर के बारे में पूरी तरह से गलत समझ रखते हैं या फिर परमेश्वर के अस्तित्व को पूरी तरह से नकारते हैं।

दिव्य त्रिदेव का अस्तित्व एक ऐसा तथ्य है जो वचन से स्पष्ट होता है: "इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो" (मत्ती 28:19)। इसके अतिरिक्त, यीशु ने पिता से प्रार्थना की, उनके बारे में और उनके साथ बातें कीं। यीशु ने यह भी कहा कि वह पवित्र आत्मा को भेजेंगे। प्रेरित अक्सर अपने पत्रों में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का उल्लेख करते हैं। इसलिए त्रिदेव एक तथ्य है।
दिव्य त्रिदेव की सही समझ अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह स्वयं परमेश्वर की भी सही समझ है। और सही समझ केवल उद्धारकर्ता प्रभु परमेश्वर के पास जाकर और उनके मार्गदर्शन में वचन को पढ़कर ही प्राप्त की जा सकती है, क्योंकि वे वचन के परमेश्वर हैं और वे आत्मज्ञान प्रदान करते हैं। लेकिन दूसरी ओर, यदि कोई व्यक्ति प्रभु से आत्मज्ञान प्राप्त किए बिना अपनी समझ से वचन को पढ़ता है, तो उसे सत्य नहीं मिलेगा, भले ही वह वचन को हज़ार बार पढ़े। अब, ईसाई कलीसियाओं द्वारा वचन की व्याख्याएँ उनकी अपनी समझ के आधार पर की गई हैं, अर्थात्, कलीसिया परिषदों द्वारा सामूहिक निर्णयों के रूप में, इसलिए वे ईश्वर-प्रबुद्ध समझ से उत्पन्न नहीं हुई हैं, बल्कि अज्ञानी मन की उपज हैं। इसलिए कलीसिया परिषदों की ये व्याख्याएँ झूठी हैं। मैं अथानासियस के पंथ के एक अंश से त्रिदेव की झूठी व्याख्या का उदाहरण लूँगा, जिसे सभी ईसाई कलीसियाएँ मान्यता देती हैं:

"इसी प्रकार, पिता ईश्वर है, पुत्र ईश्वर है, और पवित्र आत्मा ईश्वर है, फिर भी तीन ईश्वर नहीं, बल्कि एक ईश्वर हैं। इसी प्रकार, पिता प्रभु है, पुत्र प्रभु है, और पवित्र आत्मा प्रभु है, फिर भी तीन प्रभु नहीं, बल्कि एक प्रभु हैं। जिस प्रकार ईसाई सत्य हमें प्रत्येक व्यक्ति को अलग-अलग ईश्वर और प्रभु के रूप में स्वीकार करने की अपेक्षा करता है, उसी प्रकार हमारा सामान्य ईसाई धर्म हमें तीन ईश्वरों या तीन प्रभुओं की बात करने से मना करता है।" इसके अलावा, नाइसिन पंथ कहता है कि यीशु का जन्म अनंत काल में दुनिया के निर्माण से पहले हुआ था: "हम एक भगवान, यीशु मसीह, परमेश्वर के एकमात्र पुत्र में विश्वास करते हैं, जो सभी युगों से पहले पिता से पैदा हुए थे।"

संपूर्ण आधुनिक ईसाई धर्म इन दो झूठे दावों पर आधारित है: कि यीशु का जन्म समय की शुरुआत से पहले पिता से हुआ था और यह कि तीन अलग-अलग देवता हैं जो समय की शुरुआत से पहले से अस्तित्व में हैं।
दिव्य त्रिदेव की एक बिल्कुल अलग समझ ईश्वर-प्रेरित समझ से, यानी स्वीडन-बोर्ग के धर्मशास्त्रीय लेखन से आती है:

"ये तीन, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, एक ईश्वर के तीन मूलभूत गुण हैं, जो एक को बनाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे आत्मा, शरीर और कर्म मिलकर एक मानव बनाते हैं। हर कोई मानता है कि ये तीन मूलभूत गुण, आत्मा, शरीर और कर्म, उद्धारकर्ता प्रभु परमेश्वर में थे और हैं। केवल मसीह-विरोधी ही इस बात से इनकार कर सकता है कि उसकी आत्मा यहोवा पिता थी, क्योंकि वचन के दोनों नियमों में उसे यहोवा का पुत्र, परमप्रधान परमेश्वर का पुत्र, एकलौता कहा गया है, इसलिए पिता की दिव्यता, मनुष्य में आत्मा की तरह, उसकी पहली मूलभूत विशेषता है। इसका अर्थ है कि जिस पुत्र को मरियम ने जन्म दिया, वह इस दिव्य आत्मा का शरीर है, क्योंकि माँ के गर्भ में आत्मा से उत्पन्न और उत्पन्न होने वाले शरीर के अलावा और कुछ नहीं पैदा होता है, और यह तदनुसार दूसरी मूलभूत विशेषता है। कर्म तीसरा मूलभूत गुण हैं। विशेषताएँ, क्योंकि वे आत्मा और शरीर के सहयोग से उत्पन्न होती हैं, और जो उत्पन्न होता है उसका सार वही होता है जो उसे उत्पन्न करता है। ये तीन मूलभूत विशेषताएँ, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, प्रभु में वैसे ही हैं जैसे आत्मा, शरीर और कर्म मनुष्य में हैं।" (वेरा क्रिस्टियाना रिलिजियो, संख्या 166 और 167)।

उपरोक्त से, हम देख सकते हैं कि यीशु का जन्म कुंवारी मरियम से एक अस्थायी शरीर के रूप में हुआ था, न कि पिता परमेश्वर से शाश्वत रूप से। फिर भी, वह अपने पिता, अर्थात् अपनी आत्मा के संदर्भ में परमेश्वर थे। और उन्होंने धीरे-धीरे और अंततः, क्रूस पर अपनी मृत्यु के माध्यम से, अपनी माँ से विरासत में मिले शरीर को पूरी तरह से अस्वीकार और महिमामंडित किया, अर्थात्, उन्होंने इसे दिव्य बना दिया, और इसी से दिव्य मनुष्य का जन्म हुआ, जो अब स्वर्ग के सूर्य के भीतर है।

यीशु का यह महिमामय शरीर स्वयं सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, जो देहधारण के कारण अब स्वाभाविक दिव्यता भी प्राप्त कर चुका है, जो देहधारण से पहले उसके पास नहीं थी। स्वाभाविक दिव्यता दिव्य पुरुष है, जो परमेश्वर यहोवा, अर्थात् उद्धारकर्ता प्रभु परमेश्वर यीशु मसीह का दिव्य शरीर है। यीशु के इस दिव्य जन्म की भविष्यवाणी की गई थी: "इसलिए प्रभु स्वयं तुम्हें एक चिन्ह देगा: एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी," जिसका अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ" (यशायाह 7:14)। इसलिए दिव्य त्रित्व प्रभु परमेश्वर, उद्धारकर्ता और उद्धारकर्ता यीशु मसीह में है, ठीक वैसे ही जैसे एक साधारण मनुष्य में आत्मा, शरीर और कर्म होते हैं। यीशु की सांसारिक यात्रा के दौरान, यह त्रित्व अभी अस्तित्व में नहीं था, लेकिन उस समय यीशु उस शरीर में थे जो उन्हें अपनी माँ से विरासत में मिला था। हालाँकि जब उन्होंने चमत्कार किए या अपने शिष्यों को अपने महिमामय शरीर में दिखाई दिए (मत्ती 17:1-8), तो उन्होंने पिता की ओर से कार्य किया, लेकिन पिता के साथ उनका वास्तविक मिलन क्रूस पर उनकी मृत्यु के बाद ही हुआ, जब उन्होंने अपनी माँ से विरासत में मिले शरीर के अवशेषों को पूरी तरह से उतार फेंका और अपना दिव्य शरीर धारण किया।

आधुनिक ईसाई चर्चों का यह विश्वास कि समय की शुरुआत से पहले तीन ईश्वर पैदा हुए थे, इस मौखिक स्वीकारोक्ति से खारिज नहीं किया जा सकता कि एक ईश्वर है, जैसा कि अथा-नासियस का पंथ आग्रह करता है: "जैसे ईसाई सत्य हमें प्रत्येक व्यक्ति को अलग-अलग ईश्वर और प्रभु के रूप में स्वीकार करने की आवश्यकता बताता है, वैसे ही सामान्य ईसाई धर्म हमें तीन ईश्वरों या प्रभुओं की बात करने से मना करता है।" एक ईश्वर की ऐसी मौखिक स्वीकारोक्ति इस विचार के विपरीत है कि तीन ईश्वर हैं। इससे यह भ्रम पैदा होता है कि ईश्वर एक है या तीन, और इस विचार को जन्म देता है कि ईश्वर है ही नहीं। यही प्रकृतिवाद और नास्तिकता का स्रोत है, जो हमारे समय में बहुत आम हैं।

कुछ धर्मशास्त्रियों का यह विचार कि इन तीनों ईश्वरों का सार एक है, उन्हें एक ईश्वर नहीं बनाता, बल्कि ऐसा आध्यात्मिक विचार यह सुझाव देता प्रतीत होता है कि ये तीनों ईश्वर एक ही मन के हैं। अथानासियस का पंथ अनिवार्य रूप से तीन ईश्वरों के विचार की ओर ले जाता है। तीन ईश्वरों का विचार कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट, दोनों ही धर्मसिद्धांतों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

यह सिद्धांत इस बात पर ज़ोर देता है कि परमपिता परमेश्वर ने अपने पुत्र को मानवता के उद्धार और उद्धार के लिए भेजा और यह कार्य पवित्र आत्मा को सौंपा। दूसरे शब्दों में, एक परमेश्वर ने दूसरे को भेजा और तीसरे की सहायता से कार्य किया।
स्वीडनबॉर्ग का पवित्र त्रित्व का नया यरूशलेम सिद्धांत, कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा परमेश्वर में हैं, अर्थात् प्रभु परमेश्वर उद्धारकर्ता यीशु मसीह में, ठीक उसी प्रकार जैसे आत्मा, शरीर और कर्म एक साधारण मनुष्य में होते हैं, वचन और तर्क दोनों के अनुरूप है और सिद्ध करता है कि परमेश्वर एक है। आज की कलीसियाओं द्वारा सिखाए गए त्रित्व के झूठे सिद्धांत ने ईसाई धर्मशास्त्र को इस हद तक विकृत कर दिया है कि कोई सत्य शेष नहीं रह गया है। त्रित्व का सच्चा सिद्धांत परमेश्वर की सच्ची समझ भी है, जो मनुष्य को परमेश्वर से जोड़ती है और उन लोगों तक परमेश्वर की उपस्थिति पहुँचाती है जो इसके बारे में सोचते हैं। कलीसिया परिषदों की घोषणाएँ, जैसे कि निकेने और अथानासियन पंथ, दिव्य नहीं हैं, बल्कि परमेश्वर से ज्ञान-प्राप्ति के बिना मानवीय समझ से उत्पन्न होती हैं। ऐसे सामूहिक निर्णय दिव्य सत्य नहीं हैं और इसलिए इन्हें मिथ्या और निरर्थक मानकर अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए। ईश्वरीय सत्य केवल वही व्यक्ति व्यक्त कर सकता है जिसे स्वयं ईश्वर से ज्ञान प्राप्त हुआ हो, और ऐसे ही व्यक्ति थे इमानुएल स्वीडनबॉर्ग। प्रेरितिक पंथ ईश्वर के पुत्र को मान्यता नहीं देता, जो अनंत काल में जन्मे थे, और इस दृष्टि से यह सही है।

साहित्य

स्वीडनबॉर्ग:
सर्वनाश की व्याख्या। अप्रकाशित कृति एपोकैलिप्सिस एक्सप्लिकाटा का अंग्रेजी अनुवाद। लंदन 1968।
एपोकैलिप्सिस रेवेलाटा। एम्स्टर्डम 1766।
अर्काना कोएलेस्टिया। लंदन 1749-1756।
डॉक्ट्रिना नोवे हिरोसोलिमा डे डोमिनो। एम्स्टर्डम 1763। वेरा क्रिस्टियाना रिलिजियो। एम्स्टर्डम 1771।

बाइबल, या परमेश्वर का वचन

आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। वह आदि में परमेश्वर के साथ था। उसी के द्वारा सब कुछ बना; जो कुछ बना है, उसमें से कुछ भी उसके बिना नहीं बना। और वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच डेरा किया, और हमने उसकी महिमा देखी, ऐसी महिमा जैसी पिता से एकलौते पुत्र की है, जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण है।" (यूहन्ना 1:1-3, 14)।

इस पुस्तक की शुरुआत में, मैंने 1973 की एक रात के अपने अनुभव का वर्णन किया है, जब मेरी दाहिनी आँख में एक प्रकार की आंतरिक दृष्टि जागृत हुई, और मैंने अन्य बातों के अलावा, बाइबल के लेखन में निहित "गुप्त कोड" को देखा। स्वीडनबॉर्ग की रचनाओं की खोज के बाद, मुझे एहसास हुआ कि मेरा अपना अनुभव और बाइबल के "आंतरिक अर्थ" की स्वीडनबॉर्ग की व्याख्या एक-दूसरे से पूरी तरह मेल खाती थी। मुझे अपनी दाहिनी आँख के साथ जो हुआ था, उसका भी स्पष्टीकरण मिला। मैं वर्षों से मानव बुद्धि और बुद्धिमान लोगों के लिए एक स्पष्टीकरण खोज रहा था। मेन्सा, विश्वविद्यालय या 20वीं सदी के साहित्य में मुझे कोई भी सच्चा बुद्धिमान व्यक्ति नहीं मिला था। स्वीडनबॉर्ग में ही मेरे प्रयासों को अंततः फल मिला। तब से, मुझे स्वीडनबॉर्ग की रचनाओं और वचन में अपने सभी मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक और धार्मिक प्रश्नों के उत्तर मिल गए हैं। मुझे किसी भी चीज़ पर विश्वास करने की आवश्यकता नहीं थी। स्वीडनबॉर्ग द्वारा प्रस्तुत परमेश्वर के वचन के आंतरिक अर्थ को समझना मेरे लिए आसान नहीं था, क्योंकि मैंने अपने अनुभवों, यानी अपने ज्ञानोदय के माध्यम से, पहले ही इसका ज्ञान प्राप्त कर लिया था।
आधुनिक ईसाई धर्मशास्त्री वचन के आंतरिक अर्थों के बारे में लगभग कुछ भी नहीं जानते, लेकिन बाइबल को एक साधारण पुस्तक मानते हैं। यह बात उनके द्वारा मूल भाषाओं से बाइबल का अनुवाद करते समय दिए गए स्पष्टीकरणों को पढ़कर स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। वे बाइबल को उस समय के लोगों की रचना मानते हैं और इसी आधार पर, बाइबल के संदेश को आधुनिक लोगों पर लागू करने का प्रयास करते हैं।

ऐसा करके, वे स्वयं भी वास्तव में यह नहीं मानते कि बाइबल परमेश्वर का प्रकाशन है, क्योंकि वे स्वयं बाइबल के शब्दों का अर्थ गढ़ते हैं। निस्संदेह, केवल वे शब्द जिनका अर्थ स्वयं परमेश्वर द्वारा दिया गया है, परमेश्वर के वचन हैं। प्रत्येक शब्द का अर्थ इस बात पर निर्भर करता है कि उसे कौन कहता है; एक ही शब्द का अर्थ अलग-अलग लोगों के लिए थोड़ा भिन्न होता है। परमेश्वर, जो अनंत और सर्वज्ञ है, अपने वचनों में कुछ अनंत और मानवीय बुद्धि से परे भी व्यक्त करता है। इसी कारण, बाइबल के शब्दों का अर्थ अन्य संदर्भों में समान शब्दों से भिन्न होता है। इन शब्दों का दिव्य अर्थ केवल वही समझ सकता है जिनकी समझ परमेश्वर द्वारा खोली गई हो। कोई भी अपनी स्वार्थी बुद्धि से वचन को नहीं समझ सकता। यह सर्वमान्य है कि वचन परमेश्वर का है और पवित्र है, लेकिन अभी तक यह नहीं समझा जा सका है कि इसकी पवित्रता या दिव्यता कहाँ निहित है, क्योंकि यह साधारण लेखन प्रतीत होता है। एक कामुक व्यक्ति जो अपनी समझ के अनुसार सोचता है, वह वचन को नहीं समझ सकता और वचन की दिव्यता को नहीं देख सकता। वह यह नहीं समझता कि यहोवा परमेश्वर ने मूसा और भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से वचन बोला था और प्रभु उद्धारकर्ता यीशु मसीह, जो यहोवा के समान ही हैं, ने वह वचन बोला था जिसे प्रचारकों ने लिखा था। इस प्रकार वचन स्वयं ईश्वरीय प्रकाशन और ईश्वरीय सत्य है।

ईश्वरीय विधान ने यह सुनिश्चित किया है कि सैकड़ों वर्षों से लेकर आज तक वचन अपरिवर्तित रहा है। ईश्वर से दो चीज़ें प्रवाहित होती हैं: ईश्वरीय भलाई और ईश्वरीय सत्य; दोनों ही वचन में पाए जाते हैं। वचन मनुष्य को प्रभु से जोड़ता है और स्वर्ग के द्वार खोलता है। इसीलिए यह संसार की सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक है। वचन के माध्यम से, मानवता ईश्वर और स्वर्ग से जुड़ी है। वचन के बिना, मानवता को ईश्वर, स्वर्ग, अनन्त जीवन, या अनन्त जीवन प्राप्त करने के साधनों, अर्थात् स्वर्ग तक पहुँचने के तरीके, का कोई ज्ञान नहीं होता। मनुष्य आत्म-प्रेम और सांसारिक प्रेम की स्वाभाविक प्रवृत्ति के साथ पैदा होते हैं, और ये दोनों ईश्वर के प्रति प्रेम और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम के विरोधी हैं।

ये दो नारकीय प्रेम मानव मन को इस प्रकार बंद कर देते हैं कि वह ईश्वर या मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में बिना रहस्योद्घाटन के कुछ भी नहीं समझ सकता, और यह रहस्योद्घाटन वचन है। वचन के बिना, मानवता कुछ ही शताब्दियों में पशुता में डूब जाएगी। वचन में आत्मा और जीवन हैं: "जो वचन मैंने तुमसे कहे हैं वे आत्मा हैं और जीवन भी हैं" (यूहन्ना 6:63)।

ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के बिना ईश्वर, स्वर्ग और नरक के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है। इसीलिए हमारे ग्रह पर लगातार कई रहस्योद्घाटन हुए हैं। सबसे प्राचीन लोग, जो जलप्रलय से पहले रहते थे और जिनके समय को स्वर्ण युग कहा जाता है, उन्हें प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन प्राप्त हुए थे। ईश्वरीय सत्य उनके हृदयों में अंकित थे। जलप्रलय के बाद अस्तित्व में आई प्राचीन कलीसियाओं के पास एक वचन था जो हमारे समय के वचन के समान था, लेकिन वह अब लुप्त हो गया है। इसके बाद पुराने और नए नियम आए।

मनुष्य का विवेकशील मन प्रभु से ज्ञान प्राप्त किए बिना ईश्वरीय या आध्यात्मिक बातों को नहीं समझ सकता। इसलिए, केवल वे ही जिन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ है, वचन को समझते हैं। जो लोग सत्य से प्रेम करते हैं क्योंकि यह सत्य है और परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीते हैं, वे वचन को समझते हैं। जो प्रभु के मार्गदर्शन में चलते हैं, वे वचन को समझते हैं। जो लोग झूठी शिक्षाओं में विश्वास रखते हैं, जैसे कि केवल विश्वास ही व्यक्ति को बचाता है, वे वचन को नहीं समझ सकते। जिन्होंने नए यरूशलेम के सिद्धांत को आत्मसात कर लिया है, वे वचन को समझते हैं।

वचन को सिद्धांत के बिना नहीं समझा जा सकता। सही सिद्धांत उन लोगों के लिए एक दीपक है जो वचन को पढ़ते हैं। सच्चा सिद्धांत उन लोगों से आता है जो प्रभु द्वारा प्रबुद्ध हैं। जो लोग वचन के शाब्दिक अर्थ में सिद्धांत के बिना हैं, वे वचन को नहीं समझते। वे सभी प्रकार की त्रुटियों में पड़ जाते हैं। इसी प्रकार कई ईसाई कलीसियाएँ और संप्रदाय अस्तित्व में आए हैं। वचन के शाब्दिक अर्थ में कई बाह्य रूप निहित हैं जो स्वयं सत्य नहीं हैं, बल्कि केवल तभी सत्य बनते हैं जब उनका आध्यात्मिक अर्थ प्रकट होता है। ये बाह्य रूप छिपे हुए सत्य हैं जो आध्यात्मिक सत्यों के अनुरूप हैं और साधारण लोग अपने कामुक मन के अनुसार इन्हें समझते हैं।

अपने शाब्दिक अर्थ के अतिरिक्त, इस शब्द का मानसिक, आध्यात्मिक और स्वर्गीय या दिव्य अर्थ भी है।

ये अर्थ पहले ज्ञात नहीं थे और केवल स्वीडनबॉर्ग द्वारा ही प्रकट किए गए हैं। आंतरिक अर्थों का यह प्रकटीकरण प्रभु का दूसरा आगमन (मत्ती 24:30) और शाश्वत सुसमाचार (प्रकाशितवाक्य 14:6) है, क्योंकि प्रभु स्वयं वचन हैं। आगे, मैं मुख्यतः आध्यात्मिक अर्थ पर चर्चा करूँगा, क्योंकि आध्यात्मिक अर्थ समझ और सत्य से संबंधित है, जिसका वर्णन स्वर्गीय अर्थ की तुलना में आसान है, जो इच्छा और प्रेम से संबंधित है।
कोई भी व्यक्ति आंतरिक, या आध्यात्मिक, अर्थ को तब तक नहीं जान सकता जब तक वह यह न जान ले कि संगति क्या है। आध्यात्मिक अर्थ शाब्दिक, या बाह्य, अर्थ से मेल खाता है, ठीक वैसे ही जैसे आत्मा शरीर से मेल खाती है। प्राकृतिक जगत की छोटी-छोटी वस्तुओं का भी आध्यात्मिक जगत में आध्यात्मिक संगति होती है। आज शायद ही कोई जानता हो कि वचन की दिव्यता कहाँ से आती है। यह आध्यात्मिक अर्थ से आती है जो दिव्य सत्यों को उनके स्वरूप में प्रकट करती है। स्वर्ग के देवदूत, पृथ्वी के लोगों की तुलना में वचन को अलग तरह से समझते हैं। पूर्व का एक आंतरिक, आध्यात्मिक अर्थ होता है, और बाद का एक बाह्य, प्राकृतिक अर्थ होता है। स्वर्गदूतों के विचार और भाव आध्यात्मिक होते हैं, जबकि मनुष्यों के विचार और भाव स्वाभाविक होते हैं। जब कोई व्यक्ति वचन पढ़ता है, तो उसके निकट स्थित स्वर्गदूत पढ़े गए वचन का आध्यात्मिक अर्थ समझते हैं; उदाहरण के लिए, वचन में वर्णित स्थानों और व्यक्तियों के नाम आध्यात्मिक समानता दर्शाते हैं। मैं वचन के आध्यात्मिक अर्थ का निम्नलिखित उदाहरण दूँगा:

"उन दिनों के क्लेश के तुरन्त बाद सूर्य अंधकारमय हो जाएगा, और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा, और तारे आकाश से गिर पड़ेंगे, और आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी। तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे, और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे। और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे चारों दिशाओं से, आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक, उसके चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेंगे।" (मत्ती 4:29–31)।

इन शब्दों का आध्यात्मिक अर्थ यह नहीं है कि सूर्य और चंद्रमा अंधकारमय हो जाएँगे और आकाश से तारे गिर जाएँगे और मनुष्य का पुत्र, अर्थात् प्रभु, स्वर्ग के बादलों पर आएगा, इत्यादि। बल्कि, उद्धृत पाठ के सभी शब्द आध्यात्मिक अर्थ में, ईसाई कलीसिया और उसकी अंतिम स्थिति से संबंधित बातों को संदर्भित करते हैं। सूर्य और चंद्रमा का अंधकारमय होना कलीसिया से प्रेम और विश्वास का लोप है, आकाश से तारों का गिरना कलीसिया से आध्यात्मिक ज्ञान का लोप है, स्वर्ग की शक्तियों का हिलना कलीसिया में परिवर्तन का संकेत है, आकाश में मनुष्य के पुत्र का चिन्ह वचन के दिव्य सत्य में प्रभु के प्रकट होने को दर्शाता है, पृथ्वी के कुलों का विलाप कलीसिया से विश्वास और प्रेम की भलाई के सभी सत्यों के लुप्त होने को दर्शाता है, मनुष्य के पुत्र का महान सामर्थ्य और महिमा के साथ स्वर्ग के बादलों पर आना, वचन के स्वर्गीय और आध्यात्मिक अर्थ के प्रकट होने के रूप में प्रभु के आगमन को दर्शाता है। चारों दिशाओं से और आकाश के छोर से पृथ्वी के छोर तक चुने हुए लोगों का एकत्र होना, नए चर्च और नए स्वर्ग को दर्शाता है, जो उन लोगों से बनेगा जो प्रभु में विश्वास करते हैं और उसकी आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीते हैं।
वचन के प्रत्येक शब्द का एक आध्यात्मिक और स्वर्गीय अर्थ है। उन्हीं के कारण, वचन पवित्र है। शब्दों के आध्यात्मिक अर्थ के उदाहरण: बगीचा, पत्ता और उपवन बुद्धि, अक्ल और ज्ञान का उल्लेख करते हैं। जैतून, अंगूर, देवदार, चिनार और ओक स्वर्गीय, आध्यात्मिक, तर्कसंगत, प्राकृतिक और कामुक का उल्लेख करते हैं। वचन में उचित नामों का भी आध्यात्मिक अर्थ होता है: मिस्र का अर्थ वैज्ञानिक, अश्शूर का अर्थ तर्कसंगत, एदोम का प्राकृतिक, मोआब का अच्छाई का मिथ्याकरण, अम्मोन का सत्य का मिथ्याकरण, पलिश्तियों का अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम के बिना विश्वास, सोर और सीदोन का अच्छाई और सत्य का ज्ञान, गूग का आंतरिक आराधना के बिना बाहरी आराधना, याकूब का प्राकृतिक कलीसिया, इस्राएल का आध्यात्मिक कलीसिया और यहूदा का स्वर्गीय कलीसिया।
जब यीशु पृथ्वी पर रहते थे, तो उन्होंने अपने सभी वचनों को संगति के साथ कहा। इस प्रकार, उनके सभी वचनों का एक स्वाभाविक, आध्यात्मिक और दिव्य अर्थ है।

इसीलिए, यीशु कहते हैं कि उनके वचन आत्मा और जीवन हैं। नीचे, मैं वचन के आंतरिक अर्थ के कुछ और उदाहरण प्रस्तुत करूँगा।

"तब स्वर्ग का राज्य दस कुँवारियों के समान होगा जो अपनी मशालें लेकर दूल्हे से भेंट करने को निकलीं। उनमें पाँच समझदार और पाँच मूर्ख थीं। मूर्खों ने अपनी मशालें तो लीं, परन्तु अपने साथ तेल नहीं लिया। परन्तु समझदारों ने अपनी मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी भर लिया। जब दूल्हे के आने में देर हुई, तो वे सब ऊंघने लगीं और सो गईं। आधी रात को धूम मची, 'देखो, दूल्हा आ रहा है! उससे भेंट करने के लिये चलो।' तब वे सब कुँवारियाँ उठीं और अपनी मशालें ठीक कीं। मूर्खों ने समझदारों से कहा, 'अपने तेल में से कुछ हमें भी दो, क्योंकि हमारी मशालें बुझ गई हैं।' परन्तु समझदारों ने उत्तर दिया, 'ऐसा न हो कि हमारे और तुम्हारे लिये पूरा न हो; परन्तु तुम बेचनेवालों के पास जाकर अपने लिये मोल ले लो।' जब वे मोल लेने जा रही थीं, तो दूल्हा आ पहुँचा; और जो तैयार थीं, वे उसके साथ विवाह के घर में चली गईं, और द्वार बन्द कर दिया गया। इसके बाद वे दूसरी कुँवारियाँ भी आकर कहने लगीं, 'हे प्रभु, हे प्रभु, हमारे लिये खोल दे।'" हमें। परन्तु उसने उत्तर दिया, 'मैं तुम से सच कहता हूँ, मैं तुम्हें नहीं जानता।' (मत्ती 25:1-12)।

इस दृष्टांत के प्रत्येक शब्द का एक आध्यात्मिक अर्थ है। स्वर्ग का राज्य स्वर्ग और कलीसिया को संदर्भित करता है, क्योंकि कलीसिया पृथ्वी पर स्वर्ग है। दूल्हा प्रभु को संदर्भित करता है, और विवाह प्रभु के स्वर्ग और कलीसिया से विवाह को संदर्भित करता है। प्रभु का कलीसिया से विवाह तब होता है जब पृथ्वी पर कलीसिया में अच्छाई और सच्चाई का मिलन होता है। कुँवारियाँ कलीसिया के सदस्यों को संदर्भित करती हैं। दस पूरे समूह को संदर्भित करता है, पाँच एक छोटे से भाग को संदर्भित करता है। दीपक विश्वास के सत्य के अनुरूप हैं; तेल प्रेम की अच्छाई के अनुरूप है। नींद और तंद्रा पृथ्वी पर मानव जीवन के अनुरूप हैं। जागृति और उत्थान आध्यात्मिक दुनिया में मानव जीवन के अनुरूप हैं। ख़रीदने का अर्थ है सत्य और अच्छाई प्राप्त करना।

जिन कुँवारियों के दीयों में तेल नहीं था, वे कलीसिया के उन सदस्यों का प्रतिनिधित्व करती हैं जो दान-पुण्य नहीं करते, अर्थात् दस आज्ञाओं के अनुसार जीवन नहीं जीते। व्यापारियों के पास जाकर खरीदारी करने का अर्थ है शारीरिक मृत्यु के बाद सत्य और सद्गुण प्राप्त करना। परन्तु चूँकि मृत्यु के बाद किसी व्यक्ति की इच्छा को बदलना असंभव है, इसलिए प्रभु ने उनसे कहा, "मैं तुम्हें नहीं जानता।" प्रभु ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि जो व्यक्ति प्रेतलोक में प्रवेश करते समय अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम नहीं रखता, वह प्रभु के साथ एक नहीं हो सकता, अर्थात् स्वर्ग या विवाह में प्रवेश नहीं कर सकता। जिन बुद्धिमान कुँवारियों के पास तेल था, वे कलीसिया के उन सदस्यों का प्रतिनिधित्व करती हैं जो अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम का अभ्यास करते हैं। तेल का अर्थ है भलाई। कलीसिया के केवल ऐसे सदस्य ही स्वर्ग में प्रवेश करेंगे। जब एक पुनर्जन्म प्राप्त व्यक्ति वचन पढ़ता है, तो उसे यह जानना चाहिए कि इसमें आध्यात्मिक और दिव्य अर्थ निहित हैं।

प्रभु यीशु के आगमन तक कई पूर्वी लोगों के बीच आध्यात्मिक पत्राचार का ज्ञान बना रहा, लेकिन इस्राएलियों और यहूदियों को उनके बारे में कुछ भी पता नहीं था, भले ही उनकी उपासना के सभी विवरण, मूसा की सभी आज्ञाएँ और नियम, और उनका वचन शुद्ध पत्राचार से युक्त थे। इसका कारण यह था कि वे हृदय से मूर्तिपूजक थे और यह जानने को तैयार नहीं थे कि उनकी उपासना का एक स्वर्गीय और आध्यात्मिक अर्थ है। वे मानते थे कि वे स्वयं पवित्र हैं। यदि स्वर्गीय और आध्यात्मिक बातें उन पर प्रकट होतीं, तो वे न केवल उन्हें अस्वीकार कर देते, बल्कि उनका तिरस्कार भी करते। इसी कारण, स्वर्ग उनके लिए बंद था। इसी कारण, उन्होंने प्रभु को भी नहीं पहचाना, भले ही संपूर्ण वचन में उनके और उनके आगमन के बारे में भविष्यवाणी की गई थी। उन्होंने प्रभु को अस्वीकार कर दिया क्योंकि उन्होंने उनसे स्वर्गीय बातों के बारे में बात की थी, और वे एक ऐसे प्रभु चाहते थे जो उन्हें सभी राष्ट्रों से ऊपर उठाकर सांसारिक शक्ति प्रदान करे। पूरी दुनिया पर शासन करने की यह इच्छा आज भी यहूदियों को सताती है।

सभी दिव्य चीज़ों में एक प्रथम, एक मध्य और एक अंतिम होता है: प्रथम मध्य से होकर अंतिम तक जाता है, जहाँ वह बना रहता है। इसलिए अंतिम ही आधार है। इसके अलावा, प्रथम मध्य में है और मध्य की सहायता से अंतिम में, अर्थात् अंतिम ही संरक्षण का स्थान है।

और क्योंकि अंतिम ही संरक्षण और आधार का स्थान है, इसलिए यह आधार भी है। इन तीनों को उद्देश्य, कारण और प्रभाव भी कहा जा सकता है। जब आप इसे समझ लेते हैं, तो आप समझ सकते हैं कि प्रत्येक दिव्य कार्य अंतिम में पूर्ण और परिपूर्ण होता है, क्योंकि पूर्ववर्ती वस्तुएँ एक साथ उसमें विद्यमान होती हैं। इसी कारण, ये तीनों शब्द, अपने आध्यात्मिक अर्थ के अनुसार, संपूर्ण और सम्पूर्ण को संदर्भित करते हैं। इस प्रकार, शब्द का स्वरूप स्पष्ट है: शब्द का शाब्दिक अर्थ, अर्थात् उसका स्वाभाविक अर्थ, एक आंतरिक अर्थ रखता है, जो आध्यात्मिक है, और इसके भीतर एक अंतरतम अर्थ है, जो स्वर्गीय है, और इस प्रकार निम्नतम अर्थ, जो स्वाभाविक है, दोनों आंतरिक अर्थों का भण्डार है और इस प्रकार उनका आधार और आधार है। इसका अर्थ है कि अपने शाब्दिक अर्थ के बिना शब्द, बिना नींव के महल के समान होगा।
शब्द के शाब्दिक अर्थ में दिव्य सत्य अपनी पवित्रता और शक्ति में परिपूर्ण है, क्योंकि इसमें स्वर्गीय और आध्यात्मिक अर्थ समाहित हैं। प्रभु के रूपांतरण में वचन अपनी महिमा में पतरस, याकूब और यूहन्ना के समक्ष प्रकट हुआ:

“छह दिन के बाद यीशु पतरस, याकूब और उसके भाई यूहन्ना को लेकर एकान्त में एक ऊँचे पहाड़ पर ले गया, और उनके सामने उसका रूपान्तरण हुआ। उसका मुख सूर्य के समान चमक उठा और उसका वस्त्र ज्योति के समान उजला हो गया। और देखो, मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए। तब पतरस ने यीशु से कहा, “हे प्रभु, हमारा यहाँ रहना अच्छा है; यदि तू चाहे, तो हम यहाँ तीन मण्डप बनाएँ; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।” वह अभी बोल ही रहा था कि एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, “यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूँ; इसकी सुनो।” (मत्ती 17:1-5)।

इस प्रकाशन में, प्रभु ने वचन का प्रतिनिधित्व किया। उनका चेहरा, जो सूर्य की तरह चमक रहा था, उनके दिव्य प्रेम की दिव्य अच्छाई का प्रतिनिधित्व करता था।

उनके वस्त्र, जो प्रकाश के समान श्वेत हो गए थे, उनकी दिव्य बुद्धि और दिव्य सत्य का प्रतिनिधित्व करते थे। मूसा और एलिय्याह ऐतिहासिक और भविष्यसूचक वचन का प्रतिनिधित्व करते थे। शिष्यों पर छाया हुआ उज्ज्वल बादल, वचन के शाब्दिक अर्थ का प्रतिनिधित्व करता था। इसलिए, इस बादल से एक वाणी आई, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ; इसकी सुनो।" स्वर्ग से सभी घोषणाएँ और उत्तर, सबसे बाहरी लोगों के माध्यम से दिए जाते हैं, जो वचन के शाब्दिक अर्थ में हैं, क्योंकि वे प्रभु की ओर से पूर्णता में दिए गए हैं।
दिव्य सत्य की शक्ति वचन के शाब्दिक अर्थ में है, क्योंकि इस अर्थ में वचन अपनी पूर्णता में है, और प्रभु के दो राज्यों के स्वर्गदूत और लोग एक साथ इसी अर्थ में हैं। दिव्य सत्य ने ब्रह्मांड की रचना की:

आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। वही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा रचा गया; और जो कुछ भी रचा गया है, वह उसके बिना नहीं बना। (मत्ती 1:1-3)।

इस अंश में शब्द ईश्वरीय सत्य को संदर्भित करता है। चूँकि इसने ब्रह्मांड की रचना की है, इसलिए यह इसका संरक्षक भी है, क्योंकि बने रहना निरंतर अस्तित्व में रहना है, और संरक्षण करना निरंतर सृजन करना है। ईश्वरीय सत्य की शक्ति अनंत है। इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि जो कलीसिया अपनी गतिविधियों को ईश्वरीय सत्य पर आधारित करती है, उसके पास नरक पर अधिकार है और वह सदा जीवित रहेगी।
कलीसिया के सिद्धांत को वचन के शाब्दिक अर्थ से लिया जाना चाहिए और उसके द्वारा उसकी पुष्टि की जानी चाहिए। सिद्धांत के बिना, वचन को समझा नहीं जा सकता। ऐसा इसलिए है क्योंकि वचन का शाब्दिक अर्थ शुद्ध अनुरूपताओं से बना होता है। इसलिए, वचन के शाब्दिक अर्थ में ईश्वरीय सत्य शायद ही कभी स्पष्ट होते हैं। अधिकांश मामलों में, वे छिपे होते हैं, क्योंकि वे सत्य के बाह्य रूप होते हैं जो साधारण लोगों की समझ के लिए उपयुक्त होते हैं। कई बातें ऐसी भी हैं जो विरोधाभास प्रतीत होती हैं, हालाँकि वचन को उसके अपने आध्यात्मिक प्रकाश में देखने पर उसमें एक भी विरोधाभास नहीं है।

सच्चे सत्य की शिक्षा को वचन के शाब्दिक अर्थ से लिया जाना चाहिए, क्योंकि इस अर्थ में वचन एक वस्त्रधारी व्यक्ति के समान है, जिसका मुख और हाथ खुले हैं। वचन में वह सब कुछ जो मानवीय आस्था और जीवन से, और इस प्रकार मोक्ष से संबंधित है, अनावृत है। शेष सब ढका हुआ है। वचन की शिक्षा को उसके आध्यात्मिक अर्थ से नहीं लिया जा सकता, बल्कि केवल उससे प्रकाशित और समर्थित किया जा सकता है, क्योंकि समानताओं के थोड़े से ज्ञान के साथ, कोई व्यक्ति अपनी समझ के अनुसार वचन की व्याख्या करने में आसानी से गलती कर सकता है और इस प्रकार वचन को विकृत कर सकता है।
सच्चे सत्य, जो सिद्धांत का स्रोत हैं, वचन के शाब्दिक अर्थ में केवल उन्हीं लोगों को प्रकट होते हैं जिन्हें प्रभु से ज्ञान प्राप्त हुआ है, और ज्ञान उन्हें प्राप्त होता है जो प्रभु की दिव्यता में विश्वास करते हैं और दस आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीते हैं। वचन के शाब्दिक अर्थ के माध्यम से, प्रभु के साथ एकता और स्वर्गदूतों के साथ संवाद होता है, क्योंकि वचन के शाब्दिक अर्थ में वचन की पूर्णता, पवित्रता और शक्ति निहित है। जब कोई व्यक्ति वचन को उसके शाब्दिक अर्थ में पढ़ता है, तो कुछ स्वर्गदूतीय समुदाय हमेशा उसके संपर्क में रहते हैं।
वचन स्वर्ग में भी प्रत्येक स्वर्गदूतीय समुदाय में मौजूद है। यह वहाँ आध्यात्मिक भाषा में लिखा गया है और इस प्रकार लिखा गया है कि साधारण लोग इसे सरलता से समझ सकें और बुद्धिमान लोग इसे बुद्धिमत्तापूर्वक समझ सकें। स्वर्गदूत स्वीकार करते हैं कि उन्हें अपना सारा ज्ञान वचन से प्राप्त होता है। उस पवित्र स्थान में जहाँ वचन की प्रतियाँ रखी जाती हैं, प्रकाश तेज और स्पष्ट होता है, जो बाहरी प्रकाश से कई गुना अधिक होता है। प्रभु के स्वर्गीय राज्य में वचन आध्यात्मिक राज्य से भिन्न है। प्रभु के स्वर्गीय राज्य में वचन प्रेम की अच्छाई को, और आध्यात्मिक राज्य में, ज्ञान के सत्यों को व्यक्त करता है। इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि इस संसार में वचन में कितना ज्ञान छिपा है, क्योंकि इसमें दिव्य ज्ञान समाया है जो शब्दों से परे है।
कलीसिया स्वयं वचन है, और इसकी गुणवत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि वचन को कैसे समझा जाता है। कलीसिया का निर्माण स्वयं वचन से नहीं, बल्कि उसकी समझ से होता है। शाब्दिक अर्थ सभी के लिए स्पष्ट है क्योंकि यह उन्हें दिखाई देता है, लेकिन आध्यात्मिक अर्थ केवल उन लोगों के लिए प्रकट होता है जो सत्य से प्रेम करते हैं क्योंकि यह सत्य है और भलाई करते हैं क्योंकि यह अच्छा है।

उनके लिए, वचन एक खुला खजाना है, जिसे शाब्दिक अर्थ छिपाता और सुरक्षित रखता है, और सत्य और भलाई ही वे आवश्यक तत्व हैं जिनसे कलीसिया बनती है।
वचन के प्रत्येक विवरण में प्रभु और कलीसिया का विवाह है, और इस प्रकार भलाई और सत्य का मिलन है। क्योंकि वचन का एक आध्यात्मिक और एक स्वर्गीय अर्थ है, और जो आध्यात्मिक अर्थ से संबंधित है वह कलीसिया से संबंधित है, और जो स्वर्गीय अर्थ से संबंधित है वह प्रभु से संबंधित है। कलीसिया या कलीसिया के उन लोगों के लिए जिन्होंने सच्चे सत्यों को अपनाया है, प्रभु इन सत्यों में भलाई जोड़ते हैं और उन्हें जीवन प्रदान करते हैं।
वचन के शाब्दिक अर्थ से विधर्म निर्मित हो सकते हैं, लेकिन उनके प्रति आश्वस्त होना हानिकारक है। विधर्म स्वयं लोगों की निंदा नहीं करते, बल्कि लोग तब दोषी ठहराए जाते हैं जब वे स्वाभाविक मानवीय दृष्टिकोण से तर्क करके और एक दुष्ट जीवन जीकर विधर्म में निहित असत्य के प्रति आश्वस्त हो जाते हैं। वचन के बाह्य रूपों के प्रति आश्वस्त होना हानिकारक है, क्योंकि इससे ऐसे असत्य उत्पन्न होते हैं जो बाह्य रूपों में निहित सत्यों को नष्ट कर देते हैं। झूठे सत्य स्वर्ग से जुड़ाव को नष्ट कर देते हैं और उसे बंद कर देते हैं, जिससे नरक से जुड़ाव खुल जाता है।
जब प्रभु संसार में रहते थे, तो उन्होंने वचन में सभी चीज़ों को पूरा किया और स्वयं वचन, अर्थात् दिव्य सत्य, बन गए। यह वचन से स्पष्ट है:

और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया (और हमने उसकी महिमा देखी, जो पिता के एकलौते की महिमा थी)। (यूहन्ना 1:14)।

देहधारी होने का अर्थ है, परम अर्थ में वचन बनना। अपने अवतार से पहले, प्रभु यहोवा परमेश्वर थे, और उन्हीं से वचन, या दिव्य सत्य, देहधारी हुआ, इस प्रकार प्रभु परम अर्थ में भी वचन बन गए, और इसीलिए उन्हें "प्रथम और अंतिम" कहा जाता है। मूसा और भविष्यवक्ताओं के माध्यम से इस्राएली लोगों को वचन दिए जाने से पहले, एक वचन भी था।

यह मूसा के लेखन (संख्या 21:14, 27) से स्पष्ट है। इसमें "यहोवा के युद्धों की पुस्तक" और "रून्स" शामिल थे। यह भी समानांतर रूप से लिखा गया था। इस वचन में यहोवा के युद्ध, हमारे वचन की तरह, प्रभु के नरक से युद्धों और संसार में आने पर उनकी विजय का संकेत करते हैं। यह प्राचीन वचन इस्राएलियों के वचन से पहले एशिया में प्रयोग में था। यह आज भी प्राचीन लोगों के स्वर्ग में प्रयोग में है।

वचन के माध्यम से, वे लोग भी जो कलीसिया से बाहर हैं और जिनके पास वचन नहीं है, प्रकाश प्राप्त करते हैं। स्वर्ग के साथ कोई मिलन तब तक नहीं हो सकता जब तक कि पृथ्वी पर कोई ऐसी कलीसिया न हो जिसके पास वचन हो जिसके द्वारा प्रभु को जाना जाता है। क्योंकि प्रभु स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर हैं, और उनके बिना कोई उद्धार नहीं है। अब स्वर्ग समग्र रूप से एक व्यक्ति के समान है। जहाँ कलीसिया और वचन हैं, वहाँ उस व्यक्ति के हृदय और फेफड़ों के साथ एक पत्राचार है, हृदय अच्छाई के साथ और फेफड़े सत्य के साथ। हृदय और फेफड़ों के बाहर शरीर के अंग उन लोगों से मेल खाते हैं जिनके पास वचन नहीं है, लेकिन फिर भी जिनके पास धर्म है और जो हृदय और फेफड़ों से, मानो रक्त संचार के माध्यम से, अच्छाई और सत्य प्राप्त करते हैं।

वचन के बिना, किसी को भी ईश्वर, स्वर्ग और नरक, मृत्यु के बाद के जीवन और प्रभु का ज्ञान नहीं हो सकता, क्योंकि मनुष्य एक वंशानुगत दुष्ट स्वभाव के साथ जन्म लेता है जो प्रभु और स्वर्ग के विपरीत है और ईश्वर और स्वर्ग से संबंधित सभी जानकारी को विकृत करता है। प्राचीन लोगों ने प्राचीन वचन से ज्ञान प्राप्त किया, और यह ज्ञान बाद की पीढ़ियों को हस्तांतरित हुआ। कुछ लोग कल्पना करते हैं कि वे वचन के बिना आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, जो असंभव है, क्योंकि प्राकृतिक और पुनर्जन्म रहित मनुष्य मूलतः आध्यात्मिक मनुष्य के विपरीत है, अर्थात, ईश्वर, आत्माओं की दुनिया, स्वर्ग और नरक के बारे में ज्ञान प्राप्त करने में असमर्थ है, और एक व्यक्ति केवल वचन से ही पुनर्जन्म के बारे में सीख सकता है।

बाइबल की वे पुस्तकें जिनके आध्यात्मिक और दिव्य अर्थ हैं; अन्य लेखों का कोई आंतरिक अर्थ नहीं है, लेकिन वे अन्य तरीकों से शिक्षाप्रद हो सकते हैं:

पुराना नियम:
मूसा की पाँच पुस्तकें। यहोशू और न्यायियों की पुस्तक।
शमूएल की पहली और दूसरी पुस्तकें। राजाओं की पहली और दूसरी पुस्तकें। भजन संहिता, सभी भविष्यद्वक्ता और विलापगीत।
नया नियम: चार सुसमाचार। यूहन्ना का रहस्योद्घाटन

दस आज्ञाएँ

और उसने उससे कहा, "तू मुझे अच्छा क्यों कहता है? एक को छोड़ और कोई अच्छा नहीं, अर्थात् परमेश्वर; परन्तु यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं को मान। (मत्ती 19:17)

दस आज्ञाएँ निस्संदेह परमेश्वर के वचन का सबसे महत्वपूर्ण भाग हैं। ये इस ग्रह के निवासियों के लिए शाश्वत नियम हैं। वचन के अन्य भागों के विपरीत, ये परमेश्वर की उँगलियों द्वारा पत्थर की पट्टियों पर लिखी गई थीं। इनमें परमेश्वर और अपने पड़ोसी से प्रेम करने के लिए आवश्यक सभी बातें समाहित हैं। इनके माध्यम से मनुष्य परमेश्वर और स्वर्ग के साथ एकाकार होता है। दस आज्ञाओं के प्रावधान सभी राष्ट्रों के कानूनों में शामिल हैं। ये सभी राष्ट्रों के लिए सामाजिक और नैतिक कानून हैं। लेकिन यह तथ्य कि ये परमेश्वर की उँगलियों द्वारा लिखी गई थीं, इसका अर्थ है कि ये ईश्वरीय कानून भी हैं जिनका पालन मनुष्य को परमेश्वर के आज्ञाकारी होने के लिए करना चाहिए। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा:

जिसके पास मेरी आज्ञाएँ हैं और जो उन्हें मानता है, वही मुझसे प्रेम रखता है; और जो मुझसे प्रेम रखता है, उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूँगा, और अपने आप को उस पर प्रकट करूँगा।
(मत्ती 14:21)।

यद्यपि दस आज्ञाएँ वचन का सबसे महत्वपूर्ण भाग हैं, आधुनिक ईसाई कलीसियाएँ उन पर ज़ोर नहीं देतीं। इसके बजाय, यह विश्वास कि "यीशु ने अपने लहू से हमें पाप से मुक्त कर दिया है, और अब हम व्यवस्था के अधीन नहीं हैं" लोगों के मन में घर कर गया है और इस बेतुकी धारणा को जन्म दिया है कि आज्ञाओं का अब पालन करने की आवश्यकता नहीं है। दस आज्ञाएँ मानव जीवन के लिए शाश्वत दिशानिर्देश हैं और इनका पालन किया जाना चाहिए क्योंकि ये ईश्वरीय नियम भी हैं।

ईश्वर से जुड़ने के लिए मनुष्य को तीन चीज़ों की आवश्यकता होती है। ये हैं: 1) प्रभु यीशु मसीह को ईश्वर का अवतार, स्वर्ग और पृथ्वी का ईश्वर, जिनमें त्रिदेव विद्यमान हैं, समझना, 2) दस आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीना, और 3) प्रतिदिन पश्चाताप करना। परमेश्वर के शेष वचन की तरह, दस आज्ञाओं का भी एक स्वाभाविक, या शाब्दिक, आध्यात्मिक और दिव्य अर्थ है। ये सटीक अर्थ स्वीडनबॉर्ग की कृति "अर्काना कोएलेस्टिया" (संख्या 8860-8912) में पाए जा सकते हैं। एक व्यक्ति को इन आज्ञाओं के अनुसार कैसे जीवन जीना चाहिए, यह स्वीडनबॉर्ग की कृति "एपोकैलिप्सिस एक्सप्लिकाटा" (संख्या 935) में समझाया गया है। मैं इस प्रस्तुति के अंत में इसका एक अंश उद्धृत करूँगा। अब मैं इन आज्ञाओं के स्वाभाविक और आंतरिक दोनों अर्थ प्रस्तुत करूँगा। यह प्रस्तुति स्वीडनबॉर्ग की कृतियों "अर्काना कोएलेस्टिया" और "वेरा क्रिस्टियाना रिलिजियो" पर आधारित है।
दस आज्ञाओं का महत्व इस तथ्य से और भी स्पष्ट होता है कि ये ईश्वर की उँगलियों द्वारा पत्थर की पट्टियों पर लिखी गई थीं। पहली तीन आज्ञाएँ मिलकर पहली पट्टिका बनाती हैं, जो प्रभु से प्रेम करने से संबंधित है। अंतिम छह आज्ञाएँ मिलकर दूसरी पट्टिका बनाती हैं, जो अपने पड़ोसी से प्रेम करने से संबंधित है। चौथी आज्ञा एक संयोजक आज्ञा है जो इन दोनों पट्टियों को जोड़ती है। दस आज्ञाएँ और उनके अनुसार जीवन जीना इस पुस्तक का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। ये आज्ञाएँ निर्गमन 20:2-17 और व्यवस्थाविवरण 5:6-21 में पाई जाती हैं।

पहली आज्ञा (SM= आध्यात्मिक अर्थ)

"मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ," SM: प्रभु की दिव्य मानवता सभी भलाई और सच्चाई पर शासन करती है। "जो तुम्हें मिस्र देश से, दासत्व के घर से बाहर लाया है।" SM: प्रभु मनुष्य को नरक की शक्ति से मुक्त करते हैं। "मेरे सिवा तुम्हारे कोई अन्य देवता न हों।" SM: प्रभु ही सत्य और भलाई का एकमात्र स्रोत हैं। "तुम अपने लिए कोई मूर्ति या कोई प्रतिमा नहीं बनाओगे," एसएम: ऐसे सत्य और अच्छाई की रचना मत करो जो तुम्हारी अपनी समझ से उत्पन्न हों और जिन्हें तुम ईश्वरीय चीज़ों जैसा दिखाना चाहते हो। "न तो ऊपर स्वर्ग में, न ही नीचे धरती पर," एसएम: यह निषेध आध्यात्मिक और प्राकृतिक दोनों चीज़ों पर लागू होता है। "न ही धरती के नीचे के जल में।" एसएम: यह निषेध कामुक और भौतिक चीज़ों पर भी लागू होता है।

"उनके आगे न झुको और न ही उनकी सेवा करो।" SM: ऊपर बताई गई बातें जो तुम्हारी अपनी समझ से आती हैं, उन्हें ईश्वरीय मानकर उनकी सेवा नहीं करनी चाहिए। "क्योंकि मैं, तुम्हारा परमेश्वर यहोवा," SM: सभी सत्य और भलाई केवल प्रभु से ही आती हैं। "मैं ईर्ष्यालु परमेश्वर हूँ," SM: मानवीय समझ पर आधारित सत्य और भलाई झूठ और बुराई बन जाती हैं। "मैं बच्चों को दण्ड दूँगा।" SM: ऐसे अन्याय और बुराइयाँ भी बढ़ती हैं और वंशानुगत वरीयताएँ, या वंशानुगत बुराई का रूप ले लेती हैं। "तीसरी और चौथी पीढ़ी तक," SM: वे लंबी श्रृंखला में बढ़ती हैं, अंततः एक-दूसरे में विलीन हो जाती हैं। "मुझसे घृणा करने वालों के लिए;" SM: जो लोग ऐसी बुराई और अन्याय में हैं, वे प्रभु की दिव्यता को नकारते हैं। "परन्तु मैं हज़ारों पर दया करूँगा," SM: ईश्वर असीम भलाई और सच्चाई देता है। "जो मुझसे प्रेम करते हैं।" SM: वह उन्हें देता है जो प्रेम की भलाई को स्वीकार करते हैं। "और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं।" SM: इसी प्रकार, वह उन्हें देता है जो विश्वास के सत्यों को स्वीकार करते हैं।
उपरोक्त पहली आज्ञा का सटीक आध्यात्मिक अर्थ है। इन आज्ञाओं का एक सामान्य प्राकृतिक, आध्यात्मिक और दिव्य अर्थ भी है। पहली आज्ञा के ये सामान्य अर्थ निम्नलिखित हैं।

प्राकृतिक अर्थ

किसी भी झूठे देवता की पूजा नहीं की जानी चाहिए। न ही किसी मनुष्य की पूजा देवता के रूप में की जानी चाहिए। प्राकृतिक, या शाब्दिक, अर्थ यह भी दर्शाता है कि ईश्वर और ईश्वर से प्राप्त चीज़ों के अलावा किसी और चीज़ से सबसे ज़्यादा प्रेम नहीं किया जाना चाहिए। क्योंकि एक व्यक्ति जिसे सबसे ज़्यादा प्रेम करता है, वह उसका ईश्वर है। जो कोई भी स्वयं को और संसार को सबसे ज़्यादा प्रेम करता है, वह अपने हृदय में ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता, बल्कि स्वयं को और संसार को अपना ईश्वर मानता है।

आध्यात्मिक अर्थ

प्रभु यीशु मसीह के अलावा किसी और की ईश्वर के रूप में आराधना नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि वे यहोवा हैं, जो पृथ्वी पर आए और जिन्होंने उद्धार का कार्य किया। वे संसार के उद्धारकर्ता, सृष्टिकर्ता और पुनर्जन्मकर्ता हैं। पौलुस ने उनके बारे में ठीक ही कहा है: "क्योंकि उनमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है" (कुलुस्सियों 2:9)।

दिव्य अर्थ

इस आज्ञा के संदर्भ में, दिव्य अर्थ यह है कि प्रभु परमेश्वर अनंत, अपरिमेय और शाश्वत हैं। वे सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी हैं। वे प्रथम और अंतिम, आदि और अंत हैं, जो थे, जो हैं और जो सदैव रहेंगे। वे प्रेम और बुद्धि हैं, अर्थात् भलाई और सत्य। वे जीवन और सत्ता हैं, जिनसे सभी वस्तुओं की उत्पत्ति हुई है।

अन्य आज्ञाओं के आंतरिक अर्थ निम्नलिखित हैं।

दूसरी आज्ञा

"अपने परमेश्वर यहोवा का नाम व्यर्थ न लेना, क्योंकि जो उसका नाम व्यर्थ लेता है, यहोवा उसे निर्दोष नहीं ठहराएगा।" SM: ईश्वरीय सत्यों और गुणों का, साथ ही विश्वास के सत्यों और गुणों का, उपहास या अपमान नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि ये ईश्वर का नाम हैं, और जो कोई ऐसा करता है, वह स्वयं को पुनर्जन्म के साधन से वंचित कर लेता है, जिसके द्वारा ही मनुष्य अपने पापों की क्षमा प्राप्त कर सकता है और उद्धार पा सकता है।

प्राकृतिक अर्थ

प्रभु के नाम का दुरुपयोग नहीं किया जाना चाहिए या ऐसे संदर्भों में प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए जहाँ उसका कोई स्थान नहीं है। दुरुपयोग में झूठी शपथ, जादू-टोना, श्राप और ऐसे उपहासपूर्ण भाषण शामिल हैं जिनमें प्रभु के नाम का प्रयोग किया जाता है। दूसरी ओर, उचित उपयोग में पदों और कर्तव्यों के संबंध में ली गई गंभीर शपथें, साथ ही ऐसी शपथें भी शामिल हैं जिनका पालन किया जाता है और जिनका कोई अच्छा और योग्य उद्देश्य होता है। ऐसे संदर्भों में, प्रभु के नाम के प्रयोग की अनुमति है।

उचित प्रयोग में स्वाभाविक रूप से उपासना, प्रार्थना और धार्मिक निर्देश भी शामिल हैं। प्रभु का नाम परमेश्वर के लिए प्रयुक्त सभी नामों को दर्शाता है, जैसे यहोवा, प्रभु, प्रभु परमेश्वर, सेनाओं का प्रभु, इस्राएल का पवित्र, अद्भुत परामर्शदाता, पराक्रमी परमेश्वर, शाश्वत पिता, शांति का राजकुमार, यीशु मसीह और पवित्र आत्मा।

आध्यात्मिक अर्थ

आध्यात्मिक अर्थ में, परमेश्वर का नाम उन सभी बातों को दर्शाता है जो कलीसिया वचन से सिखाती है। इन बातों का गलत संदर्भ में और गलत तरीके से प्रयोग करना इस आज्ञा का उल्लंघन है।

दिव्य अर्थ

इस अर्थ में, प्रभु का नाम प्रभु की दिव्य मानवता को दर्शाता है। यह वचन के निम्नलिखित अंश में स्पष्ट है: "हे पिता, अपने नाम की महिमा कर! तब स्वर्ग से एक आवाज़ आई, 'मैंने इसकी महिमा की है, और मैं इसे फिर से महिमा दूँगा'" (यूहन्ना 12:28)। महिमा का अर्थ है दिव्य बनाना। प्रभु यीशु मसीह स्वर्ग में सूर्य के रूप में दिखाई देते हैं, जिसके भीतर वे दिव्य पुरुष हैं। प्रभु स्वयं देहधारी वचन भी हैं: "और वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा" (यूहन्ना 1:14)। जो कोई प्रभु की दिव्य मानवता या वचन की पवित्रता का उपहास करता है, वह इस आज्ञा के स्वर्गीय अर्थ का उल्लंघन करता है।

तीसरी आज्ञा

"स्मरण रखो" SM: इसे निरन्तर मन में रखो। "सब्त के दिन को पवित्र रखना।" SM: अपने अंतरतम अर्थ में, सब्त का दिन प्रभु में दिव्यता और दिव्य मानवता के मिलन का प्रतीक है। अपने आंतरिक अर्थ में, यह दिव्य मानवता और स्वर्ग के मिलन के साथ-साथ अच्छाई और सच्चाई के मिलन का भी प्रतीक है।

पवित्रीकरण का अर्थ है कि इनका किसी भी प्रकार से उल्लंघन नहीं किया जाना चाहिए। "छह दिन तुम परिश्रम करोगे और अपना सारा काम करोगे;" एसएम: यह उस संघर्ष को संदर्भित करता है जो अच्छाई और सत्य के मिलन की तैयारी करता है। इस अवस्था में, मनुष्य सत्य की खोज करता है और परीक्षा में पड़ता है। "परन्तु सातवाँ दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का विश्रामदिन है;" एसएम: अच्छाई अब सत्य के साथ एक हो गई है, और इस प्रकार यह मिलन साकार हो गया है। अच्छाई अब प्रथम स्थान पर है और सत्य ही साधन है। "तब तुम कोई काम नहीं करोगे, न तुम, न तुम्हारा बेटा, न बेटी, न तुम्हारा दास, न तुम्हारा बैल, न भेड़, न तुम्हारा परदेशी जो तुम्हारे द्वारों के भीतर हो।" एसएम: युद्ध समाप्त हो गया है, और स्वर्ग और उसकी मधुरता मनुष्य के आंतरिक और बाह्य, दोनों ही रूपों में व्याप्त है। "आप" का अर्थ है स्वयं व्यक्ति, "आपका पुत्र" का अर्थ है उसकी आंतरिक समझ, "आपकी पुत्री" का अर्थ है उसकी आंतरिक इच्छा, "आपका सेवक" का अर्थ है सत्य के संबंध में उसका स्वाभाविक व्यक्तित्व, "आपकी दासी" का अर्थ है भलाई के संबंध में उसका स्वाभाविक व्यक्तित्व, "आपका बैल" उसकी सामान्य प्राथमिकताएँ, और "आपका गधा" उसका सामान्य ज्ञान। "क्योंकि छः दिन में प्रभु ने आकाश, पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ है, सब बनाया," SM: प्रभु आंतरिक और बाह्य मनुष्य का पुनर्जन्म करते हैं। यह धीरे-धीरे होता है, जिसका प्रतीक छः दिन हैं। "परन्तु सातवें दिन उन्होंने विश्राम किया;" SM: जब मनुष्य में भलाई अंततः सत्य के साथ एक हो जाती है, तो आध्यात्मिक संघर्ष समाप्त हो जाता है और मनुष्य एक दिव्य प्राणी बन जाता है और प्रभु के संरक्षण में रहता है। "इसलिए प्रभु ने विश्राम के दिन को आशीर्वाद दिया।" SM: इसका अर्थ है प्रभु के साथ स्वर्गीय मिलन। "और इसे पवित्र किया।" SM: न तो नरक और न ही पृथ्वी के लोग इस मिलन को नुकसान पहुँचा सकते हैं।

प्राकृतिक अर्थ

मनुष्य को काम के लिए छह दिन दिए गए हैं, लेकिन सातवाँ दिन प्रभु और मनुष्य के लिए अपने काम से विश्राम का दिन है। रविवार को, मनुष्य को अपने दैनिक कार्यों से विश्राम करना चाहिए, ध्यान और धार्मिक विषयों का अध्ययन करना चाहिए, और दान-पुण्य करना चाहिए। जब प्रभु स्वयं पृथ्वी पर रहते थे, तो उन्होंने सब्त के दिन शिक्षा दी और बीमारों को चंगा किया। इसीलिए, विश्राम का दिन शिक्षा और दान-पुण्य, दोनों का दिन है।

आध्यात्मिक अर्थ

आध्यात्मिक अर्थ में, इस आज्ञा का अर्थ है मनुष्य का पुनर्जन्म। मनुष्य का पुनर्जन्म प्रभु के नरक से युद्ध, उनकी विजय और उनके विश्राम के समान है। प्रभु मनुष्य का पुनर्जन्म उसी प्रकार करते हैं जिस प्रकार उन्होंने अपनी मानवता को महिमामंडित किया था। इसलिए, पुनर्जन्म के अधीन मनुष्य भी यीशु की तरह प्रलोभनों, अर्थात् नरक के आक्रमणों के अधीन होता है। जब अच्छाई प्राथमिकता बन जाती है, तो व्यक्ति का पुनर्जन्म होता है। पुनर्जन्म लेने वाला व्यक्ति प्रभु द्वारा निर्देशित होता है, और यदि कोई व्यक्ति अपने पुराने जीवन में लौटता है और आत्म-प्रेम और संसार के प्रेम से विमुख होने लगता है, तो वह तीसरी आज्ञा का उल्लंघन करता है।

दिव्य अर्थ

अपने स्वर्गीय अर्थ में, तीसरी आज्ञा का अर्थ है प्रभु के साथ मिलन और इस प्रकार शांति, क्योंकि तब मनुष्य प्रभु के संरक्षण में होता है और दुष्ट आत्माएँ उसे पीड़ा देने का साहस नहीं कर पातीं। प्रभु के नए चर्च में पुनर्जन्म लेने वाले सभी लोग स्वर्गीय शांति की मधुरता का अनुभव करते हैं। सब्त का मूल अर्थ विश्राम है, और इस प्रकार, इसके सर्वोच्च अर्थ में, शांति। इसीलिए, वचन में प्रभु को शांति का राजकुमार कहा गया है (यशायाह 9:5)। स्वर्गीय शांति एक ऐसा मधुर और सुखद अनुभव है जिसकी कल्पना भी बहुत कम लोग कर सकते हैं। हालाँकि, जो लोग नया जन्म लेते हैं, वे किसी न किसी दिन इस अनुभूति का अनुभव करेंगे, जो स्वर्ग में शांति की एक झलक है।

चौथी आज्ञा

"अपने पिता और माता का आदर करो," SM: भलाई और सच्चाई से प्रेम करो। अपने सर्वोच्च अर्थ में, इस आज्ञा का अर्थ है प्रभु और उनके राज्य से प्रेम करना। "ताकि तुम इस देश में दीर्घायु हो सको," SM: ऐसा प्रेम स्वर्ग में अनन्त जीवन प्रदान करता है, "जो तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हें देता है।" SM: इसी प्रकार, इसका परिणाम दिव्य प्रवाह की प्राप्ति है।

स्वाभाविक अर्थ

व्यक्ति को अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए, जो उसके प्रारंभिक विकास का आधार हैं। व्यापक रूप से, इस आज्ञा का अर्थ है कि व्यक्ति को अपनी मातृभूमि, उसकी संस्थाओं और उसके अधिकारियों से प्रेम करना चाहिए, क्योंकि मातृभूमि, माता-पिता की तरह, उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। माता-पिता का सम्मान करते समय, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि माता-पिता का पुनर्जन्म हुआ है या नहीं। बच्चों को हर हाल में अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए, लेकिन पुनर्जन्म लेने वाले वयस्क अपने माता-पिता का सम्मान केवल उसी सीमा तक करते हैं जब तक उन्हें प्रभु की ओर से अच्छाई और सच्चाई प्राप्त होती है। यदि माता-पिता का पुनर्जन्म नहीं हुआ है, अर्थात यदि वे बुरे लोग हैं, तो पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति को उनसे आसक्त होने से बचना चाहिए। अक्सर, माता-पिता और अन्य रिश्तेदार पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति के सीधे दुश्मन बन जाते हैं, क्योंकि वे पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति को अपने विरासत में मिले बुरे तरीकों के अनुसार जीवन जीने के लिए मजबूर करने की कोशिश करते हैं। प्रभु का यही अर्थ है जब वे कहते हैं, "भाई भाई को और पिता अपने बच्चे को मृत्यु के लिए सौंप देगा, और बच्चे अपने माता-पिता के विरुद्ध उठकर उन्हें मरवा डालेंगे" (मरकुस 13:12)। यह वर्तमान समय को संदर्भित करता है, और पुनर्जन्म लेने वालों को अपने माता-पिता से विरासत में मिली बुरी प्रवृत्तियों को त्यागना चाहिए।

आध्यात्मिक अर्थ

आध्यात्मिक अर्थ में, अपने माता-पिता का सम्मान करने का अर्थ है ईश्वर और कलीसिया से प्रेम करना। पिता ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है और माता कलीसिया का प्रतिनिधित्व करती है। प्रभु का यही अर्थ है जब वे कहते हैं, "पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना: क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है" (मत्ती 23:9)। "क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई, बहन और माता है।" (मत्ती 12:50)।

दिव्य अर्थ

स्वर्गीय अर्थ में, इस आज्ञा में, पिता प्रभु यीशु मसीह को संदर्भित करता है, और माता संतों की संगति, या पूरे ब्रह्मांड में प्रभु की कलीसिया को संदर्भित करती है। यह तथ्य कि यीशु मसीह हमारे स्वर्गीय पिता हैं, वचन के निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किया गया है: "मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है" (यूहन्ना 14:11)। और "मैं और पिता एक हैं" (यूहन्ना 10:30)। प्रभु की कलीसिया को निम्नलिखित अंशों में एक माता के रूप में वर्णित किया गया है: "और मैंने पवित्र नगर, नये यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हन के समान थी जो अपने पति के लिये सिंगार किए हुए हो" (प्रकाशितवाक्य 21:2)। "आओ, हम फिर से आनन्दित और मगन हों और उसका आदर करें, क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुँचा है, और उसकी दुल्हन ने अपने आप को तैयार कर लिया है। और उसने मुझसे कहा, 'लिखो: धन्य हैं वे, जो मेम्ने के विवाह-भोज में बुलाए गए हैं!'" (प्रकाशितवाक्य 19:7, 9)।
नया यरूशलेम नए चर्च को संदर्भित करता है, जो ईसाई चर्च का स्थान लेगा, और जो वचन के आंतरिक अर्थों की समझ पर आधारित है। यह चर्च ठीक वही है जो इस अर्थ में पत्नी और माँ का अर्थ है। यह चर्च सच्चा ईसाई चर्च है, क्योंकि यह प्रभु की दिव्य मानवता को स्वीकार करता है। यह चर्च ईश्वर और पृथ्वी पर चर्च का सच्चा विवाह है और सभी पूर्ववर्ती चर्चों का मुकुट है। आध्यात्मिक संतान, जो इस विवाह के फल हैं, प्रेम के गुण और विश्वास के सत्य हैं। इस चर्च के सदस्य बुद्धिमान बनते हैं, और वे अच्छाई और सच्चाई को देखने और बुराई और झूठ को उजागर करने में सक्षम होते हैं। यह वही चर्च है जिसके बारे में स्वीडनबॉर्ग ने कहा था, "मेरे कर्म इसके लिए लाभदायक होंगे।"

पाँचवीं आज्ञा

"तू हत्या नहीं करेगा।" SM: किसी को भी किसी दूसरे व्यक्ति का आध्यात्मिक या स्वर्गीय जीवन नहीं छीनना चाहिए और न ही उसके विश्वास और प्रेम का दमन करना चाहिए। आंतरिक रूप से, इस आज्ञा का अर्थ यह भी है कि किसी से घृणा नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि घृणा में हत्या का इरादा निहित होता है।

प्राकृतिक अर्थ

किसी की भी हत्या नहीं की जानी चाहिए या उसे शारीरिक रूप से नुकसान नहीं पहुँचाया जाना चाहिए। यह आज्ञा किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा और नाम को ठेस पहुँचाने से भी मना करती है, क्योंकि यह एक प्रकार की सामाजिक हत्या है। व्यापक अर्थ में, इस आज्ञा का अर्थ है कि किसी को भी दूसरे व्यक्ति से घृणा नहीं करनी चाहिए। घृणा, ईर्ष्या और प्रतिशोध में हत्या का इरादा निहित है। यही यीशु का आशय था जब उन्होंने कहा, "जो कोई अपने भाई पर क्रोध करता है, वह दण्ड का दोषी है" (मत्ती 5:22)।

आध्यात्मिक अर्थ

इसमें लोगों की आत्माओं की हत्या करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले सभी तरीके शामिल हैं। इन तरीकों में नास्तिक दर्शन, मानवीय समझ पर आधारित धर्म और पवित्र वस्तुओं का खुला उपहास शामिल हैं। जो कोई भी दूसरों को झूठ सिखाता है, जैसे कि ईश्वर का अस्तित्व नहीं है, वह पाँचवीं आज्ञा का उल्लंघन करने का दोषी है।

दिव्य अर्थ

इसका अर्थ है स्वयं प्रभु को क्रोधित करना, उनके नाम का अपमान करना और लोगों को प्रभु से दूर ले जाना। जो लोग ऐसा करते हैं, वे इस अर्थ में प्रभु को सूली पर चढ़ाने के दोषी हैं। कई आधुनिक ईसाई ऐसा करते हैं, क्योंकि उन्होंने अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम को अपने विश्वास से अलग कर दिया है, और यही वास्तव में ईश्वर की हत्या है। प्रकाशितवाक्य की भविष्यवाणी का यही अर्थ है: "वध किया गया मेम्ना" (प्रकाशितवाक्य 5:6)।

छठी आज्ञा

"व्यभिचार न करना।" SM: विश्वास के गुणों और सत्यों को विकृत नहीं किया जाना चाहिए। इस शब्द का प्रयोग बुराई और अन्याय को उचित ठहराने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। ईश्वरीय व्यवस्था के नियमों को विकृत नहीं किया जाना चाहिए। अच्छाई और बुराई को एक साथ नहीं जोड़ा जाना चाहिए, न ही सत्य और असत्य को।

प्राकृतिक अर्थ

इस अर्थ के अनुसार, छठी आज्ञा वास्तविक व्यभिचार के साथ-साथ सभी प्रकार के अनैतिक कार्यों और विचारों का भी निषेध करती है। अनैतिक विचार करते हुए भी व्यक्ति व्यभिचार का दोषी माना जाता है: "जो कोई किसी स्त्री को वासना की दृष्टि से देखता है, वह अपने मन में उसके साथ व्यभिचार कर चुका है" (मत्ती 5:28)। आधुनिक ईसाइयों के जीवन में इस आज्ञा का उल्लंघन बहुत आम है। इसका प्रमाण यौन संबंधों पर अत्यधिक और झूठे ज़ोर से मिलता है। विवाह के विरुद्ध कोई भी विचार इस आज्ञा का उल्लंघन करता है। इस आज्ञा के उल्लंघन का परिणाम यह है कि आज शायद ही कोई जानता है कि शुद्ध विवाह के क्या रहस्य हैं।
नैतिक शुद्धता नए यरूशलेम के सदस्यों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस कलीसिया में शुद्ध आध्यात्मिक और स्वर्गीय सत्य निहित हैं। विवाह के माध्यम से, नया स्वर्ग पृथ्वी पर नए कलीसिया में प्रवाहित होता है।

आध्यात्मिक अर्थ

आध्यात्मिक व्यभिचार तब होता है जब वचन के सत्य और अच्छाई को विकृत किया जाता है। आज लगभग सभी ईसाई इस प्रकार के व्यभिचार में लिप्त हैं। आध्यात्मिक और प्राकृतिक व्यभिचार एक साथ होते हैं। सबसे बुरा आध्यात्मिक व्यभिचार यहूदियों ने किया है, जिन्होंने हर चीज़ में अच्छाई और बुराई, सच और झूठ को मिलाने की कोशिश की है। इसीलिए यीशु ने यहूदियों को "व्यभिचारी पीढ़ी" कहा (मत्ती 16:4)।

स्वर्गीय अर्थ

स्वर्गीय व्यभिचार, वचन की पवित्रता का खंडन और वचन को अपवित्र करना है। यही वे सभी लोग करते हैं जो अपने मन में धार्मिक मामलों पर हँसते हैं और उनका मज़ाक उड़ाते हैं।

सातवीं आज्ञा

"चोरी न करना।" SM: कोई भी किसी और से आध्यात्मिक सत्य और अच्छाई नहीं छीन सकता। कोई भी प्रभु की चीज़ों को अपने साथ नहीं जोड़ सकता।

प्राकृतिक अर्थ

सभी प्रकार की चोरी और डकैती निषिद्ध है। इसमें कानूनी तरीकों से की गई चोरी भी शामिल है। आजकल, ऐसी "कानूनी" चोरी बहुत आम है। इसमें सट्टा, नैतिक मूल्यों की परवाह किए बिना लाभ कमाने की कोशिश, कर चोरी, और दूसरों को लाभ पहुँचाए बिना धन संचय करने की सभी प्रकार की योजनाएँ शामिल हैं। नया चर्च धार्मिक आधार पर समाजवाद के सिद्धांतों को स्पष्ट कर सकता है, और नए चर्च और समाजवाद का मिलन साम्यवाद और नास्तिकता के नारकीय गठबंधन के विपरीत एक आशीर्वाद हो सकता है: सच्चा समाजवाद अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम है, और कच्चा पूंजीवाद सातवीं आज्ञा का उल्लंघन है।

आध्यात्मिक अर्थ

आध्यात्मिक चोरी धार्मिक सत्यों और सद्गुणों का हनन है, जो तब होता है जब झूठ को धार्मिक सत्य के रूप में पढ़ाया जाता है। प्रभु का यही तात्पर्य है जब वे कहते हैं, "जो भेड़शाला में द्वार से प्रवेश नहीं करता, परन्तु किसी और मार्ग से चढ़ता है, वह चोर और डाकू है" (यूहन्ना 10:1)। एकमात्र सच्चा द्वार यीशु मसीह और उनका स्वर्गीय सिद्धांत है। जो इसके विपरीत शिक्षा देते हैं, वे चोर और डाकू हैं।

दिव्य अर्थ

इस अर्थ में, चोर उन लोगों को कहते हैं जो प्रभु की दिव्य शक्ति को अपने लिए लेने और प्रभु के गुणों को अपने लिए हड़पने का प्रयास करते हैं।

ऐसे लोग अपने हृदय में ईश्वर में नहीं, बल्कि केवल अपने आप में विश्वास करते हैं, और धर्म का प्रयोग केवल अपने स्वार्थी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए करते हैं।

आठवीं आज्ञा

"अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना।" SM: तुम्हें अच्छे को बुरा या बुरे को अच्छा नहीं कहना चाहिए। सत्य को असत्य नहीं कहना चाहिए, न ही असत्य को सत्य कहना चाहिए।

प्राकृतिक अर्थ

किसी को भी न्यायालय में या सामान्यतः अन्य लोगों के सामने किसी अन्य व्यक्ति के विरुद्ध झूठी गवाही नहीं देनी चाहिए। व्यापक अर्थ में, यह आज्ञा सामाजिक जीवन में झूठ, छल और दिखावे के प्रयोग के साथ-साथ स्वार्थी उद्देश्यों के लिए किसी अन्य व्यक्ति की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाने का निषेध करती है।

आध्यात्मिक अर्थ

कोई व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से झूठी गवाही का दोषी तब होता है जब वह सचेत रूप से—अर्थात्, मामले की वास्तविक प्रकृति को जानते हुए—किसी अन्य व्यक्ति को यह विश्वास दिलाने का प्रयास करता है कि जो झूठ है वह सत्य है, या कि बुरा जीवन जीना अच्छा जीवन जीना है, और इसके विपरीत।

दिव्य अर्थ

इस अर्थ में, झूठी गवाही देने का अर्थ है प्रभु और उनके वचन का उपहास करना और जानबूझकर कलीसिया के सत्यों को अमान्य करना।

नौवीं और दसवीं आज्ञाएँ

"अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना।" एसएम: लोगों को सावधान रहना चाहिए कि सांसारिक चीज़ों—खासकर धन और संपत्ति—के प्रति प्रेम उनकी इच्छा पर नियंत्रण न कर ले।

इसलिए यह नौवीं आज्ञा स्वर्ग से ज़्यादा संसार से प्रेम करने से मना करती है। "तू अपने पड़ोसी की पत्नी, न उसके दास, न उसकी दासी, न उसके बैल, न उसके गधे, न ही अपने पड़ोसी की किसी भी चीज़ का लालच न करना।" एसएम: यह दसवीं आज्ञा यह दर्शाती है कि व्यक्ति को सावधान रहना चाहिए कि उसका आत्म-प्रेम—विशेषकर आत्म-प्रेम के कारण दूसरों को नियंत्रित करने की इच्छा—उसकी इच्छा पर हावी न हो जाए। पत्नी दिव्य और आध्यात्मिक मामलों के लिए प्राथमिकताओं को संदर्भित करती है। नौकर और नौकरानियाँ आध्यात्मिक और दिव्य मामलों की सेवा करने वाली तर्कसंगत प्रवृत्तियों को संदर्भित करती हैं। बैल और गधे प्राकृतिक प्रवृत्तियों को संदर्भित करते हैं। इन प्रवृत्तियों का लालच एक व्यक्ति की किसी अन्य व्यक्ति को अपनी शक्ति के अधीन करने की इच्छा को संदर्भित करता है, अर्थात, आत्म-प्रेम के कारण उन्हें नियंत्रित करना।
नौवीं और दसवीं आज्ञाएँ पिछली सभी आज्ञाओं का उल्लेख करती हैं, जिनमें सूचीबद्ध बुराइयों का लालच नहीं किया जाना चाहिए। नौवीं आज्ञा सांसारिकता की बुराई को और दसवीं आज्ञा आत्म-प्रेम की बुराई को शामिल करती है। बुराई के ये दो रूप सभी संभावित प्रकार की बुराइयों को समाहित करते हैं। इन अंतिम दो आज्ञाओं के प्राकृतिक, आध्यात्मिक और दिव्य अर्थों का अर्थ है कि पिछली आज्ञाओं में सूचीबद्ध बुराइयों की लालसा नहीं करनी चाहिए।
दस आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीना ही यीशु का आशय था जब उन्होंने कहा:

"अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और अपने सारे प्राण, और अपनी सारी शक्ति, और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखना; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।" (लूका 10:27)।

अंत में, मैं इन आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीने के तरीके पर एक सरल मार्गदर्शिका शामिल करूँगा। यह स्वीडन-बोर्ग के एपोकैलिप्सिस एक्सप्लिकाटा (संख्या 935) का सीधा अनुवाद है:
"पहली आज्ञा, 'मेरे सिवा तेरे कोई अन्य ईश्वर न हों,' यह भी माँग करती है कि मनुष्य स्वयं से और संसार से प्रेम न करे; क्योंकि जो स्वयं से और संसार से सबसे अधिक प्रेम करता है, वह अन्य देवताओं की पूजा करता है; क्योंकि मनुष्य जिसे सबसे अधिक प्रेम करता है, वह उसका ईश्वर है।

दूसरी आज्ञा, "तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना", यह भी माँग करती है कि मनुष्य वचन, वचन की शिक्षा और इस प्रकार कलीसिया का तिरस्कार या अस्वीकार न करे; क्योंकि ये भी परमेश्वर के नाम हैं।
पाँचवीं आज्ञा, "तू हत्या न करना", यह भी माँग करती है कि मनुष्य अपने पड़ोसी से घृणा न करे या बदला न ले; क्योंकि घृणा और बदला लेने की भावनाएँ हत्या को जन्म देती हैं।
छठी आज्ञा, "तू व्यभिचार न करना", विशेष रूप से यह माँग करती है कि लोग व्यभिचार न करें और विवाह को घृणित न समझें; न ही वे विवाह से संबंधित बातों को अशुद्ध विचारों से अपवित्र करें; क्योंकि ये भी व्यभिचार हैं।
सातवीं आज्ञा, "तू चोरी न करना", यह भी माँग करती है कि व्यक्ति छल-कपट और अवैध लाभ से दूर रहे, क्योंकि ये भी चोरी हैं।
आठवीं आज्ञा, "तू झूठी गवाही न देना", यह भी माँग करती है कि लोग झूठ न बोलें या उपहास न करें; क्योंकि ये भी झूठी गवाही हैं।
नौवीं आज्ञा, "तू अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना", यह भी माँग करती है कि लोगों को दूसरों की इच्छा के विरुद्ध उनकी संपत्ति पर कब्ज़ा करने की इच्छा नहीं करनी चाहिए।
दसवीं आज्ञा, "तू अपने पड़ोसी की पत्नी, नौकर आदि का लालच न करना", यह भी माँग करती है कि लोग दूसरों पर नियंत्रण करने का लालच न करें और उन्हें अपनी शक्ति के अधीन न करें।
इसके अतिरिक्त, चौथी आज्ञा हमें भलाई और सत्य, अर्थात् ईश्वर और कलीसिया से प्रेम करने के लिए बाध्य करती है। यह एक एकीकृत आज्ञा है जो दो पट्टियों को जोड़ती है: ईश्वर से प्रेम करने से संबंधित पट्टिका, अर्थात् पहली तीन आज्ञाएँ, और अपने पड़ोसी से प्रेम करने से संबंधित पट्टिका, जिसमें अंतिम छह आज्ञाएँ हैं।
व्यवहार में, तीसरी आज्ञा का अर्थ है कि एक पुनर्जन्म प्राप्त व्यक्ति जो प्रभु के मार्गदर्शन और संरक्षण में रहता है, उसे अपने पुराने जीवन में नहीं लौटना चाहिए, अर्थात् अपनी समझ और आत्म-प्रेम के अनुसार जीवन नहीं जीना चाहिए, या अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल नहीं खाना चाहिए।

ईश्वरीय विधान

क्या दो गौरैयाएँ एक पैसे की नहीं बिकतीं? और उनमें से एक भी तुम्हारे पिता के बिना ज़मीन पर नहीं गिरेगी। परन्तु तुम्हारे सिर के बाल भी गिने हुए हैं। (मत्ती 10:29, 30)।

यह तथ्य कि प्रभु पूरे ब्रह्मांड का मार्गदर्शन करते हैं, उसे ईश्वरीय विधान (लैटिन: प्रोविडेंटिया) कहा जाता है। प्रभु मनुष्यों को कुछ सीमाओं के भीतर बुराई करने की अनुमति देते हैं। इसे अनुमति (लैटिन: परमिस-सियो) कहा जाता है। लेकिन चूँकि प्रभु स्वयं ईश्वरीय प्रेम और बुद्धि हैं, वे नहीं चाहते कि लोग बुराई करें, बल्कि वे बुराई की अनुमति देते हैं ताकि वे इसका उपयोग लोगों को अच्छाई की ओर ले जा सकें। आजकल, बहुत कम लोग ईश्वरीय विधान के नियमों को जानते हैं, और बहुत से तो ईश्वरीय विधान में विश्वास भी नहीं करते। ईश्वरीय विधान, जिसमें अनुमति भी शामिल है, अक्सर मानवीय तर्क से गुप्त रूप से कार्य करता है। यदि प्रभु ईश्वरीय विधान के नियमों को प्रकट न करते, तो मानवता उन्हें कभी नहीं खोज पाती। हालाँकि, स्वीडनबॉर्ग के माध्यम से, प्रभु ने प्रोविडेंस के कुछ सबसे सामान्य नियमों को प्रकट किया है ताकि जो लोग अपनी समझ से उन्हें खोजते हैं, वे उन्हें पा सकें।
स्वीडनबॉर्ग से पहले ऐसा नहीं हुआ था क्योंकि ईसाई चर्च के अंधे हठधर्मिता ने लोगों के मन को आस्था के मामलों के प्रति बंद कर दिया था। प्रोविडेंस और अनुमति के नियम ईश्वरीय व्यवस्था के नियमों का हिस्सा हैं।
हमारे ग्रह पर बहुत बुराई है। क्रूर युद्ध, दुख और पीड़ा, अन्याय, अपराध और कई प्रकार की कठिनाइयाँ हैं। दर्जनों धर्म और कई नास्तिक विश्वदृष्टियाँ हैं, साथ ही कई अलग-अलग राजनीतिक और आर्थिक सिद्धांत हैं, जो अक्सर एक-दूसरे के साथ संघर्ष में रहते हैं। कई स्वार्थी और बुरे लोग समृद्ध होते हैं, लेकिन अच्छे लोग पीड़ित होते हैं। प्रदूषण पृथ्वी पर जीवन के लिए खतरा है, जैसा कि परमाणु युद्ध भी करता है। ऐसी चीजों के बारे में सोचते समय, कई प्राकृतिक लोग अपने मन में ईश्वर के अस्तित्व को नकारते हैं और प्रकृति और पदार्थ को ही अस्तित्व का एकमात्र रूप मानते हैं।

परन्तु प्राकृतिक मनुष्य अपनी इन्द्रिय-भ्रमों से परे नहीं देख सकता, क्योंकि प्रभु, जो स्वयं शाश्वत और असीम हैं, केवल उसी पर विचार करते हैं जो मनुष्य के शाश्वत जीवन में उसके लिए अच्छा है। ईश्वर का लक्ष्य मनुष्य के लिए वास्तव में अच्छा है, न कि केवल कुछ दशकों तक चलने वाली चीज़ों पर। दिव्य बुद्धि शारीरिक मृत्यु के बाद के जीवन पर केंद्रित है। प्रभु प्राकृतिक चीज़ों का मार्गदर्शन इस दृष्टिकोण से करते हैं कि वे मनुष्य के शाश्वत जीवन को कैसे प्रभावित करती हैं। पृथ्वी पर जीए गए कुछ दशकों का शाश्वत जीवन की तुलना में क्या अर्थ है? कुछ दशकों के लिए किसी व्यक्ति के शाश्वत सुख का त्याग करना बेतुका होगा। सांसारिक सम्मान और धन हमेशा लोगों के लिए वरदान नहीं होते। वे कई लोगों के लिए सीधा अभिशाप बन सकते हैं, उन्हें उस एकमात्र चीज़ से दूर ले जा सकते हैं जो मनुष्य के लिए सच्चा वरदान है। आंतरिक अच्छाई और सत्य ही सच्चे वरदान हैं, क्योंकि इनके माध्यम से मनुष्य प्रभु और उनके स्वर्ग के साथ एकाकार होता है। वचन में निम्नलिखित का यही अर्थ है:

अपने लिए पृथ्वी पर धन संचय न करो, जहाँ कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर सेंध लगाते और चुराते हैं:
परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन संचय करो, जहाँ न कीड़ा, न काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं: क्योंकि जहाँ तुम्हारा धन है, वहाँ तुम्हारा मन भी लगा रहेगा। (मत्ती 6:19-21)।

चूँकि मनुष्य के पुनर्जन्म में ईश्वरीय विधान के नियमों का ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसलिए अब मैं स्वीडनबॉर्ग का अनुसरण करते हुए, ईश्वरीय विधान के सबसे महत्वपूर्ण नियमों को प्रस्तुत करूँगा।

1. ईश्वरीय विधान आध्यात्मिक और प्राकृतिक जगत में प्रभु के दिव्य प्रेम और ज्ञान का नियम है। चूँकि अच्छाई और सत्य प्रभु से एकता में प्रवाहित होते हैं, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि एक ओर अच्छाई और सत्य, और दूसरी ओर बुराई और असत्य के मिलन को नियंत्रित करने वाला एक नियम है।

चूँकि दिव्य प्रेम ने दिव्य बुद्धि (साधनात्मक कारण) के माध्यम से आध्यात्मिक और प्राकृतिक जगत की रचना की, और फिर अच्छाई और सत्य का एकीकरण हुआ, इसलिए सभी सृजित वस्तुओं में अच्छाई और सत्य का यह मिलन अवश्य है। मनुष्यों में, यह इच्छाशक्ति और समझ के मिलन के रूप में प्रकट होता है। मनुष्य के ईश्वर से विमुख होने से बुराई और अन्याय का मिलन हुआ, और तब भी, समझ और इच्छाशक्ति का मिलन बना रहा, क्योंकि दुष्ट व्यक्ति की इच्छा अन्याय को आकर्षित करती है। ईश्वर सभी वस्तुओं में अच्छाई और सत्य का एकीकरण करना चाहता है। इसका अर्थ है कि मनुष्य प्रभु से वास्तविक सत्य तभी प्राप्त कर सकता है जब उसकी इच्छा अच्छी हो। चूँकि आधुनिक मनुष्यों में वंशानुगत बुराई के कारण दुष्ट इच्छाशक्ति होती है, इसलिए केवल वे ही जो प्रभु द्वारा पुनर्जन्म प्राप्त कर चुके हैं, जो हमारे अंधकारमय समय में बहुत कम हैं, वास्तविक सत्य को जानते हैं। इसी कारण, प्रभु स्वीडनबॉर्ग के धर्मशास्त्र की ओर भी बहुत कम लोगों का मार्गदर्शन करते हैं। प्रभु दुष्ट लोगों को उनकी बुराई के अनुरूप अन्याय का अनुभव करने देते हैं। प्रभु दुष्ट लोगों—अर्थात् जिनका पुनर्जन्म नहीं हुआ है—के मन को इतना बंद रखते हैं कि वे वास्तविक सत्यों को सुन या पढ़ लेने पर भी नहीं समझ पाते।

2. ईश्वरीय विधान का उद्देश्य मानवजाति से एक देवदूतीय स्वर्ग का निर्माण करना है।

जीवन के अर्थ के बारे में सदियों पुराने प्रश्न का स्पष्ट उत्तर मिलता है: जीवन का अर्थ देवदूतों की संख्या बढ़ाना है। स्वर्ग अच्छाई और सत्य के माध्यम से प्रभु के साथ मिलन है। प्रत्येक मनुष्य में एक आत्मा होती है जो उसे पुनर्जन्म के माध्यम से प्रभु के और निकट आने में सक्षम बनाती है। एक व्यक्ति प्रभु के जितना निकट होता है, वह उतना ही अधिक बुद्धिमान और समझदार बनता है। एक व्यक्ति प्रभु से जितना दूर होता है, वह उतना ही अधिक मूर्ख बनता है। एक व्यक्ति प्रभु के जितना निकट होता है, उतना ही अधिक सुखी भी होता है। एक व्यक्ति प्रभु के जितना निकट होता है, उतना ही अधिक स्पष्ट रूप से उसे यह महसूस होता है कि वह स्वतंत्र है और अपने कार्यों पर उसका नियंत्रण है, लेकिन साथ ही, उसे यह भी उतना ही अधिक स्पष्ट रूप से महसूस होता है कि वह प्रभु का है। यह विरोधाभासी लग सकता है, लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि लोग नहीं जानते कि वास्तव में स्वतंत्रता क्या है।

एक ओर नारकीय स्वतंत्रता है, और दूसरी ओर स्वर्गीय स्वतंत्रता। नारकीय स्वतंत्रता बुराई सोचने, इच्छा करने और करने की क्षमता है, अर्थात ईश्वरीय व्यवस्था के विरुद्ध इच्छा और कार्य करने की क्षमता। स्वर्गीय स्वतंत्रता अच्छा सोचने, इच्छा करने और करने की क्षमता है। व्यक्ति स्वतंत्रता में जो कुछ भी सोचता, इच्छा करता या करता है, उसे वह अपना ही अनुभव करता है, क्योंकि स्वतंत्रता उसके प्रेम से जुड़ी होती है। दुष्ट लोग केवल नारकीय स्वतंत्रता को ही सच्ची स्वतंत्रता के रूप में अनुभव करते हैं। अच्छे लोग केवल स्वर्गीय स्वतंत्रता को ही स्वतंत्रता के रूप में अनुभव करते हैं। इसलिए स्वतंत्रता का विरोध करना दोनों की गुलामी है। नारकीय स्वतंत्रता व्यक्ति को नारकीय आत्माओं से जोड़ती है, इनसे व्यक्ति में आत्म-प्रेम और सांसारिक प्रेम प्रवाहित होता है। स्वर्गीय स्वतंत्रता व्यक्ति को प्रभु के दूतों की संगति से जोड़ती है; उनसे प्रभु के प्रति प्रेम और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम प्रवाहित होता है। स्वर्गीय स्वतंत्रता व्यक्ति को असीमित अच्छाई और सच्चाई प्रदान करती है। इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति जितना अधिक प्रभु के निकट होता है, उतना ही अधिक स्पष्ट रूप से वह स्वतंत्र महसूस करता है, क्योंकि उसे अच्छाई और सत्य का एक असीम स्रोत प्राप्त होता है, और उसे ऐसा लगता है कि ये अच्छी चीज़ें और सत्य उसके अपने हैं—जैसे उसने इन्हें स्वयं बनाया है—भले ही वह जानता हो कि ये प्रभु से आती हैं। यह कि लोग प्रभु से प्राप्त अच्छाई और सत्य को अपना अनुभव कर पाते हैं, ईश्वरीय विधान का नियम है, जिसका उद्देश्य लोगों को शाश्वत सुख प्रदान करना है।

3. प्रभु का ईश्वरीय विधान अपने सभी कार्यों में अनंत और शाश्वत चीज़ों को लक्ष्य करता है।

प्रभु स्वयं शाश्वत और अनंत हैं। ऐसा कुछ भी नहीं है जो अनंत और शाश्वत हो, इसलिए जो कुछ भी अनंत और शाश्वत है वह ईश्वर से आता है। जो कुछ भी निर्मित है वह सीमित है। मानव आत्मा अनंत काल तक जीवित रहती है, लेकिन यह ईश्वर की अनंतता से इस मायने में भिन्न है कि इसकी एक सीमित शुरुआत है। ईश्वर की अनंतता भूत, वर्तमान और भविष्य को समाहित करती है, और इसका कोई सीमित प्रारंभ या अंत नहीं है। आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही जगत निर्मित हैं और इसलिए सीमित हैं। ईश्वर समय और स्थान से परे है, लेकिन फिर भी वह पत्राचार के माध्यम से समय और स्थान से जुड़ा हुआ है।

भगवान किसी भी चीज़ को शाश्वत के अलावा किसी अन्य दृष्टिकोण से नहीं देख सकते, क्योंकि ऐसा न करना उनके अपने आदेश के विरुद्ध कार्य करना होगा। ईश्वर जीवन के सभी मामलों और कार्यों में मनुष्यों का मार्गदर्शन केवल उसी सीमा तक करते हैं जहाँ तक वे मानव शाश्वत जीवन के लिए प्रासंगिक हैं। इस प्रकार, ईश्वर मनुष्यों में शाश्वत और लौकिक लाभों का संयोजन करते हैं।

भगवान की अनंतता और शाश्वतता प्राकृतिक जगत की कई चीज़ों में परिलक्षित होती है। उदाहरण के लिए, प्रकृति में कोई भी दो चीज़ें एक जैसी नहीं होतीं। सभी रूपों की अनंत संख्या और वृद्धि भगवान की अनंतता के समानांतर हैं। जीवों की अनंत प्रजनन क्षमता, बदले में, ईश्वर की अनंतता के समानांतर है।

4. ईश्वरीय विधान का नियम, कि मनुष्य अपनी समझ के अनुसार स्वतंत्र रूप से सोचने, इच्छा करने और कार्य करने में सक्षम होना चाहिए।

मनुष्य की समझ और स्वतंत्र इच्छा भगवान से आती है। समझ मानव आत्मा में प्रवेश करने वाले आध्यात्मिक प्रवाह से उत्पन्न होती है। स्वतंत्रता स्वर्ग और नरक के बीच संतुलन से उत्पन्न होती है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि मानवीय समझ पूरी तरह से मस्तिष्क की गतिविधि का परिणाम है, और वे मनुष्यों को अनिवार्य रूप से जटिल मशीन मानते हैं। वे यह नहीं समझते कि समझ आत्मा के अस्तित्व पर आधारित आध्यात्मिक दृष्टि है:
आध्यात्मिक प्रवाह मानव आत्मा की ओर निर्देशित होता है, जिसका मानव मस्तिष्क और इंद्रियों के साथ संपर्क समझ को जन्म देता है।
सोचने, इच्छा करने, बोलने और जो कुछ भी व्यक्ति समझता है उसे करने की क्षमता मानव की स्वतंत्र इच्छा है। समाज कर्म और वाणी पर प्रतिबंध लगाता है, लेकिन सोच और इच्छा हमेशा स्वतंत्र होती है। बहुत कम लोग जानते हैं कि स्वतंत्र इच्छा स्वर्ग और नरक के बीच संतुलन से उत्पन्न होती है। हालाँकि, यह सर्वविदित है कि जब दो कारक एक-दूसरे को इस प्रकार प्रभावित करते हैं कि एक का प्रभाव दूसरे के प्रति-प्रभाव के बराबर होता है, तो दोनों शक्तिहीन होते हैं, क्योंकि दोनों पक्षों की समान शक्तियाँ होती हैं जो एक-दूसरे को निरस्त कर देती हैं। ऐसी स्थिति में, एक तीसरा कारक अपनी पूरी शक्ति से पिछले दोनों कारकों को प्रभावित कर सकता है। आत्माओं के संसार में स्वर्ग और नरक के बीच ऐसा ही संतुलन बना रहता है। मनुष्य स्वयं इस तीसरे कारक के समान है, जो स्वतंत्र रूप से अपनी दिशा चुन सकता है।

यदि आत्माओं की दुनिया में केवल अच्छी आत्माएँ या केवल बुरी आत्माएँ होतीं, तो चुनाव की कोई संभावना नहीं होती। यदि केवल अच्छी आत्माएँ होतीं, तो कोई भी आधुनिक मनुष्य एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता था, क्योंकि जीवन के लिए आत्माओं की दुनिया से एक प्रवाह की आवश्यकता होती है, और वंशानुगत बुराई के कारण, यह प्रवाह बुरी आत्माओं से ही आना चाहिए। यदि आत्माओं की दुनिया में केवल बुरी आत्माएँ होतीं, तो किसी भी मनुष्य का पुनर्जन्म नहीं हो सकता था, क्योंकि पुनर्जन्म का अर्थ ही देवदूत आत्माओं की संगति में शामिल होना है।

ऊपर वर्णित दो क्षमताएँ—स्वतंत्र इच्छा और समझ—वे उपकरण हैं जिनके द्वारा प्रभु मनुष्य का पुनर्जन्म करते हैं। इन क्षमताओं के बिना, किसी का भी पुनर्जन्म नहीं हो सकता। ईश्वर मनुष्य को जीवन भर स्वतंत्रता और समझ की इसी अवस्था में रखता है, ताकि मनुष्य स्वयं सही और गलत को समझ सके और अच्छाई या बुराई की इच्छा कर सके। स्वतंत्र इच्छा और समझ के माध्यम से, मनुष्य ईश्वर से जुड़ता है और ईश्वर मनुष्य से जुड़ता है। यह मिलन पारस्परिक है। ईश्वर उस व्यक्ति के साथ एक नहीं हो सकता जो उसके साथ एक नहीं होना चाहता। इसी कारण, लोगों को दो पत्थर की पटियाओं पर दस आज्ञाएँ दी गईं, एक परमेश्वर के विषय में और दूसरी मनुष्य के विषय में। जब कोई व्यक्ति अपनी पटिया पर लिखी आज्ञाओं का पालन ऐसे करता है मानो वह स्वयं ही कर रहा हो, फिर भी यह जानते हुए कि इन आज्ञाओं का पालन करने की शक्ति केवल परमेश्वर से ही आती है, प्रभु उस व्यक्ति को दूसरी पटिया पर लिखी आज्ञाओं का पालन करने में सहायता करते हैं। परन्तु जो व्यक्ति अपनी पटिया पर लिखी आज्ञाओं का पालन नहीं करता, वह दूसरी पटिया पर लिखी आज्ञाओं का पालन भी नहीं कर सकता। पहली तीन आज्ञाएँ एक पटिया बनाती हैं जो प्रभु के प्रति प्रेम को व्यक्त करती हैं, जबकि अगली सात आज्ञाओं में अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम समाहित है। जब कोई व्यक्ति अधिकार (चर्च, समाज, माता-पिता) का सम्मान करता है, हत्या नहीं करता, चोरी नहीं करता, व्यभिचार नहीं करता, अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही नहीं देता, और दूसरे की वस्तु का लालच नहीं करता, तो वह अपनी पटिया पर लिखी आज्ञाओं का पालन करता है। ऐसा करने से, प्रभु की सहायता से, वे दूसरी तालिका की आज्ञाओं को भी पूरा कर सकते हैं, जिसका अर्थ है कि एक व्यक्ति को अपने पूरे हृदय, आत्मा और शक्ति से प्रभु से प्रेम करना चाहिए (व्यवस्थाविवरण 6: 5)।

5. व्यक्ति में अपने बाहरी स्वभाव से बुराई को पाप मानकर उसे दूर करने की इच्छा होनी चाहिए। तब प्रभु उसके आंतरिक स्वभाव से भी बुराई को दूर कर देंगे।

प्रत्येक व्यक्ति के बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार के विचार होते हैं। जब व्यक्ति दूसरों के साथ होता है, तो वह अपने बाह्य विचारों के अनुसार बोलता और कार्य करता है। इस स्थिति में, वह उन लोगों के प्रति भी विनम्र हो सकता है जिनसे वह घृणा करता है, और वह निष्पक्ष और ईमानदारी से बात कर सकता है, भले ही वह अंदर से बेईमान हो, आदि। यह बाह्य सोच नैतिक रूप से बुरे लोगों के लिए भी समाज में रहना संभव बनाती है। हालाँकि, लोगों के आन्तरिक विचार भी होते हैं, जिन्हें वे अकेले होने पर मन में रखते हैं। ये आन्तरिक विचार ही निर्धारित करते हैं कि व्यक्ति वास्तव में कैसा है, क्योंकि अकेले होने पर व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार सोचता है।
व्यक्ति के आन्तरिक विचार ही उसके बाह्य विचारों की प्रकृति को भी निर्धारित करते हैं। एक दुष्ट व्यक्ति के आन्तरिक विचार, भले ही वे अच्छे होने का दिखावा करते हों, वास्तव में बुरे ही होते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि आन्तरिक विचार ही वास्तविक उद्देश्य होते हैं और आन्तरिक विचार ही साधन होते हैं, और उद्देश्य ही साधन की गुणवत्ता को भी निर्धारित करता है। यदि कोई दुष्ट व्यक्ति बाह्य रूप से अच्छा आचरण भी करता है, तब भी वह स्वार्थी लक्ष्यों का पीछा कर रहा होता है, क्योंकि उसका बाह्य रूप से अच्छा आचरण उसके स्वार्थी लक्ष्यों की प्राप्ति का एक साधन मात्र है।
एक व्यक्ति को अपने बाह्य स्वरूप से बुराई को दूर करना चाहिए क्योंकि यह पाप है। यदि कोई व्यक्ति इसे पाप मानकर नहीं, बल्कि केवल नैतिक और आचारिक कारणों से दूर करता है, तो वह इनसे शुद्ध नहीं होगा, बल्कि केवल अपनी बुराई को अन्य लोगों से छिपाएगा। जब कोई व्यक्ति अपनी बुराई के विरुद्ध इसलिए लड़ता है क्योंकि यह पाप है, तो प्रभु धीरे-धीरे उसके आंतरिक स्वरूप से बुराई को दूर कर देते हैं।
मनुष्य को न केवल पाप करने के विरुद्ध, बल्कि पाप की इच्छा के विरुद्ध भी लड़ना चाहिए। तभी प्रभु मनुष्य की आंतरिक इच्छा को वासनाओं से शुद्ध कर सकते हैं और इस प्रकार उसके आंतरिक स्वरूप की सहायता से उसके बाहरी स्वरूप को भी शुद्ध कर सकते हैं।

चूँकि लोगों को प्रभु से स्वतंत्र इच्छा और समझ प्राप्त है, इसलिए उन्हें यह सब स्वयं ही करना चाहिए, फिर भी यह जानते हुए कि शुद्धिकरण केवल प्रभु की सहायता से ही होता है। ऐसा करने से, व्यक्ति स्वयं प्रभु की ओर मुड़ जाता है, और प्रभु तब व्यक्ति के अंतरतम में प्रवेश कर सकते हैं और उसे वहीं से शुद्ध कर सकते हैं।

जैसा कि कई आधुनिक ईसाई मानते हैं, केवल विश्वास से ही व्यक्ति अपने पापों से शुद्ध नहीं होता। व्यक्ति को अपनी बुरी प्रवृत्तियों से लड़ना चाहिए और साथ ही इस युद्ध में शक्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। केवल इसी प्रकार मनुष्य और ईश्वर के बीच वाचा साकार हो सकती है, जिसके लिए मानवीय वाचाओं की तरह, दोनों पक्षों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। केवल ऐसा करने से ही व्यक्ति धीरे-धीरे शुद्ध हो सकता है और उस बुराई से सचमुच घृणा करना शुरू कर सकता है जो पहले उसे प्रिय थी। आधुनिक ईसाइयों का यह विश्वास कि यीशु के लहू ने उन्हें उनके पापों से पूरी तरह शुद्ध कर दिया है, जब तक वे यीशु में विश्वास करते हैं, एक भयानक भ्रांति है और ईश्वरीय विधान के पूर्णतः विपरीत है, क्योंकि इस प्रकार, विश्वासियों की बुराई उनके भीतर स्थायी रूप से बनी रहती है, जो अंततः उन्हें नरक की ओर ले जाती है।

6. लोगों को धार्मिक मामलों के बारे में सोचने के लिए बाहरी माध्यमों से बाध्य नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उन्हें धार्मिक मानदंडों का पालन करने के लिए स्वयं को बाध्य करना चाहिए।

किसी का पुनर्जन्म चमत्कारों या संकेतों से नहीं हो सकता जो लोगों को बाध्य करते हैं, बल्कि उनकी समझ और स्वतंत्रता का आह्वान करके हो सकता है, जो अकेले ही पुनर्जन्म ला सकती है। चमत्कार और संकेत बाहरी माध्यमों से और इस प्रकार संसार से विश्वास उत्पन्न करते हैं, जबकि सच्चा विश्वास भीतर से, सीधे प्रभु से आता है। चर्च के इतिहास में ऐसे कई उदाहरण हैं कि चमत्कार और संकेत वास्तविक विश्वास उत्पन्न नहीं करते।
न ही किसी का पुनर्जन्म आत्माओं की दुनिया में उत्पन्न दर्शनों या संबंधों से हो सकता है, क्योंकि ये भी मनुष्य की इच्छा को बाध्य करते हैं। स्वर्गीय संकेतों पर आधारित स्वर्गीय दर्शन, दुष्ट आत्माओं के कारण उत्पन्न नारकीय दर्शन, तथा बीमार मन की उपज भ्रमात्मक दर्शन होते हैं।

आज के कई धार्मिक आंदोलन नारकीय दर्शनों के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए हैं, और उनके संस्थापक अपने दर्शनों को ईश्वरीय रहस्योद्घाटन मानते थे। आत्माओं से संवाद करना भी मनुष्यों के लिए अच्छा नहीं है, बल्कि खतरनाक भी है, क्योंकि नारकीय आत्माएँ मनुष्यों से जुड़ने और उन्हें नुकसान पहुँचाने के अलावा और कुछ नहीं चाहतीं। यह अलग बात है कि यदि प्रभु के संरक्षण में किसी व्यक्ति को आत्माओं से संवाद करने का कार्य सौंपा जाए, जैसा कि स्वीडनबॉर्ग के साथ हुआ था। हमारे समय में, कई प्रकार के "प्रकटीकरण" आत्माओं की दुनिया से, प्रत्यक्ष निर्देशों से आए हैं, लेकिन वे सभी दुष्ट आत्माओं से उत्पन्न झूठ हैं।
किसी का भी पुनर्जन्म धमकियों और दंडों से नहीं हो सकता, क्योंकि वे भी बलपूर्वक होते हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि धमकियाँ और दंड किसी व्यक्ति की आंतरिक इच्छा को प्रभावित नहीं कर सकते।
किसी का भी पुनर्जन्म ऐसी मनःस्थिति में नहीं हो सकता जहाँ उसके पास तर्क और स्वतंत्रता का अभाव हो। ऐसी स्थितियाँ, उदाहरण के लिए, तीव्र भय, गंभीर शारीरिक और मानसिक बीमारी, दुर्घटनाएँ, मानसिक विकार, धार्मिक नियमों की अज्ञानता और अज्ञानता के कारण हो सकती हैं। अज्ञानता एक ऐसी स्थिति को संदर्भित करती है जिसमें एक झूठे धर्म ने समझ को बंद कर दिया है; अधिकांश आधुनिक ईसाई, जो मानते हैं कि वे केवल विश्वास से ही बच जाएँगे, ऐसी ही स्थिति में हैं।
हालाँकि, एक व्यक्ति को धार्मिक मानदंडों का पालन करने के लिए खुद को बाध्य करने की अनुमति है, क्योंकि खुद को बाध्य करना बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक बाध्यता है और इसलिए यह व्यक्ति की अपनी स्वतंत्रता और तर्क से किया जाता है।

7. परमेश्वर वचन के माध्यम से लोगों का मार्गदर्शन और शिक्षा देता है, लेकिन इस तरह से कि लोग इस शिक्षा का अनुभव ऐसे करते हैं मानो यह उनके भीतर से आ रही हो।

जैसा कि उल्लेख किया गया है, ईश्वर के सबसे महत्वपूर्ण नियमों में से एक यह है कि मनुष्यों में समझ और स्वतंत्र इच्छाशक्ति होनी चाहिए, जिसके बिना उनका पुनर्जन्म नहीं हो सकता। इस कारण, परमेश्वर लोगों का सीधे मार्गदर्शन और शिक्षा नहीं दे सकता, जैसे एक शिक्षक स्कूली बच्चों को सिखाता है। ईश्वरत्व हमेशा लोगों को इस तरह सिखाता है कि उनकी अपनी गतिविधि नष्ट न हो।

मनुष्य ईश्वर के यांत्रिक यंत्र नहीं हैं; यह उनकी अपनी चेतना है जो उन्हें मानव बनाती है। ईश्वर मनुष्यों को इस प्रकार शिक्षा देते हैं कि उन्हें ऐसा लगता है मानो वे स्वयं आध्यात्मिक सत्य सीख रहे हैं, क्योंकि इस प्रकार की शिक्षा उनकी स्वतंत्र इच्छा को सुरक्षित रखती है।

ईश्वर हमारे ग्रह पर मनुष्यों को वचन के माध्यम से मार्गदर्शन और शिक्षा देते हैं। वचन के माध्यम से, दिव्य प्रवाह सीधे मानव आत्मा में प्रवाहित होता है, हालाँकि मनुष्य स्वयं इस पर शायद ही कभी ध्यान देते हैं। ईश्वर आध्यात्मिक जगत के माध्यम से मनुष्यों को अप्रत्यक्ष रूप से भी शिक्षा देते हैं। वचन के माध्यम से, ईश्वर केवल उन्हीं को शिक्षा देते हैं जिनका पुनर्जन्म हो रहा है, क्योंकि वचन उन लोगों पर प्रकट नहीं होता जो दुष्टता में रहते हैं। वचन के माध्यम से, नवजात शिशु अपनी आत्मा में, अर्थात् अपनी अंतरतम इच्छा और समझ में, एक सीधा प्रवाह प्राप्त करता है। इच्छा में प्रवेश करने वाला प्रवाह उसमें अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम जागृत करता है। समझ में प्रवेश करने वाला प्रवाह उसमें ज्ञानोदय का कारण बनता है। प्रबुद्ध व्यक्ति के लिए, वचन अपने स्वयं के प्रकाश में प्रकट होता है, जो दिव्य सत्य है। प्रबुद्ध व्यक्ति के लिए, वचन के आंतरिक अर्थ प्रकट होते हैं, और वे एक आंतरिक बोध विकसित करते हैं जो उन्हें अपने विचारों में सत्य को देखने की अनुमति देता है। आत्मज्ञान केवल उसी व्यक्ति को प्राप्त हो सकता है जो सत्य को केवल अपने लिए प्रेम करता है और सत्य को अपने जीवन में उतारता है। जो लोग स्वार्थी कारणों से सत्य की खोज करते हैं, वे आत्मज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते।

8. मनुष्य को ईश्वरीय विधान की क्रियाओं को न तो समझना चाहिए और न ही महसूस करना चाहिए, फिर भी उसे उसके अस्तित्व को जानना और स्वीकार करना चाहिए।

यदि मनुष्य ईश्वरीय विधान की कार्यप्रणाली को ठीक-ठीक समझ या महसूस कर पाते, तो वे तर्कसंगत और स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं करते, बल्कि स्वचालित मशीनों की तरह महसूस करते। इसका अर्थ यह होता कि मनुष्य भविष्य की घटनाओं को पहले से ही जान लेते। ईश्वर स्वयं सब कुछ जानते हैं—भविष्य, वर्तमान और भूत। किसी व्यक्ति के लिए, भविष्य को ठीक-ठीक जानना खतरनाक है, क्योंकि ऐसा ज्ञान उस व्यक्ति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता, अर्थात् समझ और स्वतंत्रता के साथ कार्य करने की क्षमता को नष्ट कर देता है।

भविष्य जानने से व्यक्ति निष्क्रिय रूप से अपने भाग्य की प्रतीक्षा करेगा। ईश्वर बहुत कम ही किसी व्यक्ति को भविष्य की घटनाओं के बारे में जानने की अनुमति देता है, और जब वह ऐसा करता है, तो यह हमेशा उस व्यक्ति के किसी महत्वपूर्ण लाभ के लिए होता है।
यदि कोई व्यक्ति ईश्वरीय विधान के कार्यों को स्पष्ट रूप से देख सकता है, तो वह उसमें हस्तक्षेप कर सकता है और स्वयं को नुकसान पहुँचा सकता है। मानव आत्मा में, मानव शरीर की तरह, कई ऐसे कार्य होते हैं जिन्हें व्यक्ति नहीं देख सकता। उदाहरण के लिए, वह पाचन के अनगिनत चरणों को नहीं देख सकता। यदि वह इन चरणों को देख सकता है, तो वह जानबूझकर उनमें हस्तक्षेप कर सकता है, इसलिए लोगों के लिए यही अच्छा है कि वे अपने शरीर के सभी कार्यों को बहुत बारीकी से न देखें। इसी प्रकार, पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति की आत्मा में भी कई ऐसी घटनाएँ घटित होती हैं जिन्हें वह नहीं देख पाता। प्रभु के वचनों का यही अर्थ है:

हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहाँ से आती है और किधर जाती है; जो कोई आत्मा से जन्मा है, वह ऐसा ही है। (यूहन्ना 3:8)

यदि कोई व्यक्ति स्पष्ट रूप से देख पाता कि ईश्वर कैसे कार्य करता है, तो वह या तो ईश्वर के अस्तित्व को नकार देता या स्वयं को ईश्वर बना लेता। ऐसा इसलिए है क्योंकि ईश्वर हमेशा मानव इच्छा के विरुद्ध कार्य करता है, जो वंशानुगत बुराई से दूषित होती है। मानव द्वारा प्राप्त वंशानुगत बुराई में सभी लोगों में सबसे धनी और सबसे शक्तिशाली बनने की आवश्यकता शामिल है। ईश्वर लोगों को ऐसी मूर्खता से दूर ले जाना चाहता है। ऐसा करने में, ईश्वर को उस चीज़ के विरुद्ध कार्य करना होगा जिसे मनुष्य अपने भीतर सबसे अधिक प्यार करते हैं। यह एहसास होने पर, मनुष्य ईश्वर से क्रोधित हो जाते हैं और उनके अस्तित्व को नकार देते हैं। जो लोग दुनिया में धनी और शक्तिशाली रहे हैं और अपनी सफलता का श्रेय अपनी क्षमताओं को देते रहे हैं, वे जब नरक में पहुँचेंगे, तो हर शक्तिशाली शैतान को ईश्वर मानेंगे और स्वयं ईश्वर बनना चाहेंगे। ऐसा पागलपन उन लोगों के जीवन का अंत है जिन्होंने अपने हृदय में ईश्वर के प्रभाव को नकार दिया।
हालाँकि, लोगों को ईश्वर के कार्यों की पूर्वव्यापी व्याख्या करने की अनुमति है, लेकिन केवल उस अवस्था में जब उनका मन आध्यात्मिक या दिव्य स्तर तक खुल गया हो।

पुनर्जन्म लेने वाला व्यक्ति अपने जीवन के कई पिछले चरणों में ईश्वरीय विधान के कार्यों को समझने में सक्षम होता है। पुनर्जन्म लेने वाला व्यक्ति ईश्वरीय विधान के कार्यों को पहले से देखना नहीं चाहता। एक प्राकृतिक व्यक्ति, जिसके मन के उच्च स्तर खुले नहीं हैं, ईश्वरीय विधान के कार्यों को पीछे मुड़कर देखने में असमर्थ होता है, बल्कि उसे पहले से देखना चाहता है।

9. मानवीय बुद्धि नगण्य है। ईश्वरीय विधान गुप्त रूप से अच्छे और बुरे, दोनों का मार्गदर्शन करता है।

ईश्वर प्रत्येक मनुष्य का मार्गदर्शन करता है। वह अच्छे लोगों को स्वर्ग की ओर ले जाता है, और वह बुरे लोगों को बुराई से दूर, या कम से कम कम बुराइयों की ओर ले जाने का प्रयास करता है। जिन लोगों ने केवल प्रकृति और मानवीय ज्ञान को स्वीकार किया है, वे नरक का निर्माण करेंगे। जिन लोगों ने ईश्वर और उनके ईश्वरीय विधान को स्वीकार किया है और पाप रहित जीवन जिया है, वे स्वर्ग का निर्माण करेंगे। हालाँकि, ईश्वर मनुष्यों को जीवन का अनुभव इस प्रकार करने देता है मानो वह स्वयं से आया हो, हालाँकि जीवन केवल ईश्वर से ही आता है। इस मानवीय अनुभव से, पुनर्जन्म न पाए हुए लोग यह निष्कर्ष निकालते हैं कि जीवन वास्तव में स्वयं से आता है और वे अपनी बुद्धि से स्वयं का मार्गदर्शन करने में सक्षम हैं।
पृथ्वी पर किसी व्यक्ति का जीवनकाल उसके द्वारा अर्जित लाभों पर निर्भर करता है। दुष्ट लोग अक्सर दूसरों के लिए महान भौतिक लाभ उत्पन्न करते हैं, क्योंकि अपनी महत्वाकांक्षाओं से प्रेरित होकर, वे अक्सर अच्छे लोगों की तुलना में अधिक परिश्रमी और कुशल होते हैं। चूँकि किसी व्यक्ति की आत्मा उसी समय प्रेतलोक में होती है जब उसका शरीर पृथ्वी पर रहता है, इसलिए वह प्रेतलोक में भी लाभ उत्पन्न करता है। सामान्यतः, पृथ्वी पर किसी व्यक्ति का जीवनकाल निम्नलिखित कारकों पर निर्भर करता है: 1) पृथ्वी पर व्यक्ति द्वारा अर्जित आध्यात्मिक और दिव्य लाभ; 2) व्यक्ति के अपने पुनर्जन्म की प्रगति; 3) पृथ्वी पर व्यक्ति द्वारा अर्जित भौतिक और सामाजिक लाभ; 4) आध्यात्मिक जगत में मनुष्यों द्वारा अर्जित आध्यात्मिक और दिव्य लाभ।
प्रत्येक मनुष्य की मृत्यु उस क्षण होती है जो अनंत काल के लिए उसके लिए सबसे अधिक लाभदायक होता है। इसमें कोई संयोग नहीं होता।

मनुष्य जिसे संयोग मानता है, वह केवल ईश्वरीय विधान के ज्ञान के अभाव के कारण होता है।
10. एक व्यक्ति को विश्वास के सत्य और प्रेम की अच्छाई को आंतरिक रूप से केवल उसी सीमा तक अनुभव करने की अनुमति है, जहाँ तक वह उन्हें अपने जीवन के अंत तक बनाए रख सके।

एक व्यक्ति की समझ उसकी इच्छाशक्ति से कहीं अधिक व्यापक होती है। एक व्यक्ति आंतरिक सत्यों को तब भी समझ सकता है, जब उसकी इच्छाशक्ति उसके पक्ष में न हो। हालाँकि, यह केवल एक निश्चित सीमा तक ही होता है, क्योंकि सच्चे दिव्य सत्य केवल उसी व्यक्ति को प्राप्त हो सकते हैं, जिसकी इच्छाशक्ति का भी पुनर्जन्म हुआ हो। यदि कोई व्यक्ति पहले आंतरिक सत्यों को स्वीकार करता है और उनके अनुसार जीवन जीता है, लेकिन बाद में इन सत्यों को त्याग देता है और उनके अनुसार जीवन नहीं जीता है, तो वह व्यक्ति सबसे गंभीर पाप - अपवित्रीकरण (लैटिन: प्रोफानाटियो) का दोषी है। अपवित्रीकरण में, एक व्यक्ति अपनी आत्मा में ईश्वरीय पवित्रता को बुराई के साथ मिलाता है, और यह ईश्वरीय आदेश के सख्त विरुद्ध है, या सटीक रूप से कहें तो, छठी आज्ञा का उल्लंघन है। अपवित्रीकरण को रोकने के लिए, ईश्वर व्यक्ति को आंतरिक सत्य और अच्छाई की ओर केवल उस सीमा तक ले जाता है, जहाँ तक वह जीवन के अंत तक उन पर टिका रह सकता है। किसी व्यक्ति के लिए अच्छाई से विमुख होकर अपने पुराने बुरे मार्गों पर लौटने की अपेक्षा, अपना पूरा जीवन बुराई में बिताना बेहतर है।
अपवित्रीकरण के प्रकार इस प्रकार हैं: 1) ईश्वरीय सत्य को पहचानना और उनके अनुसार जीवन जीना, लेकिन बाद में इन सत्यों को नकारना और फिर उनके अनुसार जीवन नहीं जीना। यह सबसे बुरी तरह की ईशनिंदा है। 2) ईश्वरीय सत्य को स्वीकार करना और साथ ही उनके विपरीत जीवन जीना। 3) वचन और आध्यात्मिक सत्य का उपहास करना। 4) अपनी इच्छाओं और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वचन के शाब्दिक अर्थ का उपयोग करना। 5) बाहरी तौर पर पवित्र जीवन जीना, लेकिन साथ ही आंतरिक रूप से ईश्वरीय सत्य को नकारना। 6) स्वयं को ईश्वरत्व का श्रेय देना। उदाहरण के लिए, ऐसा तब होता है जब कोई व्यक्ति यह दावा करता है कि उसके द्वारा गढ़े गए सत्य ईश्वरीय हैं। 7) वचन को पवित्र, अर्थात् ईश्वरीय मानना, लेकिन साथ ही प्रभु यीशु मसीह की दिव्यता को नकारना। कई आधुनिक ईसाई भी इसके दोषी हैं, क्योंकि वे अपने हृदय में यीशु को ईश्वर नहीं, बल्कि एक सामान्य मनुष्य ही मानते हैं।

11. ईश्वर मोक्ष के लिए बुराई की अनुमति देता है।

संसार में बहुत बुराई और अन्याय है। इस कारण कई प्राकृतिक लोग ईश्वर के अस्तित्व पर संदेह करते हैं। ईश्वर अपनी असीम शक्ति का उपयोग करके संसार से सारी बुराई को दूर कर सकता है, लेकिन फिर भी, मानव इच्छाशक्ति से बुराई गायब नहीं होगी। ईश्वर ने मनुष्यों को स्वतंत्र इच्छाशक्ति के साथ बनाया है, जिसके बिना मनुष्य मानव नहीं रह सकते। यदि ईश्वर मानव की स्वतंत्र इच्छाशक्ति को छीन लेते, तो मनुष्य मानव नहीं, बल्कि पशु होते। मानव की स्वतंत्र इच्छाशक्ति के इस संरक्षण के कारण, ईश्वर भी बुराई को होने देता है, हालाँकि ईश्वर स्पष्ट रूप से बुराई नहीं चाहता। जब मनुष्य बुराई करता है या सोचता है, तो उसकी इच्छाशक्ति का स्वरूप प्रकट होता है, और मनुष्य स्वतंत्र रूप से और तर्कसंगत रूप से अपनी बुराई को पहचान सकता है और उससे दूर हो सकता है। जब कोई व्यक्ति अपनी बुराई से विमुख होकर ईश्वर की ओर मुड़ता है, तो ईश्वर उसके लिए एक नई इच्छाशक्ति का निर्माण करता है, जो सभी अच्छे कार्य करने के लिए स्वतंत्र होती है। यदि ईश्वर संसार में बुराई की अनुमति नहीं देता, तो बुराई प्रकट नहीं होती, और लोग पुनर्जन्म नहीं ले पाते। पुनर्जन्म के लिए पूर्वापेक्षा बुराई के प्रति जागरूकता है। इसीलिए, कुछ सीमाओं के भीतर बुराई की अनुमति देना ईश्वर का नियम है।

12. हर व्यक्ति का पुनर्जन्म हो सकता है, और स्वर्ग या नर्क के लिए पूर्वनिर्धारित होना जैसी कोई चीज़ नहीं है।

हमारे ग्रह पर हर व्यक्ति का पुनर्जन्म हो सकता है, और किसी के लिए भी नर्क जाना पूर्वनिर्धारित नहीं है। हर व्यक्ति अपने जीवन में यह चुनने के लिए स्वतंत्र है कि मृत्यु के बाद वह कहाँ जाएगा, स्वर्ग में या नर्क में। यीशु का जन्म एक यहूदी के रूप में इसलिए हुआ क्योंकि यहूदियों का नर्क सभी नर्कों में सबसे बुरा था। यहूदी हमारे ग्रह पर सबसे क्रूर और स्वार्थी लोग थे—और आज भी हैं। हालाँकि, यीशु के यहूदी होने का अर्थ है कि यहूदी भी बच सकते हैं यदि वे बुराई से दूर हो जाएँ और यीशु को ईश्वर के रूप में स्वीकार करें। किसी को भी तत्काल अनुग्रह से नहीं बचाया जा सकता, क्योंकि मानव इच्छा को एक पल में नहीं बदला जा सकता। पुनर्जन्म एक लंबी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी बुराई से शुद्ध होता है, और जैसे-जैसे वह शुद्ध होता जाता है, प्रभु उसमें एक नई इच्छाशक्ति और एक नई समझ पैदा करते हैं।

सच्चे ईसाई धर्म के दो आवश्यक तत्व हैं: ईश्वर को जानना, अर्थात् यीशु को स्वर्ग और पृथ्वी का ईश्वर समझना, और दस आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीना। दिव्य त्रिमूर्ति को नए चर्च द्वारा सिखाई गई शिक्षा के अनुसार समझा जाना चाहिए, अर्थात्, प्रभु परमेश्वर यीशु मसीह में त्रिमूर्ति इस प्रकार विद्यमान है कि पिता यीशु की आत्मा है, पुत्र उनका दिव्य शरीर है, और पवित्र आत्मा उनसे प्रवाहित होने वाली दिव्यता है। दूसरे शब्दों में, यीशु एक मानव प्राणी के समान हैं, जिसमें एक आत्मा, एक शरीर और कर्म हैं।

साहित्य

स्वीडनबॉर्ग, इमानुएल: आर्काना कोएलेस्टिया। लंदन
1749-1756। सर्वनाश की व्याख्या। लंदन 1968। दे डिविना प्रोविडेंटिया। एम्स्टेलोडामी
1764।

यीशु वास्तव में कौन थे

उसने उनसे कहा, "परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?" शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" यीशु ने उत्तर दिया, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे स्वर्गीय पिता ने, तुझे यह बात बताई है।"
(मत्ती 16:15-17)।

आधुनिक ईसाई धर्मशास्त्र का अंधकार अंधविश्वास को समझ से ऊपर रखने से उपजा है। ऐसा कहा जाता है कि धर्मशास्त्रीय विषय आस्था के विषय हैं जिन्हें तर्क से नहीं समझा जा सकता। लेकिन क्या तर्क और बुद्धि मनुष्य के विशिष्ट गुण नहीं हैं? क्या मनुष्य ईश्वर का प्रतिरूप नहीं है, जो सर्वज्ञ ईश्वर की असीम बुद्धि को प्रतिबिम्बित करे? व्यावहारिक अनुभव से पता चलता है कि अंधविश्वास किसी भी व्यक्ति को किसी भी बात का विश्वास दिला सकता है। कई परस्पर विरोधी सिद्धांत हैं, और यदि एक सत्य है, तो दूसरा असत्य होना चाहिए। फिर भी, प्रत्येक सिद्धांत के समर्थक आश्वस्त हैं कि उनका ही एकमात्र सही सिद्धांत है। ऐसा अंधत्व केवल इसलिए संभव है क्योंकि लोग किसी बात को सच मान लेते हैं, बिना यह जाने कि वह सच है भी या नहीं। जब कोई व्यक्ति किसी बात पर आश्वस्त हो जाता है, तो वह धीरे-धीरे उसे सच मानने लगता है, भले ही वह सच न हो।
इसी अंधविश्वास के कारण ही आधुनिक ईसाइयों के मन में आध्यात्मिक विषयों के बारे में पूरी तरह से गलत धारणाएँ हैं। संपूर्ण ईसाई धर्मशास्त्र कुछ विरोधाभासों पर आधारित है। इनमें से एक है ईश्वर को तीन अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में मानना। इसके अनुसार, एक अलग पिता परमेश्वर, पुत्र परमेश्वर और पवित्र आत्मा हैं। हालाँकि, जिसका आध्यात्मिक मन खुला है, वह समझता है कि ईश्वर एक है। इसे अनंत की अवधारणा से ही समझाया जा सकता है, क्योंकि दो स्वतंत्र अनंत सत्ताएँ नहीं हो सकतीं।

ईश्वर आध्यात्मिक जगत में सूर्य के रूप में प्रकट होते हैं, और वे स्वयं उस सूर्य के भीतर ईश्वर-मनुष्य हैं। यह सूर्य ईश्वर से पृथक नहीं है, बल्कि ईश्वर का प्रेम और ज्ञान सूर्य के रूप में प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं। ईसा मसीह हमारे ग्रह पर इसी ईश्वर-मनुष्य के अवतार हैं। इस प्रकार महिमावान ईसा ईश्वर का प्राकृतिक शरीर हैं; पिता उनकी स्वर्गीय आत्मा हैं; पवित्र आत्मा इस आत्मा से शरीर के माध्यम से प्रवाहित होने वाला दिव्य प्रभाव है। इस प्रकार, ईश्वर स्वयं अपने स्वरूप, मनुष्य के समान हैं, जिसका भी एक प्राकृतिक शरीर, आत्मा है, और इस आत्मा से शरीर के माध्यम से प्रवाहित होने वाला प्रभाव, अर्थात् सभी मानवीय कर्म, हैं। इस प्रकार, ईश्वर एक पूर्ण मनुष्य हैं। साधारण मनुष्य से उनका अंतर यह है कि ईश्वर के सभी गुण अनंत हैं। जो कोई भी ईश्वर को तीन अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में मानता है—जैसा कि लगभग सभी जो स्वयं को ईसाई कहते हैं—ईश्वर के साथ एकता प्राप्त नहीं कर सकते। ईश्वर के साथ एकता तब प्राप्त होती है जब व्यक्ति उनके स्वरूप को जानता है और उनकी आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीता है। ईश्वर का अलग-अलग समय पर अलग-अलग रूप धारण करना मनुष्य के कारण है, क्योंकि लोग निरंतर ईश्वर से विमुख होने का प्रयास करते हैं, और ईश्वर प्रत्येक युग को उस समय के लिए उपयुक्त, अपने पास लौटने का एक साधन प्रदान करते हैं। इसमें मनुष्य का पुनर्जन्म शामिल है, जो विभिन्न युगों में अलग-अलग तरीकों से होता है: विभिन्न युगों के लोग आध्यात्मिक रूप से भिन्न होते हैं, इसलिए प्रत्येक युग में मनुष्य के पुनर्जन्म के बारे में एक नया दिव्य रहस्योद्घाटन होना आवश्यक है। प्राचीन धर्मों के कई अनुयायी, साथ ही पूर्वी धर्मों और विभिन्न थियोसोफिकल आंदोलनों के कई समर्थक, इन मामलों में गंभीर रूप से गलत हैं। आधुनिक युग वैज्ञानिक विकास का समय है, और यह स्वाभाविक है कि हमारे समय का दिव्य रहस्योद्घाटन एक वैज्ञानिक, इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग की कलम से आया।

ईसा मसीह को समय और स्थान में अवतरित ईश्वर के रूप में समझना ईसाई धर्मशास्त्र की आधारशिला है। एक और समान रूप से महत्वपूर्ण पहलू दस आज्ञाओं को जीवन के एकमात्र मार्गदर्शक के रूप में समझना है जो मोक्ष, अर्थात् स्वर्ग में प्रवेश की ओर ले जाता है। इसीलिए यीशु ने कहा, "परन्तु यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं का पालन कर" (मत्ती 19:17)। यीशु के जन्म से पहले, आत्माओं का संसार—जो स्वर्ग और नरक के बीच का वह स्थान है जिससे पृथ्वी पर लोग अपनी आत्माओं से जुड़ते हैं—धीरे-धीरे दुष्टात्माओं से भर रहा था, जिससे स्वर्ग से आने वाला प्रवाह लगभग पूरी तरह से विकृत हो गया था।

स्वर्ग और नरक के बीच का संतुलन बिगड़ गया था, और मानवजाति का स्वर्ग से संबंध टूटने का ख़तरा था। दुष्टात्माओं की मदद से, नरक दुनिया में रहने वाले लोगों पर राज कर रहा था, और हमारे ग्रह पर पूरी मानवजाति विनाश के ख़तरे में थी। इसी कारण, मानवता का स्वर्ग से संबंध पुनः स्थापित करने के लिए स्वयं परमेश्वर के अवतार की आवश्यकता थी। यीशु मसीह ने अपनी दिव्य शक्ति से नरक को पराजित किया और स्वर्ग और नरक के बीच संतुलन पुनः स्थापित किया। उस समय नरक की शक्ति इतनी प्रबल थी कि फ़रिश्ते भी यह कार्य करने में असमर्थ थे; इसलिए, स्वयं परमेश्वर का अवतार आवश्यक था।

यीशु ने नरक की शक्ति का अंत किया और एक नए आध्यात्मिक कलीसिया, प्रेरितिक कलीसिया की स्थापना करके मानवता का स्वर्ग से संबंध पुनः स्थापित किया। परमेश्वर हर युग में पतित मानवता को उस युग के अनुरूप एक नए कलीसिया की रचना करके बचाता है, जो सिखाता है कि उस विशेष युग में लोगों का पुनर्जन्म कैसे हो सकता है। अपनी दिव्य शक्ति से नरक को पराजित करके, यीशु मसीह ने अपने नाम को प्रत्येक पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति को उस नरक को हराने में मदद करने की शक्ति दी जो उनके लिए ख़तरा है। यही यीशु का उद्धार था। आधुनिक ईसाई मानते हैं कि केवल विश्वास ही उन्हें ईश्वर से जोड़ सकता है। हालाँकि, यह असंभव है, क्योंकि अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम के बिना विश्वास, बिना ऊष्मा के सूर्य के प्रकाश के समान है: बिना ऊष्मा के केवल प्रकाश ही जीवन को नष्ट कर देता है। आधुनिक ईसाई यह भी मानते हैं कि केवल विश्वास के द्वारा ही उनके पाप क्षमा हो जाते हैं। वे कहते हैं, "यीशु के लहू ने हमें शुद्ध किया है," यह मानते हुए कि वे अपने सभी पापों से मुक्त हो गए हैं। हालाँकि, ईश्वरीय व्यवस्था का नियम यह है कि मोक्ष के लिए व्यक्ति की स्वयं की इच्छा, अर्थात् पश्चाताप की इच्छा, भी आवश्यक है। यीशु के लहू का अर्थ है वचन में ईश्वरीय सत्य, जो केवल उन्हीं लोगों की सहायता करता है जो पाप से बचने का प्रयास करते हैं, अर्थात् अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम से जीवन जीते हैं। जिनके कर्म बुरे हैं, वे चाहे किसी भी विश्वास में हों, उद्धार नहीं पाएँगे। लूथर का सबसे बड़ा पाप यही था कि उसने "व्यवस्था के कर्मों के बिना, केवल विश्वास से ही मनुष्य धर्मी ठहराया जाता है" वाक्यांश का ईसाई धर्म के मूल सिद्धांत में गलत अनुवाद कर दिया। इस अंश (रोमियों 3:28) में, पौलुस का तात्पर्य "व्यवस्था के कर्मों" से दस आज्ञाओं से नहीं, बल्कि यहूदियों के जटिल धार्मिक नियमों से है, जैसा कि संदर्भ स्पष्ट करता है।

आज भी यीशु की क्रूस पर मृत्यु को गलत समझा जाता है। ऐसा माना जाता है कि क्रूस पर मरना ही मुक्ति थी। यह विचार कि किसी फाँसी से मानवता का उद्धार हो सकता है, तभी तर्कसंगत है जब किसी सच्चे दुष्ट अपराधी को फाँसी दी जाए, क्योंकि फाँसी के बाद वह अपराधी बुराई करने में सक्षम नहीं रह जाता। लेकिन जब किसी अच्छे और निर्दोष व्यक्ति को फाँसी देने की बात आती है, तो यह फाँसी किसी को नहीं बचाती। वास्तव में, क्रूस पर यीशु की मृत्यु उनका अंतिम प्रलोभन था, अर्थात् नरक से उन पर किया गया अंतिम और सबसे शक्तिशाली आक्रमण। यीशु ने अपनी दिव्य शक्ति से तीन दिनों में अपने शरीर का पुनर्निर्माण करके इस प्रलोभन पर विजय प्राप्त की।
यीशु का यह नया—महिमामय—शरीर ही वह है जिस पर हम सामान्य लोग प्रलोभनों का सामना करते समय नरक के आक्रमणों पर विजय पाने के लिए भरोसा कर सकते हैं, क्योंकि प्रलोभन पुनर्जन्म लेने वाले मनुष्य को नष्ट करने के नरक के प्रयास के अलावा और कुछ नहीं हैं। यीशु का महिमामय शरीर स्वर्ग के सूर्य के दिव्य पुरुष - डिविनस ह्युमनस - के समान है, जिसका वर्णन यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक (प्रकाशितवाक्य 1:13-16) में किया है।
ईश्वर ने यहूदी ईसा मसीह में अवतार क्यों लिया? आधुनिक ईसाई इसे नहीं जानते। इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है: यहूदी हमारे ग्रह पर सबसे स्वार्थी लोग हैं, और ईसा मसीह के समय में वे सबसे बुरे नरकों से जुड़े थे। चूँकि ईश्वर स्वाभाविक रूप से समस्त मानवता को बचाना चाहते थे, इसलिए उन्हें सबसे बुरे नरकों से शुरुआत करके उन्हें हराना पड़ा। अगर उन्होंने किसी और जाति से शुरुआत की होती, तो सबसे शक्तिशाली नरक भी अजेय रह जाते। यहूदी हमारे ग्रह पर सबसे क्रूर और स्वार्थी लोग थे - और आज भी हैं। उनमें स्वाभाविक अच्छाई के साथ-साथ आंतरिक बुराई में जीने की क्षमता है। ऐसा करके, वे अच्छाई और बुराई को एक करने का प्रयास करते हैं, जो एक अपवित्रता है और मनुष्य द्वारा किया जाने वाला सबसे बड़ा पाप है। आध्यात्मिक जगत का नियम यह है कि अच्छाई और सच्चाई, साथ ही बुराई और झूठ, एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। अच्छाई और बुराई का मेल आध्यात्मिक व्यभिचार है, जो केवल सबसे बुरे लोग ही कर सकते हैं। बाकी सभी बुराइयाँ इससे हल्की हैं। इसीलिए यीशु ने यहूदियों को व्यभिचारी पीढ़ी कहा (मत्ती 12:39) और उनके बारे में कहा:

"तुम अपने पिता शैतान के हो, और अपने पिता की अभिलाषाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से ही हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर नहीं रहता, क्योंकि उसमें सत्य है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता है, तो अपनी ही शक्ति से बोलता है, क्योंकि वह झूठा है, और झूठ का पिता है" (यूहन्ना 8:44)।

हालाँकि, इस्राएली कलीसिया ईश्वरीय प्रकाशन पर आधारित एक सच्ची कलीसिया थी। इस्राएली कलीसिया एक प्रतिनिधि कलीसिया थी जिसके अनुष्ठान आध्यात्मिक मामलों से सटीक रूप से मेल खाते थे। हालाँकि, यह एक प्रतिनिधि कलीसिया नहीं थी, क्योंकि इसके पादरी और लोग केवल प्राकृतिक अच्छाई में रहते थे, जबकि साथ ही आंतरिक बुराई में भी रहते थे। परमेश्वर ने स्वयं को इन लोगों में इसलिए भी अवतरित किया क्योंकि यहूदी अन्य राष्ट्रों को गुलाम बनाकर पूरे ग्रह के शासक बनना चाहते थे। इस इच्छा से ग्रस्त होकर, वे स्वयं को मसीहाई लोग मानते थे और चाहते थे कि परमेश्वर स्वयं उनका सांसारिक राजा बने। परमेश्वर ने उन्हें यह इच्छा करने की अनुमति दी, क्योंकि इसी कारण वे वचन को पवित्र मानते थे और उसे अन्य लोगों के लिए अपरिवर्तित रखते थे।

यह इच्छा यहूदियों में आज भी विद्यमान है, और इसने उन्हें भयंकर दंडों का सामना करना पड़ा है। अन्य जातियों के बीच रहते हुए, यहूदियों ने अपना असली स्वरूप छिपाना सीख लिया है। अब जबकि यहूदियों का अपना राज्य (इज़राइल) है, उनकी क्रूरता उनके चतुराईपूर्ण झूठ और गुप्त अंतर्राष्ट्रीय शक्ति के बावजूद, इस राज्य की नीतियों में प्रकट हो गई है।

ईसा मसीह की हत्या करके, यहूदियों को समस्त सत्य को नष्ट करने की इच्छा विरासत में मिली, जो आधुनिक युग में उनकी विरासत में मिली बुराई का रूप ले लेती है। यही कारण है कि मानवता को नुकसान पहुँचाने वाली कई शिक्षाएँ जातीय यहूदियों से उत्पन्न हुई हैं। यहूदियों को मिली अनेक क्रूर सज़ाओं के बावजूद, इस जाति ने पश्चाताप नहीं किया है। वर्तमान में, यहूदी अन्य राष्ट्रों की कीमत पर एक क्रूर खेल खेल रहे हैं, जो देर-सवेर यहूदियों के क्रूर उत्पीड़न का कारण बन सकता है। अपनी सज़ा के लिए यहूदी स्वयं दोषी हैं, क्योंकि बुराई अपनी सज़ा स्वयं लाती है। इसके अलावा, यहूदी राष्ट्रीयता से खज़ार हैं।

ईश्वर, जो स्वयं प्रेम है, किसी को सज़ा नहीं देता, परन्तु बुराई स्वयं सज़ा लाती है। यदि यीशु यहूदी के रूप में पैदा न हुए होते, तो ये लोग समस्त मानवजाति पर विनाश ले आते।

"यहूदी" शब्द उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो अच्छाई और सच्चाई में रहता है, न कि यहूदी लोगों के किसी सदस्य को। यहूदियों को उनकी जाति के आधार पर "चुने हुए लोग" कहना ईश्वर पर नस्लवाद का आरोप लगाने के समान है। कई आधुनिक ईसाई जो ईश्वर को नहीं जानते या उससे प्रेम नहीं करते, इस प्रकार की मूर्खता में पड़ जाते हैं।
यीशु का जन्म इस प्रकार हुआ: ईश्वर ने स्वयं एक दिव्य चमत्कार के माध्यम से मरियम के अंडकोष को निषेचित किया। दिव्य चमत्कार = प्राकृतिक जगत में दिव्य अनुरूपता का घटित होना। इस प्रकार, यीशु अपने पिता की ओर से ईश्वर और अपनी माता की ओर से एक साधारण मनुष्य थे। इसी कारण, यीशु ईश्वर के पुत्र थे। यदि ईश्वर अपनी पूर्णता में मानवता पर अवतरित होते, तो संपूर्ण मानव जाति और उससे जुड़ी आत्माओं का संसार नष्ट हो जाता, ठीक उसी तरह जैसे सूर्य के बहुत निकट आने पर पृथ्वी पर जीवन नष्ट हो जाता। अपनी माता से एक साधारण मनुष्य का शरीर धारण करके, यीशु अपनी मानवता में नरक से आने वाले प्रलोभनों या आक्रमणों को स्वीकार करने में सक्षम थे। नरक दिव्य मानवता को प्रलोभित नहीं कर सकता। जिस प्रकार एक साधारण मनुष्य केवल प्रलोभनों पर विजय प्राप्त करके ही नरक को परास्त कर सकता है, उसी प्रकार यीशु ने प्रलोभनों पर विजय प्राप्त करके नरक को परास्त किया। अंतर केवल इतना है कि एक साधारण मनुष्य ईश्वर की सहायता से नरक को परास्त करता है, लेकिन यीशु ने अपनी दिव्य शक्ति से समस्त नरक को परास्त किया। क्रूस पर चढ़ना और पुनरुत्थान, यीशु का अंतिम प्रलोभन और पूर्ण विजय थे। यीशु का महिमामय शरीर, जिसे उन्होंने तीन दिनों में निर्मित किया, वह ईश्वरत्व है जो प्राकृतिक संसार में अवतरित हुआ है। इससे पहले, परमेश्वर ने स्वर्गदूतों के माध्यम से कार्य किया था। केवल यीशु के माध्यम से ही हमारे ग्रह के लोगों को ईश्वर के साथ सीधे और तत्काल संपर्क में आने का अवसर प्राप्त होता है। यीशु के माध्यम से, ईश्वर की त्रिमूर्ति का जन्म हुआ, जो यीशु से पहले अस्तित्व में नहीं थी।

प्रभु यीशु मसीह में, ईश्वर की त्रिमूर्ति एक ही व्यक्तित्व में समाहित है: पिता, जो दिव्य प्रेम है; पुत्र, जो दिव्य बुद्धि है; और पवित्र आत्मा, जो दिव्य प्रभाव है। इस प्रकार पवित्र आत्मा दिव्य प्रेम (पिता) से दिव्य बुद्धि (पुत्र) के माध्यम से मनुष्यों और स्वर्गदूतों की समझ को प्रकाशित करने के लिए आती है। पत्राचार के विज्ञान में, यीशु का अर्थ दिव्य भलाई है और मसीह का अर्थ दिव्य सत्य है, और यीशु मसीह नाम का अर्थ दिव्य भलाई और सत्य का मिलन है: "मैं और पिता एक हैं" (यूहन्ना 10:30)। आज के "ईसाई" अभी भी यीशु के दूसरे आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, लेकिन वे नहीं जानते कि यीशु पहले ही आ चुके हैं। अर्थात्, इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग की कलम के माध्यम से वचन के आंतरिक अर्थ का प्रकटीकरण ही प्रभु का दूसरा आगमन (मत्ती 24:30) और "शाश्वत सुसमाचार" (प्रकाशितवाक्य 14:6) है। दस आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीने और यीशु की दिव्यता को स्वीकार करने से हर कोई इस बात पर आश्वस्त हो सकता है, जिससे आध्यात्मिक मामलों में समझ का द्वार खुलता है। ये पुनर्जन्म लेने वाले लोग हमारे ग्रह पर एक नए प्रकार के मानव बनेंगे—आध्यात्मिक मानव (यशायाह 65:17-25) जो अब दूसरों के साथ बुरा व्यवहार नहीं करेंगे।

साहित्य

स्वीडनबॉर्ग, इमानुएल: आर्काना कोएलेस्टिया। लंदन
1749-1756। डॉक्ट्रिना नोवे हिरोसोलिमा डे डोमिनो। एम्स्टर्डम 1763। वेरा क्रिस्टियाना रिलिजियो। एम्स्टर्डम 1771।
पुराने नियम के वचन की व्याख्या। ब्रायन एथिन 1928।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक और अंतिम न्याय

बुद्धि यहीं है। जो समझदार हो, वह इस पशु का अंक गिन ले, क्योंकि वह मनुष्य का अंक है; और उसका अंक छः सौ छियासठ है। (प्रकाशितवाक्य 13:18)।

कई लोगों ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक, बाइबल की अंतिम पुस्तक, जिसे "यूहन्ना का प्रकाशितवाक्य" कहा जाता है, की व्याख्या करने का प्रयास किया है। अधिकांश लोगों ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में विश्व साम्राज्यों, कैथोलिक चर्च आदि के भविष्य के बारे में भविष्यवाणियाँ देखी हैं। सभी भविष्यवाणियाँ कमोबेश एक जैसी रही हैं। लेकिन चूँकि वचन का आंतरिक अर्थ ज्ञात नहीं है, इसलिए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की व्याख्या करने के सभी प्रयास विफल रहे हैं।
केवल नए चर्च के धर्मशास्त्र के माध्यम से वचन के आंतरिक अर्थ के प्रकटीकरण ने ही प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की सही व्याख्या करना संभव बनाया। यह आंतरिक अर्थ प्रकाशितवाक्य 19:11 में प्रस्तुत है: "और मैंने स्वर्ग को खुला हुआ देखा। और देखो, एक सफेद घोड़ा है, और उस पर सवार, जो विश्वासयोग्य और सत्य कहलाता है, और वह धर्म से न्याय और युद्ध करता है।" पत्राचार विज्ञान के अनुसार, सफेद घोड़ा वचन के आध्यात्मिक अर्थ की समझ का प्रतीक है। स्वीडनबॉर्ग अपनी रचना एपोकैलिप्सिस रेवेलाटा (प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का खुलासा) में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के आध्यात्मिक अर्थ की व्याख्या करते हैं।
इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि स्वीडनबॉर्ग की इस रचना को लोकप्रियता और स्वीकृति नहीं मिली, क्योंकि इसमें स्वीडनबॉर्ग दर्शाते हैं कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक वास्तव में ईसाई कलीसिया के पतन और विनाश तथा एक नए कलीसिया के जन्म का वर्णन है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, बेबीलोन कैथोलिक कलीसिया का प्रतीक है, और लाल अजगर उस सुधारवादी सिद्धांत का प्रतीक है कि मनुष्य केवल विश्वास से ही उद्धार पाता है। दूसरी ओर, नया यरूशलेम उस कलीसिया को संदर्भित करता है जो स्वीडनबॉर्ग की कलम से आए रहस्योद्घाटन पर आधारित है (प्रकाशितवाक्य 14:6)।

आधुनिक ईसाई भी बाइबल में दिए गए अंतिम न्याय को समझने में विफल रहे हैं। कई लोगों ने कल्पना की है कि अंतिम न्याय का अर्थ भविष्य में किसी समय संपूर्ण दृश्यमान जगत का विनाश है। कई लोग यह भी मानते हैं कि अंतिम न्याय के बाद, मृतक अपनी कब्रों से जी उठेंगे और यीशु "स्वर्ग के बादलों में" पृथ्वी पर लौटेंगे। ऐसे काल्पनिक विचार इसलिए उत्पन्न होते हैं क्योंकि वचन का आंतरिक अर्थ ज्ञात नहीं है। स्वीडनबॉर्ग बताते हैं कि अंतिम न्याय वास्तव में आध्यात्मिक जगत की एक घटना को संदर्भित करता है। प्रत्येक व्यक्ति का अंतिम न्याय तब होता है जब वह इस संसार से आध्यात्मिक जगत में जाता है। उस समय, आध्यात्मिक जगत में व्यक्ति का उसके कर्मों के अनुसार न्याय किया जाता है, अर्थात वह या तो स्वर्ग में जाता है या नरक में। व्यक्ति की अपनी इच्छा ही वास्तव में वह निर्णायक होती है जो यह निर्धारित करती है कि उसका अंत कहाँ होगा: एक अच्छे व्यक्ति की इच्छा उसे स्वर्ग की ओर ले जाती है, और एक बुरे व्यक्ति की इच्छा उसे नरक की ओर ले जाती है।
सामान्य अंतिम न्याय भी आध्यात्मिक जगत में होता है। ऐसा हमेशा तब होता है जब कलीसिया—अर्थात् मनुष्य और ईश्वर के बीच का संबंध—इस हद तक बिगड़ जाता है कि कलीसिया को ईश्वर का कोई ज्ञान ही नहीं रह जाता। हमारे ग्रह के आध्यात्मिक जगत में ऐसा अंतिम न्याय चार बार हो चुका है, जिनमें से सबसे हालिया 1757 में हुआ था, जब ईसाई कलीसिया पतन के चरम बिंदु पर पहुँच गई थी। हालाँकि तब से कई कलीसियाएँ स्वयं को ईसाई कहती रही हैं, वे सभी मनुष्यों द्वारा निर्मित सामाजिक संगठन मात्र रहे हैं, जिनका ईश्वर और स्वर्ग से कोई संबंध नहीं है, अर्थात वे सच्चे कलीसिया नहीं रहे हैं। सभी कलीसियाएँ और संप्रदाय ईश्वर और पवित्र वस्तुओं के बारे में बात कर सकते हैं, भले ही वास्तव में वे नरक के साथ गठबंधन में हों। हालाँकि, हर युग में केवल एक ही सच्चा कलीसिया होता है जिसका ईश्वर (प्रभु की दुल्हन; प्रकाशितवाक्य 21:9) से संबंध होता है।

हमारे ग्रह पर चार वास्तविक कलीसियाएँ रही हैं, जिनसे अनगिनत कलीसियाएँ उत्पन्न हुई हैं। स्वीडनबॉर्ग इन कलीसियाओं को सबसे प्राचीन, प्राचीन, इज़राइली और ईसाई कलीसिया कहते हैं। ये चारों कलीसियाएँ ईश्वरीय रहस्योद्घाटन से उत्पन्न हुई हैं।

इन कलीसियाओं के अलावा, मनुष्यों द्वारा आविष्कृत अनेक "कलीसियाएँ" भी रही हैं, साथ ही नरक से सीधे आए "प्रकाशनों" के आधार पर निर्मित धार्मिक समुदाय भी रहे हैं। केवल इन्हीं चार कलीसियाओं को सच्ची कलीसिया कहा जा सकता है। पाँचवाँ प्रामाणिक कलीसिया नया यरूशलेम है, जो स्वीडनबॉर्ग के माध्यम से आए रहस्योद्घाटन पर आधारित है। यह कलीसिया फ़िनलैंड में शुरू हुई थी।

प्रत्येक प्रामाणिक कलीसिया के चार अलग-अलग काल रहे हैं, जिन्हें वचन में सुबह, दिन, शाम और रात के रूप में वर्णित किया गया है। सुबह उस अवस्था को संदर्भित करती है जब ईश्वरीय रहस्योद्घाटन दिया जाता है; दिन उस अवस्था को वर्णित करता है जब कलीसिया शिक्षाओं के कारण विस्तार करती है; शाम कलीसिया के पतन, या ईश्वर के परित्याग की शुरुआत का प्रतीक है; रात अंतिम न्याय, या कलीसिया के अंतिम विनाश का संकेत देती है। अंतिम न्याय के समय, परमेश्वर आत्माओं की दुनिया में अच्छाई को बुराई से अलग करता है, अच्छाई के लिए एक नया स्वर्ग बनाता है, और बुराई को एक नए नरक में भेजता है। इसके बाद, प्रभु नए स्वर्ग की सहायता से पृथ्वी पर एक नई कलीसिया का निर्माण करता है। नया चर्च ईश्वरीय रहस्योद्घाटन से शुरू होता है और एक विवाहित जोड़े से बढ़कर एक बड़े समूह में बदल जाता है। हर नया चर्च हमेशा एक विवाहित जोड़े से शुरू होता है, क्योंकि विवाह अच्छाई और सच्चाई के मिलन का प्रतीक है। चर्च का विस्तार तब होगा जब नए सदस्य नए स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, और इसमें सदियाँ लग सकती हैं।

पहले, या सबसे प्राचीन, चर्च में लिखित वचन नहीं था, लेकिन वचन लोगों के मन के भीतर लिखा हुआ था। उस समय के लोगों को स्वर्ग से प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन प्राप्त होते थे और वे स्वर्गदूतों से बातचीत कर सकते थे। इस चर्च के विभिन्न चरणों का वर्णन बाइबल की पहली पुस्तक, उत्पत्ति में किया गया है। जलप्रलय इस चर्च के अंतिम न्याय का प्रतीक है।

दूसरे, या प्राचीन, या नूह के चर्च में वचन लिखा हुआ था, जो आज ज्ञात नहीं है। यह प्राचीन वचन, वर्तमान वचन की तरह, पत्राचार में लिखा गया था। इस चर्च का वर्णन उत्पत्ति और मूसा की अन्य पुस्तकों में भी किया गया है।

प्राचीन चर्च तब नष्ट हो गया जब पत्राचार का उपयोग स्वार्थी उद्देश्यों के लिए किया जाने लगा, जिससे जादू और गुप्त विज्ञान का उदय हुआ। इस चर्च के विनाश का वर्णन, उदाहरण के लिए, सदोम और अमोरा के विनाश में किया गया है।
तीसरे, या इज़राइली, चर्च के चरणों का वर्णन मूसा की पुस्तकों, यहोशू की पुस्तकों, न्यायियों, शमूएल और राजाओं की पुस्तकों और भविष्यवक्ताओं में किया गया है। इस चर्च का अंतिम न्याय तब हुआ जब ईश्वर ने ईसा मसीह के रूप में अवतार लिया। आधुनिक यहूदी आज भी इस चर्च के धर्म का पालन करते हैं, हालाँकि इसका अब ईश्वर और स्वर्ग से कोई संबंध नहीं है, बल्कि इसका सीधा संबंध नरक से है।
चौथे, या ईसाई, चर्च के चरणों का वर्णन नए और पुराने नियम में किया गया है। इसके जन्म और विकास का वर्णन विशेष रूप से सुसमाचारों और प्रेरितों के कामों में किया गया है। इस कलीसिया के पूर्ण दिवस चरण तक के विकास का वर्णन पहली तीन शताब्दियों के कलीसिया इतिहास में, इसके संध्या चरण का वर्णन अगली शताब्दियों से लेकर 18वीं शताब्दी तक के कलीसिया इतिहास में, और अंततः इसके विनाश, या रात्रि, का वर्णन प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में किया गया है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक (प्रकाशितवाक्य 13:18) में उल्लिखित संख्या 666 का अर्थ, पत्राचार के विज्ञान में, यह है कि सभी सत्य स्वयं मनुष्य से प्राप्त बुद्धि द्वारा नष्ट कर दिए गए हैं। इस ईसाई कलीसिया के बाद नया कलीसिया आता है, जिसका वर्णन दानिय्येल की पुस्तक और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में किया गया है। यह कलीसिया सच्ची ईसाई कलीसिया है, क्योंकि यह प्रभु की दिव्य मानवता को स्वीकार करती है, और इस कलीसिया के लिए वचन का आंतरिक अर्थ प्रकट किया गया है। नया कलीसिया सभी पूर्ववर्ती कलीसियाओं का मुकुट है, क्योंकि मानव इतिहास में पहली बार, आध्यात्मिक जगत के सभी रहस्य कलीसिया के सामने प्रकट होते हैं। इस कलीसिया के सदस्य परीक्षाओं के माध्यम से शुद्ध होते हैं और बुद्धिमान बनते हैं। यह कलीसिया एक आंतरिक कलीसिया है जिसके सदस्य स्वयं ईश्वर के सीधे संपर्क में हैं। नया कलीसिया हमारे ग्रह का अंतिम कलीसिया भी है जो कभी नष्ट नहीं होगा, क्योंकि यह सदैव प्रभु के संरक्षण में रहेगा। उदाहरण के लिए, इस कलीसिया का वर्णन दानिय्येल की पुस्तक (2:44) में निम्नलिखित शब्दों में किया गया है:

"परन्तु उन राजाओं के दिनों में, स्वर्ग का परमेश्वर एक ऐसा राज्य स्थापित करेगा जो कभी नष्ट नहीं होगा, और उसकी शक्ति किसी अन्य जाति को नहीं दी जाएगी। वह उन सभी अन्य राज्यों को कुचलकर उनका अंत कर देगा, परन्तु वह स्वयं सदा स्थिर रहेगा।"

यह नया चर्च वास्तव में नया यरूशलेम है, जिसके पास वह वचन और स्वर्गीय सिद्धांत है जो इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग की कलम से आया था। हालाँकि स्वीडनबॉर्ग का धर्मशास्त्र आध्यात्मिक लोगों में प्रकट होता है, फिर भी दुनिया भर में स्वीडनबॉर्ग के कार्यों पर आधारित कई कलीसियाएँ हैं, फिर भी वे अभी तक वह नया चर्च नहीं हैं जिसकी स्वीडनबॉर्ग ने भविष्यवाणी की थी। बेशक, इन कलीसियाओं में प्रबुद्ध लोग हैं जो नए स्वर्ग से जुड़े हैं, लेकिन वास्तविक नया चर्च केवल एक विवाहित जोड़े से ही शुरू हो सकता है (पुराने नियम के वचन की व्याख्या, पृष्ठ 3239)। नया चर्च हमेशा एक विवाहित जोड़े से शुरू होता है, इसका कारण यह है कि चर्च अच्छाई और सच्चाई का एक संघ है, जो वास्तव में विवाह का प्रतीक है।

मुझे पाठकों के समक्ष यह कलीसियाई ऐतिहासिक सत्य प्रकट करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि यह नया चर्च अंततः आरंभ हो गया है, और वह भी एक विवाहित जोड़े से, ठीक वैसे ही जैसे पूर्ववर्ती सच्चे चर्चों का हुआ था। अब केवल अंतरतम, या तीसरे, स्वर्ग से प्रवाह नए चर्च में आ रहा है। इस स्वर्ग में वैवाहिक प्रेम का राज है। यह प्रवाह मानवीय समझ को प्रकाशित करके प्रकट होता है ताकि वह सभी चीजों को स्वर्ग के प्रकाश में देख सके। इस स्थिति में, अच्छाई या बुराई, सत्य या असत्य, कुछ भी अप्रकट नहीं रहता। तीसरे स्वर्ग से यह प्रवाह नए चर्च को इसलिए प्रदान किया गया है ताकि वह सभी प्रकार की बुराई और असत्य के विरुद्ध लड़ सके। बुराई और असत्य अक्सर बाहरी अच्छाई के आवरण में छिपे रहते हैं, जिसे केवल अंतरतम स्वर्ग से आने वाला प्रवाह ही प्रकट कर सकता है। आध्यात्मिक चर्च का व्यक्ति सबसे बुरे नरकों के प्रवाह से लड़ने में असमर्थ है। सबसे बुरे नरक वर्तमान में खज़ार लोगों को प्रभावित कर रहे हैं। खज़ार स्वयं को "यहूदी" कहते हैं।
नया चर्च एक उग्रवादी चर्च है जो न केवल धर्मशास्त्र में बल्कि जीवन के अन्य सभी क्षेत्रों में भी नरक के प्रभाव के विरुद्ध लड़ता है।

इसी कारण, इस चर्च के सदस्यों को पिछले चर्चों के सदस्यों की तुलना में अधिक ज्ञान और बुद्धि प्राप्त होती है। वास्तव में, इस चर्च के सदस्य आध्यात्मिक प्राणियों, होमो स्पिरिचुअलिस, के रूप में विकसित होते हैं, जिन्हें प्रभु ने रचा है और जो हमारे ग्रह पर सदैव विद्यमान रहेंगे (यशायाह 65:17-25)। स्वीडनबोर्ग ने अपनी रचना "दे अल्टिमो जुडिसियो" (अंतिम न्याय, 74) में इसकी भविष्यवाणी की है, जो 1757 में आध्यात्मिक जगत में हुए अंतिम न्याय से संबंधित है: "यह राष्ट्र ऐसा है कि यह आध्यात्मिक प्रकाश प्राप्त कर सकता है और इसके सदस्य स्वर्गीय आध्यात्मिक लोगों के रूप में विकसित हो सकते हैं।" अभी तक यह ज्ञात नहीं है कि स्वीडनबोर्ग किन लोगों की बात कर रहे हैं, लेकिन संभवतः उनका आशय फिन्स से है। फ़िनलैंड में जन्मे न्यू जेरूसलम के पादरियों का कार्य पुनर्जन्म में सहायता करना और स्वर्गीय सिद्धांत की सहायता से एक नए प्रकार के मानव प्राणी के निर्माण की शुरुआत करना है।

साहित्य

स्वीडनबोर्ग, इमानुएल:
सर्वनाश की व्याख्या। लंदन 1968. एपोकैलिप्सिस रेवेला-ता। एम्स्टर्डम 1766. कॉन्टिनुएटियो डे अल्टिमो ज्यूडिसियो। एम्स्टर्डम 1763. द कोरोनिस। स्वीडनबॉर्ग की अंतिम पांडुलिपियों का अंग्रेजी अनुवाद। लंदन 1966. डी अल्टिमो ज्यूडिसियो। लंदन 1758. वेरा क्रिस्टियाना रिलिजियो। अम्स्टेलोडामी 1771. पुराने नियम के शब्द की व्याख्या। पांडुलिपियों एक्सप्लिकेशियो इन वर्बम हिस्टोरिकम वेटेरिस टेस्टामेंटी, एसाजस एट जेरेमियास एक्सप्लिकाटी, और हिस्टोरिया क्रिएशनिस ए मोस ट्रेडिटा का अंग्रेजी अनुवाद। 8 खंड-यूम्स। ब्रायन एथिन 1928।

विश्वास

“विश्वास स्वयं इस बात की स्वीकृति है कि कोई चीज़ इसलिए सत्य है क्योंकि वह सत्य है। क्योंकि जिसके पास सच्चा विश्वास है, वह इस प्रकार सोचता और बोलता है: ‘यह सत्य है, इसलिए मैं इस पर विश्वास करता हूँ।’ क्योंकि विश्वास सत्य से जुड़ा है, और सत्य विश्वास से। इसके अलावा, यदि कोई व्यक्ति यह नहीं समझता कि कोई चीज़ सत्य है, तो वह कहता है, ‘मुझे नहीं पता कि यह सत्य है या नहीं, इसलिए मैं इस पर विश्वास नहीं करता। मैं उस चीज़ पर कैसे विश्वास कर सकता हूँ जिसे मैं नहीं समझता? यह झूठ भी हो सकता है।'”
(स्वीडनबॉर्ग: डॉक्ट्रिना नोवे हिरोसोलिमाए डे फाइड, पृष्ठ 2.)

शायद ही कोई दूसरा शब्द हो जिसे "विश्वास" शब्द जितना व्यापक रूप से गलत समझा गया हो। जब कोई विचारशील व्यक्ति आज के धार्मिक संप्रदायों और चर्चों को देखता है, तो वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि विश्वास किसी चीज़ को सत्य मानना है, चाहे वह सत्य हो या नहीं। यह विश्वास एक प्रकार का आत्मविश्वास है जिसका बुद्धि से कोई लेना-देना नहीं है। इस प्रकार के विश्वास में अक्सर सामाजिक संकेत के स्पष्ट संकेत देखे जा सकते हैं। इस प्रकार का विश्वास कई वैचारिक और राजनीतिक आंदोलनों की गतिविधियों से भी जुड़ा है। उदाहरण के लिए, मार्क्सवाद एक ऐसा ही धर्म है, हालाँकि यह ईश्वर के अस्तित्व को नकारता है।
आधुनिक ईसाइयों का विश्वास एक मृत विश्वास है क्योंकि इसे व्यावहारिक जीवन में लागू नहीं किया जाता: धर्म चर्च के दरवाज़ों के अंदर ही रहा है। इसके अलावा, ईसाइयों ने ईश्वर के बारे में पूरी तरह से बेतुके विचार अपना लिए हैं, जो उनकी समझ से स्वर्ग से किसी भी प्रवाह को बाहर कर देते हैं। इन बेतुकों में सबसे बुरी बात ईश्वर को तीन अलग-अलग व्यक्तियों में विभाजित करना है। ईसा मसीह के दिव्यत्व को भी नहीं समझा गया है, यही कारण है कि आधुनिक ईसाई ईसा मसीह को बिल्कुल नहीं जानते: ईसा मसीह को एक साधारण मानव के रूप में समझा जाता है। हालाँकि आधुनिक ईसाइयों का धर्म यहूदियों के धर्म की तरह ही मृत है, फिर भी कई चर्च और संप्रदाय सामाजिक संगठनों के रूप में मौजूद हैं। उदाहरण के लिए, फ़िनलैंड में, लू-थेरन चर्च अभी भी अस्तित्व में है, हालाँकि इसका ईश्वर या स्वर्ग से कोई संबंध नहीं है।

स्वर्ग से देखने पर, ऐसे चर्च स्पष्ट रूप से चर्च नहीं, बल्कि दुष्टात्माओं से भरी उदास गुफाएँ हैं। स्वीडनबॉर्ग, जिनकी आध्यात्मिक दृष्टि खुल गई थी, वहाँ दुष्टात्माओं के प्रकोप के कारण चर्च जाने से बचते थे।

आधुनिक ईसाई चर्चों की छतों पर क्रॉस का प्रतीक ऊँचे स्थान पर स्थित है। यदि ईसाई लोग पत्राचार के विज्ञान से परिचित होते, तो वे निश्चित रूप से इस प्रतीक को बदल देते। पत्राचार के विज्ञान के अनुसार, क्रॉस प्रलोभन या दुष्टात्माओं के आक्रमण का प्रतीक है। जब कोई प्रबुद्ध व्यक्ति किसी चर्च की छत पर क्रॉस देखता है, तो वह जानता है कि वहाँ दुष्टात्माओं का नियंत्रण है। हालाँकि, इस परदे ने ईसाइयों की समझ को बंद कर रखा है ताकि वे अपने द्वारा चुने गए प्रतीक की प्रकृति को न समझ सकें। नए चर्च का प्रतीक मुकुट है, जो प्रलोभनों पर विजय का प्रतीक है।

नए चर्च के विश्वास और आधुनिक ईसाइयों के विश्वास की तुलना एक उज्ज्वल दिन और एक अंधेरी रात से की जा सकती है। आधुनिक ईसाइयों का विश्वास ईश्वर के बारे में गलत धारणाओं पर आधारित है, जो विश्वास के सभी मामलों में पूर्ण अंधकार का कारण बनता है। नए चर्च का विश्वास प्रभु यीशु मसीह की दिव्यता की समझ पर आधारित है, और यह दिव्य सत्यों को मानो दिन के उजाले में प्रकट करता है।

नया चर्च विश्वास और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम को जोड़ता है। विश्वास सत्य है और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम अच्छाई है, और इनका एक होना आवश्यक है, जैसे सूर्य के प्रकाश में प्रकाश और ऊष्मा एक हो जाते हैं। केवल विश्वास ही बिना ऊष्मा के सूर्य के प्रकाश के समान है, और ऐसे प्रकाश में सारा जीवन नष्ट हो जाता है। केवल विश्वास के विनाशकारी प्रभाव को पत्राचार विज्ञान में "ड्रैग-ऑन" के रूप में वर्णित किया गया है। सबसे विशिष्ट ड्रैगन विश्वास लूथरनवाद है, क्योंकि यह पौलुस के इन शब्दों पर आधारित है, "अतः हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास से धर्मी ठहरता है" (रोमियों 3:28)। नए चर्च का विश्वास, जो अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम से जुड़ा है, वसंत के सूर्य के गर्म प्रकाश के समान है, जो संपूर्ण प्रकृति को जीवंत कर देता है। पत्राचार विज्ञान में विश्वास का प्रतीक चंद्रमा है। जैसा कि बताया गया है, ड्रैगन उस आस्था का प्रतीक है जिसमें अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम का अभाव है। इसी कारण, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में ड्रैगन उन कलीसियाओं का भी प्रतीक है जो कैथोलिक चर्च से अलग हो गई हैं।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में कैथोलिक चर्च का प्रतीक बेबीलोन है, जो सामान्यतः एक ऐसे चर्च को संदर्भित करता है जो केवल धर्म के माध्यम से लोगों को नियंत्रित करना चाहता है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक नए चर्च का वर्णन "सूर्य से आच्छादित एक स्त्री" के रूप में करती है, जिसके "पैरों तले चंद्रमा" है (प्रकाशितवाक्य 12:1)। सूर्य से आच्छादित होने का अर्थ है कि इस चर्च में दिव्य सत्य हैं। पत्नी का अर्थ है कि यह चर्च प्रभु के साथ एक है। यह तथ्य कि चंद्रमा इस पत्नी के पैरों के नीचे था, यह दर्शाता है कि इस चर्च में, अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम सर्वोच्च है और विश्वास से जुड़ा है। सूर्य से आच्छादित यह पत्नी वह मण्डली है जिसके बारे में स्वीडनबॉर्ग ने कहा था, "उसके कार्य उसके लिए लाभदायक होंगे।"

सच्चे ईसाई विश्वास में सच्चे और शुद्ध सत्य होते हैं; सच्चे ईसाई धर्म में इन सत्यों से जुड़ी अच्छाइयाँ होती हैं। नए चर्च का विश्वास, जिसे वचन में नया यरूशलेम कहा गया है, अनगिनत सच्चे और शुद्ध सत्यों से युक्त है। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है:

1. ईश्वर एक है, और उसमें दिव्य त्रिदेव विद्यमान हैं, और वह प्रभु परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता, यीशु मसीह हैं। उनमें त्रिदेव विद्यमान हैं, जैसे मनुष्य में आत्मा, शरीर और शरीर के माध्यम से आत्मा की क्रियाशीलता विद्यमान है। पिता, या आत्मा, का अर्थ है दिव्य प्रेम; पुत्र, या शरीर, का अर्थ है दिव्य ज्ञान; और पवित्र आत्मा, या दिव्य प्रभाव, का अर्थ है दिव्य प्रवाह, या जीवन, जो पिता से पुत्र के माध्यम से आता है।
2. पिछले बिंदु को पहचानना और समझना, साथ ही दस आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीना, मनुष्य को ईश्वर से जोड़ता है।
3. प्रभु यीशु मसीह का दूसरा आगमन, जिसकी उन्होंने स्वयं भविष्यवाणी की थी, तब हुआ जब इमानुएल स्वीडनबॉर्ग की कलम के माध्यम से वचन के आंतरिक अर्थ प्रकट हुए। प्रभु के वचनों का यही अर्थ है: "और वे मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और महिमा के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे" (मत्ती 24:30)।

आकाश के बादल वचन के शाब्दिक अर्थ को दर्शाते हैं, महान सामर्थ्य वचन के दिव्य अर्थ को दर्शाता है, और महिमा वचन के आध्यात्मिक अर्थ को दर्शाती है। मनुष्य का पुत्र परमेश्वर के वचन, अर्थात् प्रभु यीशु मसीह को संदर्भित करता है: "और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता से एकलौते पुत्र की है" (यूहन्ना 1:14)। नए चर्च का धर्मशास्त्र "सनातन सुसमाचार" है: "और मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा, जिसके पास पृथ्वी पर के रहनेवालों की हर एक जाति, और कुल, और भाषा, और लोगों को सुनाने के लिये सनातन सुसमाचार था।" (प्रकाशितवाक्य 14:6)
4. नया चर्च, या नया यरूशलेम, सभी चर्चों का मुकुट है, क्योंकि आध्यात्मिक दुनिया के सभी रहस्य उस पर प्रकट किए गए हैं। यह कभी नष्ट नहीं होगा, और इसी से पृथ्वी पर आध्यात्मिक मनुष्य का उदय होगा। इस मानव जाति का वर्णन इसाई-आह 65:17-25 में किया गया है।

साहित्य

स्वीडनबोर्ग, एमानुएल:
डॉक्ट्रिना नोवा हिएरोसोलिमा डे फाइड। अम्स्टेलोडामी 1763.
सुमारियो एक्सपोज़िटियो डॉक्ट्रिने नोवे एक्लेसिया। एम्स्टर्डम 1769। अनुवाद: न्यू चर्च के सिद्धांत की एक संक्षिप्त प्रदर्शनी, इंग्लैंड 1952। वेरा क्रिस्टियाना रिलिजियो। एम्स्टर-बांध 1771.

अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम

अपने आप को धोकर शुद्ध करो; अपनी बुरी आदतों को मेरी आँखों के सामने से दूर करो; बुराई करना छोड़ दो; भलाई करना सीखो; न्याय की खोज करो, उत्पीड़ितों को राहत दो, अनाथों का न्याय करो, विधवाओं के लिए प्रार्थना करो। आओ, हम आपस में विचार करें, प्रभु कहते हैं: चाहे तुम्हारे पाप लाल रंग के हों, तौभी वे हिम के समान श्वेत हो जाएँगे; चाहे वे किरमिजी रंग के हों, तौभी वे ऊन के समान श्वेत हो जाएँगे। यदि तुम इच्छुक और आज्ञाकारी हो, तो तुम देश की उत्तम उपज खाओगे:
(यशायाह 1:16-19)

हालाँकि अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम की अवधारणा ईसाई धर्मशास्त्र में सबसे केंद्रीय अवधारणाओं में से एक है, लेकिन आज इसका वास्तविक सार ज्ञात नहीं है। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि वचन का आध्यात्मिक अर्थ ज्ञात नहीं है। ऐसा माना जाता है कि अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम का अर्थ दान देना और गरीबों की मदद करना है। हालाँकि, अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम सभी परिस्थितियों में जीवन का एक संपूर्ण मार्गदर्शक है। दूसरी ओर, अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम केवल वही व्यक्ति अनुभव कर सकता है जिसका आध्यात्मिक स्तर उन्नत हो, क्योंकि केवल वही व्यक्ति यह भेद कर पाता है कि उसका पड़ोसी कौन है और किस प्रकार उसका पड़ोसी है।
यदि कोई किसी स्वाभाविक रूप से दुष्ट व्यक्ति की इस प्रकार सहायता करता है कि इस सहायता से सहायता प्राप्त करने वाले व्यक्ति में पाप और पश्चाताप की भावना उत्पन्न न हो, तो यह अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम का मामला नहीं है। किसी दुष्ट व्यक्ति का इस प्रकार समर्थन करना कि उसमें बुराई बनी रहे, वास्तव में बुराई करना है, क्योंकि जिस दुष्ट व्यक्ति की सहायता की गई है, वह और भी अधिक बुराई करता रहेगा। एक आध्यात्मिक व्यक्ति सहायता प्राप्त करने वाले व्यक्ति के आध्यात्मिक गुणों का ध्यानपूर्वक परीक्षण करता है और उसके अनुसार कार्य करता है। स्वाभाविक रूप से, संकटग्रस्त व्यक्ति की सहायता उसकी आध्यात्मिक प्रकृति की परवाह किए बिना की जानी चाहिए। अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम का सार यीशु के निम्नलिखित दृष्टांत में स्पष्ट रूप से प्रकट होता है:

"एक आदमी यरूशलेम से यरीहो जा रहा था जब डाकुओं ने उस पर हमला किया, उसके कपड़े उतार दिए, उसे पीटा और उसे अधमरा छोड़ दिया। संयोग से एक पुजारी उसी रास्ते से जा रहा था और उसे देखकर आगे बढ़ गया। इसी तरह, एक लेवी भी उस जगह पहुँचा और उसे देखकर आगे बढ़ गया। लेकिन एक सामरी जो उसी रास्ते से जा रहा था, उसे देखकर उस पर तरस आया। वह उसके पास गया, उसके घावों पर पट्टी बाँधी, उन पर तेल और दाखरस उँडेला, उसे अपने गधे पर बिठाया, उसे एक सराय में ले गया और उसकी सेवा की। और अगले दिन उसने दो दीनार निकालकर सरायवाले को दिए और कहा, 'इसकी सेवा करना, और जो कुछ और लगेगा, मैं लौटने पर तुझे चुका दूँगा।' इन तीनों में से कौन उस आदमी का पड़ोसी निकला जो डाकुओं के हाथों में पड़ गया था? उसने कहा, 'वही जिसने उस पर दया की।' तब यीशु ने उससे कहा, 'जा, तू भी ऐसा ही कर।'" (लूका 10:1-3) 30-37)।

इस सामरी को हमारा पड़ोसी इसलिए कहा जाता है क्योंकि उसने मानवता के प्रति प्रेम से भलाई की। इसलिए, जो लोग अच्छे हैं वे हमारे पड़ोसी हैं। सामरी ने घावों पर जो तेल और दाखरस डाला, वह वचन के आंतरिक अर्थ के अनुसार, भलाई और सच्चाई का प्रतीक है। बुरे लोग भी हमारे पड़ोसी हैं, लेकिन उनकी मदद अच्छे लोगों से अलग तरीके से की जाती है: बुरे लोगों की मदद उन्हें पश्चाताप की ओर ले जाकर की जाती है; अच्छे लोगों की मदद इसलिए की जाती है ताकि वे भलाई करते रहें। केवल वे ही अच्छे लोग हैं जो परमेश्वर के नियमों के अनुसार जीते हैं। किसी व्यक्ति का बाहरी जीवन चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, वह तब तक अच्छा व्यक्ति नहीं है जब तक वह धार्मिक उद्देश्यों से कार्य न करे। केवल परमेश्वर ही पूर्णतः अच्छा है, और एक व्यक्ति उतना ही अच्छा है जितना कि उसमें परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार कार्य करने की इच्छाशक्ति है। बहुत से लोग जो भीतर से अच्छे थे, उन्हें जीवित रहते हुए बुरे लोग माना जाता था: एक व्यक्ति जो भीतर से अच्छा होता है, वह अक्सर आधुनिक समाज में उतना फिट नहीं बैठता जितना कि एक व्यक्ति जो भीतर से बुरा होता है; एक न्यायप्रिय और ईमानदार व्यक्ति अक्सर अपने परिवेश के साथ संघर्ष में रहता है, क्योंकि उसमें दुष्ट लोगों की धूर्तता और छल-कपट की विशेषता नहीं होती। दूसरी ओर, कई लोग जो भीतर से दुष्ट होते हैं, संसार में रहते हुए भी अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं।

सामान्यतः, अच्छे लोग स्वयं हमारे पड़ोसी होते हैं, क्योंकि ईश्वर से प्राप्त भलाई के गुणों के अनुसार ही व्यक्ति हमारा पड़ोसी होता है। हालाँकि, व्यक्ति केवल एकवचन में ही नहीं, बल्कि बहुवचन में भी हमारा पड़ोसी होता है, क्योंकि हमारे पड़ोसी समाज, हमारी मातृभूमि, कलीसिया, ईश्वर का राज्य, अर्थात् स्वर्ग, और स्वयं ईश्वर भी हैं। ये वे पड़ोसी हैं जिनके लिए अच्छे कार्य किए जाने चाहिए। अनेक लोगों से बना समुदाय किसी व्यक्ति से उच्चतर पड़ोसी होता है, मातृभूमि उससे भी ऊँची होती है, कलीसिया और ईश्वर का राज्य उससे भी ऊँचा होता है, और स्वयं ईश्वर सर्वोच्च होते हैं। समुदाय के लिए उसके स्वभाव के अनुसार अच्छे कर्म किए जाने चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे व्यक्तियों के साथ होता है: बुरे लोगों से बने या बुरे उद्देश्यों का पीछा करने वाले समुदाय के साथ उस समुदाय की तुलना में अलग व्यवहार किया जाता है जो अच्छे लोगों से बना होता और अच्छे उद्देश्यों का पीछा करता।

मातृभूमि अन्य समुदायों की तुलना में हमारे अधिक निकट होती है, क्योंकि यह अपने नागरिकों की स्वतंत्रता और कल्याण की रक्षा करती है। हमें अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम के कारण उसके लिए अच्छे कार्य करने चाहिए। केवल एक आध्यात्मिक व्यक्ति—और उससे भी बेहतर, एक दिव्य व्यक्ति—ही अपनी मातृभूमि के प्रति सच्चा प्रेम रख सकता है। दुष्ट लोग अपनी मातृभूमि से केवल बाहरी रूप से प्रेम करते हैं; आंतरिक रूप से, वे केवल स्वयं से प्रेम करते हैं। जो लोग वास्तव में अपनी मातृभूमि से प्रेम करते हैं, अर्थात्, अपने कार्यों के माध्यम से उसकी स्थितियों को सुधारने का प्रयास करते हैं, वे अपने दूसरे जीवन में, जो उनकी नई मातृभूमि है, परमेश्वर के राज्य से प्रेम करते हैं।

कलीसिया मातृभूमि से भी अधिक निकट है, क्योंकि कलीसिया का कार्य लोगों को स्वर्ग की ओर ले जाना है। हालाँकि, सच्ची कलीसिया वही है जिसका परमेश्वर और स्वर्ग से संबंध हो। यदि कलीसिया नारकीय हो गई है—जैसा कि अधिकांश आधुनिक कलीसियाएँ हैं—तो जो लोग अपने पड़ोसियों से प्रेम करते हैं, उन्हें एक नई कलीसिया का निर्माण शुरू करना होगा।

चूँकि सारी अच्छाई प्रभु से आती है, इसलिए प्रभु का राज्य और स्वयं प्रभु हमारे सबसे महत्वपूर्ण पड़ोसी हैं। जो लोग प्रभु से प्रेम करते हैं, वे अपने पड़ोसियों से भी प्रेम करते हैं।

प्रभु और अपने पड़ोसियों से प्रेम करने का सबसे महत्वपूर्ण निर्देश दस आज्ञाएँ हैं। दस आज्ञाओं से, हम देख सकते हैं कि अपने पड़ोसियों से प्रेम करने में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी दूसरे व्यक्ति के साथ बुरा न करें, क्योंकि अंतिम छह आज्ञाएँ केवल निषेध हैं। इसलिए, जो लोग किसी दूसरे व्यक्ति के साथ बुरा नहीं करते, वे अपने पड़ोसियों से प्रेम करते हैं। अपने पड़ोसी से प्रेम करने का एक अन्य पहलू अपने पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करना है। अच्छा करने का अर्थ है लाभ उत्पन्न करना। एक व्यक्ति तब लाभ उत्पन्न करता है जब वह अपने पेशे या व्यवसाय के लिए आवश्यक कार्यों को कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी से करता है। ऐसा करके, वह समाज के प्रति प्रेम से प्रेरित होता है, और समाज एक व्यक्ति से भी अधिक महत्वपूर्ण पड़ोसी है। यह अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम का सबसे महत्वपूर्ण रूप है। किसी व्यक्ति की मदद करना भी अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम है, लेकिन इस मामले में, व्यक्ति को उस व्यक्ति के आध्यात्मिक गुणों के प्रति बहुत सचेत रहना चाहिए ताकि अनजाने में किसी बुरे व्यक्ति के इरादों को बढ़ावा न मिले।
जब कोई व्यक्ति प्रभु की ओर मुड़ता है, पाप से बचता है, अर्थात् दस आज्ञाओं का उल्लंघन करता है, और ईमानदारी और धार्मिकता से अपना कर्तव्य निभाता है, तो वह अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम का अभ्यासी बन जाता है। जब वे प्रतिदिन पश्चाताप का अभ्यास करते हैं, तो उनकी बुद्धि दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है, और वे अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति न्याय और ईमानदारी से पहले अपने निजी हितों को प्राथमिकता देता है, तो वह अपने पड़ोसी से नहीं, बल्कि स्वयं से प्रेम करता है। सत्य और अच्छाई हमारे सच्चे पड़ोसी हैं, जिनसे हमें अपने या अपने मित्रों और परिचितों के हितों से भी अधिक प्रेम करना चाहिए।
प्रत्येक व्यक्ति हमारा पड़ोसी है, जहाँ तक उसमें अच्छाई और सत्य है। अपने रिश्तेदारों, मित्रों और परिचितों से उनके आध्यात्मिक गुणों को ध्यान में रखे बिना प्रेम करना अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम नहीं है। पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति को अक्सर कई मित्रताएँ इसलिए त्यागनी पड़ती हैं क्योंकि उसकी आत्मा अब दुष्ट लोगों की संगति सहन नहीं कर सकती। पुनर्जन्म लेने वाला व्यक्ति दुष्ट लोगों के साथ संगति कर सकता है, लेकिन उसे सावधान रहना चाहिए कि वह आंतरिक रूप से उनसे आसक्त न हो जाए, क्योंकि ऐसा आसक्ति पुनर्जन्म की प्रक्रिया के लिए बहुत हानिकारक है। पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति को बुरे लोगों की "हम" वाली भावना से भी दूर रहना चाहिए। ऐसी समूह भावना हमेशा स्वार्थी और बुरे सामूहिक हितों की ओर ले जाती है और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम के विपरीत होती है।

यह विभिन्न धार्मिक संप्रदायों के साथ-साथ राजनीतिक समूहों, शौक़ीन मंडलियों और कार्यस्थलों में भी आम है।
अपने पड़ोसी के प्रति सच्चा प्रेम हमारे आंतरिक अस्तित्व में निवास करता है। आंतरिक अस्तित्व की गतिविधि को इस रूप में समझना कठिन है, लेकिन फिर भी आंतरिक अस्तित्व बाहरी अस्तित्व को अपनी गतिविधि का कुछ संकेत (लैटिन: सिग्नम) देता है।
यदि किसी व्यक्ति के भीतर अपने पड़ोसी के प्रति सच्चा प्रेम निवास करता है, तो यह उस व्यक्ति को अपनी दुष्टता पर चिंतन करने के लिए प्रेरित करेगा। यदि ऐसा नहीं होता है, तो हमारे भीतर अपने पड़ोसी के लिए सच्चा प्रेम नहीं है। बाहरी धर्मपरायणता और बाह्य पूजा आवश्यक रूप से अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम के संकेत नहीं हैं, क्योंकि बुरे लोग भी इनमें संलग्न हो सकते हैं। नए चर्च की पूजा, मनुष्य की इसी आंतरिक गतिविधि में, पिछले चर्चों की पूजा से भिन्न है। नए चर्च की पूजा मनुष्य द्वारा अपने बुरे कर्मों और इरादों पर चिंतन करने से शुरू होती है। चूँकि नया चर्च एक आंतरिक चर्च है, इसलिए इसकी पूजा भी आंतरिक है। आंतरिक उपासना पश्चाताप का एक कार्य है, जिसमें ईश्वर स्वयं व्यक्ति को पुनर्जन्म देते हैं क्योंकि उनमें से बुराई और अन्याय दूर हो जाते हैं। नए चर्च के सदस्य अपने कक्षों में एकांत में ईश्वर की सेवा करते हैं। बेशक, वे बाह्य उपासना भी कर सकते हैं, जो आंतरिक उपासना के साथ संयुक्त होती है। हालाँकि, इस चर्च के लिए बाह्य उपासना आवश्यक नहीं है: "परन्तु मैंने उसमें कोई मंदिर नहीं देखा, क्योंकि उसका मंदिर सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेम्ना है" (प्रकाशितवाक्य 21:22)।
नए चर्च के सदस्यों का अपने पड़ोसी के प्रति विश्वास और प्रेम उनके आंतरिक अस्तित्व में होता है। इसलिए, भविष्यवक्ता यिर्मयाह उनका वर्णन इस प्रकार करते हैं:

"मैं अपनी व्यवस्था उनके भीतर डालूँगा और उसे उनके हृदयों पर लिखूँगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे। वे फिर एक दूसरे को शिक्षा न देंगे, और न एक दूसरे से कहेंगे, 'प्रभु को जानो,' क्योंकि वे सब मुझे जानेंगे, छोटे से लेकर बड़े तक, प्रभु कहते हैं; क्योंकि मैं उनके अधर्म को क्षमा करूँगा और उनके पाप को फिर स्मरण न करूँगा।" (यिर्मयाह 31: 33-34)।

वास्तव में, नए चर्च के सदस्य आध्यात्मिक लोग बन रहे हैं जो अपने पड़ोसियों के प्रति प्रेम के गुणों में जीते हैं। आज दुनिया की स्थिति पहले से भी बदतर है। यह यहूदी लोगों के ग्रह के नेतृत्व में उभरने से काफी प्रभावित हुआ है। यहूदियों के माध्यम से सबसे बुरे नरकों से एक प्रवाह आता है। इसलिए, यहूदियों का विरोध अपने पड़ोसी के प्रति सर्वोत्तम संभव प्रेम है। यह ध्यान देने योग्य है कि इस पुस्तक में उल्लिखित यहूदी सभी यहूदियों को संदर्भित नहीं करते हैं, बल्कि केवल उन लोगों को संदर्भित करते हैं जो तल्मूड के नस्लवादी सिद्धांतों और प्रमुख यहूदियों, यानी रोथ्सचाइल्ड के नेतृत्व वाले सिय्योन के बुद्धिमान पुरुषों के अनुसार जीते हैं। कई तथाकथित साधारण यहूदी निर्दोष हैं और ज़ायोनीवाद को स्वीकार नहीं करते हैं।

साहित्य

स्वीडनबॉर्ग, इमानुएल:
दान। लंदन 1947। डॉक्ट्रिना विटे प्रो नोवा हिरोसोलिमा एक्स प्रेसेप्टिस डेकालोगिस। एम्स्टर्डम 1763. डी नोवा हायरोसोलीमा एट एजस डॉक्ट्रिना कोलेस्टी। लंदन 1758. वेरा क्रिस्टियाना रिलिजियो। एम्स्टर्डम 1771.

विवाह की उत्पत्ति

परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में उत्पन्न किया, अपने स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसे उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने उन्हें उत्पन्न किया। (उत्पत्ति 1:27)

आधुनिक ईसाई धर्म ने विवाह की उत्पत्ति के ज्ञान को अस्पष्ट कर दिया है। इसी कारण, आज लोग कामुकता के आध्यात्मिक आधार से अनभिज्ञ हैं; कामुकता को केवल वासना समझा जाता है। हालाँकि, यौन जीवन के माध्यम से ही आध्यात्मिक और दिव्य विषय सबसे स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों के लेखन कामुकता की मूल प्रकृति के बारे में पूर्ण अज्ञानता को प्रकट करते हैं।
1768 में, स्वीडनबॉर्ग ने एम्स्टर्डम में "डेलिसिया सैपिएंटिया डे अमोरे कॉन्जुगियाली; पोस्ट क्वास से-कुंटूर वोलुप्टेट्स इन्सानिया डे अमोरे स्कोर्टाटोरियो" (वैवाहिक प्रेम के ज्ञान का आनंद और कामुक प्रेम के पागलपन के जुनून) शीर्षक से एक रचना प्रकाशित की। इस रचना को समझा नहीं गया और चर्च ने इसकी कड़ी निंदा की। हालाँकि, यह रचना विश्व साहित्य में अद्वितीय है, क्योंकि यह पत्राचार विज्ञान के माध्यम से पुरुषों और महिलाओं की लैंगिक भूमिकाओं को उजागर करती है। शरीर की मृत्यु के बाद भी, व्यक्ति मनुष्य के रूप में जीवित रहता है, और उसका लिंग वही रहता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि व्यक्ति न केवल शरीर से, बल्कि आत्मा से भी पुरुष या महिला होता है। पुरुष आत्मा, स्त्री आत्मा से भिन्न होती है। पुरुषत्व सत्य का प्रतीक है, स्त्रीत्व अच्छाई का प्रतीक है। स्त्री और पुरुष के बीच आकर्षण की जड़ें ईश्वर में सत्य और अच्छाई के मिलन में हैं। जब सत्य और अच्छाई उनके भीतर मिल जाते हैं, तो व्यक्ति का आध्यात्मिक पुनर्जन्म होता है। इसी प्रकार, स्त्री और पुरुष के मिलन से व्यक्ति का भौतिक जीवन में जन्म होता है। यौन इच्छाएँ परलोक में भी संरक्षित रहती हैं।
यौन इच्छा की पूर्ति और वैवाहिक प्रेम दो अलग-अलग बातें हैं। यौन इच्छाएँ प्राकृतिक मनुष्यों की होती हैं, लेकिन वैवाहिक प्रेम आध्यात्मिक और दिव्य मनुष्यों का होता है। यौन इच्छा कई साथियों के साथ संतुष्ट की जा सकती है, लेकिन वैवाहिक प्रेम केवल दो लोगों के बीच ही उत्पन्न होता है।

स्वर्ग में भी विवाह होते हैं और पृथ्वी पर भी। हालाँकि, ईसाइयों में आम धारणा यह है कि परलोक में विवाह नहीं होते। यह मान्यता वचन के शाब्दिक अर्थ की गलत व्याख्या पर आधारित है:

“यीशु ने उनसे कहा, इस संसार की सन्तानें विवाह करती हैं और विवाह में दी जाती हैं; परन्तु जो उस संसार और मरे हुओं में से पुनरुत्थान के योग्य ठहरेंगे, वे न विवाह करेंगे, न विवाह में दी जाएँ; और न वे फिर मर सकते हैं; क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान हैं; और पुनरुत्थान की सन्तान होने के कारण परमेश्वर की सन्तान हैं।” (लूका 20:34-36)

इस अंश में, आंतरिक अर्थ के अनुसार, प्रभु का आशय पृथ्वी या स्वर्ग में वास्तविक विवाह से नहीं है, बल्कि यह है कि जो लोग पहले ही पुनर्जन्म ले चुके हैं, अर्थात् पृथ्वी पर रहते हुए प्रभु के साथ एक हो गए हैं, वे स्वर्ग में भी एक हो गए हैं और उन्हें दूसरी बार जन्म लेने की आवश्यकता नहीं है। वचन में कई अन्य स्थानों पर, विवाह, विवाह और विवाह करना प्रभु के साथ एकता को संदर्भित करता है, जैसे: "आओ, हम आनन्दित और मगन हों और उसकी स्तुति करें, क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुँचा है, और उसकी दुल्हन ने अपने आप को तैयार कर लिया है" (प्रकाशितवाक्य 19:7)।
वैवाहिक प्रेम स्वर्ग के मूल प्रेमों में से एक है, क्योंकि इसकी जड़ें भलाई और सच्चाई में और परमेश्वर और स्वर्ग के बीच के एकता में हैं। प्राचीन काल के लोगों के लिए, वैवाहिक प्रेम सभी सुखों का आधार था। तब से, मानवता परमेश्वर और स्वर्ग से दूर होती जा रही है, इसलिए वैवाहिक प्रेम के बारे में बहुत कम जानकारी है। हालाँकि, वैवाहिक प्रेम मूलतः दिव्य और आध्यात्मिक है, और वैवाहिक प्रेम के बिना यौन प्रेम, पशुओं के समान, कामुक है। वैवाहिक प्रेम सीधे प्रभु से विवाह में प्रवाहित होता है। वैवाहिक प्रेम का सार केवल पत्राचार के विज्ञान के माध्यम से ही समझा जा सकता है।
आधुनिक लोगों के विवाह अक्सर विवाह के शुरुआती वर्षों में आध्यात्मिक रूप से नष्ट हो जाते हैं।

ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रभु की सुरक्षा के बिना कोई भी विवाह नरक के आक्रमणों का सामना नहीं कर सकता, क्योंकि नरक का सबसे बड़ा सुख विवाहों का टूटना है। अधिकांश विवाह जीवनसाथी की बेवफाई के कारण टूट जाते हैं, जो कि बहुत आम है, खासकर ईसाई जगत में। हालाँकि विवाह अक्सर वर्षों तक और यहाँ तक कि मृत्यु तक भी चलते रहते हैं, ऐसे विवाह आध्यात्मिक या दिव्य अर्थों में विवाह नहीं होते, बल्कि केवल सांसारिक कारणों से चलते हैं। हालाँकि, आजकल सांसारिक तलाक भी बहुत आम हैं। आधुनिक धर्म, जिनका प्रभु से कोई संबंध नहीं है, विवाहों की रक्षा करने में असमर्थ हैं। ईसाई कलीसिया का अनुसरण करने वाले नए कलीसिया के लिए स्थिति अलग है। यह नया कलीसिया वास्तव में वैवाहिक प्रेम की समझ पर आधारित है। स्वीडनबॉर्ग वैवाहिक प्रेम पर अपनी उपर्युक्त पुस्तक में इस बारे में लिखते हैं:

"अपने आगमन के बाद (प्रभु का दूसरा आगमन, वचन के आंतरिक अर्थों के प्रकटीकरण के रूप में, अनुवादक की टिप्पणी), प्रभु वैवाहिक प्रेम को पुनर्जीवित करेंगे जैसा कि प्राचीनों में था। क्योंकि यह प्रेम केवल प्रभु से आता है, और यह केवल उन्हीं के पास होता है जिन्हें उन्होंने वचन के माध्यम से आध्यात्मिक बनाया है" (अं. 81)।

पुरुष और स्त्री दोनों में समझ और इच्छाशक्ति होती है। पुरुषों में, समझ इच्छाशक्ति पर हावी होती है, जबकि स्त्रियों में, इच्छाशक्ति समझ पर हावी होती है। हालाँकि, स्वर्गीय विवाह में, कोई भी पति या पत्नी प्रमुख स्थिति में नहीं होता, क्योंकि पत्नी की इच्छा पति की इच्छा भी होती है, और पति की समझ पत्नी की समझ भी होती है, क्योंकि एक की इच्छा और सोच दूसरे के समान होती है। पत्नी की इच्छा पति की समझ के अनुरूप होती है, और पति की समझ पत्नी की इच्छा के अनुरूप होती है। यही इन शब्दों का अर्थ है, "और वे दोनों एक तन होंगे... इसलिए वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं। इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे कोई अलग न करे" (मत्ती 19:5,6)।
पति-पत्नी के बीच जितना गहरा संबंध होता है, उतना ही उनके बीच वैवाहिक प्रेम, समझ, बुद्धि और खुशी भी होती है।

क्योंकि दिव्य सत्य और अच्छाई, जिनसे समस्त समझ, ज्ञान और सुख उत्पन्न होते हैं, सीधे वैवाहिक प्रेम में प्रवाहित होते हैं। यह प्रवाह सबसे पहले पत्नी की इच्छा में, और वहाँ से अप्रत्यक्ष रूप से पति की इच्छा और समझ में प्रवाहित होता है। चूँकि वैवाहिक प्रेम में सर्वोच्च संभव सत्य और अच्छाई समाहित होती है, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि व्यक्ति अपने जीवनसाथी के साथ सच्चे वैवाहिक प्रेम में रहने के अलावा इन्हें प्राप्त नहीं कर सकता। वे विभिन्न "गुरु" जो सोचते हैं कि वे एकांत में अपनी नाभि में झाँककर आध्यात्मिक विकास के उच्चतम स्तरों तक पहुँच सकते हैं, वे गंभीर रूप से गलत हैं। आध्यात्मिक बुद्धि के उच्चतम स्तरों तक केवल स्वर्गीय विवाह में ही पहुँचा जा सकता है।

अच्छाई और सत्य के बीच जो पारस्परिक प्रेम विद्यमान है, उससे बड़ा कोई पारस्परिक प्रेम नहीं है। इसीलिए सच्चा वैवाहिक प्रेम इसी से उत्पन्न होता है। बुराई और अन्याय भी एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, लेकिन इस नारकीय प्रेम में क्रूरता और पीड़ा निहित होती है। पुनर्जन्म न पाए हुए लोगों के विवाह भीतर से नारकीय होते हैं, भले ही वे बाहर से कुछ और प्रतीत हों। सच्चा वैवाहिक प्रेम केवल उन्हीं के बीच विद्यमान हो सकता है जिन्हें प्रभु ने पुनर्जीवित किया है। स्वर्गीय विवाह में रहने वालों का सुख दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाता है। यौन इच्छा और क्षमता भी प्रबल होती जाती है और उस पाशविक स्वभाव से पूरी तरह मुक्त हो जाती है जो उन लोगों के यौन जीवन की विशेषता है जिनका पुनर्जन्म नहीं हुआ है। वैवाहिक प्रेम में रहने वालों का यौन जीवन पवित्र होता है और स्वर्ग में अच्छाई और सत्य के मिलन के अनुरूप होता है। पृथ्वी पर, यौन संबंध का उद्देश्य वंश को आगे बढ़ाना भी है; स्वर्ग में, यह उद्देश्य नहीं रहता, बल्कि पति-पत्नी का मिलन अच्छाई और सत्य को जन्म देता है। पत्राचार विज्ञान में, पुत्र सत्य के और पुत्री अच्छाई के अनुरूप होती है।

विवाह और यौन संबंधों के प्रति दृष्टिकोण प्रत्येक युग के आध्यात्मिक स्तर को प्रकट करते हैं। हमारे समय की आध्यात्मिक गुणवत्ता को जानने के लिए बस टेलीविजन चालू करना या अखबार खोलना पर्याप्त है: अशुद्ध आत्माएँ व्याप्त हैं। हालाँकि, नया चर्च, या नया जेरूसलम, मानवता को दाम्पत्य प्रेम की स्थिति प्राप्त करने का एक नया अवसर प्रदान करता है। नए चर्च के सदस्यों में, पीढ़ी दर पीढ़ी विरासत में मिली बुराई धीरे-धीरे दूर होती जाती है, और एक नए प्रकार का मनुष्य जन्म लेता है जो वैवाहिक प्रेम की अच्छाई में रहता है

इस नये प्रकार के मनुष्य को आध्यात्मिक मनुष्य कहा जा सकता है, क्योंकि इसने दाम्पत्य प्रेम की अच्छाई को आत्मसात कर लिया है।

साहित्य

स्वीडनबोर्ग, एमानुएल:
दाम्पत्य प्रेम, लंदन 1970। डी कंजुगियो। - इमानुएल स्वीडनबॉर्ग के लघु धर्मशास्त्रीय कार्य और पत्र। लंदन 1975.
डेलिसिए सैपिएंटिए डे अमोरे कंजुगियाली; पोस्ट क्रास सीक्रेंटूर इन्सानिया डे अमोरे स्कॉर्टटोरियो को वॉलुप्टेट करता है। अम्स्टेलोडामी 1768.

अध्याय 9: पत्राचार के विज्ञान के प्रकाश में आधुनिक युग

और जो पहले ज़मीन पर था, अब शिखर पर है। इसी से उन्होंने सबसे सच्चा नियम निकाला, "निचले से भी ऊंचे में बदलो, निश्चय ही, क्योंकि हम वहाँ की अग्निमय कैद से बच निकले हैं, मुक्त वायु में अत्यधिक शक्ति के लिए: एक खुला रहस्य, फिर भी भली-भाँति छिपा हुआ, और हाल ही में सार्वजनिक रूप से प्रकट हुआ है।" (इफिसियों 6:12)। गोएथे: फॉस्ट।

क्योंकि हमारा युद्ध मांस और लहू से नहीं, परन्तु प्रधानों से, अधिकारियों से, इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और ऊँचे स्थानों पर स्थित आत्मिक दुष्टता से है।
(इफिसियों 6:12)

यह भी जान लो कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएगा।
क्योंकि मनुष्य स्वार्थी, लोभी, डींगें मारने वाले, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा न मानने वाले, कृतघ्न, अपवित्र,
स्वाभाविक स्नेहहीन, संधि-विच्छेदक, झूठे आरोप लगाने वाले, असंयमी, उग्र, भले लोगों का तिरस्कार करने वाले, विश्वासघाती, ढीठ, अभिमानी, परमेश्वर के नहीं बल्कि सुख-विलास के चाहने वाले होंगे; भक्ति का भेष तो धरेंगे, परन्तु उसकी शक्ति को न मानेंगे; ऐसे लोगों से दूर रहो। (2 तीमुथियुस 3:1-5)।

कामुक लोग, आध्यात्मिक लोग और दिव्य लोग हमारी दुनिया का अनुभव अलग-अलग तरीकों से करते हैं। कामुक लोग हमारे ग्रह पर प्रमुख प्रजातियाँ हैं, क्योंकि बहुत कम लोगों ने आध्यात्मिक या दिव्य के लिए अपना मन खोला है। बहुत कम लोग जानते हैं कि आध्यात्मिक या दिव्य व्यक्ति के दृष्टिकोण से दुनिया कैसी दिखती है। कामुक व्यक्ति खुद को बुद्धिमान समझता है; आध्यात्मिक व्यक्ति समझता है कि सच्ची बुद्धि परमेश्वर से आती है; दिव्य व्यक्ति को यह एहसास होता है कि सारा ज्ञान और सारी अच्छाइयाँ केवल ईश्वर से ही आती हैं। एक कामुक व्यक्ति को होमो स्टल्टस (मूर्ख व्यक्ति) कहा जा सकता है, क्योंकि वह अपनी विश्वदृष्टि संवेदी ज्ञान की त्रुटियों के आधार पर बनाता है। अनुमान है कि 90% से ज़्यादा आधुनिक पश्चिमी लोग कामुक हैं।

एक आध्यात्मिक व्यक्ति होमो स्पिरिचुअलिस (आध्यात्मिक मनुष्य) होता है, क्योंकि वह आध्यात्मिक जगत के अस्तित्व को भी जानता और समझता है। एक दिव्य व्यक्ति होमो बोनस (भला मनुष्य) होता है, क्योंकि उसने प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर ली है, सत्य को भलाई की दृष्टि से देखा है, और प्रभु की सुरक्षा में रहता है। आजकल, सभी मनुष्यों को होमो सेपियंस कहा जाता है, लेकिन आधुनिक मनुष्यों को होमो स्टल्टस (मूर्ख मनुष्य) कहना अधिक सटीक होगा। न्यू जेरूसलम के सदस्यों की संतानें होमो स्पिरिचुअलिस मानव बनाती हैं, जो पहले से ही अपनी प्रजाति हैं। इस पुस्तक में, नई मानव प्रजाति को आध्यात्मिक कहा गया है, क्योंकि यह होमो सेपियंस प्रजाति से बहुत भिन्न है। होमो बोनस अच्छाई को सत्य से ऊपर रखता है, इसलिए इसका नाम "भला मनुष्य" रखा गया है। होमो बोनस और होमो स्पिरिचुअलिस प्रजातियों की वंशानुगत बुराई प्रत्येक पीढ़ी के साथ कम होती जाती है। एक कामुक व्यक्ति वर्तमान दुनिया को पिछली दुनिया के अधिक उन्नत रूप के रूप में देखता है। वह प्राकृतिक विज्ञानों की प्रगति और उच्च स्तर की तकनीकी विशेषज्ञता की प्रशंसा करता है। वह हमारे युग के आध्यात्मिक स्तर को देखने में पूरी तरह असमर्थ है, लेकिन भौतिक ज्ञान में वृद्धि को ही वास्तविक प्रगति मानता है। वे विभिन्न भौतिकवादी सिद्धांतों और मान्यताओं को आसानी से आत्मसात कर लेते हैं और खुद को केवल उन्नत प्राणी मानते हैं, यह मानते हुए कि वे वानरों के वंशज हैं। भोगवादी वैज्ञानिक—अर्थात्, हमारे समय के लगभग सभी वैज्ञानिक—अपनी महत्वाकांक्षा से प्रेरित होकर ऐसे सिद्धांत और मत गढ़ते हैं, जिनमें सब कुछ उलट-पुलट कर दिया जाता है: महत्वपूर्ण नियम पूरी तरह से अज्ञात होते हैं, और तुच्छ बातों को उच्च सत्य का दर्जा दिया जाता है। हालाँकि, भोगवादी लोग अपना स्तर नहीं देखते, बल्कि खुद को बुद्धिमान और उन्नत मनुष्य मानते हैं। मृत्यु के बाद, भोगवादी लोग नरक में जाते हैं, जहाँ उन्हें मल-मूत्र की दुर्गंध एक मीठी सुगंध सी लगती है। संबंध विज्ञान में, मल-मूत्र मानव बुद्धि से निकलने वाले सत्य और अच्छाई के अनुरूप हैं। गुदा और मूत्रमार्ग के बीच से जन्म लेने वाले मनुष्य का जन्म वंशानुगत बुराई में जन्म लेने के समान है। आज, वंशानुगत बुराई पहले से कहीं ज़्यादा बढ़ गई है।

आध्यात्मिक लोग समझते हैं कि आधुनिक दुनिया बुरी दिशा में जा रही है: ईश्वर का ज्ञान लगभग न के बराबर है; स्वार्थ और लालच लोगों के मन पर हावी हैं; आध्यात्मिक मामलों में बहुत कम लोग रुचि रखते हैं। धर्म केवल सामाजिक संगठन हैं।
केवल एक दिव्य व्यक्ति ही आज हमारे ग्रह पर दुनिया की स्थिति को स्पष्ट रूप से देख सकता है: हमारा युग मानव इतिहास के किसी भी पिछले चरण से कहीं अधिक अंधकारमय है। भौतिकवाद और कामुकता ने सभी उच्च ज्ञान को दबा दिया है। प्रकृति और पदार्थ का ज्ञान ज्ञान के उच्चतम स्तर तक पहुँच गया है, हालाँकि इसे निम्नतम होना चाहिए।
आध्यात्मिक दुनिया के नियम पूरी तरह से अज्ञात हैं। सब कुछ उलट-पुलट हो गया है। पत्राचार के विज्ञान से परिचित व्यक्ति हमारे युग की आध्यात्मिक प्रकृति को आसानी से समझ सकता है। हमारे ग्रह पर मानव विकास के विभिन्न चरणों का वर्णन नबूकदनेस्सर के स्वप्न में किया गया है, जो दानिय्येल की पुस्तक (दानिय्येल 2:31-35) में पाया जा सकता है:

हे राजा, तूने एक बड़ी मूर्ति देखी। यह विशाल मूर्ति, जिसकी चमक अद्भुत थी, तुम्हारे सामने खड़ी थी; और उसका रूप भयानक था। इस मूर्ति का सिर शुद्ध सोने का था, उसकी छाती और भुजाएँ चाँदी की, उसका पेट और जाँघें पीतल की,
उसकी टाँगें लोहे की, उसके पाँव कुछ लोहे के और कुछ मिट्टी के। तुमने देखा कि बिना किसी के हाथों के एक पत्थर उखड़ गया, जिसने मूर्ति के लोहे और मिट्टी के पाँवों पर, जो मूर्ति के थे, प्रहार करके उन्हें चूर-चूर कर दिया। तब लोहा, मिट्टी, पीतल, चाँदी और सोना, सब चूर-चूर हो गए, और गर्मी के खलिहानों के भूसे के समान हो गए; और हवा उन्हें उड़ा ले गई, यहाँ तक कि उनके लिए कोई जगह नहीं मिली: और वह पत्थर जो मूर्ति पर लगा था, एक बड़ा पहाड़ बन गया, और पूरी पृथ्वी को भर दिया।

स्वीडनबॉर्ग इस स्वप्न की व्याख्या इस प्रकार करते हैं:

"मुझे स्वर्ग से ज्ञान प्राप्त हुआ है कि हमारे ग्रह पर पहले लोग दिव्य प्राणी थे जो समतुल्यता के संदर्भ में सोचते थे, और जो वस्तुएँ और चीज़ें वे देखते थे वे उनके लिए समतुल्य थीं। वे स्वर्गदूतों से बातचीत कर सकते थे, और इस प्रकार स्वर्ग उनके माध्यम से दुनिया से जुड़ा हुआ था। इसीलिए इस युग को स्वर्ण युग कहा गया। प्राचीन लेखक हमें इन लोगों के बारे में बताते हैं कि उस समय स्वर्ग के निवासी मनुष्यों के बीच रहते थे और उनके साथ वैसे ही घुलते-मिलते थे जैसे मित्र मित्रों के साथ करते हैं। लेकिन इस युग के बाद एक और युग आया, जब लोग समतुल्यता के संदर्भ में नहीं सोचते थे, बल्कि केवल उनके बारे में जानते थे। तब भी, स्वर्ग और मनुष्यों के बीच एक संबंध था, लेकिन यह अब पहले जितना घनिष्ठ नहीं था। इस युग को रजत युग कहा गया। इसके बाद, ऐसे लोग रहते थे जिन्हें समतुल्यता का कुछ ज्ञान था, लेकिन वे इस ज्ञान के संदर्भ में नहीं सोचते थे, क्योंकि वे केवल प्राकृतिक अच्छाई में रहते थे, न कि आध्यात्मिक अच्छाई में जैसा कि पिछले युग के लोग करते थे। इस युग को द्वापर युग कहा गया। उसके बाद, लोग धीरे-धीरे बाह्य और अंततः भौतिक होते गए, और समतुल्यता का ज्ञान पूरी तरह से लुप्त हो गया। साथ ही, स्वर्ग और उससे जुड़ी कई चीज़ों का सच्चा ज्ञान भी लुप्त हो गया। संगति के कारण ही इन युगों को स्वर्ण, रजत और ताम्र युग कहा गया, क्योंकि स्वर्ण उस दिव्य अच्छाई का प्रतीक है जिसमें प्राचीन लोग रहते थे; रजत उस आध्यात्मिक अच्छाई का प्रतीक है जिसमें अगले युग के लोग रहते थे; ताम्र प्राकृतिक अच्छाई का प्रतीक है, जिसमें अगले युग के लोग रहते थे; और अंत में, लौह युग, जिससे पिछले युग के लोगों को अपना नाम मिला, बिना किसी अच्छाई के कठोर सत्य का प्रतीक है। (दे कोएलो एट दे इन्फर्नो, पृष्ठ 115)।

नबूकदनेस्सर द्वारा देखी गई मूर्ति हमारे ग्रह के कलीसियाओं को भी दर्शाती है, क्योंकि प्रत्येक युग का आध्यात्मिक चरित्र उस युग के धर्म से बिल्कुल मेल खाता है। सुनहरा सिर सबसे प्राचीन कलीसिया को दर्शाता है, जब ईश्वरीय नियम मनुष्यों के हृदय में अंकित थे।

वक्ष और भुजाएँ उस आध्यात्मिक कलीसिया का प्रतिनिधित्व करती हैं जो बाद में अस्तित्व में आई, जिसने अपने दिव्य नियम पुराने नियम से प्राप्त किए। पेट और जाँघें इज़राइली कलीसिया का प्रतिनिधित्व करती हैं, और पैर ईसाई कलीसिया का प्रतिनिधित्व करते हैं। लोहे और मिट्टी से बने पैर ईसाई कलीसिया के पतन का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह मूर्ति, पत्राचार विज्ञान के अनुसार, एक ऐसे व्यक्ति का भी प्रतिनिधित्व करती है जो ईश्वरीय व्यवस्था के पूर्णतः अनुरूप जीवन जीता है। ऐसे व्यक्ति में, दिव्य पदार्थ (सुनहरा सिर) प्रबल होते हैं, आध्यात्मिक पदार्थ (वक्ष और भुजाएँ) दिव्य पदार्थों की सेवा करते हैं, और प्राकृतिक अच्छाई (पेट और कमर) और प्राकृतिक सत्य (पैर) आध्यात्मिक और दिव्य पदार्थों की सेवा करते हैं। स्वीडनबॉर्ग हमारे समय के लोगों का वर्णन इसी तरह की संगति के साथ इस प्रकार करते हैं:

"पुराने लोगों की तरह, उनका सिर भी उनकी छाती के ऊपर, उनकी छाती उनकी कमर के ऊपर और उनकी कमर उनके पैरों के ऊपर है। लेकिन उनके सिर में सोना नहीं है, उनकी छाती में चाँदी नहीं है, उनकी कमर में पीतल नहीं है, और उनके पैरों में शुद्ध लोहा नहीं है। उनके सिर में मिट्टी मिला लोहा है, उनकी छाती में मिट्टी और लोहे के साथ तांबा मिला है, उनके कूल्हों में इन दोनों के साथ चांदी मिली है, और उनके पैरों में इन सभी के साथ सोना मिला है। इस उलटफेर के साथ, वे मनुष्यों से मानव की अपरिष्कृत छवियों में बदल गए हैं, जिनमें कुछ भी सुसंगत नहीं है। जो सबसे ऊँचा था वह सबसे नीचा हो गया है। सिर एड़ी बन गया है, और इसके विपरीत। स्वर्ग से देखने पर, वे अपनी कोहनियों पर झुके हुए और अपने शरीर को उल्टा करके आगे की ओर हिलाते हुए जोकरों जैसे दिखते हैं। (डी अमोरे कॉन्जुगियाली, पृष्ठ 79)।

हालाँकि, एक कामुक व्यक्ति इस तथ्य को नहीं समझ सकता कि हमारे समय के लोगों ने वास्तव में सब कुछ उल्टा कर दिया है। पत्राचार इसे समझ सकते हैं, लेकिन केवल एक दिव्य व्यक्ति ही इसे सही मायने में स्पष्ट रूप से समझ सकता है।
नबूकदनेस्सर के स्वप्न का उत्तरार्ध एक पत्थर के बारे में बताता है जिसने मूर्ति को कुचल दिया और एक विशाल पर्वत बन गया जिसने पूरी पृथ्वी को भर दिया। यह पत्थर स्वीडनबॉर्ग के माध्यम से आए स्वर्गीय सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करता है, जो अंततः पूर्ववर्ती धर्मों को अनावश्यक बना देता है और जो स्वयं हमेशा के लिए बना रहता है।

वक्ष और भुजाए उस आध्यात्मिक कलीसिया का प्रतिनिधित्व करते हैं जो बाद में अनुभव में आई, जिन्होंने अपने दिव्य नियम पुराने नियम से प्राप्त किए। पेट और जाँघें इजरायली कलीसिया का प्रतिनिधित्व करते हैं, और पैर ईसाई कलीसिया का प्रतिनिधित्व करते हैं। लोहे और मिट्टी से बने पैर ईसाई कलीसिया के पतन का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह मूर्ति, वैज्ञानिक विज्ञान के अनुसार, एक ऐसे व्यक्ति का भी प्रतिनिधित्व करता है जिसने ईश्वरीय व्यवस्था के पूर्णत: संप्रदाय का जीवन जीता है। ऐसे व्यक्तियों में, दिव्य पदार्थ (सुनहरा सिर) प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, दिव्य पदार्थ (वक्ष और भुजाएँ) दिव्य पदार्थों की सेवा करते हैं, और प्राकृतिक पदार्थ (पालतू और कमर) और प्राकृतिक सत्य (परम आध्यात्मिक और दिव्य पदार्थों) की सेवा करते हैं। स्वीडनबॉर्ग हमारे समय के लोगों का वर्णन इसी तरह की संगति के साथ इस प्रकार करते हैं:

"पुराने लोगों की तरह, उनका सिर भी उनकी छाती के ऊपर है, उनकी छाती उनकी कमर के ऊपर है और उनकी कमर उनके पैरों के ऊपर है। लेकिन उनके सिर में सोना नहीं है, उनकी छाती में चांदी नहीं है, उनकी कमर में चांदी नहीं है, और उनके सिर में मिट्टी का लोहा नहीं है। उनके सिर में मिट्टी मिलती है, उनकी छाती में मिट्टी और कांच के टुकड़े के साथ तांबा मिला हुआ है, उनके दिग्गजों में दोनों के साथ चांदी मिली हुई है, और उनके सिर में सभी के साथ सोना मिला हुआ है।" अपरिष्कृत चित्र में बदल दिए गए हैं, जिनमें कुछ भी संगत नहीं है। जो सबसे ऊंचा था वह सबसे नीचा हो गया है, और इसके विपरीत। स्वर्ग से देखने पर, वे अपनी कोहनियों पर झुके और अपने शरीर को झुकाते हुए जोकरों जैसे दिखते हैं।

हालाँकि, एक उचक्के व्यक्ति का यह तथ्य समझ में नहीं आ सकता हमारे समय के लोगों ने वास्तव में सब कुछ पर आधारित कर दिया है। इसे समझा जा सकता है, लेकिन केवल एक दिव्य व्यक्ति ही इसे सही अर्थ में स्पष्ट रूप से समझ सकता है।
नबूकदनेस्सर के स्वप्न जिसने एक पत्थर को ढहा दिया, के बारे में बताता है कि किसने मूर्तियों को कुचल दिया और एक विशाल पर्वत को पूरी पृथ्वी पर भर दिया। यह पत्थर स्वीडनबर्ग के माध्यम से आया हुआ खगोलीय सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे पूर्व के सभी धर्मों ने दैहिक बना दिया है और जो स्वयं हमेशा के लिए बना हुआ है।

समकालीन दार्शनिक इस बात से अनभिज्ञ हैं कि सत्य का अपना एक रूप और मूल्य-व्यवस्था भी होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि सत्य स्वयं, सभी सत्यों का अनंत योग, ईश्वर है, जो मानव रूप में है। इस मानव में, सिर दिव्य सत्यों से, वक्ष आध्यात्मिक सत्यों से और पैर प्राकृतिक सत्यों से मेल खाते हैं। मनुष्य के बाहर के भौतिक सत्य, उदाहरण के लिए, जूतों से मेल खाते हैं, जो पैरों के सबसे निकट होते हैं। इस प्रकार पैर सजीव प्रकृति के सत्यों से और जूते निर्जीव प्रकृति के सत्यों से मेल खाते हैं। संगति विज्ञान के दृष्टिकोण से, आधुनिक दार्शनिक और वैज्ञानिक पैरों और जूतों के सत्यों के बारे में तो बहुत कुछ जानते हैं, लेकिन पैरों के ऊपर मानव शरीर के बारे में कुछ नहीं जानते। चूँकि मानव बुद्धि अनिवार्य रूप से सत्यों के सही क्रम पर निर्भर करती है (सत्य का क्रम भी एक सत्य है), स्वदेशी संस्कृतियों के कई लोग आधुनिक दार्शनिकों से अधिक बुद्धिमान होते हैं, क्योंकि उन्हें अक्सर सिर और वक्ष के बारे में तो बहुत ज्ञान होता है, लेकिन जूतों के बारे में बहुत कम। बेशक, मनुष्य बिना जूतों के भी रह सकते हैं।

दार्शनिक अंधकार और धार्मिक अंधकार साथ-साथ चलते हैं। हालाँकि आज सैकड़ों संप्रदाय हैं, लेकिन उनमें से एक भी ऐसा नहीं है जिसका ईश्वर और स्वर्ग से सच्चा संबंध हो। स्वीडनबॉर्ग द्वारा वर्णित नया चर्च अभी तक एक बड़े संगठन के रूप में विकसित नहीं हुआ है, हालाँकि इसकी शुरुआत फ़िनलैंड में एक छोटे समूह के रूप में हुई थी। हालाँकि आधुनिक चर्चों का ईश्वर और स्वर्ग से कोई सच्चा संबंध नहीं है, फिर भी वे सभी लोग जो ईश्वर को स्वीकार करते हैं और अपने धर्म के मानदंडों के अनुसार जीवन जीते हैं, पाप से बचते हैं, मोक्ष प्राप्त करेंगे, भले ही उनका धर्म अन्यथा दोषपूर्ण क्यों न हो। इस संबंध में, कई आदिम लोग सभ्य लोगों की तुलना में बेहतर स्थिति में हैं। सबसे बुरी स्थिति प्रोटेस्टेंट ईसाई और यहूदी हैं। जब धर्मशास्त्रीय मामलों की बात आती है तो पूरा ईसाई जगत पूर्ण अंधकार में है। स्वीडनबॉर्ग ने अपनी रचना "एबोमिनाटियो डेसोलेशनिस" (उजाड़ का आतंक) में इस अंधकार का वर्णन इस प्रकार किया है:

युग की पूर्णता और विनाश की भयावहता पर।

ईश्वर का कोई ज्ञान नहीं। प्रभु का कोई ज्ञान नहीं।
पवित्र आत्मा का कोई ज्ञान नहीं। वचन की पवित्रता का कोई ज्ञान नहीं। मुक्ति का कोई ज्ञान नहीं। विश्वास का कोई ज्ञान नहीं। अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम का कोई ज्ञान नहीं। स्वतंत्र इच्छा का कोई ज्ञान नहीं। पश्चाताप का कोई ज्ञान नहीं। पापों की क्षमा और धर्मांतरण का कोई ज्ञान नहीं। पुनर्जन्म का कोई ज्ञान नहीं। औचित्य का कोई ज्ञान नहीं। स्वर्ग और नर्क का कोई ज्ञान नहीं। मृत्यु के बाद मनुष्य की स्थिति या मोक्ष का कोई ज्ञान नहीं। बपतिस्मा का कोई ज्ञान नहीं। पवित्र भोज का कोई ज्ञान नहीं।

इसका अर्थ है कि न कोई धर्म है और न ही कोई चर्च।

ईसाई चर्च के अंधकार ने पश्चिम में कई लोगों को पूर्वी धर्मों, ब्रह्मविद्या और मानव-दर्शन, परामनोविज्ञान और सभी प्रकार के "गुरुओं" में सत्य की खोज करने के लिए प्रेरित किया है। हालाँकि, ये लोगों को सत्य के ज्ञान की ओर नहीं ले जा सकते, क्योंकि ये मानवीय बुद्धि पर आधारित हैं, जो विरासत में मिली बुराई से दूषित है। केवल ईश्वर ही लोगों को सत्य की ओर ले जा सकते हैं। आगे, मैं इन "सत्यों" की त्रुटियों पर संक्षेप में चर्चा करूँगा।

1. पूर्वी धर्म

हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और कुछ अन्य एशियाई धर्म प्राचीन चर्च, जो सच्चा चर्च था, से चली आ रही लंबी सामाजिक परंपराओं के माध्यम से विकसित हुए हैं। आज के पूर्वी धर्म अपने मूल को पूरी तरह भूल गए हैं और ऐसी सामाजिक संस्थाओं के रूप में विकसित हो गए हैं जिनका ईश्वर और स्वर्ग से कोई वास्तविक संबंध नहीं है, लेकिन अच्छी और बुरी आत्माओं के माध्यम से उनका आत्माओं की दुनिया से संबंध है। एक वास्तविक संबंध केवल शुद्ध सत्यों के माध्यम से ही स्थापित किया जा सकता है। पूर्वी धर्मों की—सामान्य धर्मों की तरह—गलती यह है कि उनके अनुयायी ईश्वर तक सीधे नहीं, बल्कि मानवीय अधिकारियों के माध्यम से पहुँचते हैं।

पूर्वी लोग अक्सर पश्चिमी लोगों की तुलना में अधिक सामाजिक स्वभाव के होते हैं, और इसी कारण वे अपने गुरुओं का उतना सम्मान नहीं करते जितना पश्चिमी लोग अपने धार्मिक गुरुओं का करते हैं। हालाँकि, ईश्वरीय विधान के सामान्य नियमों के कारण, पूर्वी धर्मों के अनुयायी पश्चिमी लोगों की तुलना में स्वर्ग में अधिक प्रवेश करेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि पूर्व में, धार्मिक उपदेशों का व्यावहारिक पालन पश्चिम की तुलना में अधिक प्रचलित है। पश्चिमी लोगों के लिए, धर्म मुख्यतः एक बौद्धिक विषय है, और इसलिए बहुत कम लोग मोक्ष प्राप्त करते हैं। पूर्वी लोगों का अपना स्वर्ग है, जहाँ ईश्वरीय सिद्धांत—जो स्वीडनबॉर्ग द्वारा आए ईश्वरीय सिद्धांत के अनुरूप है—उन्हें उनके लिए उपयुक्त एक विशेष रूप में सिखाया जाता है।

पश्चिमी लोगों की आवश्यकताओं के लिए पूर्वी धर्मों को लागू करना हानिकारक है, क्योंकि पश्चिमी लोग पूरी तरह से अलग आध्यात्मिक प्रकृति के होते हैं। पश्चिमी लोग व्यवस्थित चिंतन के आदी हैं, और इसलिए स्वीडनबॉर्ग द्वारा आया रहस्योद्घाटन, जो ईश्वरीय रहस्योद्घाटनों में सबसे तर्कसंगत और व्यवस्थित है, उनके लिए उपयुक्त है। दूसरी ओर, नए चर्च का स्वर्गीय सिद्धांत पूर्वी लोगों के लिए भी उपयुक्त है।

2. थियोसॉफी, मानवदर्शन और साइंटोलॉजी

मनुष्य अपनी बुद्धि से—अर्थात अपनी स्वार्थी और अविकसित बुद्धि से—आध्यात्मिक सत्यों की खोज नहीं कर सकता। जब लोग अपनी समझ से आध्यात्मिक जगत के नियमों को जानने का प्रयास करते हैं, तो वे हमेशा भटक जाते हैं। इसी प्रकार विभिन्न थियोसॉफी और मानवदर्शन शिक्षाएँ अस्तित्व में आई हैं। थियोसॉफी विभिन्न धर्मों और आध्यात्मिक शिक्षाओं का अध्ययन करती है और उनका उपयोग करके मानव बुद्धि को संतुष्ट करने वाली प्रणाली बनाने का प्रयास करती है। थियोसॉफी पूरी तरह से भ्रमित हो गई है, और इस दृष्टि से, यह आधुनिक युग के अन्य मिथ्या धर्मों से भिन्न नहीं है। स्वीडनबॉर्ग को अक्सर थियोसॉफीवादियों में गिना जाता है। हालाँकि, स्वीडनबॉर्ग का धर्मशास्त्र और थियोसॉफी पूरी तरह से अलग-अलग आधारों पर आधारित हैं। थियोसॉफी मानवीय समझ पर आधारित है, जबकि स्वीडनबॉर्ग का धर्मशास्त्र ईश्वर-प्रकाशित बुद्धि पर आधारित है।

कई प्रसिद्ध थियोसोफिस्टों को पूरी तरह से धोखेबाज़ साबित किया गया है। इसके बावजूद, थियोसोफी के अपने समर्थक हैं—ऐसे विश्वासी जो अंधविश्वास पर आधारित अन्य धर्मों के अनुयायियों से अलग नहीं हैं।

मानवशास्त्रीय आध्यात्मिक विज्ञान ने भी थियोसोफी जैसी ही गलती की है। यह भी ईश्वर की सहायता के बिना आध्यात्मिक जीवन के नियमों की खोज करने का प्रयास करता है। जीवन के लिए थियोसोफिकल और मानवशास्त्रीय दिशानिर्देश बेकार और अक्सर पूरी तरह से हानिकारक होते हैं। वे लोगों को ईश्वर की सहायता के बिना स्वयं को शुद्ध और विकसित करना सिखाते हैं। हालाँकि, केवल ईश्वर ही लोगों को नरक और पुनर्जन्म के आक्रमणों से बचा सकते हैं और उन्हें शुद्ध कर सकते हैं। व्यवहार में लागू होने पर, मानवशास्त्र और थियोसोफी केवल बाहरी व्यक्ति के विकास की ओर ले जाते हैं और आंतरिक व्यक्ति में विरासत में मिली बुराई को एक विनाशकारी जहर के रूप में छोड़ देते हैं। अपनी शारीरिक मृत्यु के बाद, जो लोग इन शिक्षाओं का पालन करते हैं, वे स्वयं को नरक में पाएंगे।

पूर्वी धर्मों में, थियोसोफी, मानवशास्त्र और कई अन्य समान धर्मों ने एक व्यापक भ्रांति विकसित की है, जिसे पुनर्जन्म या पुनर्जन्म का सिद्धांत कहा जाता है। जिसका आध्यात्मिक मन खुला है, वह तुरंत समझ जाता है कि व्यक्ति अपनी शारीरिक मृत्यु के बाद इस दुनिया में पुनर्जन्म नहीं ले सकता। पुनर्जन्म का सिद्धांत मूल रूप से पूर्वी साधकों के अनुभवों और इन अनुभवों से निकाले गए निष्कर्षों से उत्पन्न हुआ। इस सिद्धांत की उत्पत्ति का स्पष्टीकरण इस प्रकार है:

मानव प्राथमिकताओं से जुड़ी कम से कम चार आत्माएँ हैं, जो शारीरिक रूप से मृत हैं, लेकिन आत्माओं की दुनिया में जीवित हैं। इन आत्माओं की अपनी स्मृतियाँ भी होती हैं, जो आमतौर पर उस व्यक्ति की स्मृति से जुड़ी नहीं होतीं जिससे आत्मा जुड़ी होती है। हालाँकि, कभी-कभी आत्मा की स्मृति से जानकारी व्यक्ति की स्मृति में प्रवाहित होती है, जिससे व्यक्ति उन चीजों को महसूस और जान पाता है जो आत्मा ने दुनिया में रहते हुए अनुभव की थीं। कई पूर्वी गुरुओं को ऐसे अनुभव हुए हैं और उन्होंने इनसे यह निष्कर्ष निकाला है कि वे स्वयं पहले पृथ्वी पर रह चुके हैं। ये निष्कर्ष तब पूर्वी धर्मों को विरासत के रूप में दिए गए हैं।

बेशक, ऐसा पुनर्जन्म नहीं हो सकता, क्योंकि जिस प्रकार मानव भौतिक शरीर दो प्रजनन कोशिकाओं से एक बार निर्मित होता है, उसी प्रकार आध्यात्मिक शरीर भी आध्यात्मिक पदार्थ से बनी दो कोशिकाओं से एक ही समय में निर्मित होता है, क्योंकि आध्यात्मिक शरीर भौतिक शरीर से पूरी तरह मेल खाता है। मनुष्य दो वंशानुगत पदार्थों का योग है, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों रूप से, और इन वंशानुगत पदार्थों के मिलने से पहले उसका अस्तित्व नहीं हो सकता था।

पुनर्जन्म के सिद्धांत को बाद में विभिन्न थियोसोफिकल शिक्षाओं और परामनोविज्ञान में स्थानांतरित कर दिया गया, जिनके समर्थक इसे एक मूलभूत सत्य मानते हैं। इस पूरी तरह से गलत अवधारणा का आज व्यापक रूप से अनुसरण किया जा रहा है, इसका कारण यह है कि लोग सीधे ईश्वर की ओर, जो स्वयं सत्य है, मुड़ने के बजाय, गुरुओं और अन्य पाखंडियों, साथ ही घटिया साहित्य से सत्य की खोज करते हैं। पुनर्जन्म का सिद्धांत खतरनाक है क्योंकि यह लोगों को यह विश्वास दिलाता है कि उन्हें इस जीवन में पश्चाताप करने की आवश्यकता नहीं है या इस जीवन में उनके दुख उनके पिछले जन्मों के कर्मों का परिणाम हैं। जिन लोगों ने पुनर्जन्म के सिद्धांत को एक विश्वास के रूप में अपना लिया है, वे आध्यात्मिक रूप से पुनर्जन्म नहीं ले सकते।

साइंटोलॉजी ईश्वर-विरोधी धर्म का एक चरम उदाहरण है। इसका मानना है कि साइंटोलॉजी के शारीरिक व्यायामों का पालन करके लोग स्वयं आध्यात्मिक रूप से विकसित हो सकते हैं। साइंटोलॉजी को संक्षेप में धन कमाने पर आधारित एक धर्म के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो साधारण लोगों को "दैत्य" बनने की शिक्षा देकर उनके धन को ठगता है। थियोसॉफी, एंथ्रोसॉफी और साइंटोलॉजी जैसी दोषपूर्ण विश्वास प्रणालियाँ दर्शाती हैं कि यदि लोग केवल ईश्वर पर ही भरोसा नहीं करते हैं, तो वे कितनी आसानी से आध्यात्मिक विकास के मार्ग से भटक सकते हैं। लोग ईश्वर के वचन, अर्थात् बाइबल और स्वीडन-बोर्ग के ग्रंथों के माध्यम से सीधे ईश्वर से जुड़ सकते हैं।

3. परामनोविज्ञान

मानव चिंतन के सबसे मनोरंजक रूपों में से एक आध्यात्मिक जगत की घटनाओं को वैज्ञानिक विधियों का उपयोग करके सिद्ध करने का प्रयास है। इसे परामनोविज्ञान कहा जाता है, जिसे एक प्रायोगिक विज्ञान कहा जाता है। इसके समर्थकों के अनुसार, परामनोविज्ञान तथाकथित अलौकिक घटनाओं की जाँच-पड़ताल करता है। निःसंदेह, अलौकिक घटनाएँ अस्तित्व में नहीं हैं; आध्यात्मिक जगत के नियमों का केवल अज्ञान है। चूँकि आध्यात्मिक जगत की घटनाएँ प्राकृतिक जगत की घटनाओं से पृथक हैं, इसलिए उनका वैज्ञानिक विधियों का उपयोग करके अध्ययन नहीं किया जा सकता। आध्यात्मिक जगत की घटनाएँ प्राकृतिक जगत की घटनाओं से समानताओं के माध्यम से जुड़ी होती हैं, और वे हमेशा समान बाह्य परिस्थितियों में एक ही तरह से घटित नहीं होतीं; बल्कि, उनकी घटना आंतरिक कारकों पर निर्भर करती है जिन्हें इंद्रियों द्वारा नहीं पहचाना जा सकता। इसी कारण, कई परामनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला प्रयोग विफल हो जाते हैं।

मेरी राय में, परामनोविज्ञान एक पूरी तरह से निरर्थक विज्ञान है, और इसके द्वारा अध्ययन किए जाने वाले विषयों को मनोविज्ञान, आत्मा के विज्ञान, में स्वाभाविक रूप से समझा जा सकता है। जिस व्यक्ति का दिव्य मन खुल गया है, वह हर परामनोवैज्ञानिक घटना पर थोड़ा विचार करने के बाद उसका कारण समझ जाता है। मैं परामनोविज्ञान के प्रति उत्साही लोगों से आग्रह करता हूँ कि वे पहले अपने भीतर ईश्वर की खोज करें: एक बार जब वे उसे पा लेंगे, तो उन्हें अपने अन्य प्रश्नों के उत्तर भी मिल जाएँगे:

परन्तु पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो; तो ये सब वस्तुएँ तुम्हें मिल जाएँगी। (मत्ती 6:33)।

4. ईसाई धर्मशास्त्र

आज ईसाई धर्मशास्त्र ईश्वरीय नियमों का अध्ययन नहीं करता, बल्कि एक प्रकार का धार्मिक समाजशास्त्र है। यह एक भी धर्मशास्त्रीय सत्य नहीं जानता। यह मानवीय बुद्धि से प्राप्त तर्क पर आधारित है, न कि ईश्वर-प्रदत्त समझ पर, जैसा कि धर्मशास्त्र होना चाहिए। ईसाई धर्मशास्त्र ने सभी सत्यों को विकृत कर दिया है और ईश्वर के वचन को साधारण लेखन में बदल दिया है। प्रोटेस्टेंट चर्च आध्यात्मिक जगत में एक अजगर के रूप में प्रकट होते हैं। वे लोगों को ईश्वर को खोजने से रोककर बहुत नुकसान पहुँचाते हैं।

फ़िनलैंड में 1992 में प्रकाशित एक नए बाइबल अनुवाद से पता चलता है कि लूथरन धर्मशास्त्रियों ने ईश्वर से अपना अंतिम संबंध भी खो दिया है। स्वीडनबॉर्ग के कार्यों को अस्वीकार करना ईसाई कलीसियाओं की सबसे बड़ी भूल है। ईसाई कलीसियाओं ने उन्हें उसी तरह अस्वीकार कर दिया जैसे यहूदियों ने ईसा मसीह को अस्वीकार किया था। स्वीडनबॉर्ग के धर्मशास्त्रीय कार्य प्रभु का दूसरा आगमन (मत्ती 24:30) और "शाश्वत सुसमाचार" (प्रकाशितवाक्य 14:6) हैं।
आधुनिक ईसाइयों का त्रिएकत्व सिद्धांत झूठा है और ईश्वर और स्वर्ग के साथ एकता को रोकता है। त्रिएकत्व का झूठा सिद्धांत ईश्वर को तीन भागों में विभाजित करता है, जबकि मूल सत्य यह है कि ईश्वर एक है। इस एक ईश्वर की महिमा प्रभु ईश्वर ईसा मसीह के रूप में की जाती है, जिनमें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हैं, ठीक वैसे ही जैसे मनुष्य में आत्मा, शरीर और कर्म हैं। इसके अतिरिक्त, सुधारित कलीसियाओं का मानना है कि केवल विश्वास ही मोक्ष के लिए पर्याप्त है, अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम के कार्यों के बिना, जो एक ऐसा विश्वास है जो नरक की ओर ले जाता है। बाइबिल में कैथोलिक चर्च को "बेबीलोन" कहा गया है, जिसका अर्थ है एक ऐसा धर्म जो केवल लोगों को नियंत्रित करना चाहता है।

हमारे समय का विज्ञान

हमारे समय के विज्ञान ने विभिन्न क्षेत्रों में विस्तृत ज्ञान का विशाल भंडार एकत्रित किया है। इस ज्ञान का भौतिक स्तर पर भी अनुप्रयोग किया गया है, अर्थात् जटिल मशीनों और उपकरणों का निर्माण किया गया है। भौतिकी, रसायन विज्ञान और अन्य प्राकृतिक विज्ञान हमारे समय के वैज्ञानिक पदानुक्रम में सबसे ऊपर हैं। मानविकी उनके नीचे है, और धर्मशास्त्र सबसे नीचे है। पत्राचार विज्ञान के अनुसार, वैज्ञानिक पदानुक्रम इस प्रकार होगा: सबसे ऊपर पत्राचार विज्ञान पर आधारित धर्मशास्त्र होगा, जिसके सहायक विज्ञान दर्शन और मनोविज्ञान होंगे; इनके नीचे मानविकी और सामाजिक विज्ञान होंगे; इनके नीचे जैविक विज्ञान होंगे; और सबसे नीचे वे विज्ञान होंगे जो पदार्थ का अध्ययन और उपयोग करते हैं, जैसे कि भौतिकी, रसायन विज्ञान, इंजीनियरिंग, आदि। गणित और तर्क स्वर्ग से आने वाले एक सार्वभौमिक प्रवाह पर आधारित हैं, और वे सभी विज्ञानों के सहायक विज्ञान हैं।

इन सहायक विज्ञानों में कंप्यूटर का उपयोग भी शामिल होना चाहिए, क्योंकि कंप्यूटर केवल तार्किक प्रक्रियाओं का अनुप्रयोग हैं।
इसलिए आधुनिक वैज्ञानिक पदानुक्रम ईश्वरीय व्यवस्था के बिल्कुल विपरीत है, जिसका अर्थ है कि "जो कभी सबसे नीचे था, वह अब सबसे ऊपर है।" एक कामुक व्यक्ति हमारे समय के विज्ञानों में निहित स्पष्ट विसंगतियों को देखने में असमर्थ है; उसके लिए, विज्ञान एक बौद्धिक ईश्वर है। एक आध्यात्मिक व्यक्ति हमारे समय की कामुकता और नास्तिकता से भयभीत है, लेकिन वैज्ञानिक ज्ञान की नारकीय प्रकृति को स्पष्ट रूप से समझने में असमर्थ है। वैज्ञानिक ज्ञान नारकीय नहीं है, लेकिन इसका दार्शनिक उपयोग इसे नारकीय बना देता है। सच्चा विज्ञान वास्तव में स्वर्गीय है, जो मनुष्य को विज्ञान में भी अपने रचयिता की महानता को देखने के लिए प्रेरित करता है। एक स्वर्गीय, या दिव्य, व्यक्ति के दृष्टिकोण से, हमारे समय के सभी विज्ञान "जो पहले धरातल पर था, अब शिखर है" हैं: सभी वैज्ञानिक तथ्य प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से नास्तिकता और भौतिकवाद की सेवा के लिए निर्धारित हैं। इस संदर्भ में, मैं ऑगस्ट स्ट्रिंडबर्ग की कृति "एन ब्ला बोक" (द ब्लू बुक) की अनुशंसा करता हूँ, जो इस मायने में अद्वितीय है कि इसमें स्वीडनबॉर्ग की पद्धति का उपयोग करके अपने समय के विज्ञानों का विश्लेषण किया गया है।

नीचे, मैं तुलनात्मक विज्ञान पर आधारित समकालीन विज्ञान पर कुछ अवलोकन प्रस्तुत करता हूँ। इस पुस्तक के दायरे में, मैं इस विषय पर अधिक गहराई से चर्चा नहीं कर सकता। स्वीडनबॉर्ग ने स्वयं अपनी रचनाओं में अपने समय के विज्ञानों की नारकीय प्रकृति की ओर संकेत किया था, और वे निश्चित रूप से मेरे द्वारा नीचे प्रस्तुत की गई बातों से सहमत होंगे।

मनोविज्ञान और मनोरोग विज्ञान

आधुनिक मनोविज्ञान और मनोरोग विज्ञान मानव इतिहास में अज्ञानता का एक शर्मनाक कलंक हैं। वे मानव आत्मा या उसके नियमों को नहीं पहचानते, बल्कि मनुष्यों को पशु और मशीन बना देते हैं। वे लोगों को आध्यात्मिक और दिव्य पुनर्जन्म प्राप्त करने से रोककर भारी क्षति पहुँचाते हैं।

मनोविज्ञान और मनोरोग विज्ञान की विसंगतियाँ इतनी स्पष्ट हैं कि कई ऐसे लोग भी, जिनका पुनर्जन्म नहीं हुआ है, उन्हें समझ गए हैं। उदाहरण के लिए, ब्रिटिश मनोवैज्ञानिक निक हीथर ने मनोविज्ञान की सटीक परिभाषा इस प्रकार दी है: "मनोविज्ञान में विज्ञान का बाहरी आवरण, विज्ञान के बाह्य लक्षण और अपनी वैज्ञानिक शब्दावली है, लेकिन यह विज्ञान नहीं है। यह एक प्रकार का गहन आत्म-प्रवंचना है।" यही मनोवैज्ञानिक आधुनिक मनोरोग विज्ञान को भी इस प्रकार परिभाषित करते हैं: "मनोचिकित्सा चिकित्सा की कोई शाखा नहीं, बल्कि एक छद्म-चिकित्सीय भ्रम है।" दोनों उद्धरण निक हीथर की पुस्तक "रेडिकल पर्सपेक्टिव्स इन साइकोलॉजी" से लिए गए हैं। आधुनिक मनोरोग विज्ञान के संदर्भ में, स्वेडेनबर्ग को मानसिक रूप से बीमार माना जाएगा, क्योंकि मनोरोग विज्ञान आध्यात्मिक दुनिया को मान्यता नहीं देता। दूसरी ओर, स्वेडेनबर्ग के कार्यों के संदर्भ में, आधुनिक मनोरोग विज्ञान गंभीर मानसिक बीमारी का एक लक्षण है।
मनोरोग उपचार लाखों लोगों को भयानक पीड़ा पहुँचाते हैं। ये लोगों को पुनर्जन्म लेने से भी रोकते हैं। मनोरोग चिकित्सा अपने औषध उपचारों से हर साल लाखों लोगों की आध्यात्मिक हत्या करती है। मनोरोग चिकित्सा से केवल दवा कंपनियों के शेयरधारकों की वित्तीय स्थिति को ही लाभ होता है। स्वीडनबॉर्ग द्वारा प्रस्तुत पुनर्जन्म की प्रक्रिया अधिकांश मानसिक रोगों का इलाज भी है। नए चर्च को वर्तमान मनोरोग चिकित्सा की आवश्यकता नहीं है।
स्वीडनबॉर्ग की कृति "तर्कसंगत मनोविज्ञान" मनोविज्ञान पर एक अद्वितीय पाठ्यपुस्तक बनी हुई है जिसे उच्च शिक्षा में बुनियादी मनोविज्ञान पाठ्यक्रमों का हिस्सा होना चाहिए। इसमें, स्वीडनबॉर्ग मानव मन की क्रियाविधि और आत्मा व शरीर के बीच परस्पर क्रिया का विज्ञान के इतिहास में किसी और से बेहतर विश्लेषण करते हैं। चूँकि स्वीडनबॉर्ग को पूरी तरह से नई वैज्ञानिक अवधारणाएँ गढ़नी पड़ीं, इसलिए यह पुस्तक आधुनिक पाठकों के लिए समझना काफी कठिन है, लेकिन इसका अध्ययन करने का प्रयास सार्थक है।

चिकित्सा

चिकित्सा विज्ञान ने शरीर रचना विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान और शारीरिक रोगों पर प्रचुर मात्रा में प्रयोगात्मक और अवलोकन संबंधी आँकड़े एकत्र किए हैं। हालाँकि, यह मानव शरीर के पृथक नियमों या रोगों की उत्पत्ति में आध्यात्मिक दुनिया की भूमिका को नहीं जानता है।

इस प्रकार, यह अभी तक, उदाहरण के लिए, रोग उत्पन्न करने वाले सूक्ष्मजीवों (जीवाणु और विषाणु) की उत्पत्ति के वास्तविक तंत्र का पता नहीं लगा पाया है। हालाँकि आधुनिक चिकित्सा कई रोगों का प्रभावी ढंग से इलाज करने में सक्षम है, लेकिन इसके उपचार कुल मिलाकर लाभ की बजाय हानि पहुँचाते हैं। वर्तमान में चिकित्सा पर बड़े दवा-औषधि एकाधिकारियों का नियंत्रण है, जिनका मुख्य लक्ष्य अधिकतम वित्तीय लाभ कमाना है। चिकित्सा केवल रोगों के लक्षणों के उपचार पर केंद्रित है, न कि उन्हें रोकने पर, जैसा कि उसे होना चाहिए। नशीले पदार्थ हमारे समय की सबसे बड़ी स्वास्थ्य समस्याओं में से एक हैं। अंतर्राष्ट्रीय मादक द्रव्य व्यापार का नेतृत्व यहूदी मेसोनिक संगठन B'nai B'rith और उसकी उग्रवादी शाखा, ADL (डोप, इंक. द बुक दैट ड्रोव हेनरी किसिंजर एंड द एंटी-डिफेमेशन लीग क्रेजी, यूएसए 1992) द्वारा किया जाता है। मादक द्रव्य व्यापार एक भयानक, नारकीय विनाश है। यहूदी मादक द्रव्य व्यापार के माध्यम से अन्य राष्ट्रों को कमजोर करना चाहते हैं। लोग मादक द्रव्यों के माध्यम से अपने जीवन में अर्थ खोजते हैं क्योंकि कोई वास्तविक धर्म नहीं है।

जैविक विज्ञान

जैविक विज्ञान कई प्रकार के भौतिक लाभ प्रदान करते हैं। वे सिद्धांत निर्माण के स्तर पर नास्तिक दर्शन के समर्थन के रूप में कार्य करते हैं और इस प्रकार दार्शनिक क्षति पहुँचाते हैं। वे मनुष्यों को केवल उन्नत प्राणी मानते हैं और जीवन के पृथक नियमों से अनभिज्ञ हैं। इसलिए, प्रकृति के कई रहस्य उनके लिए अज्ञात ही रहते हैं। आनुवंशिक अभियांत्रिकी मानवता और हमारे ग्रह के जीवमंडल के अस्तित्व के साथ एक खतरनाक खेल है।

सामाजिक विज्ञान

सामाजिक विज्ञान मनुष्यों को झुंड के जानवर मानते हैं। वे मानव समुदायों का परीक्षण केवल सांसारिक दृष्टिकोण से करते हैं, आध्यात्मिक जगत और ईश्वर के अस्तित्व की पूरी तरह उपेक्षा करते हैं। यद्यपि वे सांख्यिकीय रूप से मूल्यवान जानकारी एकत्र करते हैं, फिर भी वे उसका विवेकपूर्ण विश्लेषण करने में असमर्थ हैं।
आर्थिक विज्ञान स्वयं आर्थिक तंत्र की नींव की जाँच करने का साहस नहीं करते।

अगर वे ऐसा करते, तो उन्हें यहूदी अंतरराष्ट्रीय बैंकों और निवेश कंपनियों की भयानक आर्थिक शक्ति का सामना करना पड़ता। यहूदी बैंकों की गतिविधियों का उद्देश्य सूदखोरी और कर्ज के ज़रिए सभी देशों को दरिद्र बनाना है।
सामान्यतः, पुनर्जन्म लेने वालों को सभी विज्ञानों के प्रति सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि जैसे-जैसे वे अपने पुनर्जन्म में आगे बढ़ते हैं, उन्हें ऐसी घटनाओं का सामना करना पड़ेगा जिन्हें आधुनिक विज्ञान मान्यता नहीं देता (जैसे, प्रलोभन और किण्वन)। सभी आधुनिक विज्ञान लोगों को ईश्वर और स्वर्ग से दूर नास्तिकता और भौतिकवाद की ओर ले जाते हैं।

भौतिकी

भौतिकी ने बड़ी मात्रा में प्रायोगिक और प्रेक्षित आँकड़े एकत्र किए हैं, जिनका उपयोग अनगिनत तकनीकी अनुप्रयोगों के आधार के रूप में किया गया है। आधुनिक भौतिकी असतत अंशों को मान्यता नहीं देती और इसलिए यह एक वर्णनात्मक विज्ञान बना हुआ है। भौतिकी के कई सिद्धांत गलत हैं। चूँकि आधुनिक भौतिकी के दो सिद्धांतों - सापेक्षता का सिद्धांत और क्वांटम भौतिकी - के भी दार्शनिक निहितार्थ रहे हैं, इसलिए मैं उन पर अधिक विस्तार से चर्चा करूँगा। ये दोनों सिद्धांत आज के भौतिकविदों के दार्शनिक अंधत्व को उजागर करते हैं।
आधुनिक भौतिकी असतत अंशों के ज्ञान के बिना भी काफी आगे तक विकसित हो सकी। अवकल कलन ने भौतिकी की अधिकांश गणितीय समस्याओं को हल करना संभव बना दिया। हालाँकि, विद्युत चुम्बकीय तरंग गति की व्याख्या करने की बात आने पर सैद्धांतिक भौतिकी का विकास और अधिक कठिन हो गया। जेम्स मैक्सवेल, जिन्होंने विद्युत चुम्बकीय क्षेत्रों के समीकरण तैयार किए थे, के लिए अवकल और आंशिक अवकल समीकरण अभी भी पर्याप्त थे। लेकिन जब इन विद्युत चुम्बकीय क्षेत्रों के अंतर्निहित पदार्थ—ईथर—पर प्रश्नचिह्न लगा, तो सैद्धांतिक भौतिकी के विकास ने एक गलत मोड़ ले लिया।
17वीं शताब्दी में किसी समय यह विचार उत्पन्न हुआ कि संपूर्ण ब्रह्मांड घर्षणहीन ईथर से भरा हुआ है। यह ईथर प्रकाश द्वारा प्रयुक्त माध्यम था, जो एक सीधी निर्देशांक प्रणाली की तरह पूरे ब्रह्मांड में फैल गया था।

यह ईथर पूर्ण विराम की अवस्था में माना जाता था, और आकाशीय पिंड इसके सापेक्ष एक निश्चित गति से गति करते थे। इस ईथर में कुछ असामान्य गुण थे। ऐसा माना जाता था कि यह सभी पदार्थों से बिना घर्षण के गुजर सकता है और अत्यधिक प्रत्यास्थ है। कोई भी प्रयोग इस ईथर के अस्तित्व को सिद्ध नहीं कर सका। 19वीं शताब्दी के अंत में, यह प्रश्न उठा कि इस ईथर, जिसे बाद में विश्व ईथर भी कहा गया, के संबंध में पृथ्वी की गति क्या है। यह माना जाता था कि यदि कोई गतिहीन विश्व ईथर है, तो पृथ्वी उसे अपने साथ नहीं ले जा सकती, बल्कि पृथ्वी उसके सापेक्ष एक निश्चित गति से गति करती है।
हालाँकि, यह पूरा प्रश्न ही गलत था। ऐसे स्थिर ईथर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए कोई प्रमाण नहीं था। विद्युत-चुंबकीय तरंगों में स्पष्ट रूप से कोई पदार्थ अवश्य होना चाहिए जिसमें तरंग गति प्रसारित होती हो, लेकिन ऐसे पदार्थ का पूरे अंतरिक्ष में समान रूप से वितरित और पूर्ण विराम की अवस्था में अस्तित्व होना आवश्यक था! यदि 19वीं सदी के उत्तरार्ध के भौतिकविदों के पास इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग के प्रिंसिपिया तक पहुंच होती, तो वे समझ सकते थे कि इस तरह का काल्पनिक ईथर केवल कुछ भौतिकविदों के दिमाग में ही मौजूद हो सकता है। कुछ प्रयोगों से यह भी पता चला कि ईथर और पदार्थ के बीच एक निश्चित अंतःक्रिया होती है, जिससे पता चलता है कि पृथ्वी अपने साथ ईथर को ले जाती है, कम से कम आंशिक रूप से। इस प्रश्न को हल करने के लिए, कुछ वैज्ञानिकों ने एक उपकरण तैयार किया जो पृथ्वी की सतह पर प्रकाश की गति को बहुत सटीकता से माप सकता था। परीक्षण के परिणामों से पता चला कि प्रकाश पृथ्वी पर सभी दिशाओं में समान गति से यात्रा करता है।
माइकलसन-मोर्ले प्रयोग के रूप में जाना जाने वाला यह प्रयोग क्या साबित करता है? कि ईथर जैसी कोई चीज नहीं है? बिल्कुल नहीं। बेशक, इस प्रयोग ने इस विचार का समर्थन किया कि ऊपर वर्णित अचल जगत ईथर का अस्तित्व नहीं है, लेकिन इसने इस दावे का समर्थन नहीं किया कि विद्युत चुम्बकीय तरंगों, यानी ईथर, का कोई पदार्थ नहीं है। इसके बजाय, इस परीक्षण के परिणाम ने वास्तव में इस दावे का समर्थन किया कि पृथ्वी अपने साथ विद्युत चुम्बकीय तरंग पदार्थ लेकर चलती है, कम से कम परीक्षण स्थल की ऊँचाई पर तो।

हालाँकि, इसके बाद, एक यहूदी वैज्ञानिक ने इस प्रयोग से ऐसे निष्कर्ष निकाले जिनसे एक ऐसे सिद्धांत का जन्म हुआ जिसने दशकों तक सैद्धांतिक भौतिकी के विकास को धीमा कर दिया - सापेक्षता का विशिष्ट सिद्धांत।
चूँकि ईथर की क्रियाविधि को हल करना वास्तव में दार्शनिक महत्व रखता है, इसलिए मैं सबसे पहले हमारे ग्रह पर सत्य और असत्य के उद्भव पर संगति विज्ञान के दृष्टिकोण से चर्चा करूँगा, क्योंकि इस जानकारी के बिना, इस त्रुटिपूर्ण सिद्धांत के व्यापक समर्थन को समझा नहीं जा सकता।
ऊपर कहा गया है कि आत्माओं की दुनिया में अच्छाई और बुराई, सत्य और असत्य के बीच संतुलन होता है। आत्माओं की दुनिया को स्वर्ग और नर्क दोनों से समान प्रवाह प्राप्त होता है। इस प्रकार, पृथ्वी पर रहने वाले लोग इच्छा की स्वतंत्रता का अनुभव करते हैं, जो आध्यात्मिक दुनिया में स्वर्ग और नर्क के बीच इसी संतुलन से उत्पन्न होती है। जब पृथ्वी पर कोई प्रभावशाली सिद्धांत या सिद्धांत उभरता है, तो स्वर्ग और नर्क दोनों उस पर अपना प्रभाव डालते हैं। नर्क इस सिद्धांत का उपयोग मानवता को नीचे गिराने के लिए करता है, जबकि स्वर्ग इसके विपरीत करने का प्रयास करता है। हालाँकि, चूँकि नरक इस मामले में ज़्यादातर ज़्यादा सफल रहा है, इसलिए मानव विकास के महत्वपूर्ण मोड़ों पर, नरक से उत्पन्न सिद्धांत लगभग हमेशा उभरते हुए स्वर्गीय सिद्धांत को दबाने में कामयाब रहा है। अक्सर—लेकिन हमेशा नहीं—इन नारकीय सिद्धांतों की उत्पत्ति कुछ यहूदी नरकों में, और इस प्रकार यहूदी मूल के वैज्ञानिकों की उपलब्धियों में हुई है। यहूदियों द्वारा कई हानिकारक सिद्धांतों के पीछे होने का कारण यह है कि यहूदियों की विरासत में मिली बुराई अन्य लोगों की विरासत में मिली बुराई से भिन्न है और सभी सत्यों को विकृत करने और स्वर्ग और नरक को जोड़ने की इच्छा से जुड़ी है, जो ईश्वरीय व्यवस्था के बिल्कुल विपरीत है। इसीलिए यीशु ने यहूदियों को व्यभिचारियों की पीढ़ी कहा (मत्ती 12:39)। स्वीडनबॉर्ग के अनुसार, यहूदी सभी लोगों में सबसे बुरे हैं, और उन्हें स्वयं सत्य में नहीं, बल्कि केवल अपने स्वार्थ और आर्थिक लाभ में रुचि है। यह आज के यहूदियों में निश्चित रूप से देखा जा सकता है। यीशु की हत्या करके, यहूदियों को सभी सत्यों की हत्या करने की लालसा विरासत में मिली।

यही कारण है कि आधुनिक वैज्ञानिकों में इतने सारे यहूदी हैं, क्योंकि आज कई वैज्ञानिक सत्य के पूर्णकालिक हत्यारे हैं।
उपरोक्त के आधार पर, कुछ लोग स्वीडनबॉर्ग या इस पुस्तक के लेखक को यहूदी-विरोधी मान सकते हैं। हालाँकि, मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूँ कि न तो स्वीडनबॉर्ग और न ही इस पुस्तक के लेखक यहूदी-विरोधी हैं; बल्कि, हम सभी लोगों के उद्धार की आशा करते हैं, चाहे उनकी जाति या धर्म कुछ भी हो। बुराई का पर्दाफ़ाश करना घृणा नहीं, बल्कि अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम है। स्वीडनबॉर्ग यहूदियों के बारे में कई अप्रिय बातें उजागर करते हैं, लेकिन वे ऐसा केवल सत्य को प्रकाश में लाने के लिए करते हैं। स्वीडनबॉर्ग अन्य लोगों के बारे में भी अप्रिय बातें उजागर करते हैं। हालाँकि, धार्मिक सत्य यह है कि यहूदियों के नरक अन्य लोगों के नरकों से कहीं अधिक गहरे हैं, और यही कारण है कि यीशु एक यहूदी के रूप में पैदा हुए थे। उदाहरण के लिए, यदि चीनियों के नरक सबसे गहरे होते, तो यीशु चीनी के रूप में पैदा होते।
लेकिन आइए सापेक्षता के सिद्धांत पर लौटते हैं। माइकलसन-मोर्ले प्रयोग के लिए कई अलग-अलग व्याख्याएँ प्रस्तावित की गईं, जिनमें से यहूदी ए. आइंस्टीन की व्याख्या ने बाद में सबसे अधिक लोकप्रियता हासिल की, और आइंस्टीन को सदी के सबसे महान वैज्ञानिक प्रतिभा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। कुछ भौतिक विज्ञानी जो आइंस्टीन से अधिक ईमानदार और बुद्धिमान थे, उन्होंने सापेक्षता के विशेष सिद्धांत को हाथ की सफाई के रूप में देखा, लेकिन औसत दर्जे के विश्वासियों की संख्यात्मक रूप से श्रेष्ठ भीड़ ने सिद्धांत को अंतिम सत्य घोषित कर दिया। आज भी, ऐसे भौतिक विज्ञानी हैं जो इस सिद्धांत को झूठा समझते हैं, लेकिन अपनी स्थिति खोने के डर से बोलते नहीं हैं। आज, पश्चिमी विज्ञान में यहूदियों की अंतर्राष्ट्रीय मीडिया शक्ति इतनी महान है कि बहुत कम लोग इस सिद्धांत के बारे में सच बताने का साहस करते हैं।
आइंस्टीन ने अपने सिद्धांत की रचना प्रायोगिक शोध परिणामों या अवलोकनों के आधार पर नहीं, बल्कि अपने विचारों के आधार पर की थी। उन्होंने यह सिद्धांत बनाया कि निर्वात में विद्युत चुम्बकीय संकेत की गति प्रत्येक समान रूप से गतिशील निर्देशांक प्रणाली के लिए समान होती है, चाहे निर्देशांक प्रणाली की गति कुछ भी हो, तथा यह गति प्रकाश की गति c होती है, जो कि अधिकतम संभव संकेत गति भी है।

आइंस्टीन ने इस सिद्धांत को विद्युत चुम्बकीय तरंगों के अलावा अन्य परिघटनाओं पर भी लागू करने के लिए विस्तारित किया, और यहाँ भी उन्होंने एक गलती की। विद्युत चुम्बकीय तरंगों के अपने नियम तो होते ही हैं, लेकिन इन नियमों को ठोस पिंडों की यांत्रिकी तक विस्तारित नहीं किया जा सकता। ईथर पदार्थ जगत के संबंध में असतत है, और इसके नियमों को यांत्रिक दृष्टिकोण से भी नहीं समझा जा सकता।

यद्यपि सापेक्षता के विशेष सिद्धांत को तथाकथित घड़ी विरोधाभास का उपयोग करके कई बार गलत साबित किया जा चुका है, फिर भी यह अपने वफादार समर्थकों की बदौलत कायम है। कई भौतिकी की पाठ्यपुस्तकों में, इस सिद्धांत को कई प्रयोगात्मक परिणामों द्वारा सिद्ध के रूप में प्रस्तुत किया गया है। हालाँकि, इस सिद्धांत के पक्ष में यह प्रमाण उपर्युक्त सिद्धांत को सही साबित नहीं करता, बल्कि इस तथ्य से उपजा है कि विद्युत चुम्बकीय संकेतों का उपयोग प्राथमिक कण अनुसंधान में किया जाता है - ऐसी स्थिति में, कणों की उच्च गति के कारण, एक विलंब होता है, जिसे समय विस्तारण कहा जाता है - या यह प्रमाण सिद्धांत में प्रस्तुत यांत्रिकी से संबंधित नहीं है, बल्कि गतिकी से संबंधित है।

दार्शनिक दृष्टि से, सापेक्षता के विशेष सिद्धांत में जो आवश्यक है वह यह है कि समय और स्थान की अवधारणाएँ मापन उपकरणों से प्राप्त प्रेक्षणों से जुड़ी हैं। यह प्रत्यक्षवाद का चरम है, जो संगति विज्ञान के दृष्टिकोण से, आत्मा, बुद्धि और तर्क के अस्तित्व को नकारने के अलावा और कुछ नहीं है: मनुष्यों और जानवरों के बीच का अंतर ठीक इसी तथ्य पर आधारित है कि मनुष्य अपनी बुद्धि का उपयोग उन चीज़ों का विश्लेषण करने में सक्षम हैं जिन्हें वे देखते हैं। तर्क केवल प्रकाश की गति को अधिकतम संकेत गति के रूप में उपयोग करने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि परिमित परिघटनाओं का अध्ययन करते समय अनंत राशियों के साथ कार्य करने में भी सक्षम है। इसका एक उदाहरण अवकल कलन है। सापेक्षता के विशेष सिद्धांत ने कई ऐसे परिणाम दिए जो तर्क का खंडन करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी वस्तु की लंबाई उसकी गति की अवस्था पर निर्भर करती है: प्रकाश की गति के करीब की गति पर, वस्तु की लंबाई लगभग शून्य हो जाती है। विद्युत चुम्बकीय तरंगों, अर्थात् प्रकाश पर आधारित प्रेक्षणों के अनुसार यही होता है। लेकिन सापेक्षता के विशेष सिद्धांत का दावा है कि वास्तविकता में भी ऐसा ही होता है।

हालांकि, सरल तर्क का उपयोग करके, कोई भी समझ सकता है कि ऐसा अवलोकन केवल प्रकाश की गति के कारण है - या यूँ कहें कि प्रकाश की धीमी गति के कारण - और वास्तव में, गति बढ़ने पर कोई वस्तु छोटी नहीं होती।
हालाँकि, सापेक्षता के सिद्धांत के तर्क के विपरीत होने के तथ्य ने तार्किक सोच से अनभिज्ञ लोगों के बीच इसकी लोकप्रियता को और बढ़ा दिया: इस सिद्धांत को लगभग रहस्यमय श्रद्धा के साथ देखा जाने लगा। कई प्रख्यात भौतिकविदों ने इस सिद्धांत को एक धोखा समझा, और निस्संदेह यह इतिहास में एक दार्शनिक जिज्ञासा बनी रहती अगर इसे एक राजनीतिक लड़ाई में न बुना गया होता। इस संघर्ष में, दो प्रणालियाँ (राष्ट्रीय समाजवादी और ज़ायोनी यहूदी) आपस में भिड़ गईं। सिद्धांत के विरोधी यहूदी आधिपत्य को समाप्त करना चाहते थे। दूसरी ओर, सिद्धांत के समर्थकों ने सदियों से विकसित की गई अपनी गुप्त शक्ति मशीनरी (मेसोनिक संगठनों सहित) को गति प्रदान की। और जैसा कि इस दुष्ट संसार में अक्सर होता है, गुप्त शक्ति ने खुली शक्ति को परास्त कर दिया, और इस प्रकार सिद्धांत के समर्थक जीत गए, और यह पूरी तरह से मिथ्या सिद्धांत जीवित रहा। बेशक, बाद में इस सिद्धांत पर उचित रूप से हमला किया गया, लेकिन राजनीतिक साधनों से प्राप्त इसकी स्थिति को तोड़ने में कोई भी सफल नहीं हुआ। चूँकि आज अधिकांश लोग कठिन प्रश्नों के लिए समझ के बजाय अधिकार पर भरोसा करना पसंद करते हैं, इसने भी इस सिद्धांत को जीवित रहने में मदद की है। सापेक्षता के विशेष सिद्धांत के बाद, ए. आइंस्टीन ने तथाकथित सामान्य सापेक्षता सिद्धांत की रचना की, जो अनिवार्य रूप से निरर्थक वैज्ञानिक परिकल्पनाओं की श्रेणी में आता है।
सापेक्षता के सिद्धांतों में, संवेदी वैज्ञानिक भौतिकी के सभी नियमों को इंद्रियों द्वारा ग्रहण की गई जानकारी की सीमा तक सीमित करने का प्रयास करता है। विज्ञान के इतिहास में इससे बड़ा बौद्धिक अंधापन हमें आसानी से नहीं मिलेगा। इंद्रियों और उपकरणों के माध्यम से प्राप्त जानकारी सत्य का निम्नतम स्तर है, और स्वयं को त्रुटियों से मुक्त करने के लिए, मनुष्यों को सृष्टिकर्ता द्वारा प्रदत्त क्षमताओं—समझ और तर्क—का उपयोग करना चाहिए। सापेक्षता के सिद्धांतों ने ए. आइंस्टीन को इतना प्रसिद्ध बना दिया कि इज़राइल राज्य ने उन्हें राष्ट्रपति पद की पेशकश की।

हालाँकि, आइंस्टीन ने मना कर दिया। यह दुर्भाग्यपूर्ण था, क्योंकि आइंस्टीन, जिन्होंने अपनी पुस्तक "आउट ऑफ़ माई लेटर इयर्स" में खुद को ज़ायोनीवादी बताया था, इस पद के लिए बिल्कुल उपयुक्त होते: इज़राइल राज्य हमारे ग्रह पर सबसे बुरे झूठ, धोखे और शैतानी योजनाओं का केंद्र है।

सापेक्षता के अजीबोगरीब सिद्धांत ने कण भौतिकी के विकास में भी बाधा डाली है। कण भौतिकी को विद्युत चुम्बकीय तरंगों के माध्यम - ईथर - की समस्या का भी सामना करना पड़ता है। आज भी, क्वांटम सिद्धांत को तार्किक रूप से विरोधाभासी तरंग-कण द्वैत से ही संतुष्ट होना पड़ता है: प्रकाश, या अधिक सामान्यतः विद्युत चुम्बकीय संकेत, एक द्वैतवादी प्रकृति के होते हैं, जिसका अर्थ है कि उनमें तरंग और कण दोनों गुण होते हैं। यदि उस समय ईथर की समस्या का उचित समाधान कर दिया गया होता, तो ऐसी बेतुकी स्थिति उत्पन्न नहीं होती।

ईथर की समस्या का समाधान पहले ही हो चुका है, लेकिन यह व्यापक रूप से ज्ञात नहीं है। यह समाधान इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग की कृति "ओपेरा फिलोसोफिका एट मिनरलिया, प्रिंसिपिया" के पहले भाग में निहित है। इस कृति में, स्वीडनबॉर्ग ईथर की असतत यांत्रिकी को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करते हैं। यह कृति बौद्धिक रूप से कठिन है क्योंकि स्वीडनबॉर्ग को इसके लिए एक बिल्कुल नई शब्दावली गढ़नी पड़ी। इस कृति को समझने के लिए, उदाहरण के लिए, मेन्सा बुद्धि परीक्षण पास करने से बेहतर तार्किक तर्क कौशल की आवश्यकता होती है।

यद्यपि आधुनिक भौतिकी की उसकी जटिल तकनीकी रचनाओं के लिए प्रशंसा की जा सकती है, भौतिक विज्ञानी निश्चित रूप से दार्शनिक नहीं हैं। एक जिज्ञासा के रूप में, मैं भौतिकी के एक प्रसिद्ध फ़िनिश प्रोफेसर का उल्लेख करना चाहूँगा, जिन्होंने अपने जीवन के अंतिम समय में, क्वांटम यांत्रिकी के हथियारों से अपने लूथरन विश्वास की रक्षा शुरू कर दी है। क्वांटम यांत्रिकी की संभाव्यता व्याख्या से वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि भौतिकी के मूलभूत नियम कारणात्मक नहीं, बल्कि सांख्यिकीय हैं। इन सांख्यिकीय नियमों में, वे ईश्वर के अस्तित्व की संभावना भी देखते हैं। वे लिखते हैं: "वर्तमान परमाणुवाद के आलोक में, जीवन की घटनाओं पर किसी अलौकिक कारक के प्रभाव को एक असंभव विचार नहीं माना जाना चाहिए।" शायद लूथरन ईश्वर ने इन संभाव्यता फलनों में अपना अंतिम आश्रय पाया है। जो व्यक्ति ईश्वर से सच्चा प्रेम करता है, वह उसे प्रकृति के नियमों और विज्ञान के सत्यों में ऐसे देखता है जैसे दर्पण में देखता हो, लेकिन इस तरह कि दर्पण में कुछ भी ईश्वरीय नहीं होता। वही भौतिक विज्ञानी सापेक्षता के विशेष सिद्धांत का भी उत्साही समर्थक है।

हालाँकि, उनकी पुस्तक "एटोमिस्टिकन आटेमाईल्मा" (परमाणु विज्ञान का आदर्श विश्व), जिससे उपरोक्त उद्धरण लिया गया है, बुद्धिमान पाठक में मुख्यतः दया जगाती है: यहाँ तक कि उच्चतम शैक्षणिक उपाधि भी अंधों की आँखें खोलने में असमर्थ प्रतीत होती है। इंजीनियरिंग की सर्वोत्तम रचनाएँ विशाल कण त्वरक हैं। माना जाता है कि मूल कण अनुसंधान प्रकृति के गहनतम रहस्यों की कुंजी रखता है। अंतरिक्ष अनुसंधान के साथ-साथ, मूल कण अनुसंधान को मानव विज्ञान की सबसे बुद्धिमान उपलब्धि माना जाता है। पत्राचार के विज्ञान से परिचित लोग स्तब्ध हैं: जो लोग अपनी विशाल मशीनों से कण किरणों को नियंत्रित करते हैं, वे अपने मस्तिष्क की कार्यप्रणाली को भी नहीं समझते, भौतिक विज्ञान के नियमों से परे आध्यात्मिक और खगोलीय नियमों की तो बात ही छोड़ दें। एक व्यक्ति जो अप्रासंगिक चीजों के बारे में बहुत कुछ जानता है लेकिन आवश्यक चीजों को नहीं जानता, वह आध्यात्मिक रूप से उस व्यक्ति से कम विकसित है जो आवश्यक चीजों के बारे में थोड़ा-बहुत जानता है लेकिन अप्रासंगिक चीजों को बिल्कुल नहीं जानता। इस दृष्टि से, आधुनिक लोग सचमुच "जो पहले ज़मीन था, अब शिखर है" हैं: वे उन चीज़ों के बारे में अपार जानकारी इकट्ठा करते हैं जो मनुष्यों के लिए कम महत्वपूर्ण हैं, लेकिन वे उन चीज़ों से पूरी तरह अनभिज्ञ हैं जो मनुष्यों के लिए आवश्यक हैं, जैसे मृत्यु के बाद का जीवन।

तर्क और गणित

स्वर्ग के सामान्य प्रवाह के कारण, अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के लोगों में तार्किक रूप से सोचने की क्षमता होती है। तर्क और गणित—गणित वास्तव में तर्क की ही एक शाखा है—इस दृष्टि से तटस्थ हैं और इनका उपयोग अच्छाई और बुराई दोनों के लिए किया जा सकता है। जब 1757 में, जो पृथ्वी पर वर्ष के अनुरूप है, आत्माओं की दुनिया में अंतिम निर्णय हुआ, तो लोगों की अपनी रुचियों को निर्देशित करने की स्वतंत्रता बढ़ गई। हालाँकि, लोगों ने इस बढ़ी हुई स्वतंत्रता का उपयोग धार्मिक और दार्शनिक सत्यों का अध्ययन करने के लिए नहीं किया है, बल्कि अपनी बुद्धि को मानवता के लिए कम महत्व वाले विषयों, जैसे प्राकृतिक विज्ञान और इंजीनियरिंग, की ओर निर्देशित किया है।

इनके अतिरिक्त, गणित और तर्कशास्त्र की कुछ अन्य शाखाएँ भी संवेदनशील लोगों के लिए रुचिकर विषय रही हैं। गणित और तर्कशास्त्र का विकास तो हुआ है, लेकिन केवल सतत अंशों के रूप में। तर्कशास्त्र के उपयोग का सबसे प्रभावशाली प्रमाण कंप्यूटरों का विकास है।
हालाँकि, असतत अंशों के ज्ञान के बिना गणित और तर्कशास्त्र अपने विकास में गुणात्मक छलांग नहीं लगा सकते। गणित में सतत और असतत अंशों के बीच संबंध का एक अच्छा उदाहरण फ़र्मेट के अंतिम प्रमेय का प्रमाण है। उन्होंने अपने प्रमाण को चमत्कारी बताया। उन्होंने अपने प्रमाण को चमत्कारी बताया। संख्या सिद्धांत में फ़र्मेट की अन्य उपलब्धियाँ बताती हैं कि उन्होंने वास्तव में इस प्रमेय का प्रमाण खोज लिया होगा। शक्तिशाली कंप्यूटरों के उपयोग के बावजूद, आधुनिक गणितज्ञों को इस प्रमेय का कोई सामान्य प्रमाण नहीं मिला है। मेरी राय में, असतत अंशों की समझ के बिना यह संभव नहीं है: प्राकृतिक संख्याओं के घातांक और उनके योग को नियंत्रित करने वाले कुछ रोचक असतत नियम हैं जो वर्तमान में ज्ञात नहीं हैं। आधुनिक युग अब फ़र्मेट, पास्कल, न्यूटन और स्वीडनबॉर्ग जैसी महान बौद्धिक प्रतिभाएँ पैदा नहीं करता। 20वीं सदी के विज्ञान में साधारणता का बोलबाला है। हालाँकि हमारे समय में वैज्ञानिक ज्ञान का स्तर बहुत बढ़ गया है, फिर भी सच्ची रचनात्मक वैज्ञानिक प्रतिभाएँ शायद ही कहीं बची हैं।

हमारे समय की कलाएँ

विज्ञान की तरह, कला में भी चीज़ें उलट-पुलट हो गई हैं: केवल मात्रात्मक विकास होता है, लेकिन गुणात्मक विकास नहीं होता, सिवाय नीचे की ओर। हमारे समय की कलाएँ आधुनिक मनुष्य के आंतरिक शून्यता को बखूबी दर्शाती हैं। कला का असली काम सत्य और अच्छाई, यानी सौंदर्य, के मिलन को चित्रित करना और बुराई और अन्याय को इस तरह उजागर करना होना चाहिए कि वह सत्य और अच्छाई की उस अनुभूति की सेवा करे, जो विरोधाभासों के माध्यम से प्राप्त होती है। सच्ची कला केवल वहीं मौजूद हो सकती है जहाँ संगति को पहचाना जाता है, क्योंकि इनके बिना कला कला नहीं है।

इतिहास के सर्वश्रेष्ठ कलाकारों ने अपनी कृतियों में या तो जानबूझकर या अनजाने में उपमाओं का प्रयोग किया है। इस पुस्तक के दायरे में, मैं विभिन्न कलाओं को केवल संक्षेप में ही प्रस्तुत कर सकता हूँ। यहाँ कलाओं से उपमाओं के विज्ञान पर कुछ अवलोकन दिए गए हैं।

दृश्य कलाएँ

एक नीलामी में, एक डाक टिकट इतनी ऊँची कीमत पर बिका कि उससे एक घर खरीदा जा सकता था। इस डाक टिकट का विक्रय मूल्य लगभग 50 सेंट रहा होगा, लेकिन चूँकि यह छपाई के दौरान क्षतिग्रस्त हो गया था, इसलिए यह वास्तव में बेकार था। इसके अलावा, यह दशकों पुराना था, इसलिए यदि यह क्षतिग्रस्त न भी हुआ होता, तो भी बिक्री के समय यह बेकार होता। तो इस बेकार डाक टिकट के लिए इतनी ऊँची कीमत क्यों चुकाई गई? क्योंकि किसी अन्य संग्रहकर्ता के पास ऐसा डाक टिकट नहीं था। दृश्य कलाओं में, ऐसे संग्रहकर्ता के मूल्य ने कलाकृतियों के मूल्य के बारे में लोगों की धारणा को पूरी तरह से धुंधला कर दिया है, और अंततः कला के विकास को ही प्रभावित किया है। इस संग्रहकर्ता के मूल्य का कारण लोगों का आत्म-प्रेम और धन का लालच है।
संगति विज्ञान के दृष्टिकोण से, आधुनिक कलाकृतियाँ कई मामलों में रुग्ण मन का प्रतिबिंब होती हैं। उनमें केवल इंद्रिय-जनित सौंदर्यबोध होता है। उनमें सौंदर्य का कोई अंश नहीं होता, जो संगति की पहचान के अभाव के कारण होता है। हालाँकि, कई कलाकृतियाँ प्रतीकात्मक अंतर्दृष्टि के बिना भी तकनीकी रूप से उत्कृष्ट होती हैं। कला हमारे समय की विकृतियों को भी दर्शाती है: बाह्य आंतरिक से अधिक महत्वपूर्ण है।

संगीत

हमारे समय के आध्यात्मिक जीवन की विसंगतियाँ संगीत में बहुत स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित होती हैं। एक ओर, मात्रात्मक ज्ञान की प्रचुरता है, लेकिन दूसरी ओर, संगीत में संगति के बारे में लगभग पूर्ण अज्ञानता है।

प्राचीन लोग संगीत का अभ्यास ठीक उसके संगति के कारण ही करते थे: सभी वाद्ययंत्रों और कलाकारों में एक निश्चित आध्यात्मिक संगति होती थी, और संगीत की संरचना भी गणितीय संगति पर आधारित थी। आज, संगीत का उद्देश्य मुख्यतः कामुक या सामाजिक आनंद उत्पन्न करना है। आधुनिक संगीत समारोह मन की एक गहरी रुग्णता को दर्शाता है। यहाँ तक कि कुछ पौधे भी आधुनिक संगीत की कुछ रचनाओं के प्रति अरुचि व्यक्त करते हैं, हालाँकि वे कुछ पुरानी उत्कृष्ट कृतियों की स्पष्ट रूप से सराहना करते हैं, जैसा कि कुछ प्रयोगों से पता चला है।
शास्त्रीय संगीत ने स्वर-संगति को त्यागकर बारह-स्वर तकनीक का सहारा लिया है। इसका परिणाम धुनों से रहित संगीत है। आधुनिक संगीत समारोह आत्मा के लिए यातना है। संगीत संगति की अज्ञानता हास्यास्पद स्थितियों को जन्म दे सकती है, जैसे कि जब एक कुशल पियानोवादक एक ही संगीत समारोह में जोहान सेबेस्टियन बाख और किसी बीसवीं सदी के उग्र व्यक्ति की रचनाएँ बजाता है! पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति के कानों को, हमारे समय का मनोरंजन संगीत नारकीय शोर जैसा लगता है, हालाँकि सुंदर मनोरंजन संगीत भी मौजूद है।

साहित्य

हमारे युग की विशेषता प्राकृतिक जानकारी की सहज उपलब्धता है। पुस्तकालय गैर-काल्पनिक कृतियों से भरे पड़े हैं। कथा साहित्य और विचार-सम्बन्धी पुस्तकें भी पाठकों की पहुँच में हैं। इस संदर्भ में, हमारे युग की गुणवत्ता की कीमत पर मात्रा की खोज परिलक्षित होती है। लगभग सारा साहित्य अपरिपक्व, या कमोबेश आध्यात्मिक रूप से अंधे लोगों की रचना है, और पारंगत लोगों को पूरे पुस्तकालय में कुछ ही उपयोगी रचनाएँ मिलेंगी; केवल कुछ पाठ्यपुस्तकें और कुछ वर्णनात्मक गैर-काल्पनिक रचनाएँ ही मूल्यवान हैं।
आधुनिक कथा साहित्य विशेष रूप से अरुचिकर है, जो अक्सर कामुक सुखों और प्राकृतिक वर्णनों में रम जाता है। समकालीन लेखक इन संगतियों से अनभिज्ञ हैं। हमारे समय के लेखक अक्सर आध्यात्मिक रूप से अविकसित होते हैं, लेकिन बहुत महत्वाकांक्षी होते हैं।

20वीं सदी की शुरुआत और उससे पहले, जब लेखक अक्सर अपने समय की सर्वोच्च बुद्धि और ज्ञान का प्रतिनिधित्व करते थे, ऐसा नहीं था। उदाहरण के लिए, गोएथे, दोस्तोयेव्स्की, बाल्ज़ाक, टॉल्स्टॉय और स्ट्रिंडबर्ग जैसे लेखकों की रचनाओं में पुनर्जन्म की प्रक्रिया की प्रगति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।
साहित्य के निम्नतम स्तर का प्रतिनिधित्व मनोरंजन साहित्य और विभिन्न पत्रिकाओं द्वारा किया जाता है। कुछ अपवादों को छोड़कर, ये कचरा संस्कृति से संबंधित हैं, क्योंकि ये लोगों को कोई मूल्यवान संदेश नहीं देते। इनके मुख्य विषय अपराध, हिंसा और यौन संबंध हैं। साहित्य का स्थान रेडियो, टेलीविजन, फिल्मों, वीडियो, कंप्यूटर और स्मार्टफोन ने मजबूती से ले लिया है। इंटरनेट सूचना के प्रसार में एक महत्वपूर्ण क्रांति है, लेकिन यह अन्य माध्यमों की तरह ही एक समस्या से ग्रस्त है: अशिक्षित लोगों द्वारा निर्मित भारी मात्रा में सूचना कबाड़ है। इन उपकरणों का उपयोग जनसंख्या के व्यापक वर्गों तक अच्छी और शिक्षाप्रद दृश्य और श्रवण सामग्री प्रभावी ढंग से पहुँचाने के लिए किया जा सकता है। दुर्भाग्य से, वे जो कुछ भी प्रस्तुत करते हैं, वह अधिकांशतः कचरा संस्कृति है, अर्थात, कामुक लोगों की उपज। आज के युग में, वास्तव में शक्तिशाली सूचना प्रणालियाँ मौजूद हैं जिनका उपयोग सत्य को फैलाने के लिए भी किया जा सकता है। हालाँकि, पश्चिमी मीडिया का अधिकांश भाग यहूदियों के स्वामित्व में है या कम से कम उनके नियंत्रण में है, और यहूदियों का सबसे बड़ा आनंद सत्य की हत्या और झूठ फैलाना है (यूहन्ना 8:44)।
सामान्यतः, हमारे समय के विज्ञान और कलाओं के बारे में यह कहा जा सकता है कि वे हमारे समय के लोगों के आध्यात्मिक स्तर को बहुत सटीक रूप से दर्शाते हैं, जिनकी सबसे विशिष्ट विशेषताएँ प्राकृतिक और भौतिक वस्तुओं के बारे में अत्यधिक ज्ञान और आध्यात्मिक तथा दिव्य वस्तुओं के बारे में लगभग पूर्ण अज्ञानता हैं। "इस प्रकार पलक झपकते ही सब कुछ बदल गया, अब ऊपर वही है जो कभी नीचे था।" हालाँकि, स्वीडनबॉर्ग के माध्यम से पत्राचार के विज्ञान का नया आगमन, हमें अभी भी विज्ञान और कलाओं में बेहतर भविष्य की आशा देता है।

कुछ अन्य समान वैज्ञानिक अवलोकन

आजकल लोग खुद पर नियंत्रण रखना चाहते हैं और ईश्वर के मार्गदर्शन में पुनर्जन्म नहीं लेना चाहते। आत्म-नियंत्रण हमेशा लोगों को ईश्वर से दूर, भौतिकवाद की ओर, और अंततः नरक की ओर ले जाता है।

इस तरह के आत्म-मार्गदर्शन के संगत वैज्ञानिक प्रतीकों में कार, हवाई जहाज और अंतरिक्ष यान, साथ ही जहाज और पनडुब्बियाँ शामिल हैं। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, प्राकृतिक जगत की सभी घटनाएँ आध्यात्मिक रूप से संगत हैं। इसलिए, मनुष्यों द्वारा निर्मित सभी मशीनों और उपकरणों के भी आध्यात्मिक प्रतिरूप होते हैं। कार प्राकृतिक अच्छाई में स्वयं को नियंत्रित करने की मानवीय इच्छा का प्रतीक है। आज, लोग सोचते हैं कि सभी अच्छाइयाँ उनकी अपनी उपलब्धि हैं, और इसीलिए कार हमारे युग का प्रतीक है। हवाई जहाज आध्यात्मिक मामलों में स्वयं को नियंत्रित करने की मानवीय इच्छा का प्रतीक हैं, और अंतरिक्ष यान आकाशीय मामलों में स्वयं को नियंत्रित करने की इच्छा का प्रतीक हैं। उदाहरण के लिए, परामनोविज्ञान और विभिन्न ब्रह्मविद्या संबंधी शिक्षाओं का अध्ययन, साथ ही धर्मों का अध्ययन, इन इच्छाओं को व्यक्त करते हैं। जहाज प्रकृति के सत्यों में स्वयं को नियंत्रित करने की इच्छा का प्रतिनिधित्व करते हैं, और पनडुब्बियाँ इंद्रियों के सत्यों में उसी इच्छा का प्रतिनिधित्व करती हैं। इतिहास हमें दिखाता है कि हज़ारों सालों से, मनुष्य प्रकृति के सत्यों में खुद को नियंत्रित करने की इच्छा रखता रहा है, जिसके परिणामस्वरूप वैज्ञानिक ज्ञान (जहाज) का जन्म हुआ है। अतीत में, लोग यह भी मानते थे कि सारी अच्छाई एक उच्च शक्ति, ईश्वर से आती है। पिछली शताब्दी में ही मनुष्यों ने अपने भाग्य को अपने हाथों में लेने का फैसला किया, यह मानते हुए कि अच्छाई उनके अपने कर्मों (कार) से आती है। धातु से बनी पनडुब्बियाँ, जहाज, कार, हवाई जहाज और अंतरिक्ष यान, इंद्रिय ज्ञान के माध्यम से आध्यात्मिक और स्वर्गीय सत्यों को नियंत्रित करने की मानवता की इच्छा को दर्शाते हैं। अतीत में, जब जहाज लकड़ी के बने होते थे, तो ज्ञान में अच्छाई भी शामिल थी, लेकिन जब जहाज लोहे के बनने लगे, तो सारी अच्छाई गायब हो गई (लकड़ी अच्छाई का प्रतीक है, लोहा केवल सत्य का)। जिस व्यक्ति का दिव्य मन खुल गया है, वह सैकड़ों अन्य उदाहरणों के साथ समानताओं को वर्गीकृत करना जारी रख सकता है।

आध्यात्मिक दुनिया के संतुलन के कारण नारकीय और स्वर्गीय प्रवाह एक साथ आते हैं।

1757 में अंतिम न्याय के बाद आए स्वर्गीय सिद्धांत के साथ-साथ यहूदियों की विनाशकारी गतिविधियाँ भी हुईं, जैसे रोथ्सचाइल्ड बैंकों के रूप में, जिनकी परिणति परमाणु हथियारों के विकास और दुनिया की बैंकिंग प्रणाली और मीडिया में यहूदी, या शैतानी, आधिपत्य के रूप में हुई।
हमारे समय का कामुक व्यक्ति, "कोहनियों के बल झुका हुआ विदूषक", खेल और यौन जीवन के प्रति दृष्टिकोण में भी सामने आता है। बौद्धिक उपलब्धियों की तुलना में खेलकूद की उपलब्धियों को अधिक महत्व दिया जाता है। खेलों की सराहना वास्तव में प्राकृतिक मनुष्य में निहित पशुता की सराहना है, क्योंकि वास्तविक मनुष्य मनुष्य के आध्यात्मिक और स्वर्गीय भाग में है। इस प्रकार, हमारे समय की विकृतियाँ यहाँ भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। बेशक, खेल अपने आप में बुरे नहीं हैं। शारीरिक तंदुरुस्ती के लिए खेल आवश्यक हैं। बुरा तब होता है जब खेलों को धर्म और आध्यात्मिक गतिविधियों से ऊपर रखा जाता है। हमारे समय की बेतुकी बातें हमारे यौन जीवन में भी स्पष्ट दिखाई देती हैं। यौन संबंध को केवल एक कामुक क्रिया माना जाता है, उसके आध्यात्मिक और दिव्य स्वरूप को देखे बिना। कामुक कामुकता, अश्लील साहित्य और विकृतियाँ नारकीय कामुकता के समान हैं। स्वीडनबॉर्ग द्वारा प्रकट किया गया स्वर्गीय सिद्धांत, विवाह को उसके पूर्व गौरव को पुनर्स्थापित करता है: यौन जीवन में पवित्रता सर्वोच्च सत्यों को समझने के लिए एक पूर्वापेक्षा है।
सामान्यतः, आज लोग आंतरिक से अधिक बाह्य को महत्व देते हैं। आधुनिक लोगों के लिए रूप-रंग, वस्त्र, आवास, सामाजिक प्रतिष्ठा, कार और अन्य भौतिक वस्तुएँ आध्यात्मिक खज़ानों, अर्थात् आंतरिक अच्छाई और सत्य, से अधिक महत्वपूर्ण हैं। स्वार्थ, सांसारिक प्रेम और कामुकता मानव मन पर हावी हैं। लोग सत्य की नहीं, बल्कि हर चीज़ में अपने लाभ और सम्मान की तलाश करते हैं। पौलुस ने तीमुथियुस को लिखे अपने पत्र में आधुनिक लोगों का सटीक वर्णन किया है:

यह भी जान लो कि अंतिम दिनों में कठिन समय आएगा। क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र, स्नेहरहित, संधि तोड़नेवाले, दोष लगानेवाले, असंयमी, कठोर, भले लोगों के तिरस्कार करनेवाले, विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं वरन सुखविलास ही के चाहनेवाले होंगे। वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना। (2 तीमुथियुस 3:1-5)

आज लोग भी आसानी से अधिकारियों का सहारा लेते हैं, क्योंकि वे हर चीज़ को सांसारिक दृष्टिकोण से देखते हैं और उनमें आंतरिक समझ का अभाव होता है। सत्य से प्रेम करने वाले व्यक्ति को सांसारिक अधिकारियों की कोई आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि वह चीज़ों को प्रभु द्वारा दी गई समझ से देखता है। आज हमारे ग्रह की आध्यात्मिक स्थिति स्वीडनबॉर्ग के समय की तुलना में बहुत ख़राब है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से, नरक से आने वाला प्रवाह तेज़ हो गया है: लोग लगातार कामुक होते जा रहे हैं। मानवता का आध्यात्मिक पतन, जो सहस्राब्दियों से जारी है, अपने निम्नतम बिंदु पर पहुँच रहा है। पृथ्वी से अच्छाई और सच्चाई गायब हो गई है। लोगों के मन में गंदी वासनाएँ व्याप्त हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के काल को सही मायने में आध्यात्मिक अंधकार और गंदगी का युग कहा जा सकता है। हमारे ग्रह पर प्रमुख समूह के रूप में यहूदियों के उदय का इस विकास पर बहुत प्रभाव पड़ा है। यहूदियों के माध्यम से, सबसे गहरे नरक से एक धारा हमारे ग्रह में बह रही है।
भले ही इंसानों ने सब कुछ उलट-पुलट कर दिया हो, फिर भी हमारे पास पुनर्जन्म के माध्यम से उस सुखद स्थिति में लौटने का अवसर है जो हमारे ग्रह पर मनुष्यों के निर्माण के समय थी। कई अन्य ग्रहों के लोग ऐसी ही स्थिति में रहते हैं। स्वेडेनबर्ग की कृति "डी टेल्यूरिबस" (पृथ्वी) ने काफी हलचल मचाई है, जिसमें स्वीडनबर्ग हमारे सौरमंडल के अन्य ग्रहों के साथ-साथ अन्य सौरमंडलों के ग्रहों पर जीवन का विस्तार से वर्णन करते हैं। स्वीडनबर्ग के कार्यों को अन्यथा समझने वाले कई लोग इस कार्य की सत्यता पर संदेह करते हैं। आखिरकार, आधुनिक अंतरिक्ष अनुसंधान अपनी अंतरिक्ष उड़ानों के साथ यह दावा करता है कि हमारे सौरमंडल के अन्य ग्रहों पर जीवन—मानव तो दूर की बात है—नहीं है। स्वीडनबर्ग अपने आध्यात्मिक अनुभवों के आधार पर दावा करते हैं कि चंद्रमा सहित सभी ग्रहों पर मनुष्य हैं। आधुनिक विज्ञान के निष्कर्षों से यह निष्कर्ष निकालना उतना आसान नहीं है जितना कई लोग मानते हैं। अपोलो उड़ानों के दौरान, कई ऐसी घटनाएँ घटीं जो व्यवस्थित रूप से सूचनाओं को छिपाने का संकेत देती हैं। उदाहरण के लिए, कुछ अंतरिक्ष यात्री चंद्रमा की सतह पर देखी गई अद्भुत चीजों के बारे में बात करने लगे, जिस पर पृथ्वी पर प्रसारण को एक गुप्त रेडियो आवृत्ति पर स्विच कर दिया गया।

तथाकथित रोसवेल घटना भी अधिकारियों द्वारा व्यवस्थित रूप से छिपाए जाने की ओर इशारा करती है (4 जुलाई, 1947 को, संयुक्त राज्य अमेरिका में, एक अंतरिक्ष यान, न कि मौसम का गुब्बारा, जैसा कि आधिकारिक स्पष्टीकरण में दावा किया गया था, संभवतः रोसवेल के पास रेगिस्तान में दुर्घटनाग्रस्त हो गया)। मैं इस मामले में और गहराई से नहीं जाना चाहता, क्योंकि अति-गोपनीय शोध की पुष्टि की संभावनाएँ, निश्चित रूप से, अस्तित्वहीन हैं।
शायद ईश्वरीय विधान हमारे ग्रह के लोगों के लिए दूसरे ग्रहों के लोगों से संपर्क स्थापित करना आवश्यक नहीं समझता। ऐसे अभियानों के मूल निवासियों पर वैसे ही परिणाम हो सकते हैं जैसे कभी हमारी पृथ्वी पर अभियानों के हुए थे। दोस्तोयेव्स्की की कहानी "एक हास्यास्पद आदमी का हास्यास्पद सपना" में इस विषय पर बहुत अच्छी तरह से प्रकाश डाला गया है।
जिस प्रकार एक व्यक्ति अपने स्वार्थी इरादों को एक अच्छे बाहरी दिखावे के पीछे छिपाता है, उसी प्रकार आज की सत्ता संरचनाएँ भी केवल बाहरी सजावट हैं: यहाँ तक कि सबसे उन्नत लोकतंत्रों को भी हमेशा पर्दे के पीछे से सत्ता संभालने वाले गुप्त समूहों का समर्थन प्राप्त होता है। वास्तविक गुप्त समाज भी हमारे ग्रह पर अपार शक्ति रखते हैं। ऐसे संगठनों में अंतर्राष्ट्रीय यहूदी और उनके द्वारा संचालित गुप्त समाज, जैसे कि फ्रीमेसन, शामिल हैं। फ्रीमेसन में यहूदियों की शक्ति इस तथ्य पर आधारित है कि यहूदी ब'नाई ब्रिथ मेसोनिक संगठन, जो अन्य मेसोनिक संगठनों का नेतृत्व करता है, में केवल यहूदियों को ही स्वीकार किया जाता है, लेकिन यहूदी स्वयं भी अन्य मेसोनिक संगठनों के सदस्य हो सकते हैं। ज़ायन के बुद्धिमान पुरुष (300 प्रमुख यहूदी) इस ग्रह पर सबसे प्रभावशाली संगठन हैं, जिन्होंने दो विश्व युद्धों सहित अनगिनत युद्धों और क्रांतियों की शुरुआत की है। जिस व्यक्ति का दिव्य मन खुला है, वह प्रमुख राजनीतिक मुद्दों का अध्ययन करने के बाद उन्हें तुरंत समझ सकता है। एक कामुक व्यक्ति उपलब्ध विशाल जानकारी में आवश्यक और अनावश्यक में अंतर नहीं कर पाता है और उसे अधिकारियों का सहारा लेना पड़ता है। इस संदर्भ में, मैं केवल एक राजनीतिक मुद्दे पर प्रकाश डाल सकता हूँ। अर्थात्, हमारे ग्रह पर मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा: तल्मूड की भविष्यवाणियों को पूरा करने के लिए खज़ारों के प्रयास। स्वीडनबॉर्ग के कार्यों के माध्यम से, प्रभु का दूसरा आगमन (मत्ती 24:30) और शाश्वत सुसमाचार (प्रकाशितवाक्य 14:6) हुआ।

हालाँकि, लोगों ने इस क्रांतिकारी घटना को नहीं समझा और नए दिव्य रहस्योद्घाटन को स्वीकार नहीं किया क्योंकि वे ईश्वर से ज़्यादा मानवता और संसार से प्रेम करते थे। इसका प्रमाण उन असंख्य "ईसाई" कलीसियाओं से मिलता है जो आज प्रभु के आगमन के बारे में कुछ भी जाने बिना ही काम कर रही हैं। इसी प्रकार, कामुक यहूदियों ने यीशु को स्वीकार नहीं किया, जिन्होंने अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम का उपदेश दिया था, बल्कि उन्होंने अपराधी बरअब्बा को चुना, जो उनकी आत्मा के अधिक अनुरूप था।
एक और बात जिसे "ईसाई" कलीसियाएँ समझने में विफल रही हैं, वह है आधुनिक समय में शैतान का प्रभाव और उसके तरीके। केवल एक दिव्य मानव ही शैतान के तरीकों को स्पष्ट रूप से देख सकता है। एक आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध व्यक्ति केवल हिमशैल के सिरे को ही देख पाता है और शैतान द्वारा की जाने वाली पूरी चालाकी और दुष्टता को नहीं समझ पाता। यहाँ मैं संक्षेप में हमारे ग्रह पर शैतान की गतिविधियों को पत्राचार विज्ञान के प्रकाश में प्रस्तुत करूँगा। शैतान, या पिछला नरक, शैतान, या सामने वाले नरक के साथ मिलकर नरक के सामान्य प्रवाह में काम करता है, लेकिन हमारे समय में, शैतान ने खज़ार लोगों (जो खुद को "यहूदी" कहते हैं) के रूप में एक भौतिक रूप भी धारण कर लिया है। प्रकाशितवाक्य 20:2, 3 में "शैतान" का यही अर्थ है। इसी अध्याय के पद 7, 8 और 9 में शैतान उन ईसाइयों को संदर्भित करता है जिन्हें शैतान ने धोखा दिया है, विशेष रूप से तथाकथित "इस्राएल के मित्र", "कट्टरपंथी ईसाई", और अन्य ईसाई जो मानते हैं कि खज़ार यहूदी "ईश्वर के चुने हुए लोग" हैं। इसी अध्याय के पद 9 में "संतों का शिविर" और उसका "प्रिय नगर" नए चर्च को संदर्भित करता है, जो आध्यात्मिक और दिव्य दोनों है, जो स्वीडनबॉर्ग के कार्यों से उत्पन्न हुआ था। इन बातों से बहुत कम लोग अवगत हैं। निम्नलिखित पाठ चौंकाने वाला लग सकता है, क्योंकि पृथ्वी की पूरी आबादी का यहूदियों, या खज़ारों के संबंध में ब्रेनवॉश किया गया है। हालाँकि, यहूदियों या शैतान द्वारा मानवता के लिए उत्पन्न खतरा आज इतना बड़ा है कि इस विषय पर गहनता से विचार किया जाना आवश्यक है।

शैतान

इस अध्याय में, मैं ऐसी बातें उजागर करूँगा जो बिल्कुल सच हैं, लेकिन ज़्यादातर लोगों को समझ से परे और डरावनी लगती हैं। यह इस तथ्य पर आधारित है कि हमारे ग्रह पर राज करने वाले यहूदी माफिया ने लगभग सभी देशों का दिमाग़ धो दिया है। हालाँकि, अपने पड़ोसी से प्रेम करने में बुरी योजनाओं का पर्दाफ़ाश करना भी शामिल है। यही कारण है कि यहूदी प्रश्न आज हमारे ग्रह पर सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक मुद्दा है। स्वीडनबॉर्ग इस मुद्दे के महत्व को समझते थे और उन्होंने लिखा:
"याकूब ही वह था जिसे स्वर्ग से नीचे गिरा दिया गया था, और इस प्रकार वही साँप जिसने परमेश्वर मसीहा की एड़ी में डंसा था। यदि ऐसा है, तो इस अर्थ में पद 11 और 12 (उत्पत्ति 35:11-12: "और परमेश्वर ने उससे कहा, "मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ; तू फूले-फले और बढ़। तुझसे एक जाति, एक बड़ी जाति उत्पन्न होगी, और तेरे वंश से राजा उत्पन्न होंगे। और जो देश मैंने अब्राहम और इसहाक को दिया था, वह तुझे भी दूँगा; मैं वह देश तेरे वंशजों को भी दूँगा।" अनुवादक की टिप्पणी) याकूब के वंशजों को संदर्भित करता है, जो इसलिए वह साँप हैं। लेकिन मुझे स्वयं यह कहना या लिखना भयानक लगता है। इसलिए, यह उन लोगों द्वारा कहा जाना चाहिए जिन्हें इसे कहने और इसे सार्वजनिक करने की अनुमति है।" (वर्ड एक्स-एक्सप्लेन्ड, 1712)।
पत्राचार के विज्ञान में, उत्पत्ति 32:28 से आगे, याकूब नरक और शैतान का उल्लेख करता है, और इस्राएल नाम उसी व्यक्ति, स्वर्ग और ईश्वर का उल्लेख करता है। इसे तब समझा जा सकता है जब कोई यह विचार करे कि याकूब एक अपरिपक्व और इसलिए कामुक व्यक्ति को संदर्भित करता है जिसे नरक द्वारा निर्देशित किया जाता है। स्वर्गदूत के साथ याकूब का मल्लयुद्ध पुनर्जन्म का प्रतीक है, और नया नाम इस्राएल एक पुनर्जन्म वाले व्यक्ति को दर्शाता है जिसे स्वयं प्रभु स्वर्ग में ले जाते हैं। यह सभी स्थानों पर सत्य है (वर्ड एक्सप्लेंड, 1474-1480)। इस प्रकार, याकूब के वंशज, अर्थात् शैतान, समय के अंत में पवित्र भूमि पर नियंत्रण कर लेंगे। ईश्वर ने भी अपना वादा निभाया है: यहूदियों ने इस्राएल राज्य की स्थापना की है। इसलिए इस्राएल और यहूदी राज्य पुराने साँप हैं, जो शैतान है (उत्पत्ति 3:14, 15)।

सच्चा इस्राएल पुनर्जन्म लेने वाले लोगों को संदर्भित करता है जो यीशु को मसीहा के रूप में पहचानते हैं और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेमपूर्ण जीवन जीते हैं (ibid., 1474)। यह सर्प, या शैतान, विश्व प्रभुत्व प्राप्त करना और सभी राष्ट्रों को गुलाम बनाना चाहता है। पुराने नियम और तल्मूड के अनुसार यहूदियों का यही कार्यक्रम है। चूँकि यह मुद्दा अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसलिए मैंने अध्याय 3 में इस पर विस्तार से चर्चा की है।

यह ध्यान देने योग्य है कि आधुनिक यहूदी खज़ार वंश के हैं और केवल आध्यात्मिक रूप से याकूब के वंशज हैं, क्योंकि वे यहूदी धर्म का पालन करते हैं। इस्राएल की स्थापना ईश्वर द्वारा नहीं, बल्कि खज़ारों द्वारा ईसाइयों के साथ विश्वासघात था, जो मानते थे कि खज़ार यहूदी फ़िलिस्तीन के यहूदियों के वंशज थे और इसलिए उन्हें फ़िलिस्तीन लौटने का अधिकार था।

इस्राइल राज्य में शैतान का काम स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इज़राइल एक नस्लवादी राज्य है जहाँ केवल यहूदियों को ही मनुष्य माना जाता है। 1948 में अपनी स्थापना के बाद से ही इज़राइल ने फ़िलिस्तीनियों पर क्रूरतापूर्वक अत्याचार किया है। अक्टूबर 2023 में, इज़राइल ने फ़िलिस्तीनियों का नरसंहार शुरू किया, जिसमें जुलाई 2025 तक 60,000 से ज़्यादा फ़िलिस्तीनी मारे गए, जिनमें लगभग 20,000 बच्चे भी शामिल थे। यह नरसंहार हर दिन जारी है।

धार्मिक दृष्टि से, खज़ार शैतान का अवतार हैं, जो एक भयावह तथ्य है। आज (सितंबर 2025), पृथ्वी पर उनके पास अपार शक्ति है। उनकी शक्ति बैंकिंग, मुख्यधारा के मीडिया पर नियंत्रण और हर देश में मज़बूत राष्ट्रीय दबाव समूहों पर आधारित है। उनका नेतृत्व खज़ार बुद्धिजीवियों के लगभग 300 पुरुषों के एक समूह द्वारा किया जाता है, जिन्हें सिय्योन के बुद्धिमान पुरुष के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने पूरे इतिहास में युद्धों और क्रांतियों के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से 20 करोड़ से ज़्यादा गोइम, या गैर-यहूदियों की हत्या की है। उन्होंने अपनी छवि एक निर्दोष रूप से पीड़ित लोगों के रूप में बनाई है, जो सच्चाई से कोसों दूर है। इतिहास में लगभग हर देश में यहूदियों को सताया गया है, और इसके पीछे अच्छे कारण भी हैं।
नए चर्च का मिशन, जो "सूर्य से आच्छादित पत्नी" है (प्रकाशितवाक्य 12:1), इस सर्प, सिय्योन के बुद्धिमान पुरुषों, का सिर कुचलना है। नया चर्च उन आम यहूदियों के विरुद्ध नहीं लड़ता, जो सिय्योन के बुद्धिमान पुरुषों की योजनाओं से अनभिज्ञ हैं। वर्तमान में (सितंबर 2025), सिय्योन के बुद्धिमान पुरुष यूरोप के देशों को महाशक्ति रूस के विरुद्ध युद्ध में नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं। फ़िनलैंड भी इस युद्ध की तैयारी कर रहा है।

खज़ार अब विश्व प्रभुत्व के करीब हैं। खज़ारों के बारे में मानवता का ब्रेनवॉश किया जा चुका है। लोग खज़ारों के बारे में सच्चाई नहीं जानते। सच्चाई बताना नए चर्च का काम है।
अब खज़ार, विश्व आर्थिक मंच (WEF) की मदद से, लोगों को डिजिटल गुलाम बनाने की तैयारी कर रहे हैं। खज़ारों के खिलाफ किसी भी राय को रोकने और "असंतोषियों" को खत्म करने के लिए लोगों को चिप (त्वचा के नीचे एक चिप) लगाई जाएगी, क्योंकि यह चिप सभी के लिए अनिवार्य होगी और इसमें बैंकिंग कार्य भी शामिल होंगे, और असहमत लोगों के पास भोजन खरीदने के लिए मुद्रा नहीं होगी। WEF मानवता के लिए खतरा है और इसे समाप्त कर दिया जाना चाहिए। WEF पूरी तरह से खज़ारों के नियंत्रण में है।

अध्याय 10: पुनर्जन्म

इस बात पर अचम्भा मत कर कि मैंने तुझसे कहा, "तुम्हें नया जन्म लेना होगा।" नीकुदेमुस ने उससे कहा, "ये बातें कैसे हो सकती हैं?" यीशु ने उससे कहा, "क्या तू इस्राएल का स्वामी होकर भी ये बातें नहीं जानता?" (यूहन्ना 3:7,9,10)।

यह आश्चर्यजनक है कि आज शायद ही कोई जानता है कि पुनर्जन्म क्या है। हालाँकि, यह जानना सबसे महत्वपूर्ण बात है, क्योंकि पुनर्जन्म के बिना, व्यक्ति अपनी शारीरिक मृत्यु के बाद नरक में जाएगा। एक व्यक्ति अपने माता-पिता से प्राकृतिक संसार में जन्म लेता है, लेकिन स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए, उसे ईश्वर से आध्यात्मिक रूप से पुनर्जन्म लेना होगा। मनुष्य अभी भी वंशानुगत बुराई में जन्म लेते हैं, जो उन्हें नरक में ले जाएगी जब तक कि उनका आध्यात्मिक रूप से पुनर्जन्म न हो। ईसाई चर्च का सबसे महत्वपूर्ण कार्य पुनर्जन्म के बारे में सिखाना होगा, लेकिन आधुनिक ईसाई चर्च इस संबंध में भी पूर्ण अंधकार में रहते हैं। कुछ विश्वासियों का यह मानना कि पुनर्जन्म का अर्थ विश्वास में आना है, एक खतरनाक भूल है: अचानक विश्वास में आना अक्सर दुष्टात्माओं का प्रभाव होता है और मानसिक विकार के समान होता है। ब्रह्मविद्या और मानवविद्या के समर्थक, साथ ही कई पूर्वी धर्म, भी पुनर्जन्म के बारे में पूरी तरह अनभिज्ञ हैं। केवल स्वीडनबॉर्ग की रचनाओं में ही पुनर्जन्म की इस तरह व्याख्या की गई है कि हर कोई अपने अनुभवों से इसकी सत्यता की पुष्टि कर सकता है। पुनर्जन्म पाने के लिए, व्यक्ति का ईश्वर के साथ सीधा और तात्कालिक संपर्क होना आवश्यक है, जो केवल ईश्वर ही अपने असीम प्रेम और ज्ञान के माध्यम से व्यक्ति का पुनर्जन्म कर सकते हैं। जो लोग प्रलोभन के समय—जिसके बिना किसी का पुनर्जन्म नहीं हो सकता—प्रभु यीशु मसीह के अलावा किसी और चीज़ की ओर मुड़ते हैं, वे प्रलोभन से हार जाएँगे और उनकी स्थिति प्रलोभन से पहले की तुलना में बदतर हो जाएगी। पुनर्जन्म में, व्यक्ति की आध्यात्मिक बुद्धि दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है क्योंकि वे प्रभु से नए सत्य और गुण प्राप्त करते हैं।

आजकल, शायद ही कोई यह समझ पाता है कि केवल समझे गए सत्य ही बुद्धि को बढ़ाते हैं और केवल रटा हुआ ज्ञान व्यक्ति के लिए व्यर्थ है। सत्य केवल समझ के प्रकाश में ही सत्य होता है, और किसी चीज़ पर अंध विश्वास उसे सत्य नहीं बना देता।
पुनर्जन्म पूरी तरह से शारीरिक विकास के समान है। जिस प्रकार मानव का शारीरिक विकास दो जनन कोशिकाओं से शुरू होता है, उसी प्रकार पुनर्जन्म भी कुछ मूलभूत सत्यों और गुणों से शुरू होता है, और अधिकाधिक पूर्ण रूप से मानव रूप में विकसित होता है, क्योंकि गुण और सत्य मनुष्यों से जुड़े होते हैं और मानव रूप में होते हैं। वर्ष दर वर्ष, पुनर्जन्म लेने वाला व्यक्ति अधिकाधिक नए सत्यों को आत्मसात करता है, और इन सत्यों से वह नरक से उत्पन्न होने वाले अन्याय और बुराइयों को भी अधिकाधिक स्पष्ट रूप से महसूस कर सकता है। इस प्रकार, पाप और बुराइयाँ भी मनुष्य के पुनर्जन्म में सहायक होती हैं। पुनर्जन्म लेने वाला व्यक्ति पाप को सत्य के दृष्टिकोण से देख सकता है, लेकिन पुनर्जन्म न लेने वाला व्यक्ति पाप के दृष्टिकोण से सत्य को नहीं देख सकता।

एक व्यक्ति अपनी समझ के माध्यम से जितना अधिक सत्य और अन्याय को समझता है, और जितना अधिक उसकी इच्छाशक्ति प्रभु से भलाई को स्वीकार करती है, उतने ही अधिक आंतरिक सत्य वह ग्रहण कर पाता है, अर्थात वह उतना ही अधिक बुद्धिमान और समझदार होता है। (यही बुद्धि की परिभाषा है)।

इस अध्याय में, मैं इस विषय पर छह भागों में व्यवस्थित रूप से चर्चा करूँगा: 1. पश्चाताप, 2. सुधार और पुनर्जन्म, 3. प्रलोभन और किण्वन, 4. पुनर्जन्म प्रक्रिया की प्रगति, 5. पुनर्जन्म में बाधा डालने वाले कारक, 6. प्रलोभनों पर विजय।

पश्चाताप

चूँकि एक व्यक्ति अपने माता-पिता से आत्म-प्रेम और संसार-प्रेम में जन्म लेता है, इसलिए उसे अपने पूर्व जीवन का त्याग करना चाहिए, अर्थात उसे पश्चाताप करना चाहिए। पश्चाताप केवल एक वयस्क ही कर सकता है जो सत्य को समझने और स्वीकार करने में सक्षम हो। बच्चे, मानसिक रूप से विकलांग, और अन्य लोग जिनमें तर्कसंगत समझ का अभाव है, वे पश्चाताप नहीं कर सकते। इसी कारण, मरने वाले बच्चे हमेशा स्वर्ग जाते हैं, क्योंकि वे अपनी विरासत में मिली बुराई के लिए ज़िम्मेदार नहीं होते।

एक सच्ची कलीसिया में पश्चाताप सबसे पहली और सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है, क्योंकि यही परमेश्वर की सच्ची सेवा है। पश्चाताप वचन में एक दैनिक बलिदान है (दानिय्येल 12:11)। परमेश्वर अनावश्यक बाहरी सेवा की माँग नहीं करता, बल्कि यह माँग करता है कि मनुष्य स्वयं को पापी समझे और अपनी दुष्टता से दूर हो जाए। पश्चाताप परमेश्वर की आंतरिक सेवा है।
कई प्रोटेस्टेंट कलीसियाओं में, यह प्रचलित दृष्टिकोण है कि केवल विश्वास ही पश्चाताप की ओर ले जाता है, बशर्ते कोई व्यक्ति यह स्वीकार करे कि वह पापी है। हालाँकि, यह दृष्टिकोण ईश्वरीय विधान के नियमों के बिल्कुल विपरीत है, जिसके अनुसार व्यक्ति की आंतरिक इच्छा ही उसके उद्धार और स्वर्ग में प्रवेश का निर्धारण करती है। केवल विश्वास ही इस आंतरिक इच्छा को जन्म नहीं देता। आंतरिक इच्छा तभी उत्पन्न होती है जब व्यक्ति पश्चाताप के बाद, ईश्वरीय नियमों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करता है। इसलिए, उद्धार के लिए विश्वास और विश्वास की आज्ञाओं, अर्थात् दस आज्ञाओं, के अनुसार जीवन जीने, दोनों की आवश्यकता होती है।
किसी व्यक्ति को सामान्यतः पापी होने का दावा करने से कोई लाभ नहीं है, क्योंकि अच्छे और बुरे दोनों ही लोग ऐसा कर सकते हैं। सच्चा पश्चाताप कुछ और ही है। सच्चे पश्चाताप में निम्नलिखित शामिल हैं: 1. ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करना, 2. पाप क्या है, यह जानना, 3. व्यक्तिगत पापों की पहचान के लिए आत्म-परीक्षण, 4. ईश्वर के समक्ष अपने पापों को स्वीकार करना और पश्चाताप करना, 5. अपने पापों की क्षमा के लिए ईश्वर से सहायता माँगना, 6. पाप रहित एक नया जीवन शुरू करना। इस प्रकार का पश्चाताप आपको ईश्वर से जोड़ता है और आपको बुद्धिमान बनाता है। ऐसे पश्चाताप को ईश्वर और मनुष्य का मिलन कहा जा सकता है। आगे, मैं पश्चाताप के इन विभिन्न चरणों पर संक्षेप में चर्चा करूँगा।

1. ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करना

जो लोग ईश्वर को नकारते हैं, अर्थात् नास्तिक, वे सच्चा पश्चाताप शुरू नहीं कर सकते। बेशक, वे कई तरीकों से अपने बाहरी जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं, लेकिन केवल ईश्वर ही, मनुष्यों के सहयोग से, आंतरिक व्यक्ति को शुद्ध कर सकता है।

जो लोग अपने हृदय में ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, वे पुनर्जन्म की ओर पहला कदम उठा चुके हैं। जो लोग अपने हृदय में ईश्वर के अस्तित्व को नकारते हैं, वे अपने मन को पहले ही बंद कर चुके होते हैं ताकि वे स्वर्ग से आने वाले प्रवाह को ग्रहण न कर सकें। जो लोग ईश्वर के अस्तित्व पर कोई रुख नहीं अपनाते, वे भी नास्तिक हैं, लेकिन नास्तिकता में उतने गहरे नहीं फंसे हैं जितने कि ऊपर बताए गए हैं। अर्थात्, ईश्वर के न होने की संभावना को स्वीकार करना भी, मूलतः नास्तिकता है।
जब कोई व्यक्ति ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करता है, तो स्वर्ग से आने वाला प्रवाह उसके मन के आंतरिक भागों में प्रवेश करता है, और यदि वह अपने व्यावहारिक जीवन में भी ईश्वर की आज्ञाओं के अनुसार जीवन व्यतीत करता है, तो वह कई तरीकों से ईश्वर के अस्तित्व को खोज लेगा।
जो लोग ईश्वर को नकारते हैं, वे धीरे-धीरे प्रकृति पूजक और भौतिकवादी बन जाते हैं, जो ईश्वर के अस्तित्वहीन होने में अधिकाधिक दृढ़ता से विश्वास करते हैं। ऐसे लोग धीरे-धीरे अपनी सारी आंतरिक समझ खो देते हैं और जानवरों जैसे हो जाते हैं, हालाँकि वे स्वयं इस बात को नहीं समझते और स्वयं को बुद्धिमान समझते हैं। आज अधिकांश पश्चिमी लोगों के लिए यही सच है।

2. पाप क्या है, यह जानना

पाप वह सब कुछ है जो ईश्वरीय व्यवस्था के विरुद्ध है। पापों को दस आज्ञाओं (निर्गमन 20:2-17, व्यवस्थाविवरण 5:6-21) में पूरी तरह से वर्गीकृत किया गया है। दस आज्ञाओं को न केवल शाब्दिक रूप से, बल्कि आध्यात्मिक और दिव्य रूप से भी समझना आवश्यक है, जैसा कि नए चर्च के सिद्धांत (अध्याय 8) द्वारा समझाया गया है। पाप के सटीक ज्ञान के बिना, कोई व्यक्ति सच्चा पश्चाताप नहीं कर सकता, क्योंकि तब वह नैतिक और सामाजिक बुराई और पाप के बीच अंतर करने में असमर्थ होता है। यदि कोई व्यक्ति किसी भी प्रकार की नैतिक और सामाजिक बुराई करने से बचता है, तब भी वह पाप कर सकता है यदि वह केवल अपनी प्रतिष्ठा और हितों के लिए बुराई करने से बचता है। इस प्रकार, बहुत से बहुत बुरे लोगों का सामाजिक जीवन पूरी तरह से दोषरहित होता है। एक अच्छा व्यक्ति बुराई इसलिए नहीं करता क्योंकि वह पाप है। एक बुरा व्यक्ति बुराई करने से बचता है क्योंकि इससे उसे एक सम्मानित नागरिक के रूप में अपनी स्वार्थी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने का अवसर मिलता है।

स्वार्थवश दूसरों के लिए अच्छे कर्म करना कर्ता के लिए पाप है, लेकिन प्राप्तकर्ताओं के लिए लाभदायक है। इसलिए पाप का निर्धारण व्यक्ति के आंतरिक विचारों से होता है। वही कर्म एक व्यक्ति के लिए पाप हो सकता है, लेकिन दूसरे के लिए नहीं।

3. व्यक्तिगत पापों का पता लगाने के लिए आत्म-परीक्षण

लूथरन सहित प्रोटेस्टेंटों के लिए, अपने पापों का पता लगाने के लिए आत्म-परीक्षण करना बहुत ही असामान्य है। दूसरी ओर, कैथोलिक अपने पादरियों के साथ अक्सर ऐसा करते हैं। इसीलिए, स्वेडेनबोर्ग के अनुसार, कई कैथोलिकों के लिए पुनर्जन्म की अवस्था प्राप्त करना प्रोटेस्टेंटों की तुलना में अधिक आसान है। यदि कोई व्यक्ति आत्म-परीक्षण का अभ्यास नहीं करता है, तो वह धीरे-धीरे यह मानने लगेगा कि पाप का अस्तित्व ही नहीं है। आत्म-परीक्षण में यह भी शामिल होना चाहिए कि क्या उसने पाप करने का इरादा किया था। केवल अपने कार्यों का परीक्षण करना ही सच्चा आत्म-परीक्षण नहीं है, क्योंकि पाप अक्सर पाप करने के इरादे में ही प्रकट होता है। जो लोग पुनर्जन्म ले रहे हैं, वे प्रतिदिन आत्म-परीक्षण का अभ्यास करते हैं। शाम या रात में, अकेले में, वह इस बात पर चिंतन करता है कि क्या आज कोई पाप किया गया था या क्या ऐसा कोई इरादा था। उसे ऐसा हर दिन करना चाहिए। जब किसी व्यक्ति को यह एहसास हो जाता है कि उसने पाप किया है या पाप करने का इरादा रखता है, तो वह पश्चाताप के चौथे चरण में आगे बढ़ता है, जो कि स्वीकारोक्ति और पश्चाताप है।

4. परमेश्वर के समक्ष पापों का स्वीकार और पश्चाताप

पाप करने या करने का इरादा रखने के बाद, व्यक्ति को क्षमा के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपने पापों या पापपूर्ण इरादों का पश्चाताप नहीं करता है, तो वे उसकी आत्मा में ही रहेंगे और उसके शरीर की मृत्यु के बाद उसे नरक में ले जाएँगे। इसलिए, जब एक पुनर्जन्म प्राप्त व्यक्ति को यह एहसास होता है कि उसने कोई पाप किया है या करने का इरादा रखता है, तो उसे एकांत में उसे स्वीकार करना चाहिए और परमेश्वर के सामने पश्चाताप करना चाहिए। दूसरों के सामने पापों को स्वीकार करना आवश्यक नहीं है। दूसरों से बात करते या लिखते समय, व्यक्ति अपने बाहरी मन की अवस्था में होता है, लेकिन जब वह अपने पापों को स्वीकार करता है और एकांत में प्रार्थना करता है, तो वह अपने आंतरिक मन की अवस्था में होता है। केवल आंतरिक मन की स्थिति में ही व्यक्ति पश्चाताप कर सकता है।

इसी कारण, किसी पादरी के सामने पाप-स्वीकार करना भी एक व्यर्थ कार्य है। सच्चा आंतरिक पश्चाताप केवल आंतरिक मन की स्थिति में ही हो सकता है।
परमेश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार करने के लिए, लोगों में परमेश्वर के बारे में किसी न किसी प्रकार की समझ होनी चाहिए। परमेश्वर के बारे में किसी व्यक्ति की समझ जितनी सटीक और सही होगी, वह परमेश्वर के उतने ही निकट पहुँच सकता है। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर को तीन अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में मानता है, जैसा कि आधुनिक ईसाई करते हैं, तो वह उसके साथ एकता स्थापित नहीं कर सकता। आध्यात्मिक दुनिया में व्यक्ति का स्थान—या अधिक सटीक रूप से, किसी के स्थान की समतुल्यता—परमेश्वर के बारे में उसकी धारणा से निर्धारित होती है। जो लोग मानते हैं कि परमेश्वर नहीं है, वे नरक में रहते हैं। जो लोग परमेश्वर को मानव रूप में मानते हैं, वे स्वर्ग में रहते हैं। मनुष्य के रूप में परमेश्वर के बारे में किसी व्यक्ति की धारणा जितनी सटीक होगी, वह उतने ही बेहतर स्वर्गीय समुदाय में प्रवेश करेगा। परमेश्वर अलग-अलग युगों में लोगों को उनकी अलग-अलग ग्रहणशीलता के कारण अलग-अलग रूप में प्रकट होते हैं। हमारे समय के लोगों के लिए, उनका रूप प्रकाशितवाक्य की पुस्तक (प्रकाशितवाक्य 1:12-16) में वर्णित है। सभी सच्चे धार्मिक नियम ईश्वर की अवधारणा का भी प्रतिनिधित्व करते हैं, क्योंकि वे ईश्वर से आते हैं। जब कोई व्यक्ति प्रार्थना करता है और अपने पापों को स्वीकार करता है, और ईश्वर की त्रिमूर्ति को इस प्रकार समझता है कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा प्रभु यीशु मसीह में हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे आत्मा, शरीर और शरीर के माध्यम से आत्मा के कर्म एक व्यक्ति में होते हैं, तो वह ईश्वर के साथ एकाकार हो जाता है। यदि कोई व्यक्ति यीशु को एक साधारण मनुष्य समझता है, तो ईश्वर से उसका संबंध तुरंत टूट जाता है। यीशु को महिमावान, या दिव्य, मनुष्य के रूप में समझना चाहिए।

5. ईश्वर से पापों की क्षमा माँगना

जब कोई व्यक्ति अपने पापों को पहचान लेता है और ईश्वर के समक्ष उन्हें स्वीकार कर लेता है और पश्चाताप करता है, तो उसे विनम्रतापूर्वक ईश्वर से क्षमा माँगनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, उसे भविष्य में पाप से दूर रहने के लिए ईश्वर से शक्ति माँगनी चाहिए। ईश्वर से सहायता और शक्ति माँगने के बाद, व्यक्ति को अपने जीवन में पाप से बचने का प्रयास करना चाहिए, मानो स्वयं ही कर रहा हो, लेकिन उसे यह जानना चाहिए कि जो शक्ति उसे पाप से दूर रखती है, वह केवल प्रभु से ही आती है।

यह "मानो अपने आप" क्रिया व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा को सुरक्षित रखती है और इस प्रकार ईश्वरीय विधान के नियमों में से एक है। सहायता माँगते समय व्यक्ति को ईश्वर, प्रभु यीशु मसीह का नाम लेना चाहिए।

6. एक नए पापरहित जीवन की शुरुआत

ईश्वर की सहायता से किसी पाप से मुक्ति पाने के बाद, व्यक्ति को जीवन भर उस पाप से दूर रहना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति फिर से वही पाप करता है, तो उसकी स्थिति पहले से भी बदतर हो जाएगी, क्योंकि फिर उस पाप से संबंधित दुष्ट आत्माओं का एक बड़ा समूह उसके साथ जुड़ जाएगा। प्रभु का यही आशय है जब वे कहते हैं: "जब कोई अशुद्ध आत्मा किसी व्यक्ति को छोड़ देती है, तो वह निर्जन स्थानों में विश्राम की तलाश में भटकती है, परन्तु उसे विश्राम नहीं मिलता। फिर वह कहती है, 'मैं उस घर में लौट जाऊँगी जिसे मैंने छोड़ा था।' और जब वह आती है, तो उस कमरे को खाली, झाड़ा-बुहारा और व्यवस्थित पाती है। फिर वह जाती है और अपने से भी अधिक दुष्ट सात अन्य आत्माओं को अपने साथ ले आती है, और वे उसमें प्रवेश करके वास करती हैं। और उस व्यक्ति की पिछली दशा पहली से भी बदतर हो जाती है" (मत्ती 12:43-45)। इसी कारण, आधुनिक समय में स्वर्गीय सिद्धांत बहुत कम लोगों को मिलता है, क्योंकि किसी व्यक्ति के लिए अपना पूरा जीवन दुष्टता में बिताना, दुष्टता से विमुख होकर फिर से दुष्टता की ओर मुड़ने से बेहतर है।
जब कोई व्यक्ति पश्चाताप के माध्यम से एक पाप से मुक्त हो जाता है, तो प्रभु उसे अन्य पापों से भी मुक्त होने में सहायता करते हैं। इस प्रकार, पाप का प्रतिरोध करते हुए उसकी आत्मा धीरे-धीरे शुद्ध होती जाती है। इस प्रकार, एक व्यक्ति पृथ्वी पर रहते हुए भी धीरे-धीरे एक देवदूत बन जाता है। ऐसे लोगों की संतानों को विरासत में मिली बुराई कम हो जाती है, और समय के साथ वे एक नई प्रजाति, होमो स्पिरिटु-एलिस, या आध्यात्मिक मनुष्य बन जाते हैं।

सुधार और पुनर्जन्म

जब तक कोई व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से पुनर्जन्म नहीं लेता, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। परमेश्वर का राज्य स्वर्ग और पृथ्वी पर कलीसिया दोनों को संदर्भित करता है। एक व्यक्ति जिसका पुनर्जन्म नहीं हुआ है, वह स्वभाव से ही एक पशु है, भले ही वह अन्य लोगों के बीच अपने बाहरी व्यवहार से इस तथ्य को छिपाए।

क्योंकि मनुष्य जन्मजात आत्म-केंद्रितता और संसार-प्रेम के साथ जन्म लेता है, जो विरासत में मिली बुराई से आता है। आत्म-प्रेम की अग्नि दूसरों से श्रेष्ठ होना और दूसरों को अपनी शक्ति के अधीन करना है। संसार-प्रेम में, यदि संभव हो तो, अधिक से अधिक और अंततः संसार की सारी संपत्ति प्राप्त करने की इच्छा शामिल है।

हालाँकि, एक पुनर्जन्म-रहित व्यक्ति की समझ ऐसी होती है कि वह सत्य और असत्य दोनों को स्वीकार कर सकता है। इस प्रकार, वह अपनी समझ के माध्यम से अपनी इच्छा की बुराई को देख पाता है, और यदि वह अपनी बुराई से विमुख हो जाता है, तो प्रभु धीरे-धीरे प्रलोभनों के माध्यम से उसमें एक नई इच्छा उत्पन्न करते हैं जो अच्छी होती है क्योंकि यह प्रभु से आती है। प्रभु ने इस व्यक्ति की समझ की व्यापकता—अर्थात, सत्य और असत्य दोनों को स्वीकार करने की क्षमता—का निर्माण किया ताकि वह इसका उपयोग उस व्यक्ति को पुनर्जीवित करने के लिए कर सके जो उससे दूर हो गया था। अपनी इच्छा के अनुसार, लोग एक ही समय में अच्छाई और बुराई दोनों में नहीं रह सकते।

पुनर्जन्म के पहले चरण को सुधार कहा जाता है, जिसका अर्थ है समझ का विकास। दूसरे चरण को पुनर्जन्म कहा जाता है, जिसका अर्थ है इच्छाशक्ति का विकास। जिस व्यक्ति की समझ विकसित हो गई है, यदि उसकी इच्छाशक्ति अभी भी अविकसित है, तो उसका पुनर्जन्म अभी तक नहीं हुआ है। जब किसी व्यक्ति में नई इच्छाशक्ति उत्पन्न होती है, तभी उसका पुनर्जन्म होता है। समय के संदर्भ में, पुनर्जन्म से पहले सुधार होता है।

पुनर्जन्म के दो साधन हैं: विश्वास और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम। विश्वास सुधार से जुड़ा है, और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम पुनर्जन्म से। अपने पड़ोसी के प्रति विश्वास और प्रेम को ऊपर बताए अनुसार समझा जाना चाहिए, न कि आधुनिक ईसाई चर्चों द्वारा उनकी व्याख्या के अनुसार। दूसरी ओर, पुनर्जन्म मोक्ष या स्वर्ग में प्रवेश का साधन है। इन साधनों द्वारा, प्रभु मनुष्य में एक नई समझ और एक नई इच्छाशक्ति उत्पन्न करते हैं। ईश्वर आध्यात्मिक मनुष्य में अपनी समझ से, लेकिन दिव्य मनुष्य में सीधे अपनी इच्छाशक्ति से एक नई इच्छाशक्ति उत्पन्न करते हैं। प्रभु द्वारा पुनर्जन्म प्राप्त ऐसे व्यक्ति को ईश्वर का पुत्र या पुत्री कहा जा सकता है।

पुनर्जन्म ही बुद्धि विकसित करने का एकमात्र सही तरीका है, क्योंकि अगर कोई व्यक्ति अपने मस्तिष्क को विशाल स्मृति वाले एक विशाल कंप्यूटर में भी विकसित कर ले, तो भी वह उस व्यक्ति की तुलना में कुछ भी नहीं होगा जो अनंत बुद्धि, या ईश्वर के निरंतर संपर्क में रहता है।
हमारे ग्रह पर हर व्यक्ति पुनर्जन्म ले सकता है, क्योंकि यीशु का उद्धार सबसे शक्तिशाली को भी नरक से मुक्त कर देता है। यहूदी भी पुनर्जन्म ले सकते हैं, लेकिन चूँकि उनकी विरासत में मिली बुराई अन्य लोगों की तुलना में अधिक है और क्योंकि वे पुनर्जन्म लेने वाले के विरुद्ध खड़े होते हैं, इसलिए उनके प्रलोभन अधिक कठिन होते हैं, और इसलिए उनमें से केवल कुछ ही वास्तव में पुनर्जन्म के मार्ग पर चलने का साहस करते हैं। पुनर्जन्म लेने वाले यहूदी सर्वश्रेष्ठ देवदूत बन जाते हैं, क्योंकि एक व्यक्ति जितनी बुरी तरह बुराई से दूर होता है, उसे उतनी ही अधिक अच्छाई प्राप्त होती है।
पुनर्जन्म उन लोगों के लिए आसान होता है जो अपनी सांसारिक यात्रा में साहसी और निष्पक्ष रहे हैं, लेकिन उन लोगों के लिए अधिक कठिन होता है जो दूसरों के दबाव और विचारों के प्रति संवेदनशील रहे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति को ऐसे प्रलोभनों का सामना करना पड़ता है जो उनके रिश्तों को तोड़ देते हैं, और उन्हें साहसपूर्वक कई रिश्तों के साथ-साथ कई अन्य चीजों को भी त्यागना पड़ता है।

अधिकांश मामलों में, पुनर्जन्म की प्रक्रिया प्रारंभिक वयस्कता में शुरू होती है, जब व्यक्ति का तार्किक मन पूरी तरह से विकसित हो चुका होता है। इससे पहले, आंतरिक मन पुनर्जन्म के लिए आवश्यक सामग्री, अर्थात् सद्गुणों और सत्यों को संचित कर चुका होता है।
पुनर्जन्म प्रक्रिया का मुख्य चरण आमतौर पर वर्षों तक चलता है, कुछ के लिए लंबा और कुछ के लिए छोटा। उसके बाद, यह निरंतर पूरक के रूप में जारी रहता है। कई व्यक्तिगत अंतर होते हैं, लेकिन आमतौर पर प्रलोभन का चरण 18 और 60 वर्ष की आयु के बीच होता है। 60 वर्ष से अधिक आयु के लोग आमतौर पर - हालाँकि कुछ अपवाद भी हैं - कुछ सत्य या असत्य के प्रति पूरी तरह से आश्वस्त होते हैं।

पुनर्जन्म में सात अलग-अलग चरणों को पहचाना जा सकता है। इन चरणों का वर्णन उत्पत्ति के पहले और दूसरे अध्याय (उत्पत्ति 1 और 2) में सृष्टि की कहानी में किया गया है। सृष्टि की कहानी भौतिक जगत के जन्म का वर्णन नहीं है, जैसा कि कई लोग मानते हैं, बल्कि, अपने आध्यात्मिक अर्थ के अनुसार, यह बताती है कि ईश्वर मनुष्य का पुनर्जन्म कैसे करते हैं। उत्पत्ति पुस्तक का पहला अध्याय आध्यात्मिक मनुष्य के जन्म की व्याख्या करता है।

दूसरा अध्याय, श्लोक 18 तक, दिव्य मनुष्य के जन्म की व्याख्या करता है। आज बहुत कम लोग ही द्वितीय डिग्री से उच्चतर पुनर्जन्म की डिग्री प्राप्त कर पाते हैं, हालाँकि यह पूरी तरह से संभव है। 1757 से—वह वर्ष जब आत्माओं की दुनिया में स्वर्ग और नर्क के बीच संतुलन स्थापित हुआ—हमारे ग्रह पर सभी लोगों को कठिनाइयों और कष्टों के माध्यम से सातवें डिग्री तक पहुँचने का अवसर मिला है। हालाँकि, बहुत कम लोगों ने इस अवसर का लाभ उठाने का साहस किया है। पुनर्जन्म की उच्च डिग्री प्राप्त करते समय, व्यक्ति स्वयं को ऐसी परिस्थितियों में पाता है जिनसे पार पाने के लिए असाधारण साहस की आवश्यकता होती है। पुनर्जन्म की इन सात विभिन्न डिग्री का वर्णन स्वीडनबॉर्ग की रचना अर्काना कोएलेस्टिया के अंक 1-130 में किया गया है।

पहले आंतरिक व्यक्ति का पुनर्जन्म होना चाहिए, और उसके बाद ही आंतरिक व्यक्ति की सहायता से बाहरी व्यक्ति का पुनर्जन्म हो सकता है। आंतरिक व्यक्ति ही वह है जो व्यक्ति वास्तव में है। बाहरी व्यक्ति अन्य लोगों की संगति में अपनी इच्छानुसार कार्य कर सकता है। आजकल लोग केवल बाहरी व्यक्ति के आधार पर एक-दूसरे का मूल्यांकन करते हैं। हालाँकि, आध्यात्मिक जगत में सच्चा न्याय आंतरिक व्यक्ति पर आधारित होता है। इससे यह स्पष्ट विरोधाभास उत्पन्न होता है कि कई नियम-पालक और बाह्य रूप से धर्मपरायण लोग नरक में जाते हैं, जबकि कई कम धर्मपरायण माने जाने वाले लोग स्वर्ग जाते हैं। स्वीडनबॉर्ग नरक में ऐसे कई लोगों से मिलकर आश्चर्यचकित हुए जिनका सांसारिक जीवन पूरी तरह से निर्दोष रहा था।

जब आंतरिक व्यक्ति पुनर्जन्म की प्रक्रिया में होता है, तो आंतरिक और बाहरी व्यक्तियों के बीच एक युद्ध छिड़ जाता है, और जो जीतता है, वही शासन करता है। बुरे लोगों में, बाहरी व्यक्ति शासन करता है, और अच्छे लोगों में, आंतरिक व्यक्ति शासन करता है। इस युद्ध को प्रलोभन या परीक्षा कहा जाता है। प्रलोभन का तंत्र वर्तमान में ज्ञात नहीं है, हालाँकि इसे जानना पुनर्जन्म की पूरी प्रक्रिया को समझने की कुंजी है। आध्यात्मिक और दिव्य प्रलोभन केवल उन्हीं लोगों को अनुभव होते हैं जो स्वीडनबॉर्ग के धर्मशास्त्रीय कार्यों से परिचित हैं और ईश्वरीय सिद्धांत के अनुसार जीने का प्रयास करते हैं। अन्य धर्मों के सदस्यों को वास्तविक प्रलोभनों का सामना नहीं करना पड़ सकता, क्योंकि उनके पास दुष्ट आत्माओं से लड़ने के लिए कोई हथियार नहीं हैं। साहित्य में प्रलोभन का वर्णन बहुत कम मिलता है। उदाहरण के लिए, ऑगस्ट स्ट्रिंडबर्ग की कृति "इन्फर्नो" और दोस्तोवस्की की कहानी "द ड्रीम ऑफ़ अ रिडिकुलस मैन" में।

स्ट्रिंडबर्ग स्वयं स्वीडनबॉर्ग की रचनाओं को पढ़ने के बाद ही प्रलोभनों के शिकार हुए। मैं इसमें आर्काना कोएलेस्टिया के कुछ अंशों की सूची जोड़ूँगा जो पुनर्जन्म के बारे में अधिक विस्तृत जानकारी प्रदान करते हैं। ये अंक आर्काना कोएलेस्टिया के हैं। आर्काना कोएलेस्टिया अंग्रेजी में:
https://newchristianbiblestudy.org/swedenborg/

1. पुनर्जन्म क्या है और इसका कारण क्या है?

आज पुनर्जन्म के बारे में इतनी कम जानकारी क्यों है? कारण, 3761, 4136, 5398. मनुष्य सभी प्रकार की बुराइयों के साथ पैदा होता है और स्वयं में (प्रोप्रियम) शुद्ध बुराई है, 210, 215, 731, 874-876, 987, 1047, 2307, 2308, 3518, 3701, 3761, 8480, 8549, 8550, 8552, 10283, 10284, 10286, 10731. अपने वंशानुगत स्वभाव (हेरिडिटेरियम) के संदर्भ में, मनुष्य जंगली जानवरों से भी बदतर हैं, 637, 3175. इसलिए, मनुष्य स्वयं नरक के लिए प्राथमिकता महसूस करते हैं, 694, 8480. अर्थात्, जब तक मनुष्यों को उनके स्वयं से दूर नहीं किया जाता (प्रो-प्रियम), उन्हें बचाया नहीं जाएगा, 10731.
मानव का प्राकृतिक जीवन उसके आध्यात्मिक जीवन का विरोध करता है, 3913, 3928. एक व्यक्ति जो अच्छाई अपने लिए करता है, वह वास्तव में अच्छी नहीं होती, बल्कि वह उसके और संसार के लिए की जाती है, 8480. एक व्यक्ति का स्वार्थी स्व (प्रोप्रियम) दूर होना चाहिए ताकि प्रभु और स्वर्ग उपस्थित हो सकें, 1023, 1044. एक पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति में, स्वार्थी स्वत्व वास्तव में दूर हो जाता है, 9334–9336, 9452, 9454, 9938. इसलिए, एक व्यक्ति का पुनर्निर्माण होना चाहिए, अर्थात पुनर्जन्म होना चाहिए, 8549, 9450, 9938. वचन में, मनुष्य के निर्माण का अर्थ ठीक मनुष्य का पुनर्जन्म है, 16, 88, 10634.
पुनर्जन्म के माध्यम से, मनुष्य प्रभु के साथ एक हो जाता है, 2004, 9338. मनुष्य तब तक स्वर्ग में प्रवेश नहीं करता जब तक वह ऐसी अवस्था में न आ जाए कि प्रभु उसका मार्गदर्शन करें उसे अच्छाई के माध्यम से, यानी, जब तक वह पुनर्जन्म नहीं लेता, 8516, 8539, 8722, 9139, 9832, 10367। पुनर्जन्म न लेने वाले में, बाहरी आंतरिक पर हावी होता है, 3167, 8743। इस प्रकार, मानव जीवन जन्म से गलत क्रम में है, और बचाए जाने के लिए, इसे क्रम में रखा जाना चाहिए, 6507, 8552, 8553, 9258।

पुनर्जन्म का उद्देश्य यह है कि आंतरिक, या आध्यात्मिक, व्यक्ति बाहरी, या प्राकृतिक, व्यक्ति पर शासन करे, 911, 913। ऐसा तब होता है जब व्यक्ति का पुनर्जन्म होता है, 5128, 5651, 8743। क्योंकि पुनर्जन्म लेने वाला व्यक्ति अब आत्म-प्रेम और सांसारिक प्रेम से शासित नहीं होता, 8856, 8857। इस कारण, यह स्पष्ट है कि जब तक व्यक्ति का पुनर्जन्म नहीं होता, वह उद्धार नहीं पाएगा, अर्थात वह स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा, 5280, 8548, 8772, 10156। पुनर्जन्म में, मानव विकास हमेशा के लिए पूर्ण हो जाता है, 6648, 9334, 10048। पुनर्जन्म और अजन्मे के बीच का अंतर, 977, 986, 10156।

2. पुनर्जन्म किसका हो सकता है?

एक व्यक्ति तब तक पुनर्जन्म नहीं ले सकता जब तक उसे विश्वास के सत्य और प्रेम की अच्छाई का ज्ञान न हो, 677, 679, 711, 8635, 8638–8640, 10729। जो केवल सत्य में हैं, लेकिन अच्छाई में नहीं, उनका पुनर्जन्म नहीं हो सकता, 6567, 8725। जो अपने पड़ोसी के लिए प्रेम नहीं रखता, उसका पुनर्जन्म नहीं हो सकता, 989। जिनके पास विवेक है, उनका पुनर्जन्म हो सकता है, 2689, 5470। प्रत्येक व्यक्ति का पुनर्जन्म इस आधार पर हो सकता है कि वह प्रभु से कितनी अच्छाई और सच्चाई प्राप्त कर पाता है, 2967, 2975। और कौन पुनर्जन्म ले सकता है, और कौन पुनर्जन्म नहीं ले सकता, 2689। जो लोग अपने पड़ोसी के लिए विश्वास और प्रेम का जीवन जीते हैं, लेकिन इस सांसारिक दुनिया में पुनर्जन्म नहीं लेते, उनका आध्यात्मिक दुनिया में पुनर्जन्म हो सकता है, 989, 2490।

3. केवल स्वयं प्रभु ही पुनर्जन्म ले सकते हैं किसी व्यक्ति का पुनर्जन्म

प्रभु स्वयं किसी व्यक्ति का पुनर्जन्म करते हैं, और कोई अन्य व्यक्ति, यहाँ तक कि देवदूत भी, ऐसा नहीं कर सकते, 10067। किसी व्यक्ति का पुनर्जन्म प्रभु की महिमा का प्रतीक है: जिस प्रकार प्रभु ने अपनी मानवता को दिव्य बनाया, उसी प्रकार वे मनुष्य का पुनर्जन्म करते हैं, 3043, 3138, 3212, 3296, 3490, 4402, 5688, 10057, 10076। प्रभु संपूर्ण व्यक्ति का पुनर्जन्म करना चाहते हैं, न कि केवल उसके एक भाग का, 6138।

4. पुनर्जन्म पर कुछ और टिप्पणियाँ

विश्वास की सच्चाइयों और उनके अनुसार जीवन जीने से व्यक्ति का पुनर्जन्म होता है। प्रभु का यही तात्पर्य है जब वह कहते हैं: "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, जब तक कोई जल और आत्मा से न जन्मे वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता" (यूहन्ना 3:5)। जल विश्वास की सच्चाइयों का प्रतीक है, और आत्मा विश्वास की सच्चाइयों के अनुसार जीवन जीने का प्रतीक है, 10240। विश्वास की सच्चाइयों के माध्यम से आध्यात्मिक शुद्धि होती है, 2799, 5954, 7044, 7918, 9088, 10229, 10237। जब कोई व्यक्ति नया जन्म लेता है, तो सच्चाइयाँ अच्छाई से जुड़ जाती हैं, अर्थात वे जीवन में व्यावहारिक बातें बन जाती हैं, 880, 2189, 2574, 2697। पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति की दो अवस्थाएँ होती हैं: पहली अवस्था में, सत्य उसे अच्छाई की ओर ले जाता है; दूसरी अवस्था में, वह अच्छाई से कार्य करता है और सत्य को अच्छाई के परिप्रेक्ष्य से देखता है, 7992, 7993, 8505, 8506, 8510, 8512, 8516, 8643, 8648, 8658, 8685, 8690, 8701, 8772, 9227, 9230, 9274, 9509, 10048, 10057, 10058, 10076. एक ऐसे राज्य में व्यक्ति की गुणवत्ता जहाँ सत्य अच्छाई से अधिक महत्वपूर्ण है, 3610. इससे हम देखते हैं कि जब कोई व्यक्ति पुनर्जन्म की शुरुआत में होता है, तो वह सत्य से अच्छाई की ओर देखता है, लेकिन जब उसका पुनर्जन्म होता है, तो वह अच्छाई से सत्य की ओर देखता है, 6247. इस प्रकार, एक प्रकार का उलटा होता है, 6507.

यह ध्यान रखना चाहिए कि जब कोई व्यक्ति पुनर्जन्म की शुरुआत में होता है, तो सत्य केवल प्रतीत होता है कि पहले स्थान पर है। नए जन्म वाले व्यक्ति के लिए, अच्छाई पहले स्थान पर है और सत्य दूसरे स्थान पर, 3324, 3325, 3330, 3336, 3494, 3539, 3548, 3556, 3563, 3570, 3576, 3603, 3701, 4243, 4245, 4247, 4337, 4925, 4926, 4928, 4930, 4977, 5351, 6256, 6269, 6273, 8516, 10110। इसलिए भलाई ही पुनर्जन्म का आरंभ और अंत है, 9337. प्रेम की भलाई वास्तव में कलीसिया का ज्येष्ठ पुत्र है, और विश्वास का सत्य केवल प्रत्यक्ष है, 3325, 3494, 4925, 4926, 4928, 4930, 8042, 8080. इसी कारण से, प्रभु को ज्येष्ठ पुत्र कहा गया है, क्योंकि उसी से प्रेम की भलाई, अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम और विश्वास आता है, 3325.

मनुष्य दूसरी अवस्था (अर्थात भलाई की अवस्था) से पहली अवस्था (जहाँ सत्य स्पष्ट रूप से राज करता है) में नहीं लौट सकता। कारण, 2454, 3650-3651, 5895, 5897, 7857, 7923, 8505, 8506, 8510, 8512, 8516, 9274, 10184.

प्रभु का यही तात्पर्य है जब वह कहता है: "और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने के लिये पीछे न लौटे" (मत्ती 24:18)। मानव पुनर्जन्म की प्रक्रिया कैसे होती है, 1555, 2343, 2490, 2657, 2979, 3057, 3286, 3310, 3316, 3332, 3470, 3701, 4353, 5122, 5126, 5270, 5280, 5342, 6717, 8772, 8773, 9043, 9103, 10021, 10057, 10367. पुनर्जन्म के रहस्य मनुष्यों द्वारा ज्ञात या अनुभव नहीं किए जाते हैं, 3179, 9336. यही भगवान का मतलब है जब वह कहते हैं: "हवा जिधर चाहती है उधर चलती है। आप इसकी आवाज सुनते हैं, लेकिन आप यह नहीं बता सकते कि यह कहां से आती है या कहां जा रही है आत्मा" (यूहन्ना 3:8)। पुनर्जन्म के रहस्य असंख्य हैं, क्योंकि पुनर्जन्म मनुष्य के संपूर्ण सांसारिक और स्वर्गीय जीवन में चलता रहता है, 2679, 3179, 3584, 3665, 3690, 3701, 4377, 4551, 4552, 5122, 5126, 5398, 5912, 6751, 9103, 9258, 9296, 9297, 9334।

आध्यात्मिक मनुष्य की पुनर्जन्म प्रक्रिया, 2675, 2678, 2679, 2682। एक दिव्य व्यक्ति के पुनर्जन्म की प्रक्रिया एक आध्यात्मिक व्यक्ति से भिन्न होती है, 5113, 10124। एक दिव्य व्यक्ति भी अपनी इच्छा के अनुसार पुनर्जन्म लेता है, लेकिन एक आध्यात्मिक व्यक्ति केवल अपनी समझ के अनुसार पुनर्जन्म लेता है। भगवान आध्यात्मिक मनुष्य के बौद्धिक पक्ष में एक नई इच्छाशक्ति का निर्माण करते हैं।

भगवान पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति का पहले एक बच्चे के रूप में, फिर एक युवा के रूप में और अंततः एक वयस्क के रूप में मार्गदर्शन करते हैं, 3665, 3690, 4377-4379, 6751। पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति को धीरे-धीरे बाहरी मासूमियत की स्थिति से आंतरिक मासूमियत की स्थिति की ओर ले जाया जाता है, 9334, 9335, 10021, 10210। पुनर्जन्म की तुलना गर्भ में भ्रूण के विकास से की जा सकती है, 3570, 4931, 9258। इसलिए, वचन में, जन्म और जन्म देना पुनर्जन्म का वर्णन करते हैं; 613, 1145, 1255, 2020, 2584, 3860, 3868, 4070, 4668, 6239, 10204। नवजात शिशु अनेक विभिन्न अवस्थाओं से गुजरता है और धीरे-धीरे स्वर्ग की ओर, अर्थात् प्रभु के निकट, 6645 की ओर ले जाया जाता है।

प्रलोभन और किण्वन

प्रलोभन तीन प्रकार के होते हैं। स्वर्गीय प्रलोभन केवल उन्हीं को अनुभव होते हैं जो प्रभु से प्रेम करते हैं, अर्थात् जो प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार जीना चाहते हैं।

आध्यात्मिक प्रलोभन उन लोगों को अनुभव होते हैं जो अपने पड़ोसियों के प्रति प्रेम से रहते हैं, अर्थात् जो हर चीज़ में दूसरों के प्रति ईमानदारी और न्यायपूर्ण व्यवहार करते हैं।
प्राकृतिक प्रलोभन भी होते हैं, लेकिन ये शब्द के सही अर्थ में प्रलोभन नहीं हैं; बल्कि, ये दुर्घटनाओं, बीमारियों और अन्य सांसारिक विपत्तियों के कारण होते हैं। प्राकृतिक प्रलोभन आमतौर पर आध्यात्मिक और दिव्य प्रलोभनों के साथ-साथ होते हैं। एक प्राकृतिक विपत्ति तब प्रलोभन बन जाती है जब उसमें मानसिक पीड़ा शामिल हो। आध्यात्मिक प्रलोभनों में सत्य और असत्य के बीच संघर्ष शामिल होता है; दिव्य प्रलोभनों में अच्छाई और बुराई के बीच संघर्ष शामिल होता है। आगे, मैं मुख्यतः आध्यात्मिक प्रलोभनों पर ध्यान केंद्रित करूँगा।
इस संदर्भ में प्रलोभन शब्द कुछ भ्रामक है, क्योंकि आधुनिक फिनिश में इसका मुख्य अर्थ बुराई करने का प्रलोभन होता है, हालाँकि इसका वास्तविक अर्थ "परीक्षा" होना चाहिए, क्योंकि प्रलोभन में हमेशा ऐसी पीड़ा शामिल होती है जो निराशा की हद तक पहुँच जाती है। अंग्रेजी जैसी कई अन्य भाषाओं में, इसी शब्द का अर्थ बुराई करने का प्रलोभन हो गया है। हालाँकि, यूनानी शब्द से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि प्रलोभन का अर्थ है कष्ट जिसमें व्यक्ति की परीक्षा ली जाती है ताकि उसका वास्तविक स्वरूप प्रकट हो सके। प्रलोभन शब्द के अर्थ में यह परिवर्तन ही सिद्ध करता है कि हम इस घटना के बारे में बहुत कम जानते हैं। प्रलोभन के बिना, कोई भी पुनर्जन्म नहीं ले सकता और ईश्वर से ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता, यही कारण है कि आज इतने कम प्रबुद्ध लोग हैं।
आध्यात्मिक रूप से किसी को भी प्रलोभन नहीं दिया जा सकता, सिवाय उस व्यक्ति के जिसने अच्छाई और सत्य को आत्मसात कर लिया हो। व्यवहार में, इसका अर्थ है वह व्यक्ति जो नए चर्च की शिक्षाओं से परिचित हो और इन शिक्षाओं को अपने जीवन में लागू करता हो। केवल वे लोग ही प्रलोभन में आ सकते हैं जो अच्छाई और सत्य में जीते हैं। प्रलोभन का उद्देश्य यह है:

पुनर्जन्म लेने वाले को यह समझना चाहिए कि उनका पूर्व स्व, जो विरासत में मिली और स्वयं द्वारा उत्पन्न बुराई से बना है, केवल गंदगी और मैल है, और यह कि सारा सत्य और अच्छाई केवल प्रभु से आती है, अर्थात उनका नया स्व केवल प्रभु की रचना है।

दुष्ट लोगों को सताया नहीं जा सकता, क्योंकि उनकी दुष्टता और भी बढ़ जाएगी। दुष्ट लोग कभी-कभी दुर्भाग्य, बीमारियों और असफलताओं के माध्यम से आत्म-प्रेम और सांसारिक प्रेम से विमुख हो जाते हैं, और ये स्वाभाविक प्रलोभन हैं। यदि एक पुनर्जन्म प्राप्त मसीही को प्रलोभन न दिया जाए, तो वह अपनी वास्तविक दुष्टता को कभी नहीं जान पाएगा, क्योंकि जब वह सामान्य अवस्था में होता है, तो उसकी दुष्टता स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं होती। प्रलोभन घावों को खोल देता है, पहले से किए गए पापों और पाप करने के इरादों को प्रकट करता है। केवल प्रलोभन ही व्यक्ति को यह प्रकट करते हैं कि वह हृदय से पूरी तरह दुष्ट है। एक स्वाभाविक व्यक्ति यह नहीं जानता कि वह दुष्ट है। प्रलोभनों के माध्यम से, व्यक्ति यह भी स्पष्ट रूप से अनुभव करता है कि एक आध्यात्मिक दुनिया और दुष्ट आत्माएँ हैं। प्रलोभनों के बाहर, व्यक्ति अक्सर आध्यात्मिक दुनिया के अस्तित्व से अनभिज्ञ रहता है। सभी प्रलोभन पुनर्जन्म से जुड़ी दुष्ट आत्माओं से उत्पन्न होते हैं। दुष्ट और अच्छी आत्माएँ इस बात पर लड़ती हैं कि कौन किसी व्यक्ति पर विजय प्राप्त करेगा। दुष्ट आत्माएँ व्यक्ति के बाहरी स्वरूप से जुड़ी होती हैं, जबकि अच्छी आत्माएँ उसके आंतरिक स्वरूप से जुड़ी होती हैं। यदि दुष्ट आत्माएँ जीत जाती हैं, तो प्राकृतिक मनुष्य आध्यात्मिक मनुष्य पर हावी हो जाता है, और व्यक्ति दोबारा जन्म नहीं ले सकता। जब अच्छी आत्माएँ जीत जाती हैं, तो आध्यात्मिक मनुष्य प्राकृतिक मनुष्य पर हावी हो जाता है, और पुनर्जन्म की प्रक्रिया आगे बढ़ती है। परमेश्वर के वचन में, पृथ्वी प्राकृतिक मनुष्य का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए जो लोग आध्यात्मिक प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं, उन्हें पृथ्वी का राजा कहा जाता है (प्रकाशितवाक्य 21:24), क्योंकि वे अपने प्राकृतिक मनुष्य पर शासन करते हैं।
प्रलोभनों का महत्व यह है कि वे अच्छाई को बुराई पर और सत्य को असत्य पर शासन करने में सक्षम बनाते हैं। इस मामले में, सत्य अच्छाई से जुड़ा होता है, और असत्य और बुराई गायब हो जाते हैं। प्रलोभनों पर विजय प्राप्त करने से आंतरिक मनुष्यत्व प्रकट होता है और स्वार्थ तथा सांसारिक प्रेम की लालसाएँ टूट जाती हैं। इसके बाद, व्यक्ति को ज्ञान प्राप्त होता है और वह सत्य और असत्य, अच्छाई और बुराई को समझने में सक्षम होता है। इस ज्ञान प्राप्ति के बाद, व्यक्ति की बुद्धि दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है। प्रलोभनों के बाद ज्ञान प्राप्ति सर्वोच्च संभव ज्ञान प्राप्ति है, क्योंकि तब व्यक्ति प्रभु के दृष्टिकोण से चीजों को देखने में सक्षम होता है।

इसकी तुलना में, उदाहरण के लिए, "ज़ेन ज्ञानोदय" सार्वभौमिक जुड़ाव का एक प्रारंभिक भाव मात्र है। केवल प्रभु ही सद्बुद्धि की सहायता से मनुष्यों की ओर से प्रलोभनों से लड़ते हैं; यदि कोई व्यक्ति यह नहीं समझता कि वह स्वयं प्रलोभनों पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता, तो प्रलोभन उसके लिए केवल बाह्य और निरर्थक है। हल्के प्रलोभनों को किण्वन कहा जाता है। प्रभु ही मनुष्य को प्रलोभनों पर विजय पाने की शक्ति प्रदान करते हैं।
किण्वन सत्य और असत्य, अच्छाई और बुराई के बीच का संघर्ष भी है। अधर्म सत्य से जुड़ना चाहता है, लेकिन सत्य उसे अस्वीकार कर देता है, और अधर्म सत्य से उसी प्रकार अलग हो जाता है जैसे मदिरा के पात्र की तली में तलछट जम जाती है। किण्वन इस प्रकार के पुनर्जन्म को संदर्भित करता है, किण्वन की एक ऐसी अवस्था जिसमें सत्य और असत्य, अच्छाई और बुराई, अलग हो जाते हैं। किण्वन शब्द को खट्टापन शब्द से वर्णित किया गया है (उदाहरण के लिए, मत्ती 13:33)।
वास्तविक प्रलोभनों की तरह, किण्वन भी आधुनिक समय में एक अल्पज्ञात घटना है। बहुत से लोग अपने मन में सत्य और असत्य को लेकर भ्रमित हो जाते हैं और फिर उनके बीच अंतर नहीं कर पाते, क्योंकि इस अंतर के लिए या तो किण्वन या प्रलोभन की आवश्यकता होती है। किण्वन में, व्यक्ति किण्वन की एक ऐसी अवस्था में प्रवेश करता है जिसमें अच्छाई और सत्य के संबंध में कुछ चीजों की प्रकृति उसके सामने प्रकट होती है। किण्वन अवस्थाएँ अक्सर सांसारिक कठिनाइयों से जुड़ी होती हैं, जैसे तलाक, कार्यस्थल पर कठिनाइयाँ और रिश्तों की समस्याएँ।
कई वर्षों तक, मैंने ब्रह्मविद्या और मानवविद्या के कुछ साधकों के आध्यात्मिक विकास का अनुसरण किया, और मैंने देखा कि उनमें से कोई भी पुनर्जन्म के दूसरे चरण से आगे नहीं बढ़ पाया। दूसरे चरण में, व्यक्ति केवल आध्यात्मिक दुनिया के अस्तित्व के बारे में ही जानता है, लेकिन अभी तक अपनी आत्मा या विरासत में मिली बुराई के स्वरूप को नहीं जान पाता है। इस अवस्था का वर्णन निम्नलिखित शब्दों में किया गया है: "और परमेश्वर ने आकाश बनाया और आकाश के नीचे के जल को आकाश के ऊपर के जल से अलग कर दिया" (उत्पत्ति 1:7)। ये थियोसोफिस्ट ब्लावट्स्की, स्टाइनर आदि की रचनाएँ पढ़ते थे, और साथ ही स्वीडनबॉर्ग की रचनाएँ भी।

लेकिन चूँकि उन्होंने प्रलोभनों या उत्तेजना के आगे समर्पण नहीं किया था और इसलिए उन्हें प्रभु से ज्ञानोदय प्राप्त नहीं हुआ था, वे स्वीडनबॉर्ग और थियोसोफिस्टों के बीच अंतर नहीं कर पाए। हालाँकि थियोसोफी और एंथ्रोसोफी और स्वीडनबॉर्ग के कार्यों में स्पष्ट समानताएँ हैं, फिर भी उनमें एक भी वास्तविक सत्य नहीं है। विभिन्न थियोसोफिकल और एंथ्रोसोफिकल शिक्षाओं की लोकप्रियता इस तथ्य से उपजी है कि लोग ईश्वर की खोज नहीं कर रहे हैं, बल्कि अपनी समझ से आध्यात्मिक नियमों की खोज करना चाहते हैं।

पुनर्जन्म की प्रक्रिया का विकास

पुनर्जन्म हमेशा ईश्वर की खोज से शुरू होता है। "परन्तु पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो, तो ये सब वस्तुएँ तुम्हें मिल जाएँगी" (मत्ती 6:33)। उसके बाद, यह पश्चाताप के विभिन्न चरणों से होकर गुजरता है। आइए अब इस प्रक्रिया के व्यावहारिक पक्ष, अर्थात् पुनर्जन्म प्राप्त लोगों की जीवनशैली के बारे में थोड़ी बात करें।
जिस व्यक्ति का पुनर्जन्म हो रहा है, उसे पुनर्जन्म के शुरुआती चरणों में अपनी जीवनशैली में आमूल-चूल परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन निश्चित रूप से उसे पाप नहीं करना चाहिए। वह अन्य लोगों के साथ मेलजोल जारी रख सकता है और लगभग वह सब कुछ कर सकता है जो वह पहले करता था। हालाँकि, धीरे-धीरे उसके भीतर परिवर्तन होने लगते हैं, और वह कुछ चीज़ें छोड़ सकता है और हानिकारक रिश्ते तोड़ सकता है, लेकिन वह ऐसा अपनी नई समझ के अनुसार करता है। उसे शाकाहारी बनने की ज़रूरत नहीं है, न ही उसे धूम्रपान या शराब पीना छोड़ने की। शराब अक्सर पुनर्जन्म के लिए फायदेमंद होती है, क्योंकि यह आंतरिक मन की बुराई को बाहर निकालती है, जिसे पुनर्जन्म में पहचानना ज़रूरी है। शराब के प्रभाव में वंशानुगत बुराई की प्राथमिकताएँ भी प्रकट होती हैं। बेशक, पुनर्जन्म लेने वालों को शराब से जुड़े जोखिमों को याद रखना चाहिए।
पुनर्जन्म लेने वालों को एक स्वस्थ जीवनशैली का पालन करना चाहिए और विटामिन डी, सी, के2 और बी, साथ ही ज़िंक और मैग्नीशियम का सेवन करके अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली का भी ध्यान रखना चाहिए। अधिक वजन होने से भी बचना चाहिए। थोड़ी मात्रा में डार्क चॉकलेट खाने की सलाह दी जाती है। ढेर सारी सब्ज़ियाँ और वसायुक्त मछली। फल और मांस कम मात्रा में। कोई प्रसंस्कृत मांस उत्पाद नहीं, कोई प्रसंस्कृत चर्बी नहीं।

पुनर्जन्म लेने वालों को तथाकथित वैकल्पिक मीडिया भी पढ़ना चाहिए, क्योंकि मुख्यधारा का मीडिया यहूदियों द्वारा नियंत्रित है और यहूदी योजनाओं को आगे बढ़ाने वाला एक झूठा एजेंडा पेश करता है। अच्छा वैकल्पिक मीडिया, जो द्वितीय विश्व युद्ध, नरसंहार, हिटलर और राष्ट्रीय समाजवाद के मामले में यहूदी ब्रेनवॉशिंग का शिकार है।
जैसे-जैसे पुनर्जन्म की प्रक्रिया आगे बढ़ती है, पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति को अपने कई रिश्तों का पुनर्मूल्यांकन करना पड़ता है, और उन्हें अक्सर रिश्तेदारों या परिचितों के प्रलोभनों का सामना करना पड़ता है। ऐसे मामलों में, उन्हें अस्वस्थ रिश्तों को तोड़ने का साहस करना चाहिए, और उन्हें नए दोस्त और आध्यात्मिक रिश्तेदार मिलेंगे। यौन और विवाह में पवित्रता अत्यंत महत्वपूर्ण है, और पुनर्जन्म के उच्च स्तर केवल स्वर्गीय विवाह में ही प्राप्त किए जा सकते हैं।
एक पुनर्जन्म लेने वाला व्यक्ति उन लोगों के साथ भी मेलजोल कर सकता है जो आंतरिक रूप से बुरे हैं, लेकिन उन्हें सावधान रहना चाहिए कि वे उन लोगों के साथ आंतरिक रूप से आसक्त न हों जिनका पुनर्जन्म नहीं हुआ है। यदि एक पुनर्जन्म लेने वाला व्यक्ति किसी ऐसे रिश्तेदार या परिचित के साथ अत्यधिक आसक्त हो जाता है जिसका पुनर्जन्म नहीं हुआ है, तो यह मित्रता उसे पुनर्जन्म की प्रक्रिया में नीचे खींच लेगी। यह पुनर्जन्म न पाए हुए व्यक्ति से जुड़ी दुष्ट आत्माओं के कारण होता है। पुनर्जन्म प्राप्त व्यक्ति को भी किसी भी व्यक्ति के प्रति आंतरिक रूप से आसक्त नहीं होना चाहिए, बल्कि केवल उस व्यक्ति में जो अच्छाई और सच्चाई है, उससे ही जुड़ना चाहिए। धीरे-धीरे, प्रभु की सहायता से, वह सभी चीज़ों के आवश्यक पहलुओं को देखना सीखता है, अर्थात्, उनमें क्या अच्छाई और बुराई है। इस स्थिति में, बुरी चीज़ें भी उसके पुनर्जन्म को बढ़ावा देती हैं, या तो प्रलोभनों के रूप में या बुराई, अच्छाई के स्वरूप को स्पष्ट करती है।
हालाँकि, कुछ ऐसे कार्य हैं जो एक पुनर्जन्म प्राप्त मसीही को प्रतिदिन करने चाहिए। उसे ऊपर वर्णित तरीके से पश्चाताप का अभ्यास करना चाहिए: उसे दस आज्ञाओं के दृष्टिकोण से अपने कार्यों और इरादों की जाँच करनी चाहिए और उनका पश्चाताप करना चाहिए, परमेश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए, और प्रार्थना के माध्यम से उनसे सहायता माँगनी चाहिए। प्रार्थना करने का सबसे अच्छा तरीका इस प्रकार है:
प्रभु परमेश्वर उद्धारकर्ता, यीशु मसीह, स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर, मेरे साथ रहें और मेरा मार्गदर्शन करें और मुझे शिक्षा दें, मेरी रक्षा करें और मेरा नेतृत्व करें, सभी बातों में, अभी और हमेशा और हमेशा के लिए। आमीन।

इस प्रकार प्रार्थना करते समय, व्यक्ति को यीशु के बारे में उसी रूप में सोचना चाहिए जैसा वह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक (प्रकाशितवाक्य 1:13-16) में प्रस्तुत है। उसे ऐसा प्रतिदिन करना चाहिए। इसके बाद, उसे सावधानीपूर्वक पाप से बचना चाहिए, और यदि वह पाप में पड़ भी जाए, तो उसे और भी अधिक दृढ़ता से पश्चाताप करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, उसे प्रतिदिन परमेश्वर के वचन का एक अंश पढ़ना चाहिए और वचन के सत्यों पर मनन करना चाहिए। इस अध्याय में प्रस्तुत पश्चाताप पुनर्जन्म, अर्थात् आध्यात्मिक बुद्धि के विकास के लिए सबसे प्रभावी तरीका है।

जिनका पुनर्जन्म हो रहा है, उन्हें सभी चीजों को सत्य और भलाई के संदर्भ में परखने का प्रयास करना चाहिए। अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम का अभ्यास करने के लिए, उसे अपने सभी व्यावसायिक और अन्य कर्तव्यों को अच्छी तरह और ईमानदारी से निभाना चाहिए और अपने सभी कार्यों में ईमानदारी और न्याय का पालन करना चाहिए। उसे कभी भी अपने व्यक्तिगत भौतिक हितों को ईमानदारी और न्याय से ऊपर नहीं रखना चाहिए, बल्कि आध्यात्मिक हानि के बजाय भौतिक हानि उठानी चाहिए।

पुनर्जन्म प्राप्त व्यक्ति को चर्च जाने या अन्य सार्वजनिक पूजा-अर्चना में भाग लेने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि दैनिक पश्चाताप ही उसकी ईश्वर-आराधना है। वचन में दैनिक बलिदान का यही अर्थ है (दानिय्येल 12:11)। न ही उन्हें दृढ़ या धर्मपरायण दिखने की आवश्यकता है, बल्कि वे आनंदित और चंचल हो सकते हैं। पुनर्जन्म प्राप्त व्यक्ति अच्छे हास्य-विनोद की भी सराहना करता है, क्योंकि हास्य सत्य और असत्य, अच्छाई और बुराई के एक साथ बोध से उत्पन्न होता है। अत्यधिक विकसित हास्य-विनोद पुनर्जन्म प्राप्त व्यक्ति की एक विशेषता है। दुष्ट लोग भी हास्य-विनोद का आनंद लेते हैं, लेकिन एक बिल्कुल अलग तरीके से।

पुनर्जन्म न पाए हुए व्यक्ति के लिए किसी व्यक्ति के पुनर्जन्म की सीमा का आकलन करना असंभव है, और पुनर्जन्म प्राप्त व्यक्ति के लिए भी यह कठिन है। इसके अलावा, किसी के लिए भी दूसरों के आध्यात्मिक विकास का आकलन करने का प्रयास करना अच्छा नहीं है: "दोष न लगाओ, कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए" (मत्ती 7:1)। पुनर्जन्म लेने वाली आत्मा की अवस्था का सूक्ष्मतम विवरण भी केवल ईश्वर ही जानता है। हालाँकि, विकास के स्तर के कुछ सामान्य संकेतक प्रस्तुत करना उचित है।

भोगवादी लोग मानव विकास को एक रेखीय तरीके से समझते हैं: वे पृथ्वी पर एक सफल जीवन को आदर्श मानते हैं। आध्यात्मिक और विशेष रूप से दिव्य लोग शरीर की मृत्यु के बाद के जीवन को अधिक महत्व देते हैं।

पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति को अक्सर ऐसे संकटों का सामना करना पड़ता है जिनमें उसकी सांसारिक सफलता प्रभावित होती है। हालाँकि, ये संकट ऐसे परीक्षण और क्लेश हैं जो पुनर्जन्म की प्रक्रिया में बहुत लाभकारी होते हैं। ये पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति के आत्म-प्रेम और सांसारिक प्रेम को तोड़ने में मदद करते हैं। ऐसे संकटों में काम, पढ़ाई, विवाह और रिश्तों में असफलताएँ और कठिनाइयाँ शामिल हैं। तीव्र मानसिक टूटन, शारीरिक बीमारियाँ, दुर्घटनाएँ और यहाँ तक कि कारावास भी उपयोगी संकट—किण्वन—हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, लेखक फ्योदोर दोस्तोयेव्स्की का एक ईसाई के रूप में विकास उनके कठोर श्रम की सजा से बहुत प्रभावित था। वही चीज़ें जो पुनर्जन्म न पाए हुए व्यक्ति के लिए केवल कष्ट हैं, पुनर्जन्म लेने वाले व्यक्ति के लिए आशीर्वाद हो सकती हैं। ईश्वरीय विधान प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के छोटे से छोटे विवरण का भी मार्गदर्शन करता है।

किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास का स्तर उसके आंतरिक सत्यों की संख्या, गुणवत्ता और क्रम से निर्धारित होता है। एक उच्च पुनर्जन्म वाले व्यक्ति का मन एक सौरमंडल के समान होता है, जिसके केंद्र में ईश्वर संबंधी सत्य होते हैं, जो आकाशीय और आध्यात्मिक सत्यों से घिरा होता है, और इनके बाहर, ग्रहों की तरह, प्राकृतिक और भौतिक सत्य होते हैं। पुनर्जन्म न पाए हुए व्यक्ति के लिए, सत्यों का क्रम उलटा होता है। हालाँकि, ये सत्य तब तक आत्मसात नहीं होते जब तक कि वे संगत अच्छाई या लाभों से संबद्ध न हो जाएँ।

देवदूत किसी व्यक्ति के पुनर्जन्म की डिग्री का आकलन उसके द्वारा बोले गए कुछ शब्दों से कर सकते हैं। इसी प्रकार, एक आकाशीय व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के आध्यात्मिक गुणों का उसकी वाणी के स्वर से अनुभव कर लेता है। दूसरी ओर, किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास के स्तर का निर्धारण उसके बाह्य व्यवहार से नहीं किया जा सकता। मैंने परामनोविज्ञान, ब्रह्मविद्या, अध्यात्मवाद और मानवशास्त्र के कई उत्साही लोगों को देखा है और पाया है कि उनमें से अधिकांश लोग लोगों को केवल बाह्य तरीकों से ही मापते हैं। कई अन्य आस्तिक भी ऐसा ही करते हैं। ऐसे लोग मानते हैं कि मांस खाना, तंबाकू पीना, शराब पीना और ऐसी ही अन्य आदतें निम्न स्तर के विकास का संकेत देती हैं। हालाँकि, ऐसे कारक तब तक ज़्यादा मायने नहीं रखते जब तक कोई व्यक्ति इन्हें सबसे ज़्यादा महत्व न दे। बेशक, स्वस्थ जीवनशैली किसी के लिए भी बुरी नहीं है, लेकिन इनका मन के आंतरिक स्तरों से कोई लेना-देना नहीं है, जो तभी खुलते हैं जब कोई व्यक्ति ईश्वर के नियमों के अनुसार जीवन जीता है।

दूसरी ओर, अस्वास्थ्यकर जीवनशैली भी ऐसे प्रलोभन हो सकते हैं जिन पर पुनर्जन्म लेने वाले को विजय प्राप्त करनी ही होगी।
कई कामुक लोग उत्साही स्वास्थ्य प्रेमी होते हैं। स्वास्थ्य के प्रति उत्साह अक्सर यह दर्शाता है कि पदार्थ को आत्मा से अधिक महत्व दिया जाता है। इसी कारण, जीवित परमेश्वर के अवतार यीशु मसीह ने लोगों को सब्ज़ियाँ खाना या स्वास्थ्यवर्धक चाय पीना नहीं सिखाया, न ही उन्होंने कोई बाहरी वैभव धारण किया, बल्कि एक साधारण मनुष्य का रूप धारण किया। ऐसा इसलिए था ताकि लोग बाहरी चीज़ों से नहीं, बल्कि उनके द्वारा सिखाई गई आंतरिक चीज़ों से आसक्त हों। यहूदी यीशु को उनकी आंतरिक शिक्षाओं के कारण ही सहन नहीं कर सके; यहूदी एक ऐसा राजा चाहते थे जो उन्हें दुनिया का शासक बनाए। कई पूर्वी "गुरु" जिन्हें पश्चिम में महान आध्यात्मिक गुरु के रूप में सम्मानित किया जाता है, वास्तव में ऐसे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर का कोई ज्ञान नहीं है।
वे लोग जिन्हें प्रभु परीक्षाओं के माध्यम से पुनर्जन्म देते हैं, उनके नए चर्च के सदस्य हैं। नए चर्च के सदस्यों के लिए यह आवश्यक है कि वे दूसरों से अधिक बुद्धिमान बनें। हालाँकि, उनकी बुद्धिमत्ता स्वार्थी चालाकी से नहीं आती—जिसे कई कामुक लोग बुद्धिमत्ता का एकमात्र रूप मानते हैं—बल्कि स्वयं प्रभु से आती है, जो उन्हें अच्छे और बुरे, सत्य और असत्य में अंतर करने की समझ प्रदान करते हैं। एक उच्च स्तर का पुनर्जन्म प्राप्त व्यक्ति एक कामुक व्यक्ति को कट्टर या पागल भी लग सकता है, लेकिन यह केवल कामुक व्यक्ति की अपनी विकृतियों के कारण होता है: नरक के दृष्टिकोण से, एक स्वर्गीय व्यक्ति पागल प्रतीत होता है। स्वर्ग से देखने पर, कामुक व्यक्ति स्वयं पागल है, और स्वर्ग से देखने पर, चीज़ें वैसी ही हैं जैसी वे वास्तव में हैं।
विवाह नए चर्च में एक केंद्रीय भूमिका निभाता है, क्योंकि यह स्वयं प्रभु और चर्च का विवाह है (प्रकाशितवाक्य 21:9)। हालाँकि, वर्तमान स्वीडनबोर्गियन कलीसियाएँ अभी तक इस विवाह में नहीं रहती हैं, क्योंकि वे वैवाहिक प्रेम के प्रलोभनों के अधीन नहीं हुई हैं।

हालाँकि, वास्तविक नया चर्च पृथ्वी पर पहले ही जन्म ले चुका है। इसकी शुरुआत एक विवाहित जोड़े से हुई, ठीक पहले की सच्ची कलीसियाओं की तरह (पुराने नियम का वचन समझाया गया, पृष्ठ 3239)। नया दिव्य रहस्योद्घाटन अभी वास्तविक नए चर्च की शुरुआत नहीं है, बल्कि इस रहस्योद्घाटन से जुड़ी अच्छाई ही चर्च का निर्माण करती है। विवाहित जोड़ा अच्छाई और सच्चाई के इस मिलन का प्रतीक है, और इसलिए नया चर्च उस विवाहित जोड़े से शुरू होता है जिसमें ऐसा मिलन पहली बार साकार हुआ था। यह पहला विवाहित जोड़ा अंतरतम स्वर्ग से प्रवाह को खोलता है, जो वैवाहिक प्रेम का स्वर्ग है।
स्वीडनबॉर्ग की कलम से प्राप्त रहस्योद्घाटन पर आधारित नया चर्च, कई मायनों में पिछले प्रामाणिक चर्चों से भिन्न है। यह हमारे ग्रह पर अंतिम और शाश्वत चर्च है (दानिय्येल 2:44)। आध्यात्मिक दुनिया के सभी रहस्य इसके सामने प्रकट हो चुके हैं (प्रकाशितवाक्य 14:6)। इसके सदस्य परीक्षाओं के माध्यम से शुद्ध होते हैं और बुद्धिमान बनते हैं (दानिय्येल 12:4)। वास्तव में, यह पुस्तक नए चर्च की शुरुआत है, क्योंकि इस पुस्तक में अंतरतम स्वर्ग के प्रभाव से कई बातें प्रकाशित होती हैं। यह पुस्तक परीक्षाओं और पुनर्जन्म की प्रक्रिया के बारे में जानकारी प्रस्तुत करती है, जो पुनर्जन्म लेने वालों के लिए आवश्यक है। इस पुस्तक के कई नए संस्करण प्रकाशित होंगे, जिनमें अंतरतम स्वर्ग के प्रकाश में घटनाओं का परीक्षण किया जाएगा। नए चर्च के पादरियों द्वारा रचित पुस्तकों की यह श्रृंखला, नए चर्च के धर्मशास्त्र को व्यवहार में लागू करती है। इसलिए यह नए रहस्योद्घाटन का विस्तार नहीं, बल्कि उसका एक अनुप्रयोग है। हालाँकि, इस अनुप्रयोग के बिना, नया चर्च नया चर्च नहीं होता, क्योंकि केवल ऐसा अनुप्रयोग ही नए रहस्योद्घाटन के संबंध में लाभदायक है।
नया चर्च एक शाश्वत चर्च है क्योंकि उसके पास आध्यात्मिक दुनिया के नियमों का ज्ञान है। नए चर्च का लागू धर्मशास्त्र नरक के उन आक्रमणों को प्रकट करता है जो पुनर्जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए खतरा हैं। नए चर्च का धर्मशास्त्र बुराई को उसके सभी रूपों में प्रकट करता है, और कोई भी बुराई नए चर्च को धोखा नहीं दे सकती। नए चर्च से शुरू में नफ़रत की जाएगी और उसे सताया जाएगा क्योंकि वह दुनिया की बुराई को प्रकट करता है।

नया चर्च हमारे समय के धर्मों के अन्याय, यहूदियों और फ्रीमेसन की गुप्त आकांक्षाओं, विज्ञान और कलाओं के भ्रष्टाचार आदि को उजागर करता है। बुराई और झूठ का प्रकटीकरण प्रभु का आगमन है, क्योंकि बुराई और झूठ को जाने बिना किसी का पुनर्जन्म नहीं हो सकता। विशेष रूप से, नए चर्च का कार्य यहूदियों, या खज़ारों, के षड्यंत्रों का पर्दाफाश करना है, क्योंकि वे समस्त मानवता के अस्तित्व के लिए खतरा हैं। खज़ारों का पर्दाफाश करना अपने पड़ोसी के प्रति, अर्थात् समस्त मानवता के प्रति प्रेम का एक उच्च स्तर है। यह तथ्य कि वास्तव में नया चर्च फ़िनलैंड में शुरू हुआ, अन्य राष्ट्रों की तुलना में फ़िनिश लोगों की असाधारण प्रकृति पर आधारित है: एक राष्ट्र के रूप में, फ़िनिश लोग व्यक्तिवाद के मामले में अन्य राष्ट्रों की तुलना में अधिक विकसित हुए हैं। इसी कारण, फ़िनिश लोग, उदाहरण के लिए, स्वीडन के लोगों की तुलना में अधिक कठोर प्रलोभनों का सामना करने में सक्षम हैं। हालाँकि, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से, फ़िनिश लोग विदेशी कचरा संस्कृति के प्रभाव में भी पीछे हटने लगे हैं।
व्यक्तिवाद दो प्रकार का होता है: पुनर्जन्म न पाए हुए लोगों में, यह स्वतंत्रता और आत्म-केंद्रितता के रूप में प्रकट होता है; पुनर्जन्म प्राप्त लोगों में, व्यक्तिवाद सांसारिक कठिनाइयों की परवाह किए बिना ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण करने के साहस के रूप में प्रकट होता है।

पुनर्जन्म में बाधक कारक

सामान्यतः, किसी व्यक्ति के मन में मौजूद बुराइयाँ और बुराइयाँ उसके आध्यात्मिक विकास में बाधाएँ बनती हैं। विशेष रूप से, धार्मिक त्रुटियाँ मन के आध्यात्मिक और दिव्य स्तरों को खुलने से रोकती हैं। आज के कई तथाकथित विश्वासी वास्तव में दुष्टात्माओं के नियंत्रण में हैं, हालाँकि वे स्वयं मानते हैं कि वे प्रभु में रह रहे हैं। सबसे बुरी धार्मिक त्रुटियाँ स्वयं प्रभु की अवधारणा से संबंधित हैं। यदि कोई व्यक्ति अपने हृदय में यीशु की दिव्यता को नकारता है, भले ही उसे यह ज्ञान वचन के माध्यम से प्राप्त हुआ हो, तो जब तक वह इसे नकारता रहेगा, उसकी चेतना के उच्च स्तर बंद रहेंगे। यही बात तब भी लागू होती है जब कोई व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में दस आज्ञाओं का पालन करने की परवाह नहीं करता।

थियोसॉफी और एंथ्रोपोसॉफी जैसे सिद्धांत विशेष रूप से हानिकारक हैं, जो इस धारणा पर आधारित हैं कि व्यक्ति अपनी बुद्धि से आध्यात्मिक जगत के नियमों को समझ सकता है—अर्थात, ईश्वर से ज्ञान प्राप्त किए बिना। इन सिद्धांतों के अनुयायी ज्ञान प्राप्त किए बिना ही रह जाते हैं और एक प्रकार के आस्तिक बन जाते हैं जो लगभग किसी भी असत्य को सत्य मान लेते हैं, चाहे वह किसी सम्मानित थियोसोफिस्ट से ही क्यों न आया हो।

अपनी बुद्धि का महिमामंडन पुनर्जन्म के लिए बहुत हानिकारक है। एक व्यक्ति का पुनर्जन्म तब तक नहीं हो सकता जब तक वह यह न समझ ले कि उसकी अपनी बुद्धि व्यर्थ है और सारी बुद्धि और ज्ञान केवल ईश्वर से ही प्राप्त होता है। जब मैं कई वर्षों तक "अत्यधिक बुद्धिमान" लोगों के अंतर्राष्ट्रीय संघ, मेन्सा का सदस्य रहा, तब मुझे अपनी बुद्धि का सम्मान करने की निरर्थकता का एक बहुत स्पष्ट विचार प्राप्त हुआ। मेन्सा के सदस्यों का चयन संगठन के लिए बुद्धि परीक्षण के माध्यम से किया जाता है। सदस्यों को एक ऐसा परीक्षा परिणाम प्राप्त करना होता है जो 98% जनसंख्या से बेहतर हो। इस परीक्षा में विशिष्ट कार्य होते हैं जिनमें एकाग्रता और त्वरित तार्किक तर्क की आवश्यकता होती है। यह परीक्षण वास्तविक बुद्धि का मापन नहीं करता, बल्कि अकादमिक मनोविज्ञान की अज्ञानता को दर्शाता है। स्वीडन-बोर्ग की कृति "तर्कसंगत मनोविज्ञान" आज भी उपलब्ध सर्वोत्तम मनोविज्ञान पाठ्यपुस्तक है, जो मानव मन के विभिन्न कार्यों और आत्मा व शरीर के बीच परस्पर क्रिया की व्याख्या करती है।

आध्यात्मिक विषयों में रुचि रखने वाले कई लोगों को पुनर्जन्म से रोकने का एक और महत्वपूर्ण कारण यह है कि वे पुनर्जन्म नहीं ले पाते। अर्थात्, एक ऐसी सोच जिसमें व्यक्ति ईमानदारी से सत्य की खोज करता है, लेकिन यदि उन हितों और सत्य के बीच कोई टकराव हो, तो अपने व्यक्तिगत हितों को त्यागने के लिए तैयार नहीं होता। ऐसे मामलों में, व्यक्ति प्रलोभन में आ जाता है और सत्य से ज़्यादा अपने हितों को महत्व देता है। ऐसे लोग अक्सर परामनोवैज्ञानिक और ब्रह्मविद्या संबंधी साहित्य का भरपूर अध्ययन करते हैं, लेकिन यह समझ नहीं पाते कि व्यक्तिगत प्रलोभन ही आत्मज्ञान का एकमात्र मार्ग है। प्रलोभनों में, केवल ईश्वर ही सहायता कर सकता है, जो सर्वज्ञ होने के कारण पुनर्जन्म लेने वाली आत्मा के सबसे गुप्त कोनों को भी जानता है।

एक बार स्वीडन में मेरी मुलाकात एक बुज़ुर्ग सज्जन से हुई, जिनसे मेरी स्वीडनबोर्ग के बारे में बातचीत हुई। पता चला कि वह स्वीडिश मेसोनिक ऑर्डर से संबंधित था और उच्चतम स्तर तक पहुंच चुका था।

उन्होंने मुझे अपना पुस्तकालय दिखाया, जो रहस्यवाद पर साहित्य का अब तक का सबसे विशाल संग्रह था। उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें स्वीडनबॉर्ग की रचनाओं में परम सत्य मिला है। मैं यह जानकर आश्चर्यचकित हुआ और पूछा कि क्या स्वीडिश फ्रीमेसन स्वीडिश-डेनबॉर्गियन हैं। उन्होंने उत्तर दिया कि उनमें से सर्वश्रेष्ठ स्वीडिश फ्रीमेसन ही थे। उन्होंने मुझे यह भी बताया कि वे लंबे समय से पुनर्जन्म में विश्वास करते थे, जब तक कि स्वीडनबॉर्ग ने उन्हें इस भ्रांति से मुक्त नहीं कर दिया। निस्संदेह, इस सज्जन ने स्वीडनबॉर्ग की रचनाओं का महत्व समझ लिया था, लेकिन क्या मेसोनिक ऑर्डर का गुप्त शिक्षण कार्यक्रम, जिसमें प्रकाश और अनुष्ठान शामिल हैं, वास्तव में इसके लिए आवश्यक है?

फ्रीमेसन का गुप्त शिक्षण कार्यक्रम और उनके सदस्यों को बाध्य करने वाली शपथें बताती हैं कि संगठन का वास्तविक उद्देश्य अपने सदस्यों के आध्यात्मिक विकास में मदद करना नहीं, बल्कि कुछ और है। इस संगठन के इतिहास से, हम जानते हैं कि यह कई क्रांतिकारी आंदोलनों का सूत्रधार रहा है और राजनीतिक और आर्थिक षड्यंत्रों में शामिल रहा है। इस संगठन की स्थापना संभवतः यहूदी बैंकरों ने 1700 के दशक के आरंभ में की थी। मेरी जानकारी के अनुसार, यह संगठन गुप्त यहूदी संगठन B'nai B'rith के मार्गदर्शन में आज भी काम कर रहा है। मैं किसी को भी इस कुख्यात संगठन में शामिल न होने की पुरज़ोर सलाह देता हूँ।

कई फ़्रीमेसन स्वयं इस बात से अनभिज्ञ हैं कि इस संगठन का असली उद्देश्य सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित व्यक्तियों को खज़ारों के लक्ष्यों से जोड़ना है। मेसोनिक संगठन की मदद से, खज़ार नेता उन प्रतिभाशाली व्यक्तियों को, जो राष्ट्रीय हितों को दृढ़ता से बढ़ावा देते हैं, सभी देशों में नेतृत्व के पदों पर पहुँचने से रोकना चाहते हैं। इस तरह, वे यहूदी वर्चस्व के लिए अपनी नस्लवादी योजनाओं को अंजाम देने के लिए अन्य राष्ट्रों को कमज़ोर करते हैं। वे उन राजनेताओं और अन्य लोगों को सताते और मार डालते हैं जो उनकी शक्ति का विरोध करने का साहस करते हैं। मीडिया पर उनकी अपार शक्ति है, जिसका उपयोग वे अपने विरोधियों को बदनाम करने के लिए करते हैं। फ़्रीमेसन, राष्ट्रों को अपने अधीन करने के लिए खज़ारों का सबसे प्रभावी हथियार हैं। इसकी मदद से, यहूदियों ने राष्ट्रों को कमज़ोर किया है, और वे आज भी अपनी अंतर्राष्ट्रीय शक्ति के लिए इसी पर निर्भर हैं।

प्रत्येक आध्यात्मिक रूप से विकसित व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह मानवता की रक्षा के लिए खज़ारों और फ़्रीमेसन के प्रयासों का विरोध करे।

प्रलोभनों पर विजय

जैसा कि बताया गया है, प्रलोभन दुष्ट आत्माओं द्वारा किए गए आक्रमण हैं। दुष्ट आत्माएँ उन लोगों को प्रलोभित करती हैं जिनका पुनर्जन्म हो रहा है, और वे उन लोगों को पीड़ा देती हैं जिनका पुनर्जन्म नहीं हो रहा है। प्रलोभन कई रूपों में प्रकट होते हैं। अक्सर, दुष्ट आत्माएँ एक ऐसा प्रवाह उत्पन्न करती हैं जिससे विभिन्न जुनूनी विचार उत्पन्न होते हैं। कभी-कभी वे अपराधबोध की तीव्र भावनाएँ उत्पन्न करती हैं। प्रलोभनों का स्पष्ट संकेत अंत में निराशा की भावना है। यदि निराशा की भावना नहीं है, तो दुष्ट आत्माओं के आक्रमण वास्तविक प्रलोभन नहीं, बल्कि पीड़ा कहलाते हैं। निराशा इसलिए उत्पन्न होती है क्योंकि प्रलोभन व्यक्ति के प्रबल प्रेम, अर्थात् उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रेम, की परीक्षा लेते हैं।
प्रलोभनों में, दुष्ट आत्माएँ व्यक्ति की अपनी स्मृति को सक्रिय करती हैं और उसके जीवन में किए गए सभी बुरे कार्यों को सामने लाती हैं। दुष्ट आत्माएँ व्यक्ति को उन धार्मिक सत्यों पर संदेह करने के लिए भी प्रेरित करती हैं जिन्हें उसने अभी-अभी सीखा है। प्रलोभनों के साथ पसीना आना, साँस लेने में तकलीफ़, दिल की धड़कन तेज़ होना, मतिभ्रम, और तीव्र अवसाद व चिंता हो सकती है, जो व्यक्ति को निराशा के कगार पर पहुँचा देती है। कभी-कभी प्रलोभनों के साथ तीव्र पीड़ा भी होती है। यह पीड़ा हमेशा उस अंग से संबंधित होती है जो प्रलोभन की आध्यात्मिक प्रकृति से मेल खाती है। उदाहरण के लिए, दिव्य प्रलोभन हृदय में दर्द और तेज़ धड़कन पैदा कर सकते हैं, जबकि आध्यात्मिक प्रलोभन साँस लेने में तकलीफ़ का कारण बन सकते हैं।
प्रलोभनों के दौरान, व्यक्ति का स्वर्ग से संबंध अस्थायी रूप से कमज़ोर हो जाता है। एक प्रलोभन एक पल से लेकर महीनों या वर्षों तक भी चल सकता है। प्रलोभन हमेशा प्रासंगिक होते हैं: ईश्वर किसी व्यक्ति की बुद्धि की नहीं, बल्कि उसकी इच्छाशक्ति की परीक्षा लेता है। मनुष्य ईश्वर को धोखा नहीं दे सकता, जो उसकी आत्मा की छोटी से छोटी बात भी जानता है। प्रलोभनों में, मनुष्यों को पूरी तरह से प्रभु यीशु मसीह पर भरोसा करना चाहिए, अन्यथा वे प्रलोभन से हार जाएँगे।

आध्यात्मिक प्रलोभन सत्य और असत्य से संबंधित होते हैं और इस प्रकार माता से विरासत में मिली बुराई से संबंधित होते हैं। दिव्य प्रलोभन अच्छाई और बुराई से संबंधित होते हैं और इस प्रकार पिता से विरासत में मिली बुराई से संबंधित होते हैं। आध्यात्मिक प्रलोभनों में, पुनर्जन्म न पाई हुई माता के साथ संबंध अक्सर बिगड़ जाता है; दिव्य प्रलोभनों में, पुनर्जन्म न पाए हुए पिता के साथ संबंध बिगड़ जाता है।

पीड़ा में मनोविकृति और तंत्रिकाविकृति के साथ कुछ समानताएँ हैं। मनोविकृति और तंत्रिकाविकृति भी दुष्ट आत्माओं के प्रभाव के कारण होती हैं। इस मुद्दे पर अन्य लोगों के अलावा, अमेरिकी मनोवैज्ञानिक विल्सन वैन ड्यूसन ने भी चर्चा की है। प्रलोभन और मानसिक रोग के बीच अंतर यह है कि प्रलोभन में, जिस व्यक्ति को प्रलोभन दिया जा रहा है, उसका स्वस्थ मन और समझ बनी रहती है। प्रभु प्रलोभन में आने वालों की रक्षा करते हैं ताकि दुष्ट आत्माएँ मानव मन के विवेकशील भाग को प्रभावित न कर सकें। मनोविकृति और तंत्रिकाविकृति में, दुष्ट आत्माओं का प्रभाव मन के इस भाग तक भी फैल सकता है। मनोविकृति और तंत्रिकाविकृति पुनर्जन्म न पाए हुए व्यक्तियों की बीमारियाँ हैं, क्योंकि उन्हें प्रभु की सुरक्षा का अभाव होता है। पुनर्जन्म में, दुष्ट आत्माएँ मनोविकृति या तंत्रिकाविकृति का कारण नहीं बनतीं, बल्कि प्रलोभन या किण्वन का कारण बनती हैं।

पुनर्जन्म व्यक्ति को दुष्ट आत्माओं की शक्ति से मुक्त करता है। इस प्रकार, दिव्य सिद्धांत मानसिक रोगों के उपचार की कुंजी भी है। भौतिकवादी मनोविज्ञान और मनोरोग विज्ञान आध्यात्मिक जगत के नियमों से अपरिचित हैं और इसलिए मानसिक रोगों का उपचार करने में असमर्थ हैं।

प्रलोभनों की सटीक क्रियाविधि स्वीडन-बोर्ग की कृति "अर्काना कोएलेस्टिया" में बताई गई है, जो पुनर्जन्म चाहने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए अत्यंत उपयोगी रचना है। बाइबल और अर्काना कोएलेस्टिया की सहायता से, पुनर्जन्म लेने वाला व्यक्ति नरक के सबसे बुरे आक्रमणों से भी बच सकता है। प्रलोभनों की क्रियाविधि की निम्नलिखित प्रस्तुति उन लोगों के लिए है जो अपने जीवन में दिव्य सिद्धांत को लागू करना शुरू कर रहे हैं। ऐसे लोग हमेशा प्रलोभन में रहेंगे। मैंने प्रत्येक वाक्य के अंत में एक संख्या जोड़ी है जो अर्काना कोएलेस्टिया के उस भाग को संदर्भित करती है जहाँ इस विषय पर अधिक विस्तार से चर्चा की गई है।

स्वीडनबॉर्ग ने अपनी रचना "अर्काना कोएलेस्टिया" को 10,837 खंडों में विभाजित किया है। "अर्काना कोएलेस्टिया" को अंग्रेजी में ऑनलाइन पढ़ा जा सकता है https://newchristianbiblestudy.org/swedenborg/
अर्काना कोएलेस्टिया समझ को बढ़ाने में मदद करता है, लेकिन यह जानना ज़रूरी है कि असली शक्ति परमेश्वर के वचन के शाब्दिक अर्थ में निहित है, क्योंकि इसमें आध्यात्मिक और दिव्य दोनों अर्थ निहित हैं।

1. प्रलोभनों की प्रकृति और प्रकार

प्रलोभन, मनुष्य पर शक्ति और नियंत्रण के लिए अच्छाई और बुराई के बीच एक युद्ध है (1923)। प्रलोभन, मनुष्य की स्वाभाविक और आध्यात्मिक प्रवृत्तियों और इच्छाओं के बीच एक युद्ध भी है (3928)। ये मनुष्यों से जुड़ी दुष्ट आत्माओं और स्वर्गदूतों के बीच एक युद्ध भी हैं (3927)। ये आंतरिक और बाहरी मनुष्य के बीच एक युद्ध भी हैं (3928)। प्रलोभन तब उत्पन्न होते हैं जब कोई व्यक्ति अपनी बुराई के आगे झुक जाता है (6657)। दुष्ट आत्माएँ ऐसे हमले भी कर सकती हैं जो प्रलोभन नहीं बल्कि यातनाएँ हैं (लैटिन: इन्फेस्टेटियो); प्रलोभन और यातना में अंतर यह है कि यातना में अंतःकरण की पीड़ा या निराशा शामिल नहीं होती (7474)। मूसा के विरुद्ध लोगों का बड़बड़ाना (निर्गमन 15:24) आध्यात्मिक लोगों द्वारा प्रलोभनों में अनुभव की जाने वाली पीड़ा को दर्शाता है (8351)। प्रलोभन स्वयं को कई प्रकार की व्यथा-भावनाओं के रूप में प्रकट करते हैं (1917)। प्रलोभनों में, व्यक्ति पूर्ण आंतरिक स्वतंत्रता में होता है, भले ही उसे ऐसा न लगे; स्वतंत्रता प्रलोभनों के बाहर की तुलना में और भी अधिक पूर्ण होती है (1937, 1947)। प्रलोभन तब तक नहीं आ सकते जब तक व्यक्ति सत्य और अच्छाई के प्रति आश्वस्त न हो जाए (3928)। किसी को भी प्रलोभन में नहीं डाला जा सकता सिवाय उसके संबंध में जिससे वह प्रेम करता है; सत्य के संबंध में, यदि वह सत्य से प्रेम करता है (4274)। सत्य और अच्छाई को प्राथमिकता देने वालों को छोड़कर अन्य किसी को प्रलोभन में नहीं डाला जा सकता (4299)। प्रलोभन तब उत्पन्न होते हैं जब सत्य और अच्छाई का मेल होता है (4341, 4572)। प्रलोभन की स्थिति गंदी और घिनौनी होती है, क्योंकि तब दुष्ट आत्माएँ व्यक्ति के करीब होती हैं (5246)। प्रलोभन की स्थिति की तुलना लुटेरों के एक समूह के बीच रहने वाले व्यक्ति से की जा सकती है (5246)। प्रलोभनों में फ़रिश्ते लोगों की रक्षा करते हैं (6097)।

जब कोई व्यक्ति प्रलोभन में होता है, तो वह अच्छाई और सत्य के बारे में अनिश्चित होता है, लेकिन प्रलोभन से बच निकलने के बाद, वह आनंदित महसूस करता है और नई अच्छाई और सत्य को अपनाता है (6829)। प्रलोभनों के दौरान, मोक्ष के प्रति निराशा अपनी चरम सीमा तक पहुँच जाती है (8567)। निराशा प्रलोभन का अंतिम चरण है, जिसके बाद सांत्वना आती है (8165)।
दिव्य, आध्यात्मिक और प्राकृतिक प्रलोभन होते हैं (847)। आध्यात्मिक और प्राकृतिक प्रलोभन एक साथ हो सकते हैं; यदि प्राकृतिक प्रलोभन अकेले होते हैं, तो वे सच्चे प्रलोभन नहीं होते, बल्कि केवल सांसारिक हानियों से उत्पन्न मानसिक पीड़ा होते हैं (8164)। जो लोग विश्वास की अच्छाई में नहीं जीते, वे प्रलोभनों में नहीं फँस सकते, क्योंकि वे प्रलोभनों में नष्ट हो जाएँगे; वे बीमारियों, असफलताओं और दुर्भाग्य जैसी सांसारिक कठिनाइयों द्वारा आत्म-प्रेम की बुराइयों से दूर हो जाते हैं (4274)। जो लोग प्रलोभनों में हार जाते हैं, वे प्रलोभनों से पहले की तुलना में बदतर स्थिति में पहुँच जाते हैं; वे बुराई और अन्याय के प्रति आश्वस्त हो जाते हैं (8165, 8169)। बौद्धिक विषयों से संबंधित प्रलोभन हल्के होते हैं (735)।

2. प्रलोभन कहाँ से आते हैं

ऐसा लगता है मानो प्रलोभन ईश्वर की ओर से आते हैं, लेकिन वास्तव में, वे दुष्ट आत्माओं से आते हैं (4299)। यदि प्रभु की उपस्थिति किसी व्यक्ति के सत्य और भलाई के प्रति अपने झुकाव से अधिक निकट आ जाती है, तो प्रलोभन उस व्यक्ति के निकट की दुष्ट आत्माओं से उत्पन्न होता है (4299)। दुष्ट आत्माएँ व्यक्ति की अपनी बुराई को भड़काती हैं और इस प्रकार प्रलोभन उत्पन्न करती हैं (4307)। प्रलोभन तब उत्पन्न होते हैं जब व्यक्ति पुनर्जन्म की प्रक्रिया से गुजर रहा होता है (5306)। प्रलोभनों में दुष्ट आत्माओं की दुष्टता और छल इतना अधिक होता है कि कोई भी मनुष्य अपनी शक्ति से उनका विरोध नहीं कर सकता; प्रलोभनों पर केवल प्रभु की सहायता से ही विजय प्राप्त की जा सकती है (6666)। दुष्ट आत्माएँ व्यक्ति के बचपन से लेकर अब तक किए गए सभी बुरे कर्मों को उसकी स्मृति से निकालकर प्रलोभनों में बदल देती हैं (741, 751, 761)। आजकल प्रलोभनों का ज्ञान नहीं है क्योंकि लोगों में विश्वास के गुण और सत्य नहीं हैं; आजकल बहुत कम लोग प्रलोभन में पड़ते हैं (762)।

दुष्ट आत्माएँ केवल उसी पर आक्रमण करती हैं जिससे व्यक्ति प्रेम करता है। यीशु का प्रेम मानवजाति के उद्धार के लिए विशुद्ध प्रेम था, और इसीलिए सभी नरकों ने अपनी पूरी शक्ति से उन पर आक्रमण किया (1820)।

3. प्रलोभन एक युद्ध के रूप में

प्रलोभन से जुड़े युद्ध का महत्व इस तथ्य में भी निहित है कि यह लोगों को बुरी और अच्छी आत्माओं की उपस्थिति का बोध कराता है; प्रलोभन से जुड़े युद्ध के बिना, सांसारिक चिंताओं में उलझे लोग आत्माओं के अस्तित्व से अवगत नहीं होते (227)। यह युद्ध लंबा है, क्योंकि बुराई और अन्याय को व्यक्ति को नष्ट किए बिना अचानक समाप्त नहीं किया जा सकता (59)। मृत लोग—अर्थात, जिनका पुनर्जन्म नहीं हुआ है—प्रलोभन के विरुद्ध युद्ध को सहन नहीं कर सकते, न ही वे प्रलोभन के अधीन होते हैं (270)। लोगों को वयस्क होने तक युद्ध में नहीं ले जाया जाता, जब तक कि उन्हें यह ज्ञान प्राप्त न हो जाए कि क्या अच्छा और सत्य है और क्या बुरा और असत्य; यीशु को बचपन में ही प्रलोभन दिया गया था (1661)। सत्य की परीक्षा भलाई से पहले होती है, क्योंकि सत्य ही मनुष्य को बुराई और अन्याय को देखने में सक्षम बनाता है (1685)। आंतरिक और बाह्य मनुष्य के बीच विवेकशील व्यक्ति की भी परीक्षा होती है (2183)। प्रलोभनों में, मनुष्य को मानो स्वयं के विरुद्ध ही लड़ना चाहिए, लेकिन उसे यह जानना चाहिए कि सहायता केवल प्रभु से ही मिलती है; मनुष्य को प्रलोभनों में निष्क्रिय नहीं रहना चाहिए (1712)। जो कोई एक बार प्रलोभनों में नारकीय आत्माओं पर विजय प्राप्त कर लेता है, वह उसके बाद भी उन पर विजय प्राप्त करता रहेगा; वही नरक उस व्यक्ति पर आक्रमण नहीं कर सकता जिसने एक बार उसके प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर ली हो (8273)।

4. प्रलोभनों का क्रम

एक व्यक्ति तब प्रलोभन में पड़ता है जब भलाई उसके जीवन में सत्य के संबंध में प्रमुख भूमिका निभाने लगती है, और ऐसा केवल वयस्कता में ही होता है (4248, 4249)। देवदूत लोगों को भलाई और सच्चाई में रखते हैं, जबकि दुष्ट आत्माएँ उन्हें दुष्टता और अन्याय में रखती हैं; प्रलोभन इन दोनों शक्तियों के बीच संघर्ष से उत्पन्न होते हैं (4249)। जब भलाई प्रमुख भूमिका निभाती है, तो प्राकृतिक मनुष्य के अन्याय प्रकट होते हैं, जिससे प्रलोभन उत्पन्न होते हैं (4256)।

प्रलोभनों में, मनुष्य नरक की ओर जाता है (8131)। जो लोग प्रलोभन में पड़ते हैं, वे अपनी मंजिल के बारे में अनिश्चित होते हैं (1820)। जो प्रलोभन में पड़ते हैं, वे निराशा में डूब जाते हैं (2694)। प्रलोभनों में आंतरिक मनुष्य की सत्य के प्रति प्राथमिकता प्रबल होती है, भले ही व्यक्ति स्वयं इस पर ध्यान न दे (5044)। प्रलोभनों में दो शक्तियाँ संघर्ष करती हैं: आंतरिक मनुष्य के माध्यम से ईश्वर और बाह्य मनुष्य के माध्यम से नरक (8168)। प्रलोभनों के बाद, अच्छाई और सत्य आंतरिक मनुष्य से जुड़ जाते हैं (10686)। प्रलोभनों के बाद, सत्य और असत्य के बीच एक अस्थायी द्वंद होता है; हालाँकि, यह द्वंद धीरे-धीरे गायब हो जाता है (848, 857)। प्रलोभनों के बीत जाने के बाद, मनुष्य गहन आनंद का अनुभव करता है, और यह अच्छाई और सत्य के मिलन के कारण होता है (4572)। प्रलोभनों के बाद, मनुष्य आत्मज्ञान और आनंद का अनुभव करता है; सत्य से आत्मज्ञान और अच्छाई की प्रवृत्तियों से आनंद (8367, 8370)।

5. प्रलोभनों में प्रभु की सहायता

प्रलोभनों का सामना करने पर, लोग कल्पना करते हैं कि प्रभु मौजूद नहीं हैं। वास्तव में, प्रभु की उपस्थिति प्रलोभनों के बाहर की तुलना में उनके भीतर अधिक निकट होती है (840)। ईश्वर किसी को प्रलोभन नहीं देते, बल्कि वे लोगों को उनके प्रलोभनों से मुक्त करते हैं (2768)। हम प्रभु के इन शब्दों को कैसे समझें: "और हमें परीक्षा में न डाल, परन्तु बुराई से बचा" (मत्ती 6:13) (1875)? प्रभु दुष्टात्माओं के प्रलोभनों से उत्पन्न बुराइयों और अन्यायों को भलाई और सत्य में, अर्थात् मनुष्य के पुनर्जन्म के लिए लाभ में बदल देते हैं (6574)। जो लोग सोचते हैं कि वे केवल अपनी शक्ति और बुद्धि के बल पर प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं, वे युद्ध हार जाएँगे (8172)। केवल ईश्वर ही प्रलोभनों में मनुष्य को विजय दिला सकता है; फिर भी, मनुष्य को स्वयं सक्रिय रूप से कार्य करना चाहिए, यह जानते हुए कि शक्ति केवल प्रभु से ही आती है (8175, 8176)। आंतरिक मनुष्य प्रलोभनों के माध्यम से प्रकट होता है, और मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है (10685)। जो लोग केवल अपने लिए सम्मान और पुण्य चाहते हैं, वे नरक से नहीं लड़ सकते; केवल वे ही प्रलोभनों में विजयी होंगे जो सारा सम्मान और पुण्य प्रभु को समर्पित करते हैं (9978)।

प्रलोभनों में, मानवीय प्रार्थनाएँ बहुत कम प्रभाव डालती हैं, क्योंकि मनुष्य को विश्वास के सत्यों की सहायता से, मानो अकेले ही, नरक से लड़ना पड़ता है (8179)।

6. प्रलोभनों का लाभ

प्रलोभनों और निराशाओं को सहने का क्या लाभ है? सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि व्यक्ति को यह बोध होता है कि उसके भीतर कुछ भी अच्छा और सच्चा नहीं है, और वह निंदित है। प्रलोभनों के बाद, लोगों को यह बोध होता है कि सारी अच्छाई और सच्चाई केवल प्रभु से ही आती है (6144)। प्रलोभनों के बाद—यदि उन पर विजय पा ली जाए—बाहरी व्यक्ति आंतरिक व्यक्ति के अधीन हो जाता है (857)। प्रलोभन अच्छाई को सत्य के और निकट लाते हैं (2272)। परीक्षाओं के माध्यम से, मानव आत्मा स्वर्गदूतों के और भी गहरे समुदायों के संपर्क में आती है (6611)। परीक्षाओं के कारण, नए चर्च को लड़ाकू चर्च कहा जाता है (7090)। प्रलोभनों के माध्यम से, दुष्ट आत्माएँ उन लोगों को नुकसान पहुँचाने की अपनी क्षमता खो देती हैं जिन्होंने अपने प्रलोभनों पर विजय पा ली है (1695, 1717)। प्रलोभनों के माध्यम से, लोग नए सत्य प्राप्त करते हैं (6663)।

7. प्रलोभन और पुनर्जन्म

प्रलोभनों के बिना, व्यक्ति का पुनर्जन्म नहीं हो सकता। पुनर्जन्म लेने वालों को कई प्रलोभनों का सामना करना पड़ता है, जो एक पूरी श्रृंखला बनाते हैं (8403)। जब व्यक्ति का पुनर्जन्म होता है, तो उसका आंतरिक व्यक्तित्व बाहरी व्यक्तित्व की तुलना में अधिक सत्यों को स्वीकार करता है, और इससे संघर्ष या प्रलोभन उत्पन्न होता है (3321)। प्रलोभनों से पहले, पुनर्जन्म लेने वाला व्यक्ति शांति की अवस्था में होता है और प्रलोभनों के बाद उसी अवस्था में लौट आता है (3696)। प्रलोभन व्यक्ति से आत्म-प्रेम और सांसारिक प्रेम को दूर कर देते हैं (5356)। यदि कोई व्यक्ति विजय को अपना गुण मानता है, तो वह प्रलोभनों से नहीं बचता (2273)। जिनके पास विवेक है, वे प्रलोभनों का अनुभव करते हैं; सबसे प्रबल प्रलोभन वे अनुभव करते हैं जिनमें दिव्य बोध होता है (1668)।

8. प्रभु यीशु मसीह के प्रलोभन प्रलोभनों में, मानवीय प्रार्थनाएँ बहुत कम प्रभाव डालती हैं, क्योंकि मनुष्य को विश्वास के सत्यों की सहायता से, मानो अकेले ही, नरक से लड़ना पड़ता है (8179)।

प्रभु की दिव्यता ने कुँवारी मरियम से विरासत में मिली मानवता को मानवता की रक्षा के लिए भयंकर प्रलोभनों से गुज़रने दिया (2816)। प्रलोभनों के माध्यम से, प्रभु ने सभी नरकों को पराजित किया और दिव्य मानवता को ग्रहण किया (4287)। प्रभु को स्वर्गदूतों ने भी प्रलोभित किया, क्योंकि यद्यपि स्वर्गदूत अच्छाई और सत्य में रहते हैं, वे सीमित हैं और अभी भी संसार से विरासत में मिली और की गई कुछ बुराइयों को धारण करते हैं (4295)। प्रभु के प्रलोभन किसी भी मनुष्य के सहन करने से कहीं अधिक प्रबल थे (1663, 1668)। सभी प्रलोभनों में निराशा निहित होती है, और यह प्रभु के प्रलोभनों के लिए भी सत्य था (1787)। क्रूस पर चढ़ना प्रभु का अंतिम प्रलोभन था, जिसके माध्यम से उन्होंने अपनी मानवता को अपनी दिव्यता के साथ एकाकार कर दिया (2776)। प्रभु को उनकी दिव्य मानवता के संबंध में प्रलोभित नहीं किया जा सकता था, बल्कि केवल उनकी माँ से विरासत में मिली मानवता के संबंध में, जिसे उन्होंने क्रूस पर अपनी मृत्यु में त्याग दिया (2795)। भगवान केवल सत्य के संबंध में ही प्रलोभित हो सकते थे, भलाई के संबंध में नहीं (2795)। चूँकि भगवान अपनी दिव्य मानवता के संबंध में प्रलोभित नहीं हो सकते थे, इसलिए उन्होंने स्वयं को साधारण मानवता का वस्त्र पहनाया और प्रलोभन के माध्यम से इस मानवता को दिव्य मानवता में परिवर्तित कर दिया (7193)। भगवान ने अपनी शक्ति से सभी नरकों के विरुद्ध युद्ध किया (8273)। भगवान ने बाल्यकाल से लेकर अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक प्रलोभनों को सहन किया। उन्होंने सभी प्रलोभनों पर विजय प्राप्त की। नरकों ने भगवान के प्रेम को, जो समस्त मानवता के लिए शुद्ध प्रेम था, नष्ट करने का प्रयास किया (1690)। भगवान ने सभी नरकों के विरुद्ध युद्ध किया और उन्हें पूरी तरह से पराजित किया; यदि ऐसा न होता, तो कोई भी प्राणी बच नहीं पाता (9937)।

9. प्रलोभनों का महत्व

जब कोई व्यक्ति प्रलोभन में पड़ता है, तो उसे अपने भीतर संघर्षरत दो शक्तियों को पहचानने का प्रयास करना चाहिए। तब उसे यह बोध होगा कि नरक की आत्माएँ उसके स्वाभाविक मन को प्रभावित कर रही हैं, और अच्छी आत्माएँ उसके आंतरिक मन को प्रभावित कर रही हैं। फिर उन्हें अपने प्राकृतिक मन द्वारा प्रस्तुत समाधान को अस्वीकार कर देना चाहिए और अपने आंतरिक मन के समाधान को चुनना चाहिए, भले ही वह समाधान उनके प्राकृतिक मन को बुरा लगे।

जब वे ऐसा करते हैं, प्रभु की सुरक्षा पर भरोसा रखते हुए, वे प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं। हर नया जन्म लेने वाले व्यक्ति को कई प्रलोभनों का सामना करना पड़ता है, और हर बार जब प्रलोभन पर विजय प्राप्त होती है, तो वह नए जन्म लेने वाले व्यक्ति की आध्यात्मिक बुद्धि को बढ़ाता है।

नए चर्च के पास प्रलोभनों और उन पर विजय पाने के तरीकों का ज्ञान है। यही ज्ञान नए चर्च को अजेय और शाश्वत बनाता है (दानिय्येल 2:44)। नया चर्च हमारे ग्रह के सभी लोगों के लिए है (दानिय्येल 7:14)। हमारे ग्रह पर हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी जाति, राष्ट्रीयता या धर्म का हो, नए चर्च में स्वीकार किया जाता है, बशर्ते वे यीशु की दिव्यता को स्वीकार करें और दस आज्ञाओं के अनुसार जीवन व्यतीत करें। यहूदियों को भी नए चर्च के सदस्य के रूप में स्वीकार किया जाता है यदि वे तल्मूड से विमुख हो जाते हैं और उपरोक्त शर्तों को पूरा करते हैं।

जो लोग आध्यात्मिक प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं, उन्हें वचन में "पृथ्वी के राजा" कहा गया है, क्योंकि पृथ्वी प्राकृतिक मनुष्य का प्रतीक है, जिस पर आध्यात्मिक मनुष्य का शासन है। "और पृथ्वी के राजा अपनी महिमा वहाँ लाएँगे" (प्रकाशितवाक्य 21:24) का आध्यात्मिक अर्थ है कि जो लोग आध्यात्मिक-आध्यात्मिक प्रलोभनों पर विजय पा लेते हैं, वे नए चर्च—नए यरूशलेम—के सदस्य बन जाते हैं। दिव्य प्रलोभनों पर विजय पाने वाले व्यक्ति को वचन में "याजक" कहा गया है, जिसका अर्थ है कि उसमें अच्छाई सत्य पर शासन करती है। इस संदर्भ में, मैं आपको बता सकता हूँ कि 1973 में मेरे ज्ञानोदय अनुभव में मुझे दी गई "पृथ्वी और चंद्रमा का राजा" की उपाधि का अर्थ है वह व्यक्ति जिसने आध्यात्मिक-आध्यात्मिक-आध्यात्मिक प्रलोभनों पर विजय पा ली है। स्वीडनबॉर्ग के अनुसार, आध्यात्मिक-आध्यात्मिक लोग मृत्यु के बाद सर्वोच्च स्वर्ग में शिक्षक के रूप में कार्य करते हैं।

हमारे ग्रह के सबसे बुरे नरकों से आने वाले प्रलोभनों पर विजय पाने के लिए स्वयं ईश्वर के अवतार की आवश्यकता पड़ी। ये नरक यहूदी लोगों से जुड़े थे—और आज भी हैं—और यही कारण है कि यीशु एक यहूदी के रूप में पैदा हुए थे। प्रभु यीशु मसीह ने सभी नरकों पर विजय प्राप्त की और स्वर्ग से भी उनकी परीक्षा हुई, क्योंकि सर्वोच्च स्वर्गदूत भी परमेश्वर के सामने पूरी तरह से शुद्ध नहीं हैं।

परमेश्वर के वचन के आध्यात्मिक अर्थ के अनुसार, "यहूदी" उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो जाति या राष्ट्रीयता की परवाह किए बिना, भलाई और सच्चाई में रहता है। वचन के दिव्य अर्थ के अनुसार, "यहूदी" सर्वोच्च, या तीसरे, स्वर्ग को भी संदर्भित करता है। यीशु को इस स्वर्ग से भी प्रलोभन दिया गया था, क्योंकि वह स्वर्ग भी पूरी तरह से पवित्र नहीं है। इसीलिए यीशु ने जिन प्रलोभनों पर विजय पाई, वे उनके क्रूस पर लिखे थे: उनकी उपाधि, यहूदियों का राजा, रेक्स जुदेओरम।
आधुनिक "यहूदी" वास्तव में खज़ार हैं जो 740 में यहूदी धर्म में परिवर्तित हो गए थे। खज़ार सत्ता के भूखे, क्रूर और प्रतिशोधी लोग थे, और ये विशेषताएँ आधुनिक "यहूदियों" में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं, उदाहरण के लिए इज़राइली राजनीति में। नए चर्च, या नए यरूशलेम का कार्य "यहूदी सर्प", अर्थात् सिय्योन के बुद्धिमान पुरुषों का सिर कुचलना है। यह उनकी अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग और मीडिया शक्ति को छीनकर और खज़ार यहूदियों के असली स्वरूप और लक्ष्य को उजागर करके पूरा किया जाएगा, जो मानवता को गुलाम बनाना और धरती पर नरक स्थापित करना है। ईश्वर स्वयं इस युद्ध में नए यरूशलेम की रक्षा और मार्गदर्शन करते हैं, और इसलिए नए यरूशलेम की विजय निश्चित है। सोली देओ ग्लोरिया!

साहित्य

दोस्तोवस्की, फ्योडोर: एक हास्यास्पद आदमी का सपना। व्हाइट नाइट्स संग्रह में। हेमीनलिना 1981।
डुसेन, विल्सन वैन: अन्य दुनियाओं की उपस्थिति। न्यूयॉर्क 1975।
स्ट्रिंडबर्ग, अगस्त: इन्फर्नो। - सैमलाडे स्क्रिफ्टर XXVIII। स्टॉकहोम 1914।
स्वीडनबोर्ग, इमानुएल: आर्काना कोएलेस्टिया। लंदन 1749-1756। डी नोवा हिरोसोलिमा एट इजुस डॉक्ट्रिना कोलेस्टी। लंदन 1758. तर्कसंगत मनोविज्ञान, यूएसए 1950। सच्चा ईसाई धर्म। लंदन 1975.

परिशिष्ट 1: यहूदी प्रश्न की समझ बढ़ाने वाली पुस्तकें अंग्रेजी में

ख़ज़ारों, या यहूदियों, ने हमारे ग्रह की पूरी आबादी का ब्रेनवॉश करने में कामयाबी हासिल कर ली है। आपको अपनी सामान्य लाइब्रेरी में ख़ज़ारों, यहूदी धर्म, तल्मूड या ख़ज़ारों के अंतर्राष्ट्रीय अपराधों के बारे में असली जानकारी नहीं मिलेगी। ख़ज़ारों और मित्र राष्ट्रों, जिन पर द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ख़ज़ारों का नियंत्रण था, के बारे में पूरी इतिहास की किताब को झूठा साबित किया गया है। यह ख़ज़ारों के सार्वजनिक और गुप्त संगठनों और ख़ज़ारों के स्वामित्व और नियंत्रण वाले मीडिया द्वारा दशकों के व्यवस्थित कार्य के माध्यम से हासिल किया गया है। इस कार्य के दो स्तंभ विरोधियों का व्यवस्थित उत्पीड़न और जानकारी को पूरी तरह से छिपाना रहे हैं। ख़ज़ारों की यह उपलब्धि विश्व इतिहास में अद्वितीय है, और केवल एक ही चीज़ है जो इसकी प्रशंसा करने से रोकती है: इसका लक्ष्य बुराई है, स्वयं बुराई, शैतान।
निम्नलिखित पुस्तकों में सटीक जानकारी है और ये मुख्यतः ईसाई लेखकों द्वारा लिखी गई हैं। कुछ पुस्तकें यहाँ से खरीदी जा सकती हैं:
https://omnichristianbookclub.com/product-category/history-politics/

Apion: Judaism in Action. USA 1963. Literary quotations about Jews and Judaism. Writings by both Jews and non-Jews. Modern readers may be surprised to learn that many famous historical figures were anti-Semitic.

Bacque, James: Crimes & Mercies, The Fate of German Civilians Under Allied Occupation, 1944-1950. USA 1999. In the revenge operation carried out by the Khazars, more than nine million German civilians were killed in the aftermath of World War II. The mainstream media is silent on this matter.

Beaty, John: The Iron Curtain Over America. USA 1954. A Christian intelligence officer and historian warns Americans about the destructive power of the Khazars in the USA.

Benson, Ivor: The Zionist Factor: The Jewish Impact on Twentieth Century History. USA 1992. The influence of the Khazars in our century. An excellent description of the real power of the Khazars.

Britton, Frank L.: Behind Communism. No place of publication, no year of publication. An excellent presentation of communism as a Jewish operation.

Brzezinski, Zbigniew: Between Two Ages. USA 1970. A strategy for a new dictatorship of the Khazars. This book is considered the "bible" of the Bilderbergers. Like Henry Kissinger, Brzezinsky belonged to the Khazar elite that carried out the terrorist bombings of Iraq and Yugoslavia.

Butz, Arthur R.: The Hoax of the Twentieth Century, the Case Against the Presumed Extermination of European Jewry. USA 1977. A thorough study by an engineer (Ph.D.) specializing in executions, which shows that the extermination camps are a fabricated lie. Zyklon B gas was used to kill lice carrying typhus, not people.

Cherep-Spiridovitch, Count: The Secret World Government. USA 1926. A description of the international crimes of the Rothschilds and other Khazar bankers.

Cincinnatus: War! War! War! USA 1984. The role of the Jews, or Khazars, in starting wars.

Coleman, John: Conspirators' Hierarchy: The Story of the Committee of 300. USA 1992. Dr. Coleman, a retired officer of the British military intelligence service MI6, reveals the forces, individuals, and organizations behind international politics.

Dope, Inc. The Book That Drove Henry Kissinger and the Anti-Defamation League Crazy. USA 1992. A comprehensive work that reveals the real forces behind the drug trade, namely the Khazarian bankers and the Jewish militant organization ADL. The author was subjected to relentless persecution by Jews and served time in prison for crimes he did not commit.

Elmhurst, Ernest F.: The World Hoax. USA 1938. The role of Jews in the Russian Revolution and the Soviet administration.

Fahey, Dennis: The Rulers of Russia. USA 1986. A professor of Catholic theology reveals the Jews as the real rulers of the Soviet Union in 1917–1939.

Findley, Paul: Deliberate Deceptions. USA 1993. A former member of the US Congress uses archival material to show that all the policies of Israel and American Jews are based on deception.

Findley, Paul: They dare to speak out. USA 1985. P. Findley, who served in the US Congress for 22 years, demonstrates Jewish power in the US.

Ford, Henry: The International Jew, I-IV. USA 1920-1922. A thorough presentation by an American businessman on Jewish power and politics. Definitely worth reading.
https://islam-radio.net/ford/ford-fin.htm

Freedman, Benjamin: The Truth About Khazars ("Facts are facts"). USA 1954. B. Freedmann's thorough letter to Dr. David Goldstein. A valuable description of the history of the Khazars and the Talmud religion. Freedman was a Jewish millionaire from New York who converted to Christianity and devoted his vast fortune to fighting the Khazars. He did not accept the founding of Israel, but considered it the most egregious international crime in history.

Freedman, Benjamin: Lecture at the Williard Hotel in 1961. A good description of the power of the Khazars in the US and their role in the First and Second World Wars. Freedman was familiar with the inner circle of the Khazars because he had been part of it himself.

Grimstad, William: Antizion, A Survey of Commentary On Organized Jewry By Leading Personalities Through the Ages. USA 1985. A collection of quotes from famous non-Jews and Jews about organized Jewry. The work shows that before the 20th century, more was known about Jews than is known today, which in turn demonstrates the effectiveness of the Jewish information mafia.

Haertman, Charles: There Must be no Germany after War. USA 1942. The Khazars' program to exterminate the Germans.

Hitler, Adolf: Mein Kampf. Translated into Finnish as Taisteluni. Germany 1925–1926.
https://islam-radio.net/historia/hitler/mkampf/fin/index.htm
Must-read. Hitler was one of the most intelligent politicians in world history. He was a threat to Jewish world domination. The Jews destroyed him and Germany in World War II.

Hoskins, Richard Kelly: War Cycles, Peace Cycles. USA 1985. Description of banking based on usury and debt money.

Jensen, B.: The Palestine Plot. USA 1948. A description based on archival material of how the Khazars conquered Palestine.

Jewish Encyclopaedia. Funk & Wangnalis, USA 1901. An encyclopedia intended only for the elite (Jews).

John, Robert: Behind the Balfour Declaration. The Hidden Origins of Today's Mideast Crisis. USA 1988. Robert John shows that the Jewish media managed to drag the USA into the First World War and were rewarded with the Balfour Declaration.

Kaufman, Nathan: Germany Must Perish. USA 1941. In his book, Kaufman, who is Jewish, demands, among other things, that "the German population that survives the air raids, both men and women, must be sterilized to ensure the total destruction of the German race."

Knupfer, Georg: The Struggle For World Power. USA 1986. A thorough analysis of the Khazars' attempts to conquer the world. The author warns that time is running out to save nations from the Jewish conspiracy.

Koestler, Arthur: Thirteenth Tribe. USA 1976. Historical information about the Khazars and their way of life. A. Koestler is himself a Khazar Jew.

Luther, Martin: On the Jews and Their Lies. Kerava 1939. Luther was familiar with the Talmud and called Jews living devils. Even today, this is a timely statement, which the Lutheran Church has cowardly rejected.

Marschalko, Louis: The World Conquerors: The Real War Criminals. USA 1958. A description of the international crimes of the Khazars, especially their role in the Nuremberg trials and the aftermath of World War II. An excellent textbook on international politics, drawing on Jewish and non-Jewish sources.

Nicolov, Nicola M.: The World Conspiracy. USA 1990. Information about the forces behind politics, the Rothschilds, the Bilderbergers, etc.

Olsen, Alfred: Den rasistiske sionistiske mafia i Norge, Norway 1994. Reveals that Norway is under Zionist control.

Ostrovsky, Victor & Hoy, Claire: By Way of Deception. USA 1990. Revelations by a former Mossad agent about Mossad's activities. Also published in Finnish (Petoksen kautta. Hyvinkää 1991).

Piper, Michael Collins: Final Judgement. USA 1998. Identifies the perpetrators of President Kennedy's assassination: Mossad and American Jews. A thorough investigation that the US media is silent about.

de Poncins, Léon, Count: Les Forces Secrètes de la Révolution. France 1928. A description of the power of the Khazars and Freemasons. Also translated into English. Other books by the author on Jews and Freemasons also contain facts based on archives.

Rami, Ahmed: Vad er Israel? Stockholm 1988. A Moroccan officer's description of the crimes of the Zionists and Israel.

Reed, Douglas: The Controversy of Zion. England 1978. A comprehensive presentation of Jewish history, character, politics, and influence on world events.

Sanning, Walter N.: The Dissolution of Eastern European Jewry. USA 1983. A demographic study of the displacement of the Jewish population in Eastern Europe. Demonstrates that the Holocaust myth is a deliberate deception.

Shaw, Jim: The Deadly Deception. USA 1988 Jim Shaw studied to become a high-ranking member of the Freemasons, converted to Christianity, and exposed the deception of the Freemasons. **Soncino Edition of the Talmud**. England 1935. An English translation of the Talmud. A handbook of devilish abominations. A textbook of racist world domination.

It should be noted that the Jews mentioned in this book do not refer to all Jews, but only those who live according to the racist precepts of the Talmud, and the leading Jews, i.e., the **Wise Men of Zion** led by the **Rothschilds**. Many so-called ordinary Jews are innocent and do not accept Zionism.

A good website about Jews:

https://islam-radio.net/islam/english/english.htm

परिशिष्ट 2: सोवियत सरकार के आरंभ में यहूदियों की भूमिका (अंग्रेजी में)

रूस में 1917-1919 के अशांत वर्षों के रॉबर्ट विल्टन के अध्ययन की एक उल्लेखनीय विशेषता बोल्शेविक शासन की स्थापना में यहूदियों द्वारा निभाई गई अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का उनका स्पष्ट चित्रण है। स्कूली पाठ्यपुस्तकों में इस विषय को नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है।
"यदि पाठक रूसी शाही परिवार की हत्या में यहूदियों की संलिप्तता देखकर आश्चर्यचकित है, तो उसे याद रखना चाहिए कि सोवियत सरकार में संख्या की दृष्टि से यहूदी कितने भयावह रूप से प्रभावशाली थे," विल्टन ने लिखा।

विल्टन ने उल्लेख किया कि सोवियत सरकार, या "पीपुल्स कमिसर्स की परिषद" (जिसे "सोवनारकोम" भी कहा जाता है), में निम्नलिखित सदस्य शामिल थे:

Ministry	Name	Nationality
Chairman	V.I. Ulyanov (Lenin)	Russian*
Foreign Affairs	G.V. Chicherin	Russian
Nationalities	J. Dzhugashvili (Stalin)	Georgian
Agriculture	Protian	Armenian
Economic Council	Lourie (Larin)	Jewish
Food	A.G. Schlihter	Jewish
Army and Navy	L.D. Bronstein (Trotsky)	Jewish
State Control	K.I. Lander	Jewish
State Lands	Kaufmann	Jewish
Labor	V.Schmidt	Jewish
Social Assistance	E. Lilina (Knigissen)	Jewish
Education	A. Lunacharsky	Russian
Religion	Spitzberg	Jewish
Internal Affairs	Apfelbaum (Zinoviev)	Jewish
Health Care	Anvelt	Jewish
Financial Affairs	I.E. Gukovs	Jewish
and	G. Sokolnikov	Jewish

Press	Voldarski (Goldstein)	Jewish
Elections	M.S. Uritski	Jewish
Justice	I.Z. Shteinberg	Jewish
Refugees	Fenigstein	Jewish
Refugees	Savitsh (assistant)	Jewish
Refugees	Zaslovski (assistant)	Jewish

विल्टन ने बताया कि सोवर्नकोम के 22 सदस्यों में से तीन रूसी, एक अर्मेनियाई और 17 यहूदी थे।

*(विल्टन लेनिन के बारे में ग़लत हैं। लेनिन के पिता ज़ेडरबाम नाम के एक यहूदी थे, लेकिन उल्यानोव ने उन्हें गोद ले लिया था। लेनिन धाराप्रवाह यिडिश बोलते थे, जो सोवियत प्रशासन के आंतरिक हलकों में सबसे आम भाषा थी। अनुवादक का नोट)।
विल्टन आगे बताते हैं कि कार्यकारी केंद्रीय समिति में निम्नलिखित सदस्य शामिल थे:

J.M. Sverdlov (Solomon) (chairman)	Jewish
Avanesov (secretary)	Armenian
Bruno	Latvian*
Breslau	Latvian(?)
Babtshinski	Jewish
N.I. Buharin	Russian
Weinberg	Jewish
Gailiss	Jewish
Ganzberg (Ganzburg)	Jewish
Danitshevski	Jewish
Starck	German
Sachs	Jewish
Scheinmann	Jewish
Erdling	Jewish

Landauer	Jewish

Linder	Jewish
Wolach	Czech
S. Dimanshtein	Jewish
Encukidze	Georgian
Ermann	Jewish
A.A. Ioffe	Jewish
Karhline	Jewish
Knigissen	Jewish
Rosenfeld (Kamenev)	Jewish
Apfelbaum (Zinoviev)	Jewish
N. Krylenko	Russian
Krassikov	Jewish
Kaprik	Jewish
Kaoul	Latvian
Ulyanov (Lenin)	Russian
Latsis	Jewish
Lander	Jewish
Lunacharsky	Russian
Peterson	Latvian
Peters	Latvian
Roudzoutas	Jewish
Rosine	Jewish
Smidovitsh	Jewish
Stoutchka	Latvian
Nahamkes (Steklov)	Jewish
Sosnovski	Jewish
Skrytnik	Jewish
L. Bronstein (Trotsky)	Jewish
Teodorovitsh	Jewish (?)
Terjan	Armenian
Uritski	Jewish
Telechkine	Russian
Feldmann	Jewish
Frumkin	Jewish
Souriupa	Ukrainian

Tshavtshevadze	Georgian
Scheikmann	Jewish
Rosental	Jewish
Atshkinazi	Imeretian
Karahane	Karaite
Rose	Jewish
Sobelson (Radek)	Jewish
Schlichter	Jewish
Schikolini	Jewish
Tshklianski	Jewish
Levine (Pravdine)	Jewish

इस प्रकार, विल्टन ने निष्कर्ष निकाला कि 61 सदस्यों में से पाँच रूसी, छह लातवियाई, एक जर्मन, दो अर्मेनियाई, एक चेक, एक इमेरेटियन, दो जॉर्जियाई, एक कैराइट, एक यूक्रेनी और 41 यहूदी थे। *(जिन लोगों को लातवियाई कहा गया है, उनमें से कई वास्तव में लातवियाई यहूदी थे। अनुवादक का नोट)।
मॉस्को विशेष आयोग (चेका) - सोवियत गुप्त पुलिस और GPU, NKVD और KGB का पूर्ववर्ती - में निम्नलिखित शामिल थे:

F. Dzerzhinsky (chairman)	Polish
Y. Peters (vice-chairman)	Latvian
Tshklovski	Jewish
Heifiss	Jewish
Zeistine	Jewish
Razmirovich	Jewish
Kronberg	Jewish
Haikina	Jewish
Karlson	Latvian
Schaumann	Latvian
Leontovich	Jewish
Jakov Goldine	Jewish
Galperstein	Jewish

Kniggisen	Jewish
Katzis	Latvian
Schillenkuss	Jewish
Janson	Latvian
Rivkine	Jewish
Antonof	Russian
Delafabre	Jewish
Tsitkine	Jewish
Roskirovitsh	Jewish
G. Sverdlov (brother of the chairman of the Executive Central Committee)	Jewish
Bjesenski	Jewish
J. Blumkin (murderer of Count Mirbach)	Jewish
Aleksandrovich (Blumkin's accomplice)	Russian
I. Model	Jewish
Routenberg	Jewish
Pines	Jewish
Sachs	Jewish
Daybol	Latvian
Saissoune	Armenian
Deylkenen	Latvian
Liebert	Jewish
Vogel	German
Zakiss	Latvian

इन 36 चेका अधिकारियों में से एक पोलिश, एक जर्मन, एक अर्मेनियाई, दो रूसी, आठ लातवियाई और 23 यहूदी थे।
"इसलिए," विल्टन तर्क देते हैं, "शाही परिवार की हत्या में यहूदियों की प्रमुख भूमिका पर आश्चर्यचकित होने का कोई कारण नहीं है। विपरीत स्थिति अधिक आश्चर्यजनक होती।"
नोबेल पुरस्कार विजेता लेखक अलेक्सांद्र सोलजेनित्सिन: "रूस में सत्ता हथियाने वाले बोल-शेविक रूसी नहीं थे। वे रूसियों से नफरत करते थे। वे ईसाइयों से नफरत करते थे। वे जातीय घृणा से प्रेरित थे। उन्होंने लाखों रूसियों पर अत्याचार किया और निर्दयतापूर्वक उनका कत्लेआम किया। अक्टूबर क्रांति कोई "रूसी क्रांति" नहीं थी। यह रूस पर एक विदेशी आक्रमण था। आज भी लगभग कोई भी इसे नहीं समझता है, जो साबित करता है कि अंतर्राष्ट्रीय मुख्यधारा का मीडिया उसी जमात के हाथों में है।

निष्कर्ष

उपरोक्त बातों से यह स्पष्ट है कि सोवियत प्रशासन में यहूदी कितने प्रभावशाली थे। यहूदी वास्तव में पूरी दुनिया पर विजय प्राप्त करना और सभी राष्ट्रों को गुलाम बनाना चाहते हैं। यहूदियों ने संयुक्त राज्य अमेरिका पर भी विजय प्राप्त की है, जो वर्तमान में पूर्ण यहूदी नियंत्रण में है। इज़राइली प्रधानमंत्री एरियल शेरोन: "हम, यहूदी लोग, अमेरिका पर शासन करते हैं।" यहूदियों का विश्व प्रभुत्व आज एक सच्चाई है। हालाँकि, उनके पास पूर्ण शक्ति नहीं है, जैसे कि रूस और चीन पर उनका नियंत्रण नहीं है। यहूदी मानवता के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा हैं, यही कारण है कि यह पुस्तक उनके बारे में इतने विस्तार से बात करती है। आजकल, यहूदियों के अंतर्राष्ट्रीय अपराधों के बारे में बोलने की हिम्मत शायद ही कोई करता है, क्योंकि हर कोई "यहूदी-विरोधी" कहलाने से डरता है। हालाँकि, यहूदी नेतृत्व में, मानवता एक ऐसे नरक की ओर बढ़ रही है जो पूरे ग्रह को अपने घेरे में ले लेगा, जहाँ यहूदियों के पास पूर्ण शक्ति होगी। यह नरक मानव स्वतंत्रता का अंत कर देगा और एक यहूदी तानाशाही होगी। सोवियत संघ के शुरुआती दिनों में, यहूदी-विरोधी भावना के लिए मौत की सज़ा दी जाती थी, और यहूदी तानाशाही के तहत भी ऐसी ही सज़ा दी जाती थी। यहूदी हर तरह से परिवार की संस्था को नष्ट करने और यौन विकृतियों (प्राइड पंथ) को बढ़ावा देने की कोशिश करते हैं। इसके अलावा, वे यूरोप के गोरे लोगों को कमज़ोर करने के प्रयास में यूरोप में अश्वेत लोगों के प्रवास को बढ़ावा देते हैं।

बेलारूसी राष्ट्रपति अलेक्जेंडर लुकाशेंको ने कुछ ऐसा कहा जो आप आमतौर पर राष्ट्राध्यक्षों से नहीं सुनते। लुकाशेंको के अनुसार, यहूदियों ने पूरी दुनिया को अपनी सेवा में शामिल कर लिया है। लुकाशेंको ने अपने स्वतंत्रता दिवस भाषण में कहा, "दुनिया में कोई भी अपनी आवाज़ उठाकर नरसंहार का खंडन करने की हिम्मत नहीं करता, क्योंकि यहूदियों ने दुनिया को घुटनों पर ला दिया है।" दूसरे शब्दों में, उन्होंने जानबूझकर नरसंहार का खंडन किया। यहूदियों के बारे में एक अच्छी वेबसाइट है, https://islam-radio.net/, जो यहूदियों के विश्व प्रभुत्व और अपराधों को उजागर करती है।
नए चर्च का कार्य दुनिया के लोगों के सामने यहूदियों की आकांक्षाओं और अपराधों को उजागर करना है। यहूदी पूरी मानवता के अस्तित्व के लिए खतरा हैं। यहूदी विश्व राजनीति का पर्दाफाश करना अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम का सबसे बड़ा रूप है।
यह ध्यान देने योग्य है कि इस पुस्तक में उल्लिखित यहूदी सभी यहूदियों को नहीं, बल्कि केवल उन लोगों को संदर्भित करते हैं जो तल्मूड के नस्लवादी सिद्धांतों और प्रमुख यहूदियों, यानी रोथ्सचाइल्ड्स के नेतृत्व वाले ज़ायन के बुद्धिमान पुरुषों के अनुसार जीवन जीते हैं। कई तथाकथित साधारण यहूदी निर्दोष हैं और ज़ायनिज़्म को स्वीकार नहीं करते। इसके अलावा, आधुनिक यहूदी खज़ार राष्ट्रीयता के हैं। शक्तिशाली, क्रूर विजेता, खज़ार, 740 में यहूदी धर्म में परिवर्तित हो गए थे। दुनिया के 90% से अधिक यहूदी खज़ार हैं। खज़ारों और यहूदी धर्म के बीच गठबंधन मानवता के सबसे बड़े दुर्भाग्यों में से एक है, जिसके द्वारा शैतान ने हमारी दुनिया में अपनी शक्ति बढ़ाई।

परिशिष्ट 3: पुनर्जन्म की प्रक्रिया कैसे शुरू करें

पुनर्जन्म की प्रक्रिया कैसे शुरू करें? सबसे पहले, आपको यह समझना होगा कि परमेश्वर कौन है और वह कैसा है। आपको जिस परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए, वह इस प्रकार है: यीशु, जो अपने पिता की ओर से यहोवा परमेश्वर और अपनी माता की ओर से एक साधारण मनुष्य थे, ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के बाद, अपनी माता से प्राप्त शरीर को त्यागकर अपना दिव्य शरीर धारण किया और अपनी आत्मा, अर्थात् पिता परमेश्वर, के साथ एकाकार हो गए, और उसी क्षण से, वे स्वयं परमेश्वर हैं, जिनमें त्रिदेव विद्यमान हैं। जैसे मनुष्य में एक आत्मा, एक शरीर और शरीर के माध्यम से आत्मा द्वारा किए गए कर्म होते हैं, वैसे ही यीशु मसीह में उनकी आत्मा, अर्थात् पिता यहोवा, उनका दिव्य शरीर, अर्थात् पुत्र, और उनके कर्म, अर्थात् उनसे प्रवाहित होने वाली पवित्र आत्मा है। दूसरे शब्दों में, यीशु स्वयं परमेश्वर हैं, जिनसे हमें प्रार्थना करनी चाहिए, और कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है।

तब आपको पश्चाताप करना होगा। सच्चे पश्चाताप में निम्नलिखित बिंदु शामिल हैं: 1. ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करना, 2. पाप क्या है, यह जानना, अर्थात् दस आज्ञाओं का अध्ययन करना। 3. अपने व्यक्तिगत पापों का पता लगाने के लिए स्वयं का परीक्षण करना, 4. ईश्वर के समक्ष अपने पापों को स्वीकार करना और पश्चाताप करना, 5. ईश्वर से अपने पापों की क्षमा माँगना, 6. एक नया पापरहित जीवन शुरू करना। इस प्रकार पश्चाताप व्यक्ति को ईश्वर से जोड़ता है और उसे बुद्धिमान बनाता है। (अध्याय 10: पश्चाताप, पृष्ठ 257)।

पश्चाताप ही एकमात्र ऐसी चीज़ है जो आपको प्रतिदिन करने की आवश्यकता है, या यदि यह बहुत कठिन लगे तो सप्ताह में एक बार। ऐसा पश्चाताप आपको ईश्वर से जोड़ता है और इस बिंदु से आगे अनंत काल तक आपका मार्गदर्शन करता है। और जब आप प्रार्थना करें, तो इस प्रकार प्रार्थना करें: प्रभु यीशु मसीह, स्वर्ग और पृथ्वी के ईश्वर, मेरे साथ रहें और मेरा मार्गदर्शन करें, मुझे सिखाएँ, मेरी रक्षा करें और सभी बातों में मेरी अगुवाई करें, अभी, हमेशा और सर्वदा। आमीन।

एक बार जब आप शुरू कर देंगे, तो आप न्यू चर्च के संपूर्ण धर्मशास्त्र में रुचि लेंगे, जिसका वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

परिशिष्ट 4: मानसिक रोगों का उपचार

मनोविज्ञान और मनोरोग विज्ञान मानव इतिहास पर एक कलंक हैं। ये ईश्वर या आध्यात्मिक जगत को मान्यता नहीं देते, बल्कि भौतिकवाद और नास्तिकता पर आधारित हैं। ये लोगों के बीच भारी पीड़ा का कारण बनते हैं। यहाँ तक कि कई अजन्मे ईसाई भी आधुनिक मनोविज्ञान और मनोरोग विज्ञान को मूर्खतापूर्ण मानते हैं। उदाहरण के लिए, ब्रिटिश मनोवैज्ञानिक निक हीथर लिखते हैं: "मनोविज्ञान में विज्ञान का बाहरी आवरण, विज्ञान की बाहरी विशेषताएँ और विज्ञान की विशिष्ट भाषा है, लेकिन यह विज्ञान नहीं है। यह एक प्रकार का गहरा आत्म-प्रवंचना है।" और "मनोरोग विज्ञान चिकित्सा की कोई शाखा नहीं, बल्कि एक छद्म-चिकित्सा भ्रम है" (निक हीथर: रेडिकल पर्सपेक्टिव्स इन साइकोलॉजी, लंदन 1976)।

आध्यात्मिक जगत (आध्यात्मिक जगत = आत्माओं का जगत, स्वर्ग और नरक) और ईश्वरीय विधान के नियमों के ज्ञान के बिना, मनुष्य अंधकार में भटकता रहता है। आधुनिक मनोविज्ञान और मनश्चिकित्सा यह नहीं जानते कि मनुष्य में शरीर के अतिरिक्त आत्मा और प्राण भी होते हैं, जिसका ज्ञान वैज्ञानिक मनोविज्ञान और मनश्चिकित्सा ही है। मनुष्य इस संसार में भौतिक रूप से जन्म लेता है और उसे आध्यात्मिक रूप से पुनः जन्म लेना होता है। ऐसा तब होता है जब प्रभु किसी व्यक्ति को सत्य और भलाई के साथ पुनर्जन्म देते हैं (यूहन्ना 3:3-10)। पुनर्जन्म एक लंबी प्रक्रिया है जिसमें वर्षों लगते हैं, जिसके बारे में आधुनिक मनोविज्ञान और मनश्चिकित्सा कुछ नहीं जानते, हालाँकि यह किसी व्यक्ति के लिए सबसे महत्वपूर्ण ज्ञान है। आधुनिक मनोविज्ञान और मनश्चिकित्सा मनुष्यों को बोलने वाले जानवरों से ज़्यादा कुछ नहीं मानते।

पश्चाताप ही मानसिक बीमारी से वास्तविक मुक्ति है (अध्याय 10: पश्चाताप, पृष्ठ 257 देखें)। सभी मानसिक बीमारियाँ दुष्ट आत्माओं के कारण होती हैं जो मनुष्यों से चिपकी हुई हैं। छह-चरणीय उपचार तकनीक, जब निर्देशों के अनुसार उपयोग की जाती है, तो अधिकांश प्रकार की दुष्ट आत्माओं, अर्थात् अधिकांश मानसिक बीमारियों को समाप्त कर देती है। हालाँकि, कुछ दुष्ट आत्माएँ ऐसी भी होती हैं जिन्हें कोई भी उपाय नहीं संभाल सकता, लेकिन वे दुर्लभ हैं, और उनका भी अंततः इलाज मिल सकता है। क्योंकि प्रभु सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापी हैं, और उनके लिए कोई भी अच्छा कार्य असंभव नहीं है।

नए चर्च के मनोवैज्ञानिकों और मनोचिकित्सकों के सामने एक चुनौतीपूर्ण लेकिन दिलचस्प काम है। अभी तक, मानसिक बीमारियों पर पश्चाताप की तकनीकों का इस्तेमाल नहीं किया गया है, इसलिए भविष्य में पुनर्जन्म लेने वाले मनोवैज्ञानिकों और मनोचिकित्सकों के लिए यह एक चुनौती है।

सही प्रार्थना तकनीक छोटी-मोटी मनोवैज्ञानिक समस्याओं में मदद करती है। ऐसे में, आपको यह जानना होगा कि सच्चा परमेश्वर कौन है। इसकी व्याख्या अध्याय 8, पृष्ठ 144, दिव्य त्रिमूर्ति में की गई है। सही प्रार्थना इस प्रकार है: प्रभु यीशु मसीह, स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर, मेरे साथ रहें और मेरा मार्गदर्शन करें और मुझे शिक्षा दें, सभी बातों में मेरी रक्षा करें और मेरा मार्गदर्शन करें, अभी, हमेशा और सर्वदा। आमीन।

मानसिक बीमारियाँ, जैसे नशीली दवाओं का सेवन, बहुत तेज़ी से बढ़ा है। यह सब इसलिए है क्योंकि लोगों के पास सही धर्म नहीं है। सही धर्म मानसिक बीमारियों को दूर रखता है। नए चर्च के सामने उपचार का एक बड़ा काम है। इन दिनों दुष्ट आत्माएँ बहुत ज़्यादा हैं। केवल नया धर्म, या स्वीडनबॉर्ग के माध्यम से आया नया चर्च ही मानवता को बचा सकता है। हमारे ग्रह पर खज़ार यहूदियों के सत्ता में आने का इस बुराई पर सबसे ज़्यादा असर पड़ा है। खज़ार यहूदियों के ज़रिए ही गहरे नरक का प्रभाव आता है। खज़ार यहूदियों का लक्ष्य दूसरे राष्ट्रों को कमज़ोर करना है।

अगर खज़ारों को हराया नहीं गया, तो कुछ ही दशकों में मानवता खज़ार तानाशाही के अधीन हो जाएगी।

अपेंडिक्स 5: नरक और नया चर्च

आजकल के स्वीडनबोर्गियन चर्चों ने भी वही गलती की है जो पिछले चर्चों और धर्मों ने की थी। उनके पादरियों ने मुख्य काम को नज़रअंदाज़ किया है और सिर्फ़ झूठी बातें सिखाई हैं और उनका पालन किया है। नए चर्च, या प्रभु के दूसरे आगमन के चर्च के दो मुख्य काम हैं: 1) इंसानियत पर नरक के असर को सामने लाना और रोकना और 2) लोगों को दोबारा जन्म लेना सिखाना।
सभी धर्म इसलिए खत्म हो गए क्योंकि उन्होंने नरक के खिलाफ लड़ाई नहीं लड़ी। प्रभु के दूसरे आगमन का चर्च हमेशा रहने वाला है क्योंकि यह नरक के असर को सामने लाता है और उन्हें रोकता है।
आजकल के चर्च और धर्म, उदाहरण के लिए, यहूदी सवाल उठाने की हिम्मत नहीं करते, हालाँकि यह हमारी धरती पर सबसे ज़रूरी सवाल है: यहूदियों, या खज़ारों के ज़रिए, इंसानियत सबसे गहरे नरकों से प्रभावित होती है। खज़ारों का मकसद इंसानियत को एक बड़ा नरक बनाना है।
जब जीसस धरती पर रहते थे, तो उन्होंने खास तौर पर नरकों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। नरकों का आखिरी मकसद ईश्वरीय व्यवस्था का नाश करना है।
प्रभु के दूसरे आगमन का चर्च नरकों के सभी असर बताता है और लोगों को पुनर्जन्म के बारे में सिखाता है, यानी इसका मकसद और लक्ष्य इंसानों से धरती पर स्वर्ग बनाना है।
मैं अपना आर्टिकल “आधुनिक समय में नरकों का असर” बाद में इस साइट पर पब्लिश करूँगा।

अपेंडिक्स 6: नए चर्च का संगठन

प्रभु के दूसरे आगमन के चर्च का संगठन आज के चर्चों के संगठन से अलग है। मुख्य सिद्धांत यह है कि सिर्फ़ वही लोग चर्च के लीडरशिप में लिए जाते हैं जो रोज़ाना पश्चाताप करते हैं और आध्यात्मिक डिग्री हासिल करते हैं। इन लीडर्स के पास साइंटिफिक पढ़ाई भी होनी चाहिए, क्योंकि उन्हें साइंस की आलोचना करने में भी सक्षम होना चाहिए। बेहतर होगा कि उनका IQ (> 120) भी ज़्यादा हो। चर्च का मुख्य काम सभी इंसानी ज़िंदगी में नरक के असर को सामने लाना और पुनर्जन्म सिखाना है।

चर्च के आम सदस्यों को सिर्फ़ निर्देशों के अनुसार पश्चाताप करना और ट्रिनिटी के सच्चे सिद्धांत को मानना होता है।

चर्च का एक ही सुप्रीम लीडर होना चाहिए, जो ऐसा व्यक्ति हो जिसने आध्यात्मिक-स्वर्गीय डिग्री हासिल की हो, जो सीधे प्रभु के संपर्क में हो। इस तरह, प्रभु खुद चर्च के सच्चे लीडर हैं, और इसलिए चर्च हमेशा रहने वाला है और कभी खत्म नहीं होगा। प्रभु के दूसरे आगमन का चर्च, या नया चर्च, या नया यरूशलेम, डैनियल की किताब के दूसरे चैप्टर (डैनियल 2:34–35, 44–45) में की गई भविष्यवाणी की पूर्ति है। सोने का सिर, चांदी का संदूक, तांबे की कमर, और लोहे के पैर पिछले चर्चों (जैसे, ईसाई चर्च) को दिखाते हैं जिन्हें प्रभु के दूसरे आगमन का चर्च बदल देगा। यह चर्च दुनिया से सभी नरक जैसे असर को हटा देगा और इंसानियत को स्वर्ग की ओर ले जाएगा।

अभी के स्वीडनबोर्गियन न्यू चर्च पर ड्रैग-ऑन-बिलीविंग लीडर्स का राज है (एपोकैलिप्स एक्सप्लेंड, 764, 765 मिसिंग), इसलिए यह स्वीडनबोर्ग द्वारा बताया गया न्यू जेरूसलम नहीं है। अब जाकर यह होमपेज असली न्यू चर्च, यानी प्रभु के दूसरे आगमन का इंटरनेशनल चर्च शुरू हुआ है।

इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग की धार्मिक रचनाएँ
ऑनलाइन अंग्रेज़ी में

ऑनलाइन:

https://newchristianbiblestudy.org/swedenborg/?l=123

संपर्क जानकारी

Tabernaculum Dei ry
tabernaculum.dei@second-coming.net
(at this address you can inquire about the Church of the Second Coming of the Lord or the New Jerusalem in English)

Nova Hierosolyma ry
www.novahierosolyma.fi

Scandinavian Swedenborg Society
Tegnérlunden 7 111 61 Stockholm Sweden
https://swedenborgsallskapet.se/

Swedenborg Foundation, 320 North Church Street
West Chester, PA 19380 USA
https://swedenborg.com/

The Swedenborg Society, 20-21 Bloomsbury Way, London, WC1A 2TH Great Britain
https://www.swedenborg.org.uk/

Swedenborg Verlag
Thomas Noack Apollostrasse 2
CH-8032 Zurich Switzerland
https://swedenborg-verlag.ch/